بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الصلوٰة والسلام عليك يارسول الله ﷺ

وعلىٰ آلك واصحابك يا حبيب الله ﷺ

قَالَ النَّبِیُّ ﷺ : مَنْ اَحَبَّ سُنَّتِی فَقَدْ اَحَبَّنِی وَمَنْ اَحَبَّنِی كَانَ مَعِیَ فِی الْجَنَّةِ (الحديث)

बरकाते शरीअत

(अव्वल)

★ मुअल्लिफ ★

हाफ़िज़ो क़ारी मौलाना मुहम्मद शाकिर अली नूरी साहब

(अमीरे सुन्नी दावते इस्लामी)

★ नाशिर ★

मक्तबाए तयबाह, मर्कज़ इस्माईल हबीब मस्जिद

१२६ कांबेकर स्ट्रीट, मुंबई-४००००३

★ मिलनेका पता ★

सुन्नी दावते इस्लामी-दयादरा शाख

मुकाम-पोस्ट : दयादरा-३९२०२० ज़िला : भरुच (गुजरात)

फोन : (०२६४२) २८२७९२, मो: ९४२७४ ६४४११

नूरानी आर्ट-दयादरा मो: ९४२७४ ६४४१

उन्वान	सफा नंबर
★ जन्नत को संवारा जाना	090
★ सहरी व इफ़्तार का बयान	090
★ इफ़्तार में जल्दी	091
★ **इफ़्तार कराने की फ़ज़ीलत**	091
★ **रोज़े के मसाइल**	092
★ रोज़े की नियत	092
★ नियत किसे कहते हैं ?	092
★ मगर रोज़ा नहीं टूटा	093
★ कभी रोज़ा टूटता नहीं	093
★ सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम है	094
★ कफ़्फ़ारा भी लाज़िम	095
★ ज़कात का बयान	096
★ ज़कात का लुग़वी माअना	096
★ फ़र्ज़ियते ज़कात का सबब और ग़र्ज़ व ग़ायत	096
★ इस्लाम की बुनियाद	098
★ ज़कात देना रहमत	098
★ जन्नत के दरवाज़े	099
★ सदक़े के फ़ज़ाइल	100
★ माल में इज़ाफ़ा का ज़रिया	100
★ फ़रिश्तों का तअज्जुब	101
★ उम्र कैसे बढ़े ?	102
★ ग़ज़बे इलाही से बचाओ	102
★ सदक़ा को बातिल न करो	102
★ ग़ज़बे रसूल ﷺ	103
★ जहन्नमी कौन ?	103
★ सोना चांदी और अज़ाब	103

उन्वान	सफा नंबर
★ गले का अज़दहा	104
★ माल बर्बाद कैसे होता है ?	104
★ माल की मुहब्बत का अंजाम	105
★ ज़कात से मुतअल्लिक़ चंद ज़रूरी मसाइल	107
★ ज़कात किस को दी जाये ?	109
★ हज का बयान	113
★ मक्का की ताज़ीम	113
★ एक नमाज़ लाख के बराबर	114
★ एक सो बीस रहमतों का नुज़ूल	115
★ सत्तर फ़रिश्तों की आमीन	115
★ दुआ क़बूल होने के चौदह मक़ामात	116
★ आम दावते हज	116
★ हज सिर्फ़ अल्लाह के लिये	117
★ सफ़रे हज व उमरा	117
★ हज की पाबंदी	118
★ हज अहादीश की रौशनी में	119
★ अफ़जल अमल	119
★ हज जन्नत के सिवा	119
★ यौमे अरफ़ा को गुनाहगार	120
★ मौत के बाद हिसाब न होगा	120
★ हाजी व मोअतमिर शफ़ाअत करेंगे	121
★ एक तवाफ़ ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर	121
★ बख़्शिश न होने का गुमान भी गुनाह	122
★ फ़र्ज़ हज....... और सूए ख़ात्मा	122
★ हज्जे बदल	122
★ हज	123

फेहरिश्ते मज़ामीन

फेहरिश्ते मज़ामीन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

हम्दे बारी तआला

हुजूर मुफ़्तीए आज़म عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

क़लब को इसकी रुयत की है आरज़ू जिसका जल्वा है आलम में हर चार सू
बल्कि ख़ूद नफ़्स में है वह सुब्हानहू अर्श पर है मगर अर्श को जुस्तजू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

अर्शो फ़र्शो ज़मानो जेहत ऐ ख़ुदा जिस तरफ़ देखता हूं है जल्वा तेरा
ज़र्रे ज़र्रे की आंखों में तू ही ज़ियाअ क़तरे क़तरे की तू ही तो है आबरू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

सारे आलम को है तेरी ही जुस्तजू जिन्नो इन्सो मलक को तेरी आरजू
याद में तेरी हर एक सू बसू बन में वहशी लगाते हैं ज़रबात हू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

ताइराने जिनां में तेरी गुफ़्तगू गीत तेरे ही गाते हैं वह ख़ुश गलू
कोई कहता है हक़, कोई कहता है हू और सब कहते हैं ला शरीका लहू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

ख़्वाबे **नूरी** में आयें जो नूरे ख़ुदा बुक्क़ए नूर हो अपना ज़ुलमत कदा
जगमगा उठे दिल चेहरा हो पुर ज़िया नूरियों की तरह शुग़ल हो ज़िक्र हो

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

क़सीदा बुर्दा शरीफ

अज़्र : अल्लामा शरफुद्दीन बूसैरी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ

مَوْلَایَ یَا صَلِّ وَ سَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا   عَلٰی حَبِیْبِكَ خَیْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ
مُحَمَّدٌ سَیِّدُ الْكَوْنَیْنِ وَالثَّقَلَیْنِ   وَالْفَرِیْقَیْنِ مِنْ عُرْبٍ وَّ مِنْ عَجَمِ
یَا رَبِّ بِالْمُصْطَفٰی بَلِّغْ مَقَاصِدَنَا   وَاغْفِرْ لَنَا مَا مَضٰی یَا وَاسِعَ الْكَرَمِ

नअत पाक

आला हज़रत मुहद्दिस बरैलवी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ

उनकी महक ने दिल के गुंचे खिला दिये हैं
जिस राह चल दिये हैं कूचे बसा दिये हैं

उनके निसार कोई कैसे ही रंज में हो
जब याद आ गये हैं सब ग़म भूला दिये हैं

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्तफ़ा ने दरया बहा दिये हैं

मेरे करीम से गर क़तरा किसी ने मांगा
दरया बहा दिये हैं दुर बेबहा दिये हैं

आने दो या डूबो दो अब तो तुम्हारी जानिब
कश्ती तुम्हीं पे छोड़ी लंगर उठा दिये हैं

मुल्के सुखन की शाही तुम को **रज़ा** मुस्लिम
जिस सिम्त आ गये हो सिक्के बैठा दिये हैं

मुज़दा सुन्नी दावत का

मौलाना मुहम्मद रफ़ीउद्दीन अशरफ़ी

जहां में हर तरफ़ देखो है शोहरा सुन्नी दावत का
मुबल्लिग़ चार सू देता है पेहरा सुन्नी दावत का

हरी चादर निशाने ग़ौसे आज़म है निशां अपना
सरों पे जिसके सजता है अमामा सुन्नी दावत का

बुजुर्गों से अक़ीदत हो मेरे आक़ा से अज़मत हो
ख़ुदा की बंदगी करना है शेवा सुन्नी दावत का

मुबारकबाद तुमको मीरे दावत हज़रते शाकिर
दरे आक़ा से जो पाते हो मुज़दा सुन्नी दावत का

कनेडा, हिन्द हो, यू एस के लंदन और अफ़्रीक़ा
जहां मैं हर तरफ गूंजा है नारा सुन्नी दावत का

नज़र नीची, हया अच्छी, अज़ाइम, ख़ंदा पेशानी
मुबल्लिग़ इस तरह होता है किसका ? सुन्नी दावत का

नज़म, नअतें, हमेशा लिख रहे हैं जो **रफ़ीउद्दीन**
झलकता इनके शेरों में है जल्वा सुन्नी दावत का

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نحمدہٗ و نصلی علیٰ حبیبہٖ الکریم

शर्फ़ इन्तेसाब

ख़ुदा ऐसी क़ुव्वत दे मेरे क़लम में
कि बद मज़हबों को सुधारा करूं मैं
मुझे अपनी रहमत से तू अपना कर ले
सिवा तेरे सबसे किनारा करूं मैं

(हुजूर मुफ़्तीए आज़मे हिंद عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃُ وَ الرِّضۡوَانُ)

शैख़े तरीक़त, पैकर सिद्क़ व सफ़ा, साहिबे ज़ुहद व तक़्वा, सरकार मुफ़्तीए आज़मे हिंद عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃُ وَ الرِّضۡوَانُ की निगाहे कीमिया ने न जाने कितने ज़र्रों को आफ़ताब बनाया और तारीक राहों पर चलने वालों को नूरी राह दिखा कर नूरी बना दिया। इन्हीं की निगाहे पुर अषर ने मुझ जैसे कमतर को दीन की राह पर लगा दिया और निगाह पुर अषर क्यों न हो जिनकी दुआ यह है।

कुछ ऐसा कर दे मेरे किर्दगार आंखों में
हमेशा नक़्श रहे रुए यार आंखों में

अल्लाह तआला इनके इश्क़ व तक़्वा का सदक़ा हमें भी अता फ़रमाए। आमीन। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نحمدهٗ و نصلی علیٰ رسله الكريم

तक़रीज़े जलील

मुहक़्क़िक़े मसाइले जदीदा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहब क़िब्ला रज़्वी

(सदर शोअबाए इफ़ता अल्‌जामिअतुल अशरफ़िया, मुबारकपूर, यु.पी.)

सुन्नी दावते इस्लामी मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत की ही एक तहरीक का नाम है जो हालात और तक़ाज़े के मुताबिक़ वक़्तन फवक़्त सुन्नी मुसलमानों के दीन व ईमान और अक़ायद व आमाल की इस्लाह और तहफ़्फ़ुज़ की ख़ातिर, सलीस ज़बान और सहल अंदाज़ में किताबचे मंज़रे आम पर लाती रहती है। ताकि अवामे अहले सुन्नत इनसे भरपूर इस्तेफ़ादा करके अपनी आख़ेरत को संवार सकें। इस किताब के मुअल्लिफ़ अमीरे **सुन्नी दावत इस्लामी** हज़रत मौलाना मुहम्मद शाकिर अली नूरी دام ظله العالی ने हिन्द व बैरूने हिंद में इशाअते दीन व अक़ायद व आमाल की इस्लाह में जो नुमायां और क़ाबिले तक़लीद कारनामें अंजाम दिये हैं वह यक़ीनन मोहताजे तारुफ़ नहीं हैं।

ज़ेरे नज़र किताब भी इसी सिलसिला की एक कड़ी है जो अपने मौज़ू को मुहीत है। इस किताब का मैंने मुताला किया, अवाम बिलख़ुसूस नौजवानों में आम तौर से जो बुराईयां फैली हुई हैं यह किताब इनके लिये मशअले राह साबित होगी। कुरआन व हदीस की रौशनी में भरपूर गुफ़्तगू की गई है। बुजुर्गों के हिकायात भी इसके मशमूलात से हैं।

दुआ है कि मौला तबारक व तआला इस किताब को मक़बूले अनाम बनाये और इसके मुसन्निफ़ की उम्र में बरकत अता फ़रमाये और तहरीके **सुन्नी दावते इस्लामी** को आम से आम तर करे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه وعلیٰ آله افضل الصلوٰۃ والتسلیم

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अहवाले वाक़ई

الحمد الله الذى هدانا لهذاو ماكنا لنهتدى لولان هدنا الله

الصلوٰة والسلام عليك يارسول الله ﷺ

وعلیٰ آلك واصحابك يا نور الله ﷺ

ख़ुदाए क़दीर جل جلاله का बे पनाह शुक्र व एहसान है कि उसने अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल और बुजुर्गाने दीन के फ़ैज़ान से और मेरी वालिदा माजिदा की दुआओं से **"बरकाते शरीअत"** की जिल्द अव्वल पेश करने का शर्फ़ अता फ़रमाया।

हमारी तबाही व बर्बादी का एक सबब यह भी है कि हमने कुरआने मुक़द्दस और साहिबे कुरआन से अपना रिश्ता बहुत ही कमज़ोर कर दिया है। जब कि हक़ीक़त यह है कि हमें सर बुलंदी और सर फ़राज़ी कुरआन व साहिबे कुरआन से मुस्तहकम रिश्ते के बाद ही हासिल होगी। वगरनह् कुरआन व सुन्नत से मुंह मोड़ कर हम कामयाबी व कामरानी कभी भी हासिल नहीं कर सकते, बल्कि इसके बर अक्स गुमराही और तबाही के अमीक़ ग़ार में ढकेल दिये जायेंगे।

ज़ेरे नज़र किताब **"बरकाते शरीअत"** को पेश करने का मक़सद ही यही है कि उम्मते मुस्लेमा को कुरआन व हदीस के अहकामात से आशना कराया जाये और कुरआनी तालीमात नीज़ नबवी फ़रमूदात पर सहीह मायने में अमल की दावत दी जाये और अहले ईमान पर वाज़ेह किया जाये कि कुरआन व हदीस में मुख़्तलिफ़ इबादात से लेकर कई एक आदात के लिये क्या हुक्म है? बे शुमार गुनाह, मुसलमान मामूली समझ कर कर लेता है लेकिन उसे मालूम नहीं कि कुरआन मुक़द्दस ने इनकी क्या क्या सज़ायें ब्यान की हैं? मुसलमान आपस में रिश्ते पुख़्ता बनाने के बजाए इन्हें तोड़ता हुआ नज़र आता है मगर उसे ख़बर नहीं कि कुरआन मजीद ने रिश्तों के एहतेराम की कैसी प्यारी तालीम दी है। मुसलमान हुकूकुलअेबाद की पामाली करता

नज़र आता है लेकिन उसे मालूम नहीं कि किताबुल्लाह और हदीसे रसूलुल्लाह ﷺ में इसका अज़ाब कितना सख़्त तरीन है। अलग़र्ज़ इस किताब का मक़सद मुसलमानों को कुरआन अज़ीम और अहादीसे नबवी से क़रीब करना है।

अगर हमारे ज़िम्मेदार हज़रात बिलख़ुसूस मुबल्लेग़ीने इस्लाम अपने घरों और मुहल्ले की मस्जिदों में रोज़ाना **"बरकाते शरीअत"** से **पांच** से **सात मिनट** तक किसी एक वक़्त दर्स देना शुरू कर दें तो उम्मीद है कि कुरआन व अहादीस के तक़ाज़ों पर अमल करने का जज़्बा पैदा होगा।

रब्बे क़दीर हमें कुरआन व अहादीस की तालीमात पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, हमारी कोताहियों को माफ़ फ़रमाये, और हमें कुरआन व साहिबे कुरआन की मुहब्बत में जीने मरने की तौफ़ीक़ नसीब फ़र्माए और **"बरकाते शरीअत"** को इस्लाहे मुस्लेमीन का ज़रिया बनाये, आमीन।

सैकड़ों सफ़हात पर मुश्तमिल इस किताब की तर्तीब में रुफ़क़ाए दावत का भरपूर तआवुन हासिल है अगर इनका ज़िक्र न करूं तो बड़ी नासपासी होगी। ख़ादिमे क़ौम व मिल्लत अलहाज मुहम्मद उसमान, अलहाज इरफ़ान नमक वाला, और उलेमा में मोहक़्क़िक़े मसाइले जदीदा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहब, मौलाना इफ़्तेख़ार अहमद साहब मिस्बाही, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद जुबैर अहमद मिस्बाही, मौलाना अबुल हसन साहब, मौलना मुहम्मद रफ़ीउद्दीन साहब अशरफ़ी, मौलाना उबैदुल्लाह नूरी, बतौर ख़ास मौलाना मज़हरुल हक़ अलीमी साहब का जिन्होंने लम्हा लम्हा इस किताब के तर्बियत देने में भरपूर मेहनत व मशक़्क़त की। और हमारे इदारे के वह तलबा जिन्होंने कम्पोज़िंग का अहम काम अंजाम दिया। मैं इन सबके लिये दुआ गो हूं कि अल्लाह ﷻ अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल अपनी शान के मुताबिक़ अज्र अता फ़रमाये और हम सबका ख़ात्मा ईमान पर फ़रमाये।

फ़क़ीर को अपनी इल्मी बे मायगी और इस्तेअदाद की कमी का एतेराफ़ है किताब में वह कुछ तो न लिखा जा सका जिससे मज़ामीन का हक़ अदा होता, लेकिन एक कमज़ोर बंदे की हक़ीर कोशिश है जिससे मक़सूद महज़ तबलीग़ व इशाअते दीन है।

अहले इल्म हज़रात की बारगाह में इल्तेमास है की ज़ेरे नज़र किताब **"बरकाते शरीअत"** में किसी क़िस्म की इस्लाह की ज़रूरत महसूस करें तो आगाह फ़रमायें ताकि आइंदा इसका ख़्याल रखा जा सके।

रब्बे क़दीर की बारगाह में दुआ है कि अपने महबूबीन के सदक़े इस किताब को शर्फ़े क़ुबूलियत अता फ़रमाये। आमीन।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

–मुहम्मद शाकिर अली नूरी

(अमीरे सुन्नी दावते इस्लामी)

बरकाते शरीअत एक नज़र में

तमन्नाए मदीना

निभा लो तुम निभा लो तुम निभा लो या रसूलल्लाह !
बुला लो अब मदीने में बुलालो या रसूलल्लाह !

सताते हैं जो दुनिया वाले इसका कुछ नहीं है ग़म
मुझे बस अपना कहकर तुम बुला लो या रसूलल्लाह !

सुनहरी जालियों के सामने पहुंचा हूं मैं आक़ा
मुझे अपनी ज़ियारत तुम करा दो या रसूलल्लाह !

अता हो इल्म की दौलत अता हो दीद की दौलत
दमे आख़िर मदीना भी अता हो या रसूलल्लाह !

शफ़ाअत का सवाली हूं सवाली हूं मैं रहमत का
इजाबत से नवाज़ो तुम नवाज़ो या रसूलल्लाह !

तसद्दुक़ ग़ौषे आज़म का तवस्सुल आला हज़रत का
बक़ीअ पाक के क़ाबिल बना दो या रसूलल्लाह !

तमन्ना यह लिये जाता है आक़ा **"शाकिरे रज़वी"**
इसे इज़ने मदीना फिर अता हो या रसूलल्लाह !

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَسَلَّمْ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الصلوٰة والسلام عليك يارسول الله ﷺ

وعلیٰ آلك واصحابك يا حبيب الله ﷺ

ईमान का बयान

अल्लाह جل جلاله कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :–

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ

यह है अल्लाह جل جلاله तुम्हारा रब और इसके सिवा किसी की बंदगी नहीं। हर चीज़ का बनाने वाला, तो इसे पूजो, वह हर चीज़ पर निगहबान है।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि एक दिन हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे, अचानक एक शख़्स हमारे सामने आया जिसके कपड़े निहायत सफ़ेद और बाल काले स्याह थे। न उस पर सफ़र की कोई अलामत दिखाई देती थी और न हम में से कोई इसे जानता था। आख़िर वह नबी करीम ﷺ के पास बैठ गया और उसने अपने घुटने हुजूर ﷺ के घुटनों से मिला दिये और अपने दोनों हाथ हुजूर ﷺ के रानों पर रख दिये। फिर कहने लगा, ऐ मुहम्मद ! ﷺ मुझे इस्लाम के बारे में बतायें। नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया : इस्लाम यह है कि तू गवाही दे कि अल्लाह جل جلاله के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। और तू नमाज़ पढे, ज़कात दे, रमज़ान के रोज़े रखे और काबा तुल्लाह का हज करे अगर तू उसके रास्ते की इस्तेताअत रखता हो।

उसने जवाब दिया : आपने सच फ़रमाया। (रावी कहते हैं) हमें इस पर ताज्जुब हुआ कि वह नबी करीम ﷺ से सवाल भी करता है और फिर उनकी तसदीक़ भी करता है। फिर उसने कहा मुझे ईमान के बारे में बताइये। रहमते आलम ﷺ ने फ़रमाया, (ईमान यह है कि) अल्लाह के फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आख़रत के दिन पर और भली, बुरी तक़दीर पर ईमान लाये। उस शख़्स ने कहा आपने सच फ़रमाया। फिर उसने कहा, मुझे

एहसान के बारे में बताइये। हुजूर ﷺ ने फ़रमाया, (एहसान यह है कि) तू अल्लाह جل جلاله की इबादत इस तरह करे कि गोया तू उसे देख रहा है। अगर तू उसे देख नहीं सकता कम से कम इतना ख़्याल हो कि वह तुझे देख रहा है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा बाला हदीस पाक की तशरीह करते हुए हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी तहरीर फ़रमाते हैं, इस्लाम ज़ाहिरी आमाल का नाम है (मसलन नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने, ज़कात देने वग़ैरह हम का) और ईमान नाम है एतेक़ादे बातिन का (मसलन अल्लाह और उसके प्यारे रसूल ﷺ को दिल से मानने का) और इस्लाम व ईमान के मजमूए का नाम दीन है।

★ ईमान और इसके तक़ाज़े ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह पर ईमान लाने के बाद उसका तक़ाज़ा यह है कि बंदाए मोमिन अपने मअबूदे बरहक़ के हर हर हुक्म का ताबे व फ़र्मांबर्दार रहे। और उसके नाइबे मुतलक़ नबी आख़िरुज़्ज़र्मां ﷺ की मुहब्बत में सरशार होकर आपकी लाई हुई शरीअत के अहकामात का पाबंद रहे। ताकि बंदा रज़ाए इलाही का हक़दार हो जाये।

★ अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात ★

अक़ीदा : अल्लाह एक है, पाक है बे मिस्ल, बे ऐब है। हर कमाल व ख़ूबी का जामेअ है। वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। इसके सिवा जो कुछ है, पहले न था जब इसने पैदा किया तो हुआ। वह किसी भी बात में किसी का मोहताज नहीं और सब इसी के मोहताज हैं। वह सब का मालिक है जो चाहे करे। बग़ैर इसके चाहे ज़र्रा हिल नहीं सकता। सब इसके बंदे हैं वह अपने बंदों पर मां, बाप से ज़्यादा महरबान, रहम फ़रमाने वाला, गुनाह बख़्शने वाला, तौबा क़बूल फ़रमाने वाला है। इज़्ज़त व ज़िल्लत, माल व दौलत सब उसी के क़ब्ज़े में है।

अक़ीदा : हिदायत व गुमराही इसी की जानिब से है जिसे चाहे हिदायत दे और जिसे चाहे गुमराह कर दे, उसका हर काम, हिकमत और इंसाफ़ हैं बंदे की समझ में आये या न आये। बंदों पर इसके एहसानात बे इंतेहा हैं।

अक़ीदा : वही अल्लाह ﷻ इस लायक़ है कि सिर्फ़ उसी की इबादत की जाये। इसके सिवा दूसरा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं।

अक़ीदा : हक़ीक़ी बादशाह अल्लाह ﷻ ही है और वही अलीम व हकीम है। कोई चीज़ अल्लाह के इल्म से बाहर नहीं। दिलों के ख़तरों और वसवसों की भी ख़बर रखता है, उसके इल्म की कोई इंतेहा नहीं।

अक़ीदा : अल्लाह ﷻ जो चाहे जैसा चाहे करे। किसी का उस पर कोई दबाव नहीं और न कोई उसके इरादे से उसको रोकने वाला है, बंदों के अच्छे काम से ख़ुश होता है और बुरे काम से नाराज़ होता है।

अक़ीदा : हक़ीक़तन रोज़ी पहुंचाने वाला, औलाद अता फ़रमाने वाला, नीज़ हर ज़रूरत पूरी करने वाला वही है, फ़रिश्ते वग़ैरह वसीला और वास्ता हैं।

अक़ीदा : ख़ुदा तआला के लिये हर ऐब नामुमकिन है बल्कि मुहाल है। जैसे झूठ, जहालत, भूल, जुल्म वग़ैरह तमाम बुराईयां ख़ुदा के लिये मुहाल हैं। और जो यह माने कि ख़ुदा झूठ बोल सकता है, लेकिन बोलता नहीं, ऐसा अक़ीदा रखने वाला गुमराह है क्योंकि गोया वह मान रहा है कि ख़ुदा ऐबी तो है लेकिन अपना ऐब (झूठ) छुपाये हुए है।

★ हुज़ूर ﷺ के मुताल्लिक़ अक़ीदे ★

रसूल : रसूल के मायने हैं ख़ुदा तआला के यहां से बंदों के पास ख़ुदा का पैग़ाम लाने वाला है।

नबी : वह आदमी है जिसके पास वही यानी ख़ुदाए तआला का पैग़ाम है लोगों को ख़ुदाए तआला का रास्ता बताने के लिये।

अक़ीदा : कई नबी और कई फ़रिश्ते रसूल हैं, सब नबी मर्द ही थे न कोई जिन्न नबी हुआ न कोई औरत नबी हुई।

अक़ीदा : नबी और रसूल महज़ अल्लाह ﷻ की मेहरबानी से होते हैं, उसमें आदमी की कोशिश नहीं चलती, अलबत्ता अल्लाह ﷻ नबी या रसूल उसी को बनाता है जिसको वह उस लायक़ पैदा फ़रमाता है।

अक़ीदा : जो नबी या रसूल होते हैं वह पहले से ही तमाम बुरी बातों से

दूर रहते हैं, इनमें ऐसी कोई बात नहीं होती, जिसकी वजह से लोग उनसे नफ़रत करें।

अक़ीदा : सब नबी और तमाम फ़रिश्ते मासूम होते हैं यानी इनसे कोई गुनाह ही नहीं हो सकता।

अक़ीदा : अल्लाह का पैग़ाम बंदो तक पहुंचाने में उससे कोई भूल चूक नहीं हो सकती, उन से भूल चूक मुहाल है।

अक़ीदा : नबी और फ़रिश्ते के अलावा किसी इमाम और वली को मासूम मानना गुमराही और बदमज़हबी है। अगरचे इमाम और वलियों से भी गुनाह नहीं होता। लेकिन कभी कोई गुनाह हो जाये तो शरअन मुहाल भी नहीं।

अक़ीदा : अल्लाह की तमाम मख़लूक़ में नबी सबसे अफ़ज़ल होते हैं।

अक़ीदा : वली कितने ही बड़े रुत्बे वाला क्यों न हो, किसी नबी के बराबर नहीं हो सकता, जो कोई किसी भी बंदे को किसी नबी से अफ़ज़ल, या बराबर बताये वह गुमराह बदमज़हब है।

अक़ीदा : नबी की ताज़ीम फ़र्ज़े ऐन बल्कि तमाम फ़राइज़ की असल है, किसी नबी की अदना सी तौहीन कुफ़्र है।

अक़ीदा : सब नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी अपनी क़ब्रों में दुनियावी ज़िन्दगी की तरह आज भी ज़िन्दा हैं। अल्लाह तआला का वादा **كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ** के पूरा होने की ख़ातिर एक लम्हा के लिये इन्हें मौत आई। फिर अल्लाह तआला ने अपनी कुदरते कामिला से उन्हें ज़िन्दा फ़रमाया। उनकी ज़िन्दगी शहीदों की ज़िन्दगी से बहुत बढ़ कर है।

अक़ीदा : अल्लाह तआला ने अपने नबियों عَلَيْهِمُ السَّلَام को ग़ैब की बातें भी बताई। नबियों को यह इल्मे ग़ैब अल्लाह तआला के दिये से है। नबियों का इल्मे ग़ैब अताई है और अल्लाह का इल्म ग़ैब चूंकि किसी का दिया हुआ नहीं है बल्कि उसे ख़ुद हासिल है लिहाज़ा इसका इल्म ज़ाती है। इसलिये अंबिया किराम के लिये इल्म ग़ैब मानना शिर्क नहीं बल्कि ईमान है। जैसा कि बहुत सी आयतों और अहादीस से साबित है।

अक़ीदा : अल्लाह ﷻ ने हमारे नबी करीम ﷺ को तमाम कायनात से

पहले अपने नूर की तजल्ली से पैदा फ़रमाया। अंबिया, फ़रिश्ते, ज़मीन व आसमान, अर्श व कुरसी, तमाम जहान को हुज़ूर ﷺ के नूर की झलक से पैदा फ़रमाया। अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने अपनी ज़ात के बाद हर ख़ूबी और कमाल का जामेअ हमारे प्यारे नबी करीम ﷺ को बनाया। अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने अपने तमाम ख़ज़ानों की कुंजियां हुज़ूर ﷺ को अता फ़र्मा दीं। दीन व दुनिया की तमाम नेअमतों का देने वाला ख़ुदा है और बांटने वाले हुज़ूर ﷺ हैं।

अक़ीदा : अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने हुज़ूर ﷺ की बेदारी की हालत में मेअराज अता फ़रमाई, यानी अर्श पर बुलाया और अपना दीदार आंखों से कराया। अपना कलाम सुनाया, जन्नत, दौज़ख़, अर्श, कुर्सी वग़ैरह तमाम चीज़ों की सैर कराई। क़यामत के दिन आप ही सबसे पहले उम्मत की शफ़ाअत फ़रमायेंगे। बंदों के गुनाह माफ़ करायेंगे। दर्जे बुलंद करायेंगे। इनके अलावा और बहुत सी ख़ुसूसियतें हैं जिनकी तफ़सील उलेमा अहले सुन्नत की किताबों में मौजूद हैं।

अक़ीदा : अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने अपने बंदों की हिदायत के लिये अपने नबियों पर मुख़्तलिफ़ किताबें और सहीफ़े नाज़िल फ़रमाये। हज़रत मूसा عليه السلام पर तौरैत और हज़रत दाऊद عليه السلام पर ज़बूर, और हज़रत ईसा عليه السلام पर इंजील, और दीगर नबियों पर दूसरी किताबें सहीफ़े नाज़िल फ़रमाये। इन नबियों की उम्मतों ने इन किताबों को घटा, या बढ़ा दिया और अल्लाह तआला के एहकाम को बदल डाला। तब अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने हमारे प्यारे आक़ा ﷺ पर कुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया। कुरआन पाक में हर चीज़ का इल्म है, कुरआन पाक इब्तेदा इस्लाम से आज तक वैसा ही है जैसा नाज़िल हुवा था और हमेशा वैसा ही रहेगा। इस कुरआन पाक पर ईमान लाना हर शख़्स पर लाज़िम है। अब न कोई नबी आने वाले हैं और न कोई किताब आने वाली है, जो इसके ख़िलाफ़ अक़ीदा रखे वह मोमिन नहीं।

अक़ीदा : फ़रिश्ते अल्लाह की नूरी मख़लूक़ हैं। अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने इन्हें यह ताक़त दी है कि जो चाहें बन जायें। फ़रिश्ते अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ के हुक्म के ख़िलाफ़ कुछ नहीं करते, न जानबूझ कर, न भूल कर। इसलिये के फ़रिश्ते मासूम होते हैं। अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने बहुत से काम फ़रिश्तों के सुपुर्द फ़रमाया है। कोई फ़रिश्ता जान निकालने पर, कोई पानी बरसाने पर, कोई मां के पेट में

बच्चा की सूरत बनाने पर और कोई बंदों के नामए आमाल लिखने पर मुक़र्रर है। वग़ैरह।

अक़ीदा : फ़रिश्ते न मर्द हैं और न औरत बल्कि वह नूरी जिस्म की मख़लूक़ हैं। फ़रिश्तों का इंकार करना, या इनसे ग़लती होने का इमकान मानना भी गुमराही है। और ऐसा शख़्स मोमिन नहीं।

अक़ीदा : मौत का आना भी हक़ है। हर शख़्स की उम्र मुक़र्रर है, न इससे घट सकती है और न बढ़ सकती है। जब ज़िन्दगी का वक़्त पूरा हो जाता है तो हज़रत इज़्राईल عليه السلام (जो मौत के फ़रिश्ते हैं) आते हैं और बंदे की रूह निकाल कर ले जाते हैं। लेकिन रूह बदन से निकल कर मिटती नहीं बल्कि आलमे बरज़ख़ में रहती है। ईमान व अमल के एतेबार से रूह के लिये अलग अलग जगह मुक़र्रर है, क़यामत आने तक वहीं रहेगी। बहरहाल रूह मिटती नहीं है और जिस हाल में भी हो अपने बदन से एक तरह का लगाव रखती है। बदन की तकलीफ़ से उसे भी तकलीफ़ होती है और बदन के आराम से रूह भी आराम पाती है। और जो कोई क़ब्र पर आये उसे देखती पहचानती और इसकी बात भी सुनती है। मुसलमान की निसबत से तो हदीस शरीफ़ में आया है कि जब मुसलमान मर जाता है तो उसकी राह खोल दी जाती है। जहाँ चाहे जाये। हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस दहेलवी رحمة الله عليه फ़रमाते हैं कि रूह के लिये कोई जगह दूर या नज़दीक नहीं बल्कि सब बराबर है।

★ मुर्दे से सवाल व जवाब ★

अक़ीदा : मुन्कर नकीर यह दो फ़रिश्ते हैं जो मुर्दा से बड़ी कड़क आवाज़ में सख़्ती से झिड़कते हुए तीन सवालात करते हैं। :–

1. مَــنْ رَّبُّكَ ؟ तेरा रब कौन है ? **2. مَــا دِيْـنُكَ ؟** तेरा दीन क्या है ? **3. مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِىْ شَانِ هٰذَا الرَّجُلِ ؟** इनके बारे में तू क्या कहता था? मुर्दा अगर मुसलमान मरा है तो पहले सवाल के जवाब में कहेगा, "**رَبِّىَ اللّٰهُ**" मेरा रब अल्लाह है। और दूसरे के सवाल के जवाब में कहेगा "**دِيْنِىَ الْاِسْلَامُ**" मेरा दीन इस्लाम है। और तीसरे सवाल के जवाब मे कहेगा "**هُوَ رَسُوْلُ اللّٰهِ** ﷺ" यह अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ के रसूल हैं अल्लाह की तरफ़ से इन पर रहमत और सलाम

नाज़िल हो। जब मोमिन मुर्दा हर सवाल का जवाब सही देगा तो अब उसके लिये फ़रिश्ते हुक्मे इलाही से जन्नत का मुकम्मल इंतेज़ाम करेंगे जिस में वह क़यामत तक रहेगा। और अगर मुर्दा काफ़िर है तो सवालात के जवाब न दे सकेगा और कहेगा "هَـاهْ هَـاهْ لَا اَدْرِىْ" यानी अफ़सोस ! अफ़सोस ! मुझे तो कुछ मालूम नहीं। अब फ़रिश्ते इसके लिये अज़ाब देने पर मुसल्लत होंगे और क़यामत तक उसे अज़ाब दिया जाता रहेगा।

अक़ीदा : सवाब व अज़ाब मुर्दा के बदन और रूह दोनों पर होगा, मुर्दा अगर दफ़न नहीं किया गया बल्कि जला दिया गया, या कहीं पड़ा रह गया या फेंक दिया गया गर्ज़ कि कहीं हो इससे वही सवाल होगा, यहां तक कि जिसे शेर खा गया तो शेर के पेट में इससे सवाल होगा। और अज़ाब या सवाब भी वहीं होगा।

अक़ीदा : क़ब्र में आराम या तकलीफ़ का होना हक़ है क़ब्र के अज़ाब और सवाब का मुन्किर गुमराह है।

अक़ीदा : अंबिया عَلَيْهِمُ السَّلَام से क़ब्र के सवालात नहीं होते बल्कि बाज़ उम्मतियों से भी क़ब्र के सवालात न होंगे। जैसे जुम्आ और रमज़ान में इंतक़ाल करने वाले मुसलमान।

मअसला : नबी, वली, आलिमे दीन, शहीद, हाफ़िज़े कुरआन जो कुरआन पर अमल भी करता हो और वह बंदा जिसने कभी गुनाह न किया हो और वह बंदा जो हर वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ता हो, इन तमाम के बदन को मिट्टी नहीं खा सकती। जो शख़्स अंबिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को यह कहे कि मरकर मिट्टी में मिल गये वह शख़्स बेदीन गुमराह और मुर्तकिबे तौहीन है।

★ क़यामत आने का हाल और उसकी निशानियां ★

अक़ीदा : एक दिन दुन्या और उसकी हर चीज़ फ़ना हो जायेगी। अल्लाह के सिवा कुछ बाक़ी न रहेगा, इसी को क़यामत कहते हैं। क़यामत आने से पहले इसकी निशानियां ज़ाहिर होंगी। जिनमें से कुछ इस तरह हैं।

★ दुनिया से इल्मे दीन उठ जायेगा यानी उलेमाए हक़ उठा लिये जायेंगे।

★ जहालत की कसरत होगी।

★ शराब और ज़िना की कसरत होगीं

★ मर्द अपनी औरत के कहने पर होगा और मां बाप से जुदा रहेगा।

★ गाने बजाने की कसरत होगी।

★ पहले के लोगों पर लोग लानत करेंगे, उन को बुरा कहेंगे।

★ बदकार और ना अहल लोग सरदार बनाये जायेंगे।

★ दीन पर क़ायम रहना इतना कठिन होगा जैसे मुट्ठी में अंगार लेना।

★ वक़्त में बरकत न होगी यानी वक़्त बहुत जल्द जल्द गुज़रेगा।

★ दरिन्दे, जानवर आदमी से बात करेंगे।

★ सूरज पश्चिम से निकलेगा।

और इस निशानी के ज़ाहिर होते ही तौबा का दरवाज़ा बंद हो जायेगा। उस वक़्त इस्लाम लाना क़बूल न होगा।

الله اكبر! इन अलामात के सिवा बड़ा दज्जाल भी आयेगा और इस दज्जाल के अलावा तीस दज्जाल और भी होंगे। जो सब नबी होने का दावा करेंगे। हालांकि नुबुव्वत का सिलसिला ख़त्म हो चुका है। हमारे नबी मुहम्मद ﷺ के बाद क़यामत तक कोई नबी न होगा। उन दज्जालों में बहुत से गुज़र चुके हैं और जो बाक़ी हैं वह ज़रूर ज़ाहिर होंगे। (نَعُوْذُبِاللهِ مِنْهُمْ)

الصلوٰۃ والسلام علیك یارسول الله ﷺ

وعلیٰ آلك واصحابك یا حبیب الله ﷺ

नमाज़ का बयान

इस्लाम की बुनियाद पांच अरकान पर है। इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह جل جلاله के रसूल हैं। नमाज़ क़ायम करना, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखना, ज़कात अदा करना और हज्जे बैतुलल्लाह करना।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह جل جلاله और उसके हबीब ﷺ पर ईमान लाने के बाद एक मोमिन पर सबसे अहम इबादत नमाज़ है। आइये नमाज़ के मुताल्लिक़ कुरआन मुक़द्दस में अल्लाह جل جلاله के वह इरशादात पढ़ें जिनको पढ़कर हमारे दिलों में नमाज़ की अज़्मत व मुहब्बत और उसकी अदायगी का जज़्बा पैदा हो। कुरआन मुक़द्दस में बे शुमार मक़ामात पर नमाज़ के क़ायम करने का हुक्म दिया गया है। चुनांचे सूरए बक़रह् की इब्तेदाई आयत में अल्लाह جل جلاله ने इरशाद फ़रमाया :–

ذٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيْهِ، هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ الَّذِيْنَ يُومِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُوْنَ

वह बुलंद रुत्बा किताब (कुरआन) कोई शक की जगह नहीं। इसमें हिदायत है डर वालों को वह जो बिन देखे ईमान लाऐं और नमाज़ क़ायम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठायें। *(सूरए बकरह, रुकूअ–1)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! कुरआने मुकद्दस जो परहेज़गारों के लिये हिदायत है इसी कुरआने मुक़द्दस ने परहेज़गारों की सिफ़ात भी ब्यान फ़रमा दी है। जिसमें सबसे अहम सिफ़त नमाज़ कायम करना है। याद रखें

कि नमाज़ अफ़ज़लुल इबादात है और कोई चाहे कितना ही परहेज़गार होने का दावा करता हो अगर वह नमाज़ का पाबंद नहीं तो वह हरगिज़ हरगिज़ मुत्तकी, परहेज़गार और अल्लाह का वली नहीं हो सकता। जितने भी अंबिया علیہم السلام नीज़ औलियाए किराम तशरीफ़ लाये वह सब नमाज़ के पाबंद रहे और नमाज़ की दावत भी देते रहे। जैसा कि कुरआने मुक़द्दस की दूसरी आयतों से वाज़ेह है। आज नमाज़ ही के मामले में यह क़ौम काहिल (सुस्त) बन गयी है। काश! क़ौमे मुस्लिम कुरआन व हदीस का मुताला करे तो इन्हें मालूम हो कि नमाज़ के अदा करने पर अल्लाह جل جلاله की जानिब से क्या इनाम है और नमाज़ के छोड़ने देने पर कैसी सख़्त सज़ायें हैं? अल्लाह جل جلاله हम सबको नमाज़ क़ायम रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ हज़रत इब्राहीम علیہ السلام की दुआ ★

رَبِّ اجْعَلْنِىْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَاءِ ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ायम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब! और हमारी दुआ सुन ले। *(पारा–13, रुकूअ–18)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा से सबक़ मिलता है कि अंबिया किराम علیہم السلام नमाज़ के क़ायम रखने की दुआ अपने लिये और अपनी औलाद के लिये करते थे। वह हज़रत इब्राहीम علیہ السلام जो मअमारे काबा में हैं और ख़लीलुल्लाह भी हैं और हज जैसे अहम फ़र्ज़ की अदायगी में मर्कज़ी किरदार के मालिक हैं। वह नमाज़ के अदा करने से मुताल्लिक़ सिर्फ़ दुआ ही नहीं करते बल्कि उसकी कुबूलियत की भी दुआ करते हैं। इससे समझ में आता है कि हज़रत ख़लील علیہ السلام की निगाह में नमाज़ की अहमियत क्या थी ? आज हम अपने लिये और अपनी औलाद के लिये सिर्फ़ दुनियावी फ़वाइद और ऐश व इशरत ही की दुआ करते हैं। काश ! हम अंबियाए किराम علیہم السلام के नक़्शे क़दम पर चलते हुए नमाज़ क़ायम करने की जद्दो जेहद करते और अपनी औलाद को भी नमाज़ का पाबंद बनाते। अल्लाह عزوجل हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ बाप की बेटे को नसीहत ★

कुरआन पाक में है :–

"يٰبُنَیَّ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰی مَا اَصَابَكَ"

(पारा–21, रुकूअ–11)

ऐ मेरे बेटे ! नमाज़ बरपा रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मना कर और जो उफ़ताद तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर। *(कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा से पता चलता है कि एक बाप की नसीहत अपनी औलाद के सिलसिले में क्या होनी चाहिये? हज़रत लुक़मान عليه السلام जो अल्लाह के बुरगुज़ीदा बंदे हैं जिनके अक़वाल हिकमत व दानाई से भरे हुए हैं इन्हीं का एक क़ौल अल्लाह ﷻ ने कुरआने पाक में ब्यान फ़रमाया। वह क़ौल क्या है? वह क़ौल यही तो है कि, ऐ मेरे बेटे ! नमाज़ क़ायम कर और अच्छी बातों का हुक्म दे। इससे यह समझ में आता है कि एक बाप को अपनी औलाद के लिये दुनियावी ज़रूरतों के साथ साथ दीनी उमूर का भी अहम ख़्याल रखना चाहिये। आइये ! हम अहद करें कि हम ख़ुद भी नमाज़ के पाबंद रहेंगे और अपनी औलाद को भी पाबंदे नमाज़ बनाने की कोशिश करेंगे। अल्लाह हमें हमारी औलाद को और तमाम अहले ख़ाना को नमाज़ की पाबंदी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन। **آمين بجاه النبی الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم**

★ नमाज़ अल्लाह की याद का ज़रिया ★

अल्लाह ने कुरआन मुक़द्दस में इरशाद फ़रमाया :–

"اِنَّنِیْٓ اَنَا اللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکْرِیْ" *(पारा–16, रुकूअ–10)*

बेशक ! मैं ही हूं अल्लाह के मेरे सिवा कोई माबूद नहीं तो मेरी बंदगी और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ायम रख। *(कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह ﷻ की याद का ज़रिया तो कायनात का ज़र्रा ज़र्रा है। बंदा जिस तरफ़ निगाह डाले उसीकी जल्वागरी है। गर्ज़ यह है कि इसकी बेशुमार नेअमतें हैं जिनको देखकर बंदा ख़ुदा को याद कर सकता है। लेकिन ग़ौर फ़रमाइये कि मज़कूरा आयते करीमा में

अल्लाह ﷻ ने अपनी याद बंदो के दिल में क़ायम रखने के लिये नमाज़ का हुक्म दिया। चुनांचे वह फ़रमाता है, "और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ायम रख।" इससे पता चला कि नमाज़ अल्लाह عزوجل की याद का बेहतरीन ज़रिया हैं क्योंकि बंदे का पूरा वजूद हालते नमाज़ में ख़ालिक़े क़ायनात के सामने झुका होता है। इसकी ज़बान ज़िक्रे इलाही से तर होती है, इसके कान कुरआने मुक़द्दस सुन रहे होते हैं, इसकी निगाह सज्दे की जगह होती है और दिल अनवारे तजल्लियाते रब्बानी का मर्कज़ बन जाता है। गर्ज़ यह कि एक बंदा जब नमाज़ में होता है तो गोया वह अल्लाह ﷻ की याद में मसरूफ़ होता है। सारी दुन्या से बे नियाज़ होकर बंदा अपने ख़ालिक़ का नियाज़ बंद बन जाता है। अल्लाह नमाज़ के ज़रिये अपनी याद करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمين بجاه النبی الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم

★ साहबे इक्तेदार की ज़िम्मेदारी ★

अल्लाह ﷻ कुरआने अज़ीम में बंदों की ज़िम्मेदारियां ब्यान करते हुए इरशाद फ़रमाता है :–

اَلَّذِیْنَ اِنْ مَّکَّنّٰھُمْ فِی الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوۃَ وَ اٰتَوُا الزَّکٰوۃَ وَ اَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَھَوْا عَنِ الْمُنْکَرِ

तजुमा :– वह लोग कि अगर हमें इन्हें ज़मीन में क़ाबू दें तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें। *(पारा–17, रुकूअ–13)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा में अल्लाह عزوجل ने अरबाबे इक्तेदार की ज़िम्मेदारियों को ब्यान फ़रमाया है कि साहिबे इक़्तेदार की सबसे अहम ज़िम्मेदारी यह है कि वह सबसे पहले इक़ामते सलात का निज़ाम क़ायम रखें। इसलिये कि नमाज़ एक ऐसी इबादत है जिसमें हर क़िसम की तर्बियत मौजूद है। वक़्त की पाबंदी, सफ़बंदी, सफ़ाई, इत्तेबा और पैरवी वग़ैरह। नमाज़ के ज़रिये जहां रूहानी सुकून मिलता है वहीं उसके ज़रिये अच्छी वर्ज़िश भी हो जाती है। अल्लाह ﷻ हम सबको इक़ामते सलात का जज़्बा अता फ़रमाये। **آمين بجاه النبی الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم**

★ नमाज़ तमाम बुराईयों से रोकती है ★

रब्बे क़दीर عزوجل ने एक और मक़ाम पर नमाज़ के फ़वायद ब्यान करते हुए इरशाद फ़रमाया :—

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ *(पारा—21, रुकूअ—1)*

"और नमाज़ क़ायम फ़रमाओ ! बेशक ! नमाज़ मना करती है बेहयाई और बुरी बात से।"

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयत में मौजूदा दौर की परेशानियों का हल मौजूद है आज हम साहिबे ईमान को इस बात की फ़िक्र है कि बेहयाई और बुराईयों के सैलाब से कैसे बचा और बचाया जाये। तो सुनो! रब्बे क़दीर عزوجل ने हमें दिन व रात में पांच नमाज़ों का हुक्म दिया, नमाज़ अदा करने वाला बंदा दिन में पांच मर्तबा अपने मौला جل جلاله की बारगाह में हाज़िरी देता है और उसे यह फ़िक्र लाहिक़ रहती है कि अगर मैं अपने दामन को गुनाहों से आलूदा करूंगा तो रब्बे क़दीर की बारगाह में कौन सा मुंह लेकर हाज़िर होउंगा। बस इस ज़िन्दा एहसास की बदौलत बहुत से गुनाहों और बेहयाई के कामों नीज़ अपने मौला جل جلاله की नाराज़गी से बच जाता है। रब्बे क़दीर عزوجل हम सबको नमाज़ क़ायम करने और तमाम बुराईयों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आपने कुरआने मुक़द्दस की चंद आयात से नमाज़ की अहमियत और अज़मत का अंदाज़ा बख़ूबी लगा लिया होगा और अब आइये रसूले गिरामी वक़ार ﷺ के फ़रमूदात को पढ़ें और नमाज़ की अहमियत का अंदाज़ा लगायें।

★ जन्नती होने की बशारत ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक एअराबी (देहाती) आया उसने कहा, मुझे ऐसा अमल बताइये कि जब मैं उसे कर लूं तो जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। आप ﷺ ने फ़रमाया, अल्लाह की इबादत कर, उसके साथ किसी को शरीक न ठहरा, फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ और फ़र्ज ज़कात अदा कर, रमज़ान के रोज़े रख। उसने कहा, उस ज़ात की

क़सम ! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, न मैं इस (अमल) पर कुछ ज़्यादती करूंगा न इससे कुछ कम करूंगा। जब वापस हुआ तो नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, जिस शख़्स को यह पसंद हो कि वह एक जन्नती आदमी को देखे तो उस (एअराबी) की तरफ़ देख ले। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूर हदीस शरीफ़ में कई आमाल का ज़िक्र किया गया, लेकिन मौज़ूअ चूंकि नमाज़ का है इसलिये नमाज़ के हवाले से कुछ अर्ज़ करता हूं। मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! नमाज़ क़ायम करने वाला इतना अज़ीम है कि ताजदारे कायनात ﷺ ने ऐसे शख़्स को जन्नती फ़रमाया है। जिस किसी को ख़्वाहिशे जन्नत हो उसे चाहिये कि वह नमाज़ की पाबंदी करे। वह अपने आपको तर्के नमाज़ से बचाये। रोज़े का पाबंद बने, ज़कात की अदायगी में कोताही न करे। इंशाअल्लाह ! इन आमाल का पाबंद दुनिया ही में जन्नत की बशारत का मुस्तहिक़ बन जायेगा। अल्लाह हम सबको मज़कूरा आमाल की पाबंदी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ हूरें नमाज़ी का इस्तिक़बाल करें ★

हज़रत अबू उमामा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया है कि बंदा जब नमाज़ के लिये खड़ा होता है तो उसके लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और इसके और अल्लाह के दर्मियान जो हिजाब है वह उठा दिया जाता है और हूरें इसका इस्तिक़बाल करती हैं जब तक कि नमाज़ी नाक न साफ़ करे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह ने नमाज़ का मक़ाम कितना बुलंद फ़रमाया है कि इधर बंदे नमाज़ की इब्तेदा करते हैं उधर जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। और जिस मौला جل جلاله की बारगाह में खड़े होकर बंदगी करता है वही मौला جل جلاله अपने बंदे के लिये हिजाब उठा लेता है! कितना बड़ा एअज़ाज़ है नमाज़ी के लिये! कि नमाज़ी हालते नमाज़ में अपने मौला جل جلاله को बे हिजाब देख सकता है। बशर्त यह कि वह नज़र उसे मैयस्सर हो जाये जो रब عزوجل के दीदार के लिये ज़रूरी है। हमें चाहिये कि हम नमाज़ का एहतेमाम करें और उसकी पाबंदी की भरपूर कोशिश करें। अल्लाह جل جلاله

अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़े व तुफ़ैल हम सबको नमाज़ का पाबंद बनाये। आमीन।

★ नमाज़ और गुनाहों की मग्फ़िरत ★

हज़रत अबू मुस्लिम رضی اللہ عنہ कहते हैं कि मैं हज़रत अबू उमामा رضی اللہ عنہ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, वह मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे। मैंने अर्ज़ किया कि मुझसे एक शख़्स ने आपकी तरफ़ से यह हदीस नक़ल की है कि आपने नबी अकरम ﷺ से यह इरशाद सुना है, जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करे और फिर फ़र्ज नमाज़ पढ़े तो हक़ तआला उस दिन वह गुनाह जो चलने से हुए हों और वह गुनाह जिनको उसके हाथों ने किया हो और वह गुनाह जो उसके कानों से सादिर हुए हों और वह गुनाह जिनको उसकी आंखों ने किया हो, वह गुनाह जो उसके दिल में पैदा हुए हों सब माफ़ फ़रमा देता है। हज़रत अबू उमामा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया, मैंने यह मज़मून नबी करीम ﷺ से कई दफ़ा सुना है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम बशर हैं और हमसे गुनाह होना मुमकिन है। और आज के इस पुरफ़ितन माहोल में जहां गुनाहों का सैलाब पूरे मुआशरे को अपनी लपेट में ले चुका है, जहां राह चलने से लेकर किसी क़िसम की तक़रीब में शरीक होने तक आवारगी, बदतमीज़ी, बेहयाई सब कुछ मौजूद है, ऐसे में गुनाहों से दामन को बचाना निहायत ही मुश्किल है। अल्लाह عزوجل करीम है अपने बंदों की कमज़ोरी को जानता हैं लिहाज़ा फ़रमाया : दिन में पांच मर्तबा मेरी बारगाह में हाज़िर हो जाओ, मैं करीम हूं। तुम आजिज़ी से बंदगी बजा लाओ, मैं ताक़त वाला रब तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करूंगा।

ख़ुदारा ! ख़ुदारा ! मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अपने रब की बारगाह में सर झुकाने में कोताही न करो। पाबंदी से नमाज़ पढ़ो, ज़रुर अल्लाह عزوجل करम फ़रमायेगा। परवर्दिगारे आलम हम सबको नमाज़ की पाबंदी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ गुनाहों की माफ़ी ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद رضی اللہ عنہما फ़रमाते हैं कि एक शख़्स

नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। बोला मैंने मदीना के किनारे एक औरत को गले लगा लिया और सोहबत की हद तक नहीं पहुंचा। मैं हाज़िर हूं, मेरे बारे में जो चाहें फ़ैसला करें। हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि अल्लाह ने तेरी पर्दा पोशी की थी तू भी अपनी पर्दा पोशी करता। रावी फ़रमाते हैं कि नबी अकरम ﷺ ने इसका कुछ जवाब न दिया वह शख़्स खड़ा होकर चल दिया। उसके पीछे हुज़ूर ﷺ ने एक आदमी को भेजकर उसको बुलाया और यह आयत तिलावत फ़रमाई :—

اَقِمِ الصَّلٰوۃَ طَرَفَیِ النَّھَارِ وَزُلَفاً مِنَ الَّیْلِ اِنَّ الْحَسَنَاتِ یُذْھِبْنَ السَّیِّآتِ ذٰلِکَ ذِکْرٰی لِلذّٰاکِرِیْن

"नमाज़ क़ायम करो दिन के किनारों और रात की साअतों में, यक़ीनन ! नेकियां गुनाह मिटा देती हैं, यह मानने वालों के लिये नसीहत है।" *(सूरए हूद, आयत—118)*

क़ौम में से एक शख़्स ने अर्ज़ किया, या नबी ﷺ क्या यह इसी के लिये है ? फ़रमाया, सारे लोगों के लिये है। *(मुस्लिम शरीफ़)*

मेरे प्यारे आका ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से यह बात समझ में आई कि नमाज़ के सदक़े बड़े से बड़े गुनाह को भी अल्लाह माफ़ फ़रमा देता है। लेकिन आज नमाज़ के हवाले से इस उम्मत का हाल देखा जाये तो (العیاذ باللہ) बे पनाह सुस्ती। ख़ुदारा ! नमाज़ के हवाले से सुस्ती न किया करो। बल्कि भरपूर चुस्ती का मुज़ाहिरा किया करो। और नमाज़ के ज़रिये अपने गुनाहों को मिटाते रहो। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ आग बुझाओ ! ★

हुज़ूर अक़दस ﷺ का इरशाद है कि नमाज़ का वक़्त आता है तो एक फ़रिश्ता ऐलान करता है कि ऐ आदम की औलाद! उठो और जहन्नम की आग को बुझाओ जिसको तुमने (गुनाहों की बदौलत) अपने ऊपर जलाना शुरू कर दिया है। चुनांचे (दीनदार लोग) उठते हैं, वुज़ू करते हैं जुहर की नमाज़ पढ़ते हैं जिसकी वजह से इनके सुबह से जुहर तक के गुनाहों की

मग़्फिरत कर दी जाती है। इसी तरह फिर अस्र के वक़्त फिर मग़्रिब के वक़्त फिर इशा के वक़्त। (गर्ज़ कि हर नमाज़ के बाद यही सूरत होती है) ईशा के बाद लोग सोने में मशगूल हो जाते हैं। उसके बाद बाज़ लोग बुराइयों (ज़िनाकारी, बदकारी, चोरी वग़ैरह) की तरफ़ चल देते हैं और बाज़ लोग भलाईयों (नमाज़, वज़ीफ़ा, ज़िक्र वग़ैरह) की तरफ़ चल देते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जहन्नम के दहकते हुए शोले इतने होलनाक हैं कि तसव्वुर ही से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अगर जहन्नम की आग को सूई की नोक के बराबर भी दुनिया में डाल दिया जाये तो पूरी दुनिया जल कर राख हो जायेगी।

बंदा जब गुनाह करता है तो गोया वह अपने लिये जहन्नम की आग जलाता है रहमते आलम ﷺ के फ़रमान की रौशनी में जुहर की नमाज़ पढ़ने वाले के जुहर तक के गुनाह अल्लाह माफ़ फ़रमा देता है। इसी तरह हर वक़्त की नमाज़ पिछले गुनाहों को माफ़ कराने का ज़रिया बन जाती है। क्या हम गुनाहों की सज़ा को बर्दाश्त करने की ताक़त रखते हैं? नहीं और यक़ीनन नहीं ! तो सिद्क़ दिल से तौबा भी करें और एक वक़्त की नमाज़ भी क़ज़ा न करें। इंशाअल्लाह हमारी नमाज़ हमारे लिये मग्फ़िरत का सबब बन जायेगी। अल्लाह हम सबको नमाज़ी बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ नमाज़ियों के लिये फ़रिश्तों का ख़ैर मक़दम ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

तुम में रात और दिन को फ़रिश्ते बारी बारी आते हैं और वह फ़ज्र और अस्र की नमाज़ में जमा होते हैं। फिर चढ़ते हैं वह फ़रिश्ते जिन्होंने तुम में रात गुज़ारी होती है। उनसे उन का रब पूछता है (हालांकि वह उनका ख़ूब जानता है), किस तरह छोड़ा है तुमने मेरे बंदों को? वह कहते हैं, हमने उनको इस हाल में छोड़ा है कि वह नमाज़ पढ़ रहे थे और हम उनके पास गये तो वह नमाज़ पढ़ रहे थे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस हदीस शरीफ़ से यह बात समझ में आती है कि फ़रिश्तों को ड्यूटी तबदील होने का वक़्त फ़ज्र और

अस्र का वक़्त है। अगर बंदा फ़ज्र और अस्र की नमाज़ अदा करता है तो मासूम फ़रिश्ते रब के हुज़ूर उस बंदे का ज़िक्र नमाज़ी की हैसियत से करते हैं। तो अल्लाह तआला अपने बंदे के लिये सर बसजूद होने का ज़िक्र सुनकर ख़ुश होता है। और जब वह ख़ुश हो जाये तो यक़ीनन अपनी रहमतों से मालामाल कर देगा। फ़ज्र और अस्र का वक़्त जो निहायत ही अहम है। फ़ज्र का वक़्त नींद का ग़ल्बा और अस्र के वक़्त इंसान तिजारत में मसरूफ़ होता है जिसकी वजह से नमाज़ छोड़ने का ख़दशा रहता है, लेकिन अगर बंदा नमाज़ अदा कर लेता है तो अल्लाह राज़ी हो जाता है। अल्लाह हम तमाम को हर नमाज़ और बिल ख़ुसूस फ़ज्र और अस्र की नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ नमाज़ से गुनाहों के ख़त्म होने की मिसाल ★

हज़रत अबू ज़र رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी अकरम ﷺ मौसमे सरमा में बाहर निकले और दरख़्तों के पत्ते झड़ रहे थे, आपने एक दरख़्त की दो शाख़ें पकड़कर उन्हें हिलाया। इनसे पत्ते झड़ने लगे। आपने फ़रमाया। ऐ अबू ज़र ! मैंने कहा, हाज़िर हूं ऐ अल्लाह के रसूल ! ﷺ आपने फ़रमाया, मुसलमान बंदा अगर नमाज़ पढ़ता है, अल्लाह की रज़ामंदी का इरादा करता है तो जिस तरह दरख़्त से पत्ते गिर रहे हैं इसी तरह उससे गुनाह गिर जाते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ताजदारे कायनात ﷺ ने कितनी बेहतरीन मिसाल ब्यान फ़रमाई। अगर कोई हस्सास है और उसे गुनाहों की ख़लिश दिल में महसूस होती है, और यक़ीनन जो मोमिन होगा उसे गुनाहों की चुभन दिल में महसूस होगी ही। तो उसे तसल्ली दी जा रही है कि अगर इक़ामते सलात का ख़्याल रखते हुए पंजवक़्ता नमाज़ की पाबंदी करे तो अल्लाह उसके गुनाहों को इस तरह गिरा देता है जिस तरह दरख़्त की शाखों से पत्ते झड़ जाते हैं। अल्लाह हम सबको इक़ामते सलात की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ नमाज़ी के लिये नमाज़ की दुआ ★

हुज़ूर सैय्यदे आलम ﷺ ने फ़रमाया, जब बंदा अव्वल वक़्त में नमाज़

पढ़ता है तो उसकी नमाज़ आसमानों तक जाती है और वह नूरानी शक्ल में होती है यहां तक कि अर्श इलाही तक जा पहुंचती है और नमाज़ी के लिये क़यामत तक दुआ करती रहती है कि अल्लाह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाये जैसे तूने मेरी हिफ़ाज़त की है। और जब आदमी बे वक़्त पढ़ता है तो उसकी नमाज़ सियाह शक्ल में आसमान की तरफ़ चढ़ती है, जब वह आसमान तक पहुंचती है तो उसे बोसीदा कपड़े की तरह लपेट कर पढ़ने वाले के मुंह पर मारा जाता है। *(बयहकी)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आप अंदाज़ा लगायें कि वक़्त पर नमाज़ अदा करने की बर्कत कितनी है। और बे वक़्त नमाज़ अदा करने का अज़ाब क्या है? आज बे वक़्त और वक़्त पर तो दूर की बात है अक्सर अवाम तो सिरे से नमाज़ ही से ग़ाफ़िल हैं ! और क़ज़ा करने में कुछ अफ़सोस नहीं करते ! ग़ौर करें ! जब बे वक़्त पढने का यह गुनाह है तो न पढ़ने का अज़ाब कितना सख़्त तरीन होगा? अल्लाह ﷻ हमारे सग़ीरा व कबीरा गुनाह माफ फ़रमाए और पाबंदी से वक़्त पर नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الصلوٰۃ والسلام علیك یارسول اللہ ﷺ

وعلیٰ آلك واصحابك یا حبیب اللہ ﷺ

फ़ज़ाइले जमाअत

इरशादे खुदावंदी है :– **وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِيْنَ** और रुकूअ करो रुकूअ करने वालों के साथ। *(सूरए बकरह, पारा–1)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा से जमाअत का वजूब समझ में आता है। जो ख़ुश नसीब नमाज़ बा जमाअत का एहतेमाम करते हैं अल्लाह के रसूल ﷺ ने उनको तरह तरह की बशारतें सुनाई हैं लेकिन जो लोग दुनियावी कामों में मसरूफ़ रहकर जमाअत को तर्क करते हैं इनको सख़्त वईदें सुनाई हैं। हमारे अस्लाफ़ नमाज़ बा जमाअत का किस क़दर एहतेमाम फ़रमाते थे इसका अंदाज़ा आने वाले सुतूर से होगा। आज हमारा हाल यह है कि नमाज़े बा जमाअत अदा करने के सिलसिले में इतनी सुस्ती का मुज़ाहिरा करते हैं कि मस्जिद के क़रीब होते हुए भी हम नमाज़े बाजमाअत अदा नहीं करते हैं। ख़ुदारा! ख़ुदारा! मज़कूरा आयते करीमा को पेशे नज़र रखते हुए हम सबको नमाज़ बा जमाअत अदा करने की कोशिश करनी चाहिये। आइये, अल्लाह की बारगाह में दुआ करते हैं कि अल्लाह हम सबको नमाज़ बा जमाअत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

रसूललुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस दर्जा ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। *(मिश्कात शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम दुनियावी मामलात में किस क़दर मोहताज हैं और कितना हमें अपने नफ़ा और नुक़सान का ख़्याल रहता

है। अगर ग़ाफ़िल होते हैं तो सिर्फ़ और सिर्फ़ दीन के मामले में। क्या हम में से कोई सत्ताईस छोड़कर एक पर क़नाअत करेगा? अगर नहीं तो फिर बताओ अगर जमाअत से पढ़ें तो वक़्त ज़्यादा नहीं लगेगा लेकिन ताजदारे कायनात ﷺ के फ़रमान की रोशनी में जमाअत से पढने में सवाब 27 गुना बढ़ जायेगा। ज़रा क़यामत का वह होलनाक मंज़र अपनी निगाहों के सामने लायें जब बाप बेटे से भाग रहा होगा और बेटा बाप से भाग रहा होगा, कोइ किसी का पुरसाने हाल न होगा और नेकियों की क़िल्लत दामनगीर होगी। कोई अज़ीज़ व क़रीब एक नेकी भी देने के लिये तैयार न होगा। वल्लाह! उस वक़्त एक एक नेकी की अज़मत समझ में आ जायेगी। लिहाज़ा नमाज़ बा जमाअत अदा करके 27 गुना ज़्यादा सवाब हासिल करो ताकि मैदाने महशर में अल्लाह ﷻ करम की नज़र फ़रमा दे और अच्छों के सदक़े नेकियां क़बूल फ़रमाकर हम सब को अज्र का हक़दार बना दे।

★ मैदाने जंग में जमाअत की ताकीद ★

अल्लाह ﷻ का फ़रमाने आलीशान है :–

"और ऐ महबूब! जब तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो फिर नमाज़ में इनकी इमामत करो तो चाहिये कि उनमें एक जमाअत तुम्हारे साथ हो वह अपने हथियार लिये रहे फिर वह जब सज्दा कर लें तो हट कर तुम से पीछे हो जायें। और अब दूसरी जमाअत आये जो अब तक जमाअत में शरीक न थी, अब वह तुम्हारी मुकतदी हो। और चाहिये कि अपने पनाह और अपने हथियार लिये रहें, और काफ़िरों की तमन्ना है कि कहीं तुम अपने सामान और अपने असबाब से ग़ाफ़िल हो जाओ तो एक दफ़ा तुम पर झुक पड़ें। और तुम पर कोई मज़ायक़ा नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब तकालीफ़ हों या बीमार हो कि अपने हथियार रखो और अपनी पनाह लिये रहो। बेशक! अल्लाह ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।"

हालत ख़ौफ़ में दुश्मन के मुक़ाबिल इस एहतेमाम के साथ नमाज़ अदा करने से मालूम होता है कि नमाज़ बा जमाअत किस क़दर ज़रूरी है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! जंग का माहोल कितना भयानक है। हर चहार जानिब से जान का ख़तरा होता है। ऐसे माहोल में भी अल्लाह

ने जमाअत से नमाज़ अदा करने का हुक्म फ़रमाया है इसको आपने समाअत किया। मज़कूरा आयते करीमा से जमाअत की अहमियत का अंदाज़ा होता है। हमारा हाल यह है कि अमन के भरे माहोल में जब नमाज़ ही अदा नहीं करते तो जमाअत की क्या ख़ाक पाबंदी करेंगे? आइये, आज हम सब अज़्म करें कि इंशाअल्लााह नमाज़ बा जमाअत की पांबदी की पूरी कोशिश करेंगे। अल्लाह हम सबको इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स वुजू करके फ़ज्र की अदायगी के लिये आया और दो रकअत सुन्नत पढ़कर नमाज़ बा जमाअत के इंतज़ार में महवे ज़िक्र रहा तो उसकी नमाज़ अबरार की सी नमाज़ हो जायेगी। और उसका नाम रहमानी क़ासिदों में लिखा जायेगा। *(तिबरानी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! फ़ज्र की दो सुन्नत की अदायगी के बाद फ़र्ज़ के इंतज़ार में ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रहना कितना अज़ीम सवाब है? और ऐसे बंदे की नमाज़ और उसके मक़ाम को ताजदारे कायनात ﷺ ने कितना बुलंद फ़रमाया है। काश! कि हम अपनी नींद कुरबान करके फ़ज्र की नमाज़ के लिये बेदार होते और वक़्त पर नमाज़ बा जमाअत अदा करते। यक़ीनन! जो रब तबारको तआला आख़रत में इज्ज़त और सरबुलंदी अता फ़रमायेगा वह दुनिया में भी इससे सरफ़राज़ फ़रमायेगा। काश! हम इसका ख़्याल करते। आज ही सिद्क़ दिलसे तौबा करके नमाज़ बा जमाअत का इरादा कर लें और इसके लिये कोशिश करें तो ज़रूर बिल ज़रूर अल्लाह हम सबसे राज़ी होगा। और रहमते आलम ﷺ भी ख़ुश होंगे। रब्बे क़दीर अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल हम सब को नमाज़ बाजमाअत अदा करनेकी तौफीक अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما ब्यान फ़रमाते हैं कि अल्लाह ﷻ ने जन्नत में एक ऐसी नहर जारी फ़रमा दी है जिसका नाम اَفْیَح है उसके किनारे लअल व जवाहेरात के हैं। इन पर ऐसी हूरें जल्वा अफ़रोज़ हैं जिनकी ख़लअत ज़ाफ़रान से हैं, वह सत्तर हज़ार ज़बानों में अल्लाह ﷻ की

तसबीह व तक़्दीस ब्यान करती हैं और ऐलान करती हैं कि हम उनकी ख़िदमत के लिये हैं जो नमाज़े फ़ज्र बा जमाअत अदा करते हैं। *(नुज़हतुल मजालिस, जिल्द–1, सफ़ा–515)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा रिवायात से नमाज़े फ़ज्र बा जमाअत अदा करने का इनाम आपने मुलाहेज़ा फ़रमा लिया है। लिहाज़ा कोशिश करें ख़ास तौर पर नमाज़े फ़ज्र बा जमाअत अदा करने की। क्योंकि यह वक़्त बहुत ही अहम है और ज़्यादा तर लोग फ़ज्र की जमाअत में ग़फ़लत बरतते हैं। हमें चाहिये कि फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअत अदा करके अल्लाह की बारगाह में इनाम हासिल करें। अल्लाह हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ सवाब ही सवाब ! ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, ऐ उसमान बिन मजऊन ! जिसने सुबह की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की तो उसके लिये यह नमाज़ कुबूल हज और क़बूल उमरा के बराबर हो जाती है। ऐ उसमान! जिसने जुहर की नमाज़ अदा उसको पच्चीस नमाज़ों का सवाब है और उसके सत्तर दर्जा जन्नत में बुलंद होंगे। ऐ उसमान! जिसने अस्र की नमाज़ बा जमाअत अदा की फिर गुरूब आफ़ताब तक ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहा तो गोया उसने औलादे इस्माईल में से बारह हज़ार गुलाम आज़ाद किये। और जिसने मग़्रिब की नमाज़ बा जमाअत अदा की उसके लिये पच्चीस नमाज़ों का सवाब है। और उसी के साथ जन्नत में उसके सत्तर दर्जे बुलंद होंगे। ऐ उसमान! जिनसे ईशा की नमाज़ बा जमाअत अदा की गोया उसने शबे क़द्र में इबादत की।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ताजदारे कायनात ﷺ ने मज़कूरा हदीस शरीफ़ में पंज वक़्ता नमाज़े बा जमाअत का सवाब ब्यान फ़रमा दिया। अब जिस किसी को नमाज़े बा जमाअत के फ़ैजान से मालामाल हाना हो, नीज़ मज़कूरा इनामात को पाना हो तो वह नमाज़ बा जमाअत का एहतेमाम करे। थोड़ी सी चुस्ती और कुरबानी से अगर इतना सवाब मिलता है तो एक मुसलमान को ज़रूर कुरबानी देनी चाहिये। अल्लाह हम

सबको अपने प्यारे महबूब रसूलुल्लाह ﷺ के सदक़े व तुफ़ैल नमाज़ बा जमाअत का एहतेमाम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ पूरी रात क़याम का सवाब ★

हज़रत उसमान رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि जिसने ईशा की नमाज़ बा जमाअत पढ़ी गोया आधी रात को क़याम किया। और जिसने फ़ज्र की नमाज़ बाजमाअत पढ़ी गोया उसने पूरी रात क़याम किया। *(मुस्लिम शरीफ)*

नीज़ नबी करीम ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं कि बेशक ! आदमी जब इमाम के साथ नमाज़ पढ़कर लोटता है तो उसके लिये पूरी रात की इबादत का सवाब लिख दिया जाता है। *(अल जामेउस्सग़ीर)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हर शख़्स के लिये पूरी रात इबादत में गुज़ारना बहुत ही मुश्किल है लेकिन आक़ाए दो जहां रसूलुल्लाह ﷺ का करम देखिये कि कमज़ोर उम्मत की कमज़ोरी पर करम की नज़र फ़रमाकर शब भर इबादत के सवाब से मालमाल करने के लिये इरशाद फ़रमाया, ईशा और फ़ज्र की नमाज़ जिसने जमाअत के साथ अदा की उसे अल्लाह पूरी शब इबादत का सवाब अता फ़रमायेगा। आज यही दो नमाज़ें मुसलमानों पर भारी नज़र आती हैं। जमाअत तो बहुत दूर की बात है नमाज अदा करने ही से ग़ाफ़िल नज़र आते हैं। जानते हैं कि आक़ाए कोनो मकां ﷺ ने इरशाद फ़र्माया कि फ़ज्र और ईशा की नमाज़ मुनाफ़िक़ पर भारी हैं मुसलमान पर नहीं ! लिहाज़ा हम फ़ज्र और ईशा की नमाज़ बा जमाअत अदा करके रात भर इबादत का सवाब हासिल करें। और अपना शुमार गुलामाने रसूल ﷺ में करायें। अल्लाह हम को नमाज़ बा जमाअत की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ दौज़ख़ से आज़ादी ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ रावी है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं :–

जो अल्लाह के लिये चालीस रोज़ बा जमाअत नमाज़ अदा करे और तकबीरे उला पाये तो उसके लिये दो आज़ादियां हैं, एक नारे जहन्नमसे और दूसरी निफ़ाक़ से। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

बुजुर्गों में जिसकी तकबीर औला फ़ौत हो जाती तो वह तीन दिन अपनी ताज़ियत करते।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जहन्नम की आग और निफ़ाक़ यह दोनों तबाहकुन हैं। जिस किसी के दिल में निफ़ाक़ हो उसका ठिकाना जहन्नम का सबसे निचला तबक़ा हैं। दिलों को निफ़ाक़ से पाक करना हो और ख़ूद को जहन्नम से आज़ाद करना हो तो कम से कम चालीस रोज़ बा जमाअत नमाज़ अदा करें। नमाज़े बा जमाअत की बर्कत से अल्लाह दोज़ख़ से आज़ाद और निफ़ाक़ से पाक फ़रमा देगा। अल्लाह हमको नमाज़ बा जमाअत की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ गुनाह बख़्श दिये जायेंगे ★

हज़रत उसमान رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ फ़रमाते हैं कि जिसने कामिल वुजू किया फिर नमाज़े फ़र्ज़ के लिये चला और इमाम के साथ बाजमाअत नमाज़ अदा की उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे। *(निसाइ)*

नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, रात में मेरे रब की तरफ़ से एक आने वाला आया। और एक रिवायत में है कि अपने रब को निहायत ही जमाल के साथ तजल्ली करते हुए देखा। उसने फ़रमाया, ऐ मुहम्मद ! ﷺ मैंने कहा, लब्बेक ! उसने कहा, तुम्हें मालूम है मलाइका किस अम्र में बहस करते हैं ? मैंने अर्ज़ किया नहीं जानता। उसने अपना दस्ते कुदरत मेरे शानों के दर्मियान रखा यहां तक कि उसकी ठंडक मैंने अपने सीने में पायी तो जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है और जो कुछ मश्रिक़ व मग़्रिब के दर्मियान है मैंने जान लिया। फिर फ़रमाया, ऐ मुहम्मद ! ﷺ जानते हो मलाइका किस चीज़ में बहस कर रहे हैं? मैंने अर्ज़ किया, हां ! दर्जात व कफ़्फ़ारात और जमाअतों के चलने और सर्दी और पूरा वुजू करने और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इंतज़ार में, और जिसने इसकी मुहाफ़ज़त की, ख़ैर के साथ

ज़िन्दा रहेगा और ख़ैर के साथ मरेगा और अपने गुनाहों से ऐसा पाक होगा जैसे अपनी मां के पेट से पैदा हुआ था। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

बाज़ सहाइफ़ में है : रब का फ़रमान है कि मेरी ज़मीन पर मेरे घर मस्जिदें हैं। और जो मस्जिदों में नमाज़ अदा करने वाले और इन्हें आबद रखने वाले हैं वह मेरी ज़ियारत करने वाले हैं। तो बशारत हो ऐसे शख़्स को जो अपने घर से पाक व साफ़ होकर मेरी ज़ियारत को आये और बा जमाअत नमाज़ अदा करे। *(नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! नमाज़ बा जमाअत की वजह से गुनाह तो माफ़ होते ही हैं मगर करम बालाए करम यह है कि अगर कोई शख़्स नमाज़ बा जमाअत अदा करने के लिये मस्जिद जाता है तो गोया वह अल्लाह की ज़ियारत को जाता है ! कहां हम और कहां वह ख़ालिक़ कायनात ! लेकिन उसका करम तो देखिये कि वह अपना मेहमान भी बना रहा है और अपनी ज़ियारत का सवाब भी अता फ़रमा रहा है। और एक बार नहीं, बल्कि दिन में पांच बार ! काश ! हम अल्लाह ﷻ की दावत पर लब्बैक कहते हुए दिन में पांच बार नमाज़ बा जमाअत की अदायगी के लिये कोशिश करें। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

अहयाउल उलूम में है कि जो शख़्स बा जमाअत नमाज़ अदा करता है उसका सीना इबादत से मुनव्वर हो जाता है। तबरानी में है कि अगर जमाअत को छोड़ने वाला जानता है कि बा जमाअत नमाज़ अदा करने वाले के लिये क्या अज्र है तो घसीटता हुआ जाता।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا फ़रमाती हैं कि दाहिनी जानिब जमाअत में शामिल होने वाले पर अल्लाह और फ़रिश्ते सलात पढते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि जो अच्छी तरह वुजू करके मस्जिद जाये और लोगों को इस हालत में पाये कि नमाज़ पढ़ चुके हैं तो अल्लाह उसे भी जमाअत से पढ़ने वालों के मिस्ल सवाब देगा। और इनके सवाब से कुछ कम न करेगा। *(अबू दाउद)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज अगर दुन्या का कोई बड़ा

ओहदेदार, सरमायादार, हम को सलाम करे तो हम ख़ुशियों से मचल जाते हैं लेकिन मेरे आक़ा ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं कि जमाअत से नमाज़ पढ़ने वाला अगर इमाम के साथ दायें जानिब हो तो इस पर अल्लाह और इसके फ़रिश्ते सलात पढ़ते हैं। अगर इस नियत से बंदा घर से निकला कि जमाअत में शरीक हो जाये, लेकिन जमाअत न पा सका तो अल्लाह उसे भी जमाअत का सवाब अता फ़रमायेगा। अल्लाह हम सबको नमाज़ बा जमाअत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

पसंदीदा : रसूलल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, मर्द की नमाज़ मर्द के साथ अकेले पढ़ने से बेहतर है और जो ज़्यादा हों (यानी जिस क़दर जमाअत में नमाज़ी ज़्यादा हों) वह अल्लाह को ज़्यादा पसंद है।

हज़रत क़बाष बिन अशीम लैषी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि सरकार ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : दो आदमियों की एक साथ नमाज़, कि उनमें से एक अपने साथी की इमामत करे, अल्लाह के नज़दीक उन चार आदमियों की नमाज़ से बेहतर है जो बारी बारी पढ़ें। और चार आदमियों की नमाज़ (जमाअत से) अल्लाह ﷻ के नज़दीक उन आठ आदमियों की नमाज़ से बेहतर है जो यके बाद दीगर पढ़ें। और आठ आदमियों की नमाज़ इस तरह कि इनमें एक इमाम हो ये अल्लाह ﷻ के नज़दीक ज़्यादा पसंदीदा है उन सौ आदमियों की नमाज़ से जो कि अलाहेदा अलाहेदा पढ़ें। *(तिब्रानी)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से यह बात समझ में आती है कि जितनी बड़ी जमाअत मिले इसमें शरीक होने की कोशिश करें ताकि ज़्यादा सवाब भी हासिल हो और ताजदारे कायनात ﷺ के फ़रमान की रौशनी में बेहतरी की सनद भी मिले। अलबत्ता इसका ख़्याल रखना चाहिये कि वह जमाअत गुलामाने रसूल ﷺ की हो। अगर इमाम गुस्ताख़े रसूल हो और जमाअत कितनी ही बड़ी हो हमें इसकी इक़्तेदा नहीं करनी है। गुस्ताख़े रसूल ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ने से बेहतर है कि हम अकेले ही पढ़ लें। अल्लाह हम सबको सुन्नी इमाम के पीछे जमाअत से नमाज़ अदा करने तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ जमाअत के साथ रहो ★

हज़रत अबू दरदा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं कि किसी गांव या जंगल में तीन आदमी हों और जमाअत के साथ नमाज़ न पढ़ें तो इन पर शैतान ग़ालिब होता है तो तुम जमाअत को लाज़िम पकड़ो क्योंकि जो बकरी अपने रेवड़ से दूर रहे उसे भेड़िया खा जाता है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज दुन्या हमको लुक़मए तर समझ कर खाने के दरपे हैं, इसकी एक वजह यह है कि हर कोई इमाम बनना चाहता है, किसी को मुक़तदी बनना ही पसंद नहीं। अलग अलग नमाज़ अदा करना हमारी पहचान और आदत बन चुकी है। जब कि जंगल या गांव में भी अगर चंद अफ़राद हों तो जमाअत क़ायम करने का हुक्म है यहां तो अफ़राद ही अफ़राद होते हैं फिर भी एहतेमाम नहीं किया जाता। काश ! कि हम जमाअत का ख़्याल और पाबंदी का एहतेमाम करते तो आज कोई ज़ालिम भेड़िया हम को बकरी समझकर खा न जाता। अल्लाह की बारगाह में दुआ है कि हम सबको नमाज़ बा जमाअत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ नाबीना को ताकीद ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम رضی اللہ عنہ ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! ﷺ मदीना में मूज़ी जानवर बकसरत हैं और मैं नाबीना हूं तो क्या मुझे रुख़सत है कि मैं घर नमाज़ पढ़ लूं। फ़रमाया :—

حی علی الصلوۃ، حی علیٰ الفلاح सुनते हो ? अर्ज़ की, हां ! तो फ़रमाया, हाज़िर हो।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अंदाज़ा लगायें कि एक नाबीना के लिये ताजदारे कायनात ﷺ ने हय्या अलससलाह और हय्या अलल फ़लाह सुनकर मस्जिद मे आने का हुक्म दिया। कितने अफ़सोस का मक़ाम है कि हम आंख वाले होकर, तंदरुस्त होकर, तवाना होकर, एक बार नहीं बल्कि कुर्ब व जवार की मस्जिदों से कई बार इस सदा को सुनते हैं मगर अफ़सोस कि नमाज़ बा जमाअत के लिये हाज़िर नहीं होते। काश ! कि हम हुज़ूर ﷺ के फ़रमान का लिहाज़ रखते और नमाज़ बा जमाअत

का एहतेमाम करते। आइये दुआ करें कि परवर्दिगारे आलम हम सबको नमाज़ बा जमाअत की अदायगी अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ जमाअत में सबक़त करो ★

अल्लाह के रसूल ﷺ ने सहाबाए किराम को पीछे हटते हुए देखा तो इरशाद फ़रमाया आगे बढ़ो मेरी इत्तेबा करो ताकि तुम्हारे बाद के लोग तुम्हारी इत्तेबा करें। लोग ख़ूद ही हटते रहेंगे तो अल्लाह इनको पीछे कर देगा। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ की रौशनी में अगर हम देखें तो हम को हमारे पीछे रहने की वजह ख़ूद बख़ूद मालूम हो जायेगी। क्या आज हमारा हाल यह नहीं है कि हम नमाज़ बा जमाअत अदा करने जाते हैं तो भी सफ़े अव्वल की बजाए आख़िर में रहना पसंद करते हैं। यही वजह है कि आज हर काम में पूरी दुन्या से हम पीछे हैं। याद रखो ! अगर आगे आना हो तो आज से कोशिश करें कि इंशाअल्लाह नमाज़ बा जमाअत की पाबंदी से हम दोनों जहां में आगे आयेंगे। अल्लाह रब्बुल इज्ज़त हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

हज़रत अबू बकर बिन अबू हशमा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन सैय्यदना फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ अन्हु ने फ़ज्र की नमाज़ में हज़रत सुलेमान बिन हश्मा رضی اللہ عنہ को नहीं पाया, फिर हज़रत उमर رضی اللہ عنہ चाश्त के वक़्त बाज़ार की तरफ़ निकले, और हज़रत सुलेमान رضی اللہ عنہ का घर मस्जिद और बाज़ार के दर्मियान वाक़ेअ था। लिहाज़ा आप का गुज़र हज़रत सुलेमान की वालिदा हजरत शिफ़ा رضی اللہ عنہا से हुवा तो आपने उनसे फ़रमाया, मैंने सुलेमान को फ़ज्र की नमाज़ में नहीं देखा ! उन्होंने कहा, वह रात गये तक नमाज़ पढ़ते रहे लिहाज़ा सुबह की नमाज़ के बाद उनकी आंख लग गयी। इस पर हज़रत उमर ने फ़रमाया, मुझे सुबह की नमाज़ बा जमाअत के साथ इस बात से ज़्यादा महबूब है कि मैं रात भर नमाज़ पढ़ूं। *(मोअत्ता इमाम मालिक)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा वाक़ेआ से हम सबको

सबक़ हासिल करना चाहिये कि रात भर जल्से में शरीक रहें और सुबह फ़ज्र की नमाज़ घर पर पढ़ लिये तो पढ़ लिये वरना वो भी नहीं ! यूं तो शब भर जागना बेसूद हैं जिसकी वजह से नमाज़ फ़ज्र क़ज़ा हो या फिर जमाअत छूटने का ज़रिया हो। हमारे अस्लाफ़ की कामयाबी की सबसे बड़ी वजह यह थी कि वह नमाज़े फ़ज्र हो या कोई भी नमाज़, जमाअत का भरपूर ख़्याल रखते थे। आज हमारी नाकामी की वजह नमाज़ और जमाअत का तर्क करना है। अल्लाह सबको पाबंदीए जमाअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। और हमारी कोताहियों को माफ़ फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ रहमत का घर ★

नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह ने जन्नत में एक अज़ीमुश्शान शहर सजाया है, जिसका नाम मदीनतुल खुल्द है। उसमें एक महल है जिसका नाम कस्रे अज़्मत है। इसमें एक वसीअ व अरीज़ मकान है जिसे बैतुर्रहमा कहते हैं। जिसमें एक हज़ार तख़्त सजाये गये हैं, जिनमें चार हज़ार हूरें जलवा अफ़रोज़ हैं। उसमें ऐसी चीज़ें भी पाई जाती हैं जिन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी इंसान के दिल व दिमाग़ में तसव्वुर व गुमान गुजरा है। आप से अर्ज़ किया गया, वह किस ख़ुशनसीब के लिये हैं? आपने फ़रमाया, जो नमाज़ पंजगाना जमाअत के साथ अदा करते हैं। *(नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से यह बात समझ में आती है कि अल्लाह नमाज़ पंजगाना बा जमाअत अदा करने वालों को कितने इनाम व इकराम से नवाज़ता है ! हमें कोशिश करनी चाहिये कि मज़कूरा हदीस शरीफ़ में ब्यान कर्दा इनामात को पाने के लिये नमाज़ पंजगाना बा जमाअत अदा करें ताकि अल्लाह हम सबके दामन भर दे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ दुनिया व माफ़िहा से बेहतर ★

हज़रत इमाम नीशापूरी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं, सुबह की

तकबीर को पाना दुनिया व माफ़ीहा से आला है।

मंकूल है कि हज़रत मैमून बिन महरान मस्जिद में आये तो आपसे कहा गया कि लोग तो वापस लोट गये हैं ! (यानी जमाअत हो गयी है) आपने यह सुनकर फ़रमाया **اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن** और कहा, इस नमाज़ को पा लेने की फज़ीलत मुझे ईराक़ की हुकूमत से ज़्यादा पसंद थी। *(मुकाशफतुल कुलूब)*

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ से एक नमाज़ की जमाअत छूट गयी। तो आपने एक क़ित्ता ज़मीन जो एक लाख की क़ीमत का था ख़ैरात कर दिया। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से एक जमाअत फ़ौत हो गयी, उन्होंने रोज़ा रखा और सारी रात नवाफ़िल पढ़े और एक गुलाम आज़ाद कर दिया। *(नुज़हतुल मजालिस, सफा–115)*

अल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ बयान करते हैं कि एक नेक आदमी ईशा की नमाज़ बा जमाअत अदा न कर सका उसने नमाज़ को सत्ताईस बार पढ़ा। क्योंकि हदीस में है कि बा जमाअत नमाज़ पढ़ने से सत्ताई गुना ज़्यादा सवाब है। फिर उसने ख़्वाब में चंद घुड़सवारों को देखा जो एक जमाअत की शक्ल में थे, उसने चाहा कि इनके साथ चले, वह बाले कि तुमने बा जमाअत नमाज़ अदा नहीं की तो तुम हमारे साथ कैसे आ सकते हो ? *(नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस और वाक़िया की रौशनी में हम अपने अहवाल का अेहतेसाब कर सकते हैं के नमाज़ बा जमाअत के छोड़ने पर क्या हम को भी रंज व ग़म लाहिक़ होता है? यक़ीनन नहीं। आज हम चंद रुपयों के मुनाफ़ा की ख़ातिर, चंद दोस्तों की ख़ुशी की ख़ातिर जमाअत छोड़ देते हैं जबकि अल्लाह वालों का हाल यह था कि जमाअत के छूट जाने पर सख़्त अफ़सोस करते और आसूं बहाते। काश! हम भी अपने अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलते। अल्लाह उनके नक़्श पर चलने का जज़्बा हमें भी अता फ़रमाये और जमाअत का पाबंद बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ ग़ज़बे रसूल صلی اللہ علیہ وسلم ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद

फ़रमाया, क़सम है उसकी ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है ! बिलाशुबहा यह चाहता हूं कि लकड़ियां जमा की जायें फिर नमाज़ के लिये अज़ान का हुक्म दूं और किसी को नमाज़ पढ़ाने के लिये मुक़र्रर करूं फिर उन लोगों के घर जो नमाज़ के लिये नहीं आते, जाकर उनके समेत इनके घर को जला दूं। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है ! अगर यह लोग जानते कि उन्हें फ़रबा हड्डी जिस पर गोश्त को खफीफ़ हिस्सा लिपटता रह गया हो या बकरी के अच्छे दो खुर मिलेंगे तो ज़रूर नमाज़ ईशा में हाज़िरी देते।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! ज़रा हदीस पाक के अलफ़ाज़ पर ग़ोर करें कि वह रसूल अरबी صلی اللہ علیہ وسلم जो सारी कायनात के लिये रहमत बनकर तशरीफ़ लाये, जिन्हें अपनी उम्मत से इस क़दर प्यार है कि उम्मत का मशक़्त में पड़ना उन पर गिरां गुज़रता है लेकिन वह रहीम व करीम आक़ा क़सदन जमाअत छोड़ने वाले पर इस क़दर नाराज़ होते हैं कि जमाअत और उसके घर को आग लगा देने की ख़्वाहिश का इज़हार करते हैं। अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की बारगाह में दुआ है कि हमें हर उस काम से बचाये जिसमें उसकी और उसके हबीब صلی اللہ علیہ وسلم की नाराज़गी का शाइबा भी पाया जाता हो।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से पूछा गया कि आदमी के बारे में जो दिन को रोज़ा रखता हो रात को इबादत करता हो लेकिन जुमा और जमाअत में नहीं होता। आपने फ़रमाया, वह जहन्नम में है।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! अगर ख़ुदा ना ख़ास्ता हम में से कोई बिला उज़्रे शरई तर्के जमाअत का शिकार है तो चाहिये कि आज ही तौबा कर ले वरना अपना ठिकाना जहन्नम में बनाने के लिये तैयार रहे। अल्लाह हम सबको नमाज़ बा जमाअत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

हज़रत मआज़ बिन अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, जुल्म है पूरा जुल्म और कुफ़्र व निफ़ाक़ है कि अल्लाह के मुनादी को अज़ान कहते सुने और हाज़िर न हो ! और एक दूसरी हदीस पाक में है कि हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, मोमिन को बद बख़्ती और

नामुरादी के लिये यही काफ़ी है कि मोअज़्ज़िन को तकबीर कहते सुने और जमाअत में हाज़िर न हो।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इन दोनों अहादीस से पता चला कि नमाज़ के लिये मस्जिद न जाना मोमिन का शेवा नहीं है बल्कि जो बिला उज़्र घर में नमाज़ पढ़े तो ऐसा शख़्स ज़ुल्म, कुफ़्र निफ़ाक़ में मुब्तेला है। लिहाज़ा ख़ुदारा! जमाअत तर्क करने से बाज़ आ जाओ और आज ही अल्लाह की बारगाह में सच्चे दिल से तौबा कर लो वो रहीम व करीम हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा। परवर्दिगारे आलम हम तमाम मुसलमानों को नमाज़ बा जमाअत साथ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि जिसने हय्या अलल फ़लाह सुना फिर नमाज़ में हाज़िर न हुआ तो उसने हुज़ूर ﷺ की सुन्नत तर्क कर दी।

और हज़रत अबू शअसा رضی اللہ عنہ कहते है। कि हम लोग मस्जिद में हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ के पास बैठे हुए थे तो मोअज़्ज़िन ने अस्र की अज़ान पुकारी तो एक शख़्स मस्जिद से निकलकर चला गया तो हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया, ज़रूर बिल ज़रूर इसने अबुल क़ासिम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफ़रमानी की। नीज़ हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ का क़ौल है कि पिघले हुए सीसे से इंसान के कानों का भर दिया जाना इससे बेहतर है कि वह अज़ान सुनकर जवाब न दे। (यानी जमाअत में हाज़िर न हो) *(मकाशिफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यार`दीवानो ! आज दाढ़ी, अमामा शरीफ़ मिसवाक वग़ैरह सुन्नतों के तर्क करने की वईदें हम सुनाते हैं और इस पर अमल करने की कोशिश करते हैं लेकिन नमाज़ की अदायगी पर अमल की न तर्ग़ीब दिलाई जाती है और न वअदें सुनाई जाती हैं हालंकि नमाज़ बा जमाअत ऐसी अज़ीम सुन्नत है कि इसके तर्क से रहमते आलम ﷺ नाराज़ होते हैं और अज़ान सुनकर भी नमाज़ बा जमाअत अदा करने में अगर कोताही करें तो समझ लो कि इनके दिल में कमाहक़्क़हू रसूले गिरामी वक़ार ﷺ को राज़ी करने का जज़्बा नहीं। आओ हम दुआ करें कि अल्लाह

हम सबको जमाअत से नमाज़ पढ़ने की कोशिश अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ सुन्नत को छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हम लोगों ने अपने आपको इस हाल में देखा कि जमाअत से पीछे रह जाने वाला या तो मुनाफ़िक़ होता था या मरीज़। और बेशक ! मरीज़ का हाल यह होता था कि दो आदमियों के दर्मियान चलकर आता था और रसूले आज़म ﷺ ने हम लोगों को हिदायत की, सुन्नतों की तालीम दी है और हिदायत की सुन्नतों में से यह भी है कि नमाज़ उस मस्जिद में पढ़ी जाये जिसमें अज़ान दी गयी हो। और एक रिवायत में यह भी है कि जो इस बात से ख़ुश हो कि वह कल क़यामत के दिन मुसलमान होने की हालत में अल्लाह से मुलाक़ात करे तो उस पर लाज़िम है कि वह नमाज़ों को वहां पढे जहां अज़ान दी गयी हो क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारे नबी ﷺ के लिये हिदायत की सुन्नतें रखी है। और नमाज़ बा जमाअत हिदायत की सुन्नतों में से हैं और अगर तुम लोग अपने घरों में नमाज़ पढ़ लोगे जिस तरह जमाअत से पिछड़ने वाला अपने घर में पढ़ लेता है तो तुम लोग अपने नबी की सुन्नतों को छोड़ने वाले हो जाओगे और अगर तुम लोगों ने अपने नबी की सुन्नत को छोड़ दिया तो यक़ीनन गुमराह हो जाओगे।

जो आदमी अच्छी तरह वुज़ू करके मस्जिद का क़स्द करता है तो अल्लाह جل جلالہ उसके लिये हर क़दम पर एक नेकी लिख देता है और हर क़दम के बदले में एक दर्जा बुलंद फ़रमाता है और एक गुनाह माफ़ कर देता है। और अगर तुम लोग यक़ीन मानो कि हमने अपने को इस हाल में देखा कि जमाअत से वही आदमी पिछड़ता था जो ऐसा मुनाफ़िक़ होता जिसका निफ़ाक़ सबको मालूम होता। और बाज़ लोग तो दो आदमियों के दर्मियान चला कर लाये जाते थे यहां तक कि वह सफ़ में खड़े कर दिये जाते थे।

★ जमाअत की हिकमतें ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इसमें कोई शक नहीं कि नमाज़

इंसानी ज़िन्दगी के तमाम गोशों, शोबों, और ज़ावियों पर मुहीत होने के साथ साथ मुआशरे में इज्तेमाइयत के फ़रोग़ में हर सतह पर दूर रस असरात रखती है। फ़रमाने इलाही है : وَاَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ

"और नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो।"

इस आयते करीमा सें नमाज़ बा जमाअत का हुक्म सराहत के साथ दिया गया है। एक اقيموا الصلوٰةऔर दूसरी जगह واركعوا مع الرا كعينमें इन दोनों जगहों पर अम्र का सेग़ाए जमअ इस्तेमाल किया गया है। आयत के आख़री हिस्से में नमाज़ को एक जगह बाहमी तौर पर अदा करने की तलक़ीन ज़्यादा वज़ाहत के साथ मौजूद है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! घर के गोशे खलवत की बजाए नमाज़े पंज़गाना मस्जिद में बा जमाअत अदा करने का हुक्म अपने अंदर बहुत सी हिकमतों का हामिल है। चंद हिकमतें दर्जे ज़ेल हैं:

पंचगाना नमाज़ मस्जिद में बा जमाअत अदा करने से मुसलमानों को दिन में पांच मर्तबा इकट्ठा होने के मवाक़े मयस्सर आते हैं इस तरह उन्हें अहले मुहल्ला के बारे में पता चलता है कि कौन किस हाल में है? कुर्ब व जवार में कोई ऐसा तो नहीं जो आधी रोटी का मोहताज है या तंगी व इसरत या बीमारी के हाथों में परेशानी में दिन काट रहा है।

नमाज़ की यकजाई बाहमी कुर्ब व मवानसत और मुहब्बत के रिश्ते मज़बूत व मुस्तहकम करने में मददगार बनती है। एक दूसरे की ख़ुशी और ग़मी और दुख सुख में शरीक होकर ही एक सेहतमंद और सालेह मुआशरे की तामीर मुमकिन है।

हमेशा नमाज़ बा जमाअत की अदायगी से इंसान के दिल में यह एहसास जागुर्ज़ी हो जाता है कि जब बग़ैर किसी शरई उज़्र के घर के अंदर रहकर इनफ़ेरादी सतह पर नमाज़ जैसे फ़रीज़ा की बजा आवरी मुमकिन नहीं है तो अफ़रादे मुआशरे एक दूसरे से अलग थलग कैसे रह सकते हैं ? रब्बे क़दीर हम सबको नमाज़ बा जमाअत का पाबंद बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

तर्के नमाज़ पर वइदें

★ सुस्ती करने वालों के लिये बर्बादी है ★

कुरआन पाक में है :—

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْن *(पारा—30, सूरए वैल)*

"तो उन नमाज़ियों के लिये ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।" *(कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मुनाफ़ेक़ीन जिन्होंने बज़ाहिर तो अपने आपको मुसलमानों के ज़ुमरे में शामिल कर रखा है लेकिन उनके दिलों में क़यामत पर ईमान नहीं इसलिये नमाज़ के बारे में बड़ी ग़फ़लत का मुज़ाहिरा करते हैं। नमाज़ की इनके नज़दीक कोई अहमियत नहीं, नमाज़ अदा हो गयी तो हो गयी, न हुई तो उन्हें ज़रा भी दुख नहीं। अगर नमाज़ पढ़ते हैं तो किसी सवाब के उम्मीदवार नहीं होते। और अगर नहीं पढ़ते तो किसी अज़ाब का अंदेशा नहीं होता ! अगर लोगों में घिर गये तो नमाज़ पढ़ ली, तंहा हुए तो हज़्म कर गये ! या नमाज़ पढ़ते तो हैं लेकिन सहीह वक़्त पर अदा नहीं करते। यूंही बैठें गप्पे हांकते रहते हैं। और जब वक़्त होने के क़रीब होता है तो तेज़ी से उठते हैं और तीन चार ठोंगे मारकर फ़ारिग़ हो जाते हैं या नमाज़ में जिस ख़ुशूअ ख़ुजूअ की ज़रूरत है उसकी उन्हें हवा तक नहीं लगी होती। इबादत व ज़िक्रे इलाही की लज्ज़त से कभी सरशार नहीं होते।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! यह सब ग़फ़लत की क़िस्में हैं, सच्चे मोमिन को चाहिये कि इन तमाम बातों से परहेज़ की पूरी पूरी कोशिश करे। हज़रत अता ने बड़ी प्यारी बात कही है, फ़रमाते हैं :—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ قَالَ "عَنْ صَلَاتِهِمْ" وَلَمْ يَقُلْ "فِىْ صَلٰوتِهِمْ

यानी अल्लाह का शुक्र है के عَنْ صَلَاتِهِمफ़रमाया فِىْ صَلٰوتِهِمْ नहीं फ़रमाया, क्योंकि इस सूरत में मायने यह होते, वेल है उनके लिये जो नमाज़ में सह्व करते हैं। फिर शायद ही कोई नमाज़ी इस वेल से महफ़ूज़ रहता।

क्योंकि हर मुसलमान को अषनाए नमाज़ में सहव व निसयान से कभी न कभी साबिक़ा पड़ता है।

लेकिन साहिबे रूहुल बयान इस आयत के तेहत इरशाद फ़रमाते हैं कि **اَلَّذِيۡنَ هُمۡ عَنۡ صَلٰوتِهِمۡ سَاهُوۡنَ** से मुराद यह कि नमाज़ का तर्क करते हैं सहव् से और उसकी तरफ़ किल्लते इल्तेफात और अदमे मबालात से और यह मुनाफ़ेक़ीन का या अहले ईमान के फ़ासिक़ीन का है। यही **عَـــنۡ** का मतलब है।

इस आयते करीमा में अल्लाह ﷻ ने फ़रमाया कि नमाज़ में सुस्ती करने वालों के लिये वेल है। हदीस मुबारक में है कि वेल जहन्नम की एक वादी का नाम है। अगर उसमें दुनिया के पहाड़ डाले जायें तो वह भी इसकी शदीद गर्मी की वजह से पिघल जायें ! और यह वादी उन लोगों का मसकन है जो नमाज़ों में सुस्ती करते हैं और अवक़ात गुज़ार के पढ़ते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा तफ़सील जान लेने के बाद, आओ ! हम सच्चे दिल से तौबा कर लें के आईन्दा नमाज़ में सुस्ती नहीं करेंगे और नमाज़ बा जमाअत की पाबंदी करेंगे। अल्लाह ﷻ हम सबको वक़्त पर नमाज़ की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ जहन्नम में ले जाने वाला अमल ★

अल्लाह तआला का फ़रमान है :–

مَا سَلَكَكُمۡ فِىۡ سَقَرَ قَالُوۡا لَمۡ نَكُ مِنَ الۡمُصَلِّيۡنَ तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गयी ? वह बोले, हम नमाज़ न पढ़ते थे। *(कन्ज़ुल इमान)*

साहिबे ज़ियाउल कुरआन अल्लामा पीर करम शाह अज़हरी عَلَيۡهِ الرَّحۡمَةُ وَ الرِّضۡوَانُ तहरीर फ़रमाते हैं कि अहले जन्नत दोज़ख़ियों से पूछेंगे, तुम्हें किस जुर्म की पादाश में जहन्नम के दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला किया गया? वह जवाब देंगे, हमारे दो क़सूर थे जिनकी हम यह सज़ा भुगत रहे हैं (जिनमें से एक यह है) कि अपने रब करीम को सज्दा नहीं करते थे। अकड़े अकड़े रहते थे, कभी भूले से भी यह ख़्याल न आता था कि जिस करीम के करम के सदक़े यह ज़िन्दगी इज्ज़त व आराम से गुज़र रही है इसे सज्दा भी

करना चाहिये, इसकी इबादत भी ज़रूरी है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! देखा आपने नमाज़ तर्क करने वाले का अंजाम? ग़ौर करें, रिज़्क़े ख़ुदा खाकर उसी की बारगाह में अगर सर झुकाने के लिये वक़्त न मिलता हो तो इसका अंजाम यक़ीनन यही तो होगा। लिहाज़ा ख़ुदारा ! जहन्नम के सख़्त तरीन अज़ाब से बचने की फ़िक्र हो तो तर्के नमाज़ के गुनाह से बाज़ आ जाओ। अल्लाह हम सबको नमाज़ की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ तारिकीने सलात के लिये ग़नी है ★

चुनांचे रब्बे क़दीर का फ़रमान है :–

فَخَلَفَ مِنۡ م بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ اَضَا عُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوۡفَ يُلۡقَوۡنَ غَيًّا

उनके बाद उनकी जगह वह ना ख़लफ़ आये जिन्होंने नमाज़ें गंवाई और अपनी ख़्वाहिश के पीछे हुए अनक़रीब दौज़ख़ में ग़य का जंगल पायेंगे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अंबियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَامُ हर लिहाज़ जलाले ख़ुदावंदी से तरसां और लरज़ां रहते और आंखें अश्क फशां रहतीं। लेकिन इनके बाद बाज़ जानशीन ऐसे भी हुए जिन्होंने अपने अस्लाफ़े किराम के तरीक़े को बिल्कुल फ़रामोश कर दिया। मुस्तहबात व मन्दुबात की पाबंदी तो कुजा ? नमाज़ जैसे फ़र्ज को भी उन्होंने पसे पुश्त डाल दिया, या तो सिरे से उस्की फ़र्ज़ियत ही के क़ाइल न रहे। या फ़र्जियत का इंकार तो नहीं किया लेकिन उसे अदा करने की ज़हमत को गवारा न की या उसे अदा तो किया लेकिन उसके आदाब व शराइत को नज़र अंदाज़ कर दिया और इरशादाते इलाही की बजा आवरी की जगह अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशात की पैरवी में लग गये। वह याद रखें इन्हें अपने किये की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह ﷻ ने इस आयत करीमा में तीन चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया। नमाज़ को ज़ाएअ किया। यानी तर्के सलात और बे रग़बती से फ़ासिक़ हुए या बे वक़्त और ग़लत पढ़कर फ़ाजिर हुए या नमाज़ तो सही पढ़ी मगर ग़ीबत, चुग़ली, हसद व बुग़्ज़ करके अपने नामए आमाल से नेकियां बर्बाद करके खासिर हुए यह तमाम सूरतें नमाज़ को ज़ाएअ करने की हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद رضی اللہ عنہما फ़रमाते हैं कि ज़ाएअ करने का मअना यह नहीं कि बिल्कुल नमाज़ पढ़ते ही नहीं बल्कि यह कि उसको मोअख़्ख़िर करके पढ़ते हैं।

दूसरी चीज़ जो इस आयत करीमा में मज़कूर है वह यह है कि ख़्वाहिशाते नफ़सानी में पड़ गये सब से बड़ी ख़्वाहिश नफ़्से कुफ़्र व शिर्क है।

तीसरी चीज़ जिसका का ज़िक्र इस आयत में है वह यह है कि "गय" में डाले जायेंगे, ऐसों के लिये दुनिया में भी **गय** है और आख़रत में भी। दुनियावी **गय** ज़िल्लत ख़सारा और शर है। उख़रवी **गय** जहन्नम की एक सबसे नीचे वाली वादी है जिसके सख़्त अज़ाब से दोज़ख़ के दूसरे तबक़े ख़ूद पनाह मांगते हैं या जहन्नम का एक कुंआं जो बहुत गहरा है या जहन्नम की एक बड़ी नाली जिसमें जहन्नमियों की पीप व ख़ून, बोल व बराज़ और उसकी बदबू का अज़ाब होगा। वाज़ेह रहे कि यह अज़ाब उस शख़्स के लिये है जो तौबा किये बग़ैर मर जाये।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! कितनी भयानक वादी **गय** है? क्या हम में से कोई उसका अज़ाब बर्दाश्त कर सकता है? नहीं और हरगिज़ नहीं। तो हमें चाहिये कि नमाज़ ज़ाएअ करने के जुर्म, ख़्वाहिशात की पैरवी के जुर्म से अपने आपको बचाने का सामान करें। अल्लाह ﷻ जुम्ला मुस्लिमीन व मुस्लिमात को नमाज़ों की मुहाफ़िज़त और तर्के शहवात की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फ़रमाये।

अहादीस में तर्के सलात पर वइदें

★ सबसे पहले नमाज़ का हिसाब होगा ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है कि सरकारे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, सबसे पहली चीज़ जिस का बंदे से सवाल होगा वह नमाज़ है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रब्बे क़दीर ही हमें रिज़्क़ देता है, उसी ने हमें ज़िन्दगी अता फ़रमायी और उसी ने हमको दिन और रात में पांच मर्तबा नमाज़ की अदायगी का हुक्म दिया। अब अगर बंदा उस का रिज़्क़

खाकर उसकी अता कर्दा ज़िंदगी से भरपूर लुत्फ़ अंदोज़ होकर भी उसकी बारगाह में सर न झुकाये तो कितना बड़ा एहसान फ़रामोश होगा? इसलिये याद दिलाई जा रही है कि क़यामत में सबसे पहले नमाज़ ही का हिसाब होगा। लिहाज़ा हम सबको नमाज़ की पाबंदी करनी चाहिये ताकि कल बरोज़े क़यामत शरमिंदगी से बच सकें और अल्लाह की बारगाह में सुर्ख़रुइ हासिल हो सके। अल्लाह ﷻ अपने प्यारे हबीब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल हम सबका हिसाब आसान फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

हज़रत उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :– **اَلصَّلٰوۃُ عِمَادُ الدِّیْنِ فَمَنْ تَرَکَھَا فَقَدْ ھَدَمَ الدِّیْنَ**

नमाज़ें दीन का सुतून है जिसने उसको तर्क किया उसने दीन को मिस्मार किया। *(बयहकी)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आज हम अपने घरों में देखते हैं कि बच्चे अगर किसी क़ीमती चीज़ को गिरा दें तो हम उन पर गुस्सा हो जाते हैं और मारते पीटते हैं। हमारी कोई क़ीमती चीज़ बच्चा तोड़ दे या किसी से टूट जाये तो हम कंट्रोल से बाहर हो जाते हैं। भला बताइये! दीन से क़ीमती चीज़ क्या होगी? आज घर का हर फ़र्द दिन और रात में पांच मर्तबा दीन को मिसमार करता है लेकिन हम इस पर बरहम नहीं होते क्योंकि ख़ूद भी इस जुर्म में मुब्तला होते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हुजूर रहमते आलम ﷺ ने नमाज़ को दीन का सुतून क़रार दिया है और तारिकीने नमाज़ को दीन ढालने वाला फ़रमाया। कोई मुसलमान कभी यह नहीं चाहेगा कि उसकी ज़ात से दीन ढाने का जुर्म सरज़द हो। लिहाज़ा नमाज़ की पाबंदी करके दीन को क़ायम करने की कोशिश करो। आइये अल्लाह ﷻ की बारगाह में दुआ करें कि रब्बे क़दीर हम सबको नमाज़ क़ायम करने वालों में बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ फ़िरओन व हामान के साथ हश्र ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुजूर ताजदारे अरब ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जिस शख़्स ने नमाज़े पंजगाना की उनके

मुतय्यन अवक़ात में तहारते कामिला के साथ पाबंदी की उसके लिये क़यामत में एक नूर होगा और एक हुज्जत होगी और जिस शख़्स ने नमाज़ें ज़ाया कीं उसका हश्र फ़िरओन व हामान के साथ होगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस हदीसे पाक में फ़रमाया गया कि नमाज़ की हिफ़ाज़त करने वाले के लिये नूर होगा यानी क़ब्र की तारीक वादी और पुल सिरात जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ होगा। जिससे हर एक को गुज़रना होगा, ऐसे मौक़े पर नमाज़े नूर यानी रौशनी काम दे देगी। और यह नमाज़ अल्लाह عزوجل की बारगाह में नमाज़ी के आबिद, साजिद और मोमिन होने की दलील होगी। और अल्लाह جل جلاله न करे कि कोई मुसलमान बे नमाज़ी हो तो उसको मौला उन बदबख़्तों के साथ रखेगा जो अल्लाह عزوجل के अज़ाब में गिरफ़्तार होंगे। इन बदनसीबों का जुर्म यह था कि तकब्बुर की वजह से अल्लाह جل جلاله की बारगाह में सर न झुकाते थे और ख़ुदाई का दावा करते थे। अब आप हमें बताओ, क्या कोई मुसलमान फ़िरओन व हामान जैसे दुश्मने ख़ुदा के साथ अपना हश्र होना पसंद करेगा ? अगर नहीं ! तो आओ, आज ही हम अल्लाह جل جلاله की बारगाह में सच्चे दिल से तौबा कर लें कि आज से हमारी कोई नमाज़ नहीं छूटेगी। अल्लाह हम सबको हिफ़ाज़ते सलात की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ ज़िम्मए नबी ﷺ से महरूम ★

हज़रत उम्मे अयमन رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि सरकारे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : **مَنْ تَرَكَ الصَّلٰوةَ مُتَعَمِّداً فَقَدْ بَرِءَ مِنْ ذِمَّةِ مُحَمَّدٍ** ﷺ जिस शख़्स ने जान बुझकर नमाज़ छोड़ दी हुज़ूर ﷺ के ज़िम्मे से निकल गया।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह ने ताजदारे कायनात ﷺ को रहमते आलम बनाकर दुनिया में भेजा, हुज़ूर रहमते आलम ﷺ हर किसी की मुसीबत के मुदावा बन कर तशरीफ़ लाये, चरिन्द परिन्द से लेकर शजर व हजर सब हुज़ूर रहमते आलम ﷺ की रहमत के सहारे जी रहे हैं। अब आप सोचें, जो रसूल दोनों जहां की ज़रूरत बन कर आये, क़ब्र से लेकर हश्र तक दामने रहमते आलम ﷺ और करमे रहमते आलम ﷺ की ज़रूरत

हर किसी को है। तो हर वह चीज़ जो इस रसूल से रिश्ता तोड़ने का सबब बने उससे बचना चाहिये। कौन है हुज़ूर ﷺ के अलावा जो हम को दारैन की परेशानियों से निजात दिला सके ?! अब रहमते आलम ﷺ फ़रमाते हैं, जिसने क़सदन नमाज़ तर्क की वह मुहम्मद ﷺ के ज़िम्मे से बरी है।

है लिहाज़ा नमाज़ को तर्क करने से गुरेज़ करें ताकि दामने रहमते आलम ﷺ में पनाह भी मिले और सरकारे दो आलम ﷺ के ज़िम्मए करम पर दोनों जहां में इत्मिनान से रह सकें, अल्लाह عزوجل हम सब पर दामने रसूल ﷺ के साये को दराज़ फ़रमाये है।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ आमाल मरदूद हो जायेंगे ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मन्क़ूल है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

क़यामत के दिन बंदे के आमाल में सबसे पहले नमाज़ देखी जायेगी अगर वह पूरी हुई तो उसकी नमाज़ और उसके तमाम आमाल क़बूल कर लिये जायेंगे, और अगर वह नाक़िस हुई तो उसकी नमाज़ और उसके सारे आमाल रद्द कर दिये जायेंगे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से नमाज़ की अहमियत का अंदाज़ा होता है। आज हमारा हाल यह है कि बहुत सारे नफ़्ल आमाल में हम बहुत ही चुस्ती का मुज़ाहिरा करते हैं मगर नमाज़ के मामले में बे पनाह सुस्ती करते हैं ! कभी वक़्त गुज़ार कर अदा करना, कभी लाग़िर व नातवां की तरह अदा करना, कभी नमाज़ में इधर उधर देखना, कभी इतनी जल्दी पढ़ना कि अल्लाह की पनाह !

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! याद रखो ! क़यामत में सबसे पहले नमाज़ का मामला पेश होगा, और इसकी दुरुस्तगी पर दूसरे आमाल मौला तआला क़बूल फ़रमायेगा। लिहाज़ा हम को चाहिये कि नमाज़ अच्छी तरह से अदा करें ताकि क़यामत के दिन नमाज़ की दुरुस्तगी की वजह से अल्लाह جل جلاله दीगर आमल भी क़बूल फ़रमा ले। अल्लाह جل جلاله हम सबको सही तौर पर नमाज़ की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ तर्के सलात कुफ़्र के क़रीब ★

हज़रत बुरीदा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, हमारे और मुनाफ़िक़ों के दर्मियान अहद नमाज़ है। पस जिसने नमाज़ को तर्क किया वह काफ़िर हो गया। *(तिर्मिज़ी शरीफ़)*

इसी तरह हज़रत अबू दरदा رضی اللہ عنہ से भी रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : **مَنْ تَرَكَ الصَّلٰوةَ مُّتَعَمِّداً فَقَدْ كَفَرَ** जिस शख़्स ने नमाज़ जान बुझकर छोड़ी उसने कुफ़्र किया। *(बज़्ज़ार)*

का मतलब यूं बताया गया है कि वह कुफ़्र के क़रीब हो गया, क्योंकि वह नमाज़ छोड़ बैठा हालांकि नमाज़ दीन का सुतून है और यक़ीन की बुनियाद है। **فَقَدْ كَفَرَ** का मतलब यह है कि उसने काफ़िर का काम किया, क्योंकि काफिर भी नमाज़ नहीं पढ़ता है और उसने भी न पढ़ी। चुनांचे एक रिवायत में है कि बंदे और शिर्क व कुफ़्र के दर्मियान फ़र्क़ नमाज़ है। जब उसने नमाज़ छोड़ दी तो काफ़िरों जैसा काम किया।

तिर्मिज़ी वग़ैरह की रिवायत में है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया, कि हमारे और उनके दर्मियान फ़र्क़ नमाज़ का है। जिसने नमाज़ छोड़ दी उसने काफ़िरों जैसा काम किया।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अगर हमारे पास दौलत हो तो हम उसकी हिफ़ाज़त में किसी क़िस्म की कोताही नहीं करते, दौलत कहां महफ़ूज़ होगी ? कैसे महफ़ूज़ होगी? इसमें इज़ाफ़ा कैसे होगा? उसके सिलसिले में हमेशा फ़िक्र मंद रहते हैं, लेकिन ईमान के हवाले से इतनी फ़िक्र नहीं होती। याद रखें ! ईमान से बढ़कर कोई दौलत नहीं, कुरआने मुक़द्दस और अहादीसे मुबारका में तहफ़्फ़ुज़े ईमान पर बे शुमार इरशादात मौजूद हैं, मज़कूरा हदीस में फ़रमाया गया कि जिस शख़्सने नमाज़ को क़सदन तर्क किया उसने कुफ़्र किया यानी उसका ईमान अब ख़तरे में पड़ गया। तर्के सलात की आदत से अब कुफ़्र के क़रीब तो पहुंच गया, कहीं इसका ईमान भी न चला जाये ! लिहाज़ा चाहिये कि नमाज़ में चुस्ती और हिफ़ाज़त करें ताकि ईमान महफ़ूज़ हो जाये। अल्लाह हम सबका ख़ात्मा ईमान पर फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

तर्के नमाज़ पर वइदें

★ नमाज़ छोड़ने वालों का हश्र ★

हुज़ूर ﷺ ने एक दिन नमाज़ का तज़किरा फ़रमाया और फ़रमाया कि जिसने इन नमाज़ों को पाबंदी के साथ अदा किया वह नमाज़ उस शख़्स के लिये क़यामत के दिन नूर, हुज्जत और नजात होगी और जिस शख़्स ने नमाज़ों को अदा न किया क़यामत के दिन नमाज़ उसके लिये नूर, हुज्जत और नजात न होगी, और वह क़यामत के दिन क़ारून, फ़िरओन, हामान और उबय बिन खलफ़ के साथ होगा। *(मुस्नदे तिब्रानी)*

बाज़ उलेमा किराम ने फ़रमाया है कि इन लोगों के साथ तारीके नमाज़ इसलिये उठाया जायेगा कि अगर उसने अपने माल व असबाब में मशगूलियत की बुनियाद पर नमाज़ को तर्क किया तो वह क़ारून की तरह हो गया और उसी की तरह उठाया जायेगा। और अगर माल व अस्बाब की मश्गूलियत की बुनियाद पर नमाज़ न पढ़ी तो वह फ़िरओन की तरह है और उसी के साथ उठाया जायेगा। और अगर वज़ारत की मश्गूलियत नमाज़ से मानेअ हूइ तो वह हामान की तरह है और उसी के साथ उठेगा और अगर तिजारत की मशगूलियत की वजह से नमाज़ न पढ़ी तो वह उबय बिन ख़लफ़ की तरह है और उसी के साथ उठाया जायेगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज तिजारत की मशगूलियत नीज़ इक़्तेदार का गुरूर और हाकिम की चापलूसी इंसान को इतना मसरूफ़ कर देती है कि इंसान फ़राइज़ से भी ग़ाफ़िल हो जाता है। ख़बरदार ! तिजारत व मुलाज़मत में इतने मसरूफ़ न हो जाओ कि अल्लाह عزوجل की बारगाह में सर झुकाने का वक़्त भी न निकाल सको। वरना फ़रमाया गया कि उन लोगों के साथ क़यामत में रखा जायेगा जो अल्लाह عزوجل के नज़दीक निहायत ही नापसंदीदा हैं और जिन पर रब्बे क़दीर जलाल की नज़र फ़रमायेगा और दोनों जहां में वह ज़िल्लत और रुसवाई के हक़दार हैं और वह ऐसे ज़लील हैं कि उनके नाम पर और उनके किरदार पर क़यामत तक लानत व मलामत की जाती रहेगी और बंदगाने ख़ुदा और गुलामाने रसूल ﷺ उनसे पनाह मांगते रहेंगे। जिनका ज़िक्र अल्लाह جل جلالہ के हबीब ﷺ ने मज़कूरा हदीस शरीफ़ में किया, यानी फ़िरओन, हामान, क़ारून, उनका नाम सुनते ही नफ़रत पैदा होती है। कोई भी आशिक़े रसूल ﷺ उनके साथ अपना हश्र पसंद नहीं

कर सकता। लिहाज़ा हम सबको चाहिये कि नमाज़ के पाबंद बन जायें ताकि अल्लाह ﷻ नेक लोगों के साथ हमारा हश्र फ़रमाये और दुश्मनाने ख़ुदा व रसूल ﷺ के साथ हश्र से बचाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ नमाज़ छोड़ने वाले बदबख़्त व महरूम है ★

जिसकी नमाज़ क़ज़ा हो गयी तो गोया उसका माल और घराना तबाह हो गया। *(सहीह इब्ने हब्बान)*

जिसकी नमाज़े अस्र क़ज़ा हो गयी तो गोया उसके अहल व अयाल और माल तबाह हो गये। *(सिहाह सित्ताह)*

एक रिवायत में है कि नमाज़ों में एक नमाज़ ऐसी है कि अगर वह क़ज़ा हो गयी तो गोया कि उसके अहलो अयाल और माल सब तबाह हो गये और वह है नमाज़े अस्र। *(निसाइ शरीफ)*

जिसने नमाज़े अस्र छोड़ दी और उम्दन बैठा रहा यहां तक कि नमाज़ क़ज़ा हो गयी तो बेशक! उसका अमल तबाह हो गया। *(मुस्नदे अहमद व इब्ने अबी शैबा)*

जिसने नमाज़े अस्र छोड़ दी उसका अमल बर्बाद हो गया। *(अहमद, बुखारी, निसाइ)*

शाफ़ई और बयहकी की रिवायत है कि जिसकी एक नमाज़ फ़ौत हो गयी गोया उसका घराना और माल हलाक हो गया।

बाज़ मुहद्देसीन से मरवी है कि एक दिन हुजूर ﷺ ने सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से कहा कि तुम यूं दुआ मांगा करो, ऐ अल्लाह! हममें से किसी को शक़ और महरूम न बना। फिर फ़रमाया कि जानते हो कि बदबख़्त महरूम कौन होता है? अर्ज़ किया कि कौन होता है? या रसूलल्लाह! ﷺ तो आपने फ़रमाया कि जो इंसान नमाज़ छोड़ता है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! नमाज़ की वइदें आप मुलाहेज़ा कर चुके। अब अंदाज़ा लगायें कि अल्लाह ﷻ की रहमत से महरूम और बदबख़्त किस शख़्स को हुजूर ﷺ ने फ़रमाया ?! ग़रीब को, बीमार को,

मुफ़लिस को नहीं, बल्कि फ़रमाया, रहमते आलम ﷺ ने कि जानते हो कि शक़ी कौन है? महरूम कौन है? जो नमाज़ छोड़ने वाला है। अल्लाहु अकबर!

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! दीने इस्लाम में तर्के सलात कितना बड़ा गुना है वह हम जान चुके। लिहाज़ा चाहिये कि हम तर्के सलात से परहेज़ करें और पाबंदीए सलात के आदी बनें। अल्लाह ﷻ हम सबको नमाज़ क़ायम करने वाला बनाये और शक़ावत व महरुमी से बचाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ जमाअत छोड़ने वाला बलाओं में मुब्तला ★

हुजूर नबी करीम ﷺ इर्शाद फ़रमाते हैं, जो शख़्स जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने में सुस्ती करेगा अल्लाह ﷻ उसको बारह बलाओं के साथ अज़ाब देगा। तीन बलायें दुनिया में और तीन बलायें मौत के वक़्त और तीन बलायें क़ब्र में और तीन बलायें क़यामत के दिन। तीन बलायें जो दुनिया में आयेंगी इनमें से पहली बला उसकी रोज़ी में से बर्कत उठा लेगा। और दूसरी बला उससे सालेहीन का नूर चला जायेगा। और तीसरी बला वह तमाम ईमान वालों के दिलों में मबगूज़ हो जायेगा। मौत के वक़्त आने वाली तीन बलायें यह हैं, पहली बला उसकी रूह इस हालत में क़ब्ज़ की जायेगी जब कि वह प्यासा हो, अगरचे वह सारी नहरों का पानी पी ले मगर फिर भी मौत के वक़्त वह प्यासा ही रहेगा। और दूसरी बला उसकी जां कनी बड़ी सख़्त होगी। और तीसरी बला उसके ईमान की बर्बादी का ख़तरा रहेगा। और तीन बलायें जो क़ब्र में आयेंगी इनमें से पहली बला उस पर मुन्किर नकीर के सवाल सख़्त हो जायेंगे। दूसरी बला उस पर क़ब्र की तारीकी बहुत ज़्यादा शिद्दत इख़्तेयार कर लेगी। और तीसरी बला क़ब्र इस क़दर तंग हो जायेगी कि तमाम पसलियां आपस में मिल जायेंगी। और क़यामत के दिन आने वाली बलाओं में से पहली बला उसका हिसाब बड़ी सख़्ती से होगा। दूसरी बला उस पर रब का ग़जब होगा और तीसरी बला उसको आग का अज़ाब देगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! तर्के जमाअत से जिन बलाओं का ज़िक्र किया गया है आज उम्मते मुस्लेमा में से अक्सर बलाओं में गिरफ़्तार है वजह सिर्फ़ तर्के जमाअत है। जब जमाअत छोड़ने से आदमी इन बलाओं में

गिरफ़्तार हो जाता है तो जो सिरे से नमाज़ ही नहीं पढ़ता उस पर कितनी बलायें नाज़िल होती होंगी? अल्लाह ﷻ के प्यारे हबीब ﷺ ने बेहद करम फ़रमाया कि हर परेशानी का सबब भी बता दिया और उसका इलाज भी। अब हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपनी इस्लाह करें और नमाज़ व जमाअत की पाबंदी की कोशिश करें। इंशाअल्लाह! हमारी सब परेशानियां अल्लाह ﷻ दूर फ़रमायेगा। और हदीसे मुक़द्देसा में है कि हज़रत जिब्रईल व मिकाईल फ़रमाते हैं कि अल्लाह फ़रमाता है कि जो तारीके नमाज़ है वह तोरेत, ज़बूर, इंजील और कुरआन मजीद में मलउन है।

الله اكبر! मलउन का मतलब यह है कि अल्लाह ﷻ की रहमत से दूर। अब रहमत से जो दूर हुआ उसे कौन क़रीब करेगा। और कौन पनाह अता करेगा ? लिहाज़ा ख़ुदारा नमाज़ की पाबंदी करें और आइंदा नमाज़ तर्क करने से तौबा करें। अल्लाह ﷻ हम तमाम को नमाज़ की पाबंदी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم**

नमाज़ का छोड़ना वाक़ियात की रौशनी में

★ नमाज़ छोड़ने वालों के लिये अलम (वादी) है ★

हदीसे मुबारका में है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के दिन सबसे पहले नमाज़ न पढ़ने वालों के मुंह काले किये जायेंगे और जहन्नम में एक वादी है जिसे अलम कहा जाता है जिसमें सांप रहते हैं, हर सांप ऊंट की तरह मोटा होता है और एक माह के सफ़र के बराबर लंबा होता है, वह बे नमाज़ी को डसेगा और उसके जिस्म में सत्तर साल तक उसका ज़हर जोश मारता रहेगा। फिर उसका गोश्त गल जायेगा। *(मकाशिफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज हम मामूली मच्छर के काटने को बर्दाश्त नहीं कर सकते नीज़ उसकी तकालीफ़ से हम परेशान हो जाते हैं तो ग़ौर करें कि तर्के सलात के एवज़ में सांप के काटने का अज़ाब होगा तो कौन बर्दाश्त कर सकेगा ?! लेकिन हमारा हाल यह है कि हम हुज़ूर ﷺ को तो मानते हैं लेकिन हुज़ूर ﷺ की बातें नहीं मानते !! कितना एहसान फ़रमाया है ताजदारे कायनात ﷺ ने कि क़यामत के होलनाक अज़ाब से

आगाह फ़रमा दिया, वरना कैसे पता चलता कि किस गुनाह की क्या सज़ा है ? अब जब सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमा दिया कि नमाज़ छोड़ने की सज़ा यह भी होगी कि सांप डंक मारेगा और सांप कितना भयानक होगा वह भी बता दिया तो हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने आपको नमाज़ का पाबंद बनर कर सांप वग़ैरह के अज़ाब से महफ़ूज़ कर लें। अल्लाह ﷻ अपने प्यारे हबीब ﷺ के सदका व़ तुफ़ैल हम सबको नमाज़ का पाबंद बनाये।

آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم

★ क़ब्र में शोले ★

बाज़ सालेहीन से मरवी है कि एक आदमी ने अपनी मुर्दा बहन को दफ़न किया तो उसकी थैली बेख़बरी से क़ब्र में गिर गयी। जब सब लोग उसे दफ़न करके चले गये तो उसे अपनी थैली याद आयी, चुनांचे वह आदमी लोगों के चले जाने के बाद क़ब्र पर पहुंचा और उसे खोदा ताकि थैली निकाल ले। उसने देखा कि उस क़ब्र में शोले भड़क रहे हैं, चुनांचे उसने क़ब्र पर मिट्टी डाली और इंतेहाई ग़मगीन और रोता हुआ मां के पास आया और पूछा, मां! यह बताओ कि मेरी बहन क्या करती थी? मां ने पूछा कि तुम क्यों पूछ रहे हो ? उसने कहा, मैंने अपनी बहन की क़ब्र में आग के शोले भड़कते देखा है! उसकी मां रोने लगी और कहा तेरी बहन नमाज़ में सुस्ती करती थी और नमाज़ों को ताख़ैर से पढ़ती थी।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! नमाज़ में सुस्ती के एवज़ में क़ब्र में आग के शोलों का अज़ाब दिया जायेगा, जो मज़कूरा वाक़िया से पता चला। क़ब्र ऐसी जगह है जहां कोई रिश्तेदार हमारी मदद के लिये नहीं आयेगा लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम नमाज़ की पाबंदी भी करें और सुस्ती के साथ और बेवक़्त न पढ़ें, बल्कि वक़्त पर और सारे अरकान को ख़ुश अस्लूबी के साथ अदा करें। अल्लाह ﷻ हम सबको क़ब्र के अज़ाब से बचाये और क़ब्र को जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ बनाये।

آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم

★ जहन्नम के दरवाज़े पर ★

हज़रत समरक़ंदी رحمة الله عليه ने हुज़ूर ﷺ का यह क़ौल नक़ल किया है

कि जो शख़्स एक फ़र्ज नमाज़ जान बुझकर छोड़ दे उसका नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है जिसमें उसका जाना ज़रूरी है। *(कुर्रतुल अैन)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! सोच कर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि गुलामे रसूल का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर ! **اللہ اکبر!** नमाज़ छोड़ना कितना बड़ा जुर्म है कि मौला तआला कितना नाराज़ होता है कि मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अज़ाब में उन्हें गिरफ़्तार करता है, उन्हीं में से क़ब्र का अज़ाब भी है। हम जानते हैं कि छोटे से छोटे अज़ाब के बर्दाश्त करने की कुव्वत हम में नहीं, फिर क्यों ऐसा काम करें कि जिसकी वजह से बड़े से बड़े अज़ाब में गिरफ़्तार किये जायें। लिहाज़ा आओ अहद करें कि इंशाअल्लाह ! आज के बाद तर्के सलात के जुर्म से परहेज़ करेंगे और पाबंदे सलात होकर हुजूर ﷺ की आंखों को ठंडक पहुंचायेंगे। अल्लाह جل جلالہ हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ सर मुंडवाने का हुक्म ★

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رضی اللہ عنہ के वालिद अब्दुल अजीज़ मिस्र के गवर्नर थे उन्होंने अपने लड़के को आला तालीम दिलाने के लिये मदीना में हज़रत सालेह बिन केसान رضی اللہ عنہ की निगरानी में दे दिया। चुनांचे एक मर्तबा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رضی اللہ عنہما ने नमाज़ में ताख़ीर कर दी तो उनके उस्ताद ने उनसे बाज़ पुर्स करते हुए पूछा, तुमने आज नमाज़ में ताख़ीर क्यों की ? तो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رضی اللہ عنہما ने जवाब दिया, बाल संवार रहा था, इसलिये ज़रा देर हो गयी। तो उनके उस्ताद ने फ़रमाया, अच्छा अब बालों की आराइश में इतना शग़ुफ़ हो गया है कि उसको नमाज़ पर तरजीह दी जाती है ! इसके बाद उस्ताद ने उनके वालिद को यह वाक़िया लिखकर भेजा। अब्दुल अज़ीज़ को जब यह मालूम हुआ तो उसी वक़्त एक आदमी को मिस्र से मदीना रवाना कर दिया जिसने आकर सबसे पहले उनके सर के बाद मूंडे, उसके बाद बातचीत की, क्योंकि उनके वालिद का यही हुक्म था।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के दीवानो ! क्या जज़्बा था अल्लाह वालों का !

नमाज़ में ताख़ीर तक गंवारा नहीं करते थे और जो चीज़ नमाज़ में ताखीर का सबब बनी उसे ही तन से जुदा कर दिया, इससे औलिया किराम का शौक़े नमाज़ और औलाद के सिलसिले में तर्बियत का जज़्बा समझ में आता है। हम ज़रा अपने बारे में ग़ौर करें कि क्या हम में ये जज़्बा मौजूद है ?! हमारा हाल तो यह है कि आराम की वजह से हो या फ़ुज़ूल गोई की वजह से या बनने संवरने की वजह से नमाज़ का वक़्त निकल जाये तो भी परवाह नहीं करते ! الا ماشاءاللہ मज़कूरा वाक़िया से सबक़ हासिल करते हुए हमें ख़ूद को अस्लाफ़ के तरीक़े पर चलाने की कोशिश करनी चाहिये। और नमाज़ के मामला में अपनी औलाद के लिये भी फ़िक्रमंद होना चाहिये और उनकी निगरानी करनी चाहिये।

अल्लाह عزوجل हम सबको नमाज़ के मामले में ग़फ़लत से बचाये और वक़्त पर पर अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ शैतान दूर भागे ★

एक शख़्स जंगल से गुज़र रहा था कि उसके साथ शैतान हो गया, चुनांचे उस शख़्स ने न तो नमाज़े फ़ज्र पढ़ी न जुहर न अस्र की और न मग़्रिब और ईशा की। रात को जब सोने का वक़्त हुआ तो शैतान ने उससे कहा कि मैं तुमसे दूर होना चाहता हूं। उसने कहा क्यों ? तो शैतान बोला, इसलिये कि मैंने सिर्फ़ एक सज्दा न किया था और वह भी आदम علیہ السلام को और तूने दिन भर में कई सज्दे ख़ुदा ही को न किये, तो मुझे डर लगता है कि जब एक सज्दा न करने की वजह से मुझ पर लानत का अज़ाब भेज दिया गया है तो तुझ पर इतने सज्दे छोड़ने से ख़ुदा जाने क्या दर्दनाक अज़ाब नाज़िल हो, जिसमें कहीं मैं भी न मारा जाऊं !

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! शैतान जैसा मरदूद जिस के गले में लानत का तौक़ डाला गया है और जिसे अल्लाह جل جلالہ ने रजीम कहा, वह भी उस बंदे से भागता है जो नमाज़ तर्क करता है, जैसा कि मज़कूरा वाक़िया से मालूम हुआ। आप सोचें कि बे नमाज़ी कितना बुरा इंसान होता है कि शैतान जैसा मरदूद भी उसके साथ रहना पसंद नहीं करता। लिहाज़ा मेरे

प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! सज्दों की तड़प पैदा करो और नमाज़ में कोताही न करो वरना अल्लाह ﷻ दोनों जहां की तकलीफ़ों में गिरफ़्तार फ़रमायेगा, और कोई नहीं बचा सकेगा। अल्लाह ﷻ हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये और नमाज़ की कमाहक्क़हू अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ ज़ानी से भी बदतर है ★

बनी इस्राईल की एक औरत हज़रत मूसा علیہ السلام की ख़िदमत में आयी और अर्ज़ किया, ऐ नबी ! मैंने बहुत बड़ा गुनाह किया है और तौबा भी की है अल्लाह ﷻ से दुआ मांगिये कि वह मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा कुबूल फ़रमा ले। हजरत मूसा علیہ السلام ने फ़रमाया कि तूने कौन सा गुनाह किया है? वह कहने लगी कि मैं ज़िना की मुर्तकिब हुई और उससे जो बच्चा पैदा हुआ मैंने उसको क़त्ल कर दिया। यह सुनकर हज़रत मूसा علیہ السلام ने फ़रमाया, ऐ बदबख़्त ! निकल जा ! कहीं तेरी नहूसत की वजह से आसमान से आग नाज़िल होकर हमें जला न दे। चुनांचे वह शकिस्ता दिल होकर वहां से चल पड़ी तब जिब्राईल अलैहिस्सलाम नाज़िल हुए और कहा ऐ मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह फ़रमाता है कि तुमने गुनाहों से तौबा करने वाली को क्यों वापस कर दिया? क्या तुमने इससे भी ज़्यादा बुरा आदमी नहीं पाया? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा ऐ जिब्राईल इस औरत से ज़्यादा बुरा कौन है? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि इससे बुरा वह है जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दे।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الصلوٰة والسلام علیك یارسول الله ﷺ

وعلیٰ آلك واصحابك یا نور الله ﷺ

रोज़े का बयान

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है :–

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसे कि अगलों पर फ़र्ज़ हुए कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले। *सूरए बकरह, आयत–183)*

★ सूम का लग़वी और इस्लाही मायने ★

सियाम का मादा सोम है जिसके लुग़वी मायने हैं बाज़ रहना, छोड़ना और सीधा होना। इसलिये ख़ामोशी को सूम कहते हैं। कुरआने पाक में है, **اِنِّیْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْماً فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيّاً** "मैंने आज रहमान के लिये रोज़ा माना है तो आज हरगिज़ किसी से बात न करूंगी।" क्योंकि इसमें कलाम से बाज़ रहना है। और इस्तेलाहे शरअ में सुबह सादिक़ से लेकर गुरूब आफ़ताब तक अल्लाह ﷻ की इबादत की नियत से अपने आपको खाने, पीने और जमअ करने से रोकने को सूम कहते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! रोज़ा दर हक़ीक़त इंसान के अंदर मौजूद नफ़सानी ख़्वाहिशात को कमज़ोर कर देता है और रोज़ेदार के दिल में यह अक़ीदा रासिख़ हो जाता है कि अल्लामुल ग़ोयूब मेरी तमाम हरकात व सकनात को देख रहा है। रोज़े की हालत के अलावा इंसान के दिल व दिमाग़ में यह तसव्वुर नहीं रहता कि वह जो कुछ भी कर रहा है उसे ख़ूद देख रहा है लेकिन सुबह सादिक़ से गुरूब आफ़ताब तक भूख लगती है

फिर भी नहीं खाता, कोई देखने वाला बज़ाहिर नहीं होता फिर भी नहीं पीता, बीवी सामने मौजूद होती है फिर भी अपने आपको सोहबत से रोके रखता है क्योंकि उसके दिल में अल्लाह عزوجل का ख़ौफ़ होता है। अब ज़ाहिर सी बात है कि कोई बंदा एक माह तक इस तसव्वुर के साथ ज़िंदगी गुज़ारे तो बाक़ी महीनों में भी उसमें यह तसव्वुर आ जायेगा कि मैं कुछ भी करूं अल्लाह عزوجل देख रहा है। जब अल्लाह के देखने का तसव्वुर हमेशा के लिये उसके दिल में पैदा हो गया तो वह हर ख़िलाफ़े शरअ काम से बचेगा ! उसका अपने आपको बचाना यही तक़्वा है और तक़्वा मिल गया तो बंदे को दारैन की दौलत हासिल हो गयी। तो रोज़ा इस वजह से फ़र्ज़ किया गया ताकि ईमान वालों को तक़्वा मिल जाये।

★ रोज़ा कब फ़र्ज़ हुआ ★

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! रोज़ा, ऐलाने नुबुव्वत के पंद्रहवीं साल यानी दस शव्वाल 2 हि. में फ़र्ज़ हुआ।

अल्लाह का फ़रमान है :–

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये हैं जैसे कि अगलों पर फ़र्ज़ हुए कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले। अल्लाह तआला ने इस आयत में दो बातों का बतौरे ख़ास ज़िक्र फ़रमाया, अव्वल यह कि यह इबादत सिर्फ़ तुम ही पर फ़र्ज़ नहीं की जा रही है बल्कि तमाम से पहले लोगों पर भी फ़र्ज़ हो चुकी है। *(सूरए बकरह, आयत–183)*

चुनांचे तफ़सीरे कबीर व तफ़सीरे अहमदी में है कि हज़रत आदम علیہ السلام से लेकर हज़रत ईसा علیہ السلام तक हर उम्मत पर रोज़ा फ़र्ज़ रहे। चुनांचे हज़रत आदम علیہ السلام पर हर क़मरी महीने की 13वीं, 14वीं और 15वीं के रोज़े और हज़रत मूसा علیہ السلام की कौम पर आशूरा का रोज़ा फ़र्ज़ रहा। बाज़ रिवायतों में है कि सबसे पहले हज़रत नूह علیہ السلام ने रोज़े रखे।

दूसरी बात यह है कि रोज़े तुम इस लिये फ़र्ज़ किये गये ताकि तुम मुत्तक़ी बन जाओ कि शरीअत के तमाम अहकाम का मक़सद मोमिनीन को

मुत्तक़ी बनाना है इसलिये कुरआने करीम बार बार तक़्वा इख़्तेयार करने और मुत्तक़ी बनने का हुक्म देता है।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! यूं तो नमाज़, रोज़े, हज, ज़कात और दीगर इबादात सबके सब ऐसे आमाल हैं जिनसे कुर्बे ख़ुदावंदी की लानत और अल्लाह का ख़ौफ़ दिलों में जांगुज़ी होता है। लेकिन बिलख़ुसूस रोज़ा तक़्वा की तर्बियत का बेहतरीन ज़रिया है कि रोज़ेदार सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म की तामील में हलाल चीज़ों का हराम हो जाना भी तसलीम कर लेता है, भूखा रहता है जब कि खाने पीने की हर चीज़ पर इसे कुदरत हासिल होती है। बीवी पर शहवत की नज़र तक नहीं डालता। इससे ज़्यादा अल्लाह جل جلالہ की रज़ाजोई का इज़हार और किस अमल से हो सकता है ? रोज़ा सख़्त तकलीफ़ के आलम में भी हुक्मे इलाही की तामील का अमल सबूत है। रोज़ा इताअत व फ़रमाबर्दारी और इज़हारे अबदियत का बेहतरीन नमूना है। रोज़ा हमदर्दी और ग़मगुसारी नीज़ तआवुन के जज़्बात पैदा करता है। रोज़ा ख़्वाहिशाते नफ़्स के ख़िलाफ़ जेहाद की तर्बियत का बेहतरीन ज़रिया है। यही सब ख़ूबियां राहे तक़्वा के मुसाफ़िर को मंज़िल के क़रीब करती है। इसलिये मेरे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया :–

مَنْ لَمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّوْرِوَالْعَمَلَ بِهٖ فَلَيْسَ لِلّٰهِ حَاجَةٌ فِىْ اَنْ يُّدَعَ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ

हुजूर علیہ السلام ने फ़र्माया कि जो शख़्स रोज़े में झूठ बोलना और बुरे काम करना न छोड़े तो अल्लाह جل جلالہ को उस की ज़रूरत नहीं कि वह अपना खाना पीना छोड़ दे। *(बुख़ारी शरीफ)*

खाना पीना छुड़ाना मक़सूदे रोज़ा नही, मक़सूदे रोज़ा तो तक़्वा है जो उसी वक़्त हासिल हो सकता है जब रोज़ेदार ज़ाहिरी व बातिनी दोनों एतेबार से एहकामे शरअ की पाबंदी करे, ऐसा शख़्स रोज़े का मक़सद हासिल कर सकता है।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! रोज़े की हालत में अगर अपने आपको झूठ वग़ैरह से नहीं रोका गया तो भूखा प्यासा रहना बारगाहे रब्बे جل جلالہ में वह मक़ाम नहीं रखता जो मुकम्मल तौर पर हर ग़ैर शरई काम से बचा कर रोज़ा रखना मक़ाम रखता है। अंदाज़ा लगाइये कि ताजदारे कायनात

ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह ﷻ को हमें भूखा प्यासा रखना मक़सूद नहीं बल्कि हर बुराई से बचाना मक़सूद है, अब अगर कोई शख़्स खाने पीने से अपने आपको रोके और झूठ से अपने आपको न बचाये, मक़सदे रोज़ा फ़ौत हो जाता है। लिहाज़ा हम को चाहिये कि हम रोज़े की हालत में झूठ से अपने आपको रोकें। और रोज़े की ही क्या तख़सीस ! हमें तो हर हाल में अपने आपको जुमला सग़ीरा व कबीरा गुनाहों से रोकने की कोशिश करनी चाहिये। अल्लाह ﷻ हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

फ़ज़ाइले रोज़ा

★ रोज़े के इनाम ★

बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत में है कि हुजूर علیہ السلام ने इर्शाद फ़रमायाः कि इब्ने आदम का हर नेक अमल दस गुना से सात सौ गुना कर दिया जाता है। अल्लाह ﷻ ने फ़रमाया, मगर रोज़ा, क्योंकि रोज़ेदार अपनी ख़्वाहिशात और खाने को सिर्फ़ मेरे लिये तर्क करता है और रोज़ेदार के लिये दो मसर्रतें हैं : एक ख़ुशी इसे इफ़्तार के वक़्त होती है और दूसरी अपने रब से मुलाक़ात के वक़्त होगी, और रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह ﷻ को मुश्क से ज़्यादा पसंद है और रोज़ा ढाल है। जब तुममें से कोई रोज़ा रखे तो न फ़हश बात कहे और न शोर करे। और अगर कोई उसे गाली दे उसे चाहिये कि गाली देने वाले से कह दे कि मैं रोज़े से हूं। *(बुख़ारी व मुस्लिम)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! **اَلصَّوْمُ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِہٖ** इस जुमले का मक़सद व मंशा यह है कि वही इबादत मक़बूल है जिसमें रिया और दिखावा न हो। तमाम इबादतें अपना एक ज़ाहिरी हाल रखती हैं। नमाज़ पढ़ने वाले को आप नमाज़ी कह सकते हैं, हज करने वाले को हाजी कह सकते हैं, इसी तरह जेहाद करने वाले को मुजाहिद कह सकते हैं लेकिन रोज़े का कोई ज़ाहिरी हाल नहीं लिहाज़ा यह पोशीदा तरीन इबादत सिर्फ अल्लाह ﷻ के लिये होगी। पस यह बंदे की तरफ से अल्लाह ﷻ को माबूद हक़ीक़ी तसलीम करने का निहायत ही आला अमल है। इसीलिये रोज़े की कोई

मुक़र्रर जज़ा नहीं। यह रब तआला के करम पर मौक़ूफ़ है, जितना चाहे सवाब फ़रमा दे। यह ऐसी इबादत है जिस को कोई जान नहीं पाता तो उसका सवाब भी किसी को नहीं बताया गया। देने वाला रब जानता है और लेने वाला बंदा जानेगा।

नुकता : बाज़ मुहदेसीन رحمۃ اللہ علیہ ने इसे **(وَاَنَا اُجْزٰی بِہٖ)** सेगाए मजहूल के साथ रिवायत किया है। इस सूरत में हदीस का मफ़हूम यह हुआ कि रोज़ा मेरे लिये है और रोज़े की जज़ा में ख़ुद हूं। गोया बंदाए मोमिन रोज़ा रखकर ख़ूद ज़ाते बारी तआला को पा लेता है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इख़लास का मक़ाम कितना अरफ़अ व आला है, आपने मज़कूरा हदीस शरीफ़ से जान लिया कि हम जाइज़ काम को इख़लास के साथ करें, बल्कि हर काम का मक़सूद ही बनायें कि अल्लाह ﷻ और इसके प्यारे महबूब ﷺ की रज़ा के लिये करता है, किसी काम से भी अगर अल्लाह ﷻ राज़ी हो गया तो बेड़ा पार। इन्शाअल्लाह! इसी लिये तो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी رضی اللہ عنہ ने अपने आक़ा व मौला की बारगाह में यही अर्ज़ किया है कि :—

काम वह ले लीजिये तुमको जो राज़ी करे।
ठीक हो नाम रज़ा तुम पर करोड़ो दुरूद।

रब्बे क़दीर हम सबको इख़्लास की अज़ीम तरीन दौलत रोज़ा के सदक़े में अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ अगले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स ईमान के साथ सवाब की उम्मीद से रोज़ा रखे तो उसके अगले गुनाह बख़्श दिये जायेंगे जो इमान के साथ सवाब की नियत से रमज़ान की रातों में क़याम यानी तरावीह पढ़ेगा तो उसके अगले गुनाह बख़्श दिये जायेंगे और जो ईमान के साथ सवाब की नीयत से शब क़द्र का क़याम करेगा उसके अगले गुनाह बख़्श दिये जायेंगे। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हमारा पूरा वजूद गुनाहों के दाग़

धब्बों से आलूदा है। रोज़ा हम सबको पाक करने के लिये आता है और इस तरह गुनाहों से पाक करता है कि गुनाह का नाम व निशान नहीं रहता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कितना एहसान है कि एक माह के रोज़ों के ज़रिये हमारे अगले गुनाहों को बख़्श देता है। तरावीह के ज़रिये हमारे अगले गुनाहों को बख़्श देता है। हमें चाहिये कि हम इख़्लास के साथ रोज़े रखकर अपने रब से माफ़ी के परवाने हासिल करें। परवर्दिगार हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये और अपने फ़ज़्ल से हम सबकी बख़्शिश फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ बदन की ज़कात ★

हुजूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया, रोज़ा निस्फ़ सब्र है, हर चीज़ की ज़कात है और बदन की ज़कात रोज़ा है। और अबू औफा رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि रोज़ादार का सोना इबादत है, उसकी ख़ामोशी तस्बीह है, उसका अमल मक़बूल है।

★ सोने का दस्तरख़्वान ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुजूर अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है, क़यामत के दिन रोज़ादारों के लिये सोने का एक दस्तरख़्वान रखा जायेगा जिसमें मछली होगी रोज़ेदार उस दस्तरख़्वान से खाते होंगे और दूसरे लोग उनको देखते होंगे। *(गुन्यतुत्तालिबीन, पेज–462)*

मेरे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के प्यारे दीवानो ! यहां रोज़ा रखकर सब्र करने पर ताजदारे कायनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की रौशनी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़यामत में कितना अज़ीम बदला अता फ़रमायेगा। यहां भूके रहे तो क़यामत में सोने का दस्तरख़्वान अल्लाह तआला फ़रमायेगा यक़ीनन ! वह किसी का अज्र ज़ाएअ नहीं फ़रमाता, बल्कि हर एक को अपनी शान के मुताबिक़ बदला अता फ़रमाता है। रोज़ेदार चूंकि अपने मौला की ख़ातिर खाना पीना वग़ैरह छोड़ देता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस रोज़ेदार को आराम करने पर भी इबादत का सवाब, ख़ामोशी पर तस्बीह का सवाब और अमले ख़ैर के क़बूल होने की बशारत। سُبْحٰنَ اللّٰه मेरे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के प्यारे दीवानो ! उसकी बात मानकर अगर अपनी ख़्वाहिश को

रोज़े का बयान

क़ुरबान कर दे तो वह करीम उस बंदे की इस अज़ीम क़ुरबानी को क़बूल फ़रमाता है और उसे बशारते उज़्मा से नवाज़ता है। अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ अच्छों के सदक़े हम सबको पाबंद सोम सलात बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ अर्श के साये में ★

हज़रत इब्ने अब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जब रोज़ादार अपनी क़ब्रों से निकलेंगे तो उनके मुंह से मुश्क की ख़ुश्बू की लपटें आयेंगी। जन्नत का एक दस्तरख़्वान उनके सामने रखा जायेगा जिससे वह खायेंगे और वह सब अर्श के साये में होंगे।

मेरे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से पता चला कि दुनिया में रोज़ेदारने दुनिया की इन नेअमतों से अपने आपको रोके रखा जिन नेअमतों से अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने रोज़े की हालत में रुकने का हुक्म दिया था तो अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ उस फ़रमाबर्दार बंदे को आख़ेरत में इस इताअत का बदला इस तरह अता फ़रमायेगा कि अर्श के साए में जन्नत का दस्तरख़्वान इसके सामने रखा जायेगा और दुनिया में जिन नेअमतों से अपने आपको महज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रज़ा के लिये रोज़े की हालत में रोके रखा था, अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ उससे बेहतर उन्हें अता फ़रमायेगा, वह जन्नत में भूखा नहीं रहेगा बल्कि वह जो चाहेगा मौला इसको अता फ़रमायेगा क्यों न हो फ़रमाबर्दारों को ऐसा ही बदला अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ अता फ़रमाता है।

लिहाज़ा हमें चाहिये कि परवर्दिगारे आलम جَلَّ جَلَالُهٗ की रज़ा के लिये ख़ूद को तैयार करें और चंद घंटों की भूख और प्यास बर्दाश्त करके मौला عَزَّوَجَلَّ को ख़ुश करें, वह रहीम व करीम क़यामत के दिन ख़ूश फ़रमा देगा। दुआ करें कि अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ हम सबको अपनी रज़ा वाली तवील उमर अता करे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ एक अजीब फ़रिश्ता ★

हुजूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैंने शबे मेअराज में सिदरतुल मुन्तहा पर एक फ़रिश्ता देखा जिसे मैंने इससे पहले नहीं देखा था। उसके

तूल व अर्ज़ की मुसाफ़त लाख साल के बराबर थी, उसके सत्तर हज़ार सर थे और हर हर सर में सत्तर हज़ार मुंह और हर मुंह में सत्तर हज़ार ज़बानें और हर सर पर सत्तर हज़ार नूरानी चोटी थी और हर चोटी के सर पर बाल में लाख लाख मोती लटके हुए थे, हर एक मोती के पेट के अंदर बहुत बड़ा दरिया है और हर दरिया के अंदर बहुत बड़ी मछलियां हैं और हर मछली का तूल दो साल की मुसाफ़त के बराबर और हर मछली के पेट में लिखा है **لاالٰه الاالله محمد رسول الله** और उस फ़रिश्ते ने अपना सर अपने एक हाथ पर रखा है और दूसरा हाथ इसकी पीठ पर है और वह "हज़ीरतुल कुदस" यानी बहिश्त में है। जब वह अल्लाह की तसबीह पढ़ता है तो उसकी प्यारी आवाज़ से अर्शे इलाही ख़ुशी में झूम उठता है। मैंने जिब्रईल علیہ السلام से उसके मुताल्लिक़ पूछा तो उन्होंने अर्ज़ किया कि यह वह फ़रिश्ता है जिसे अल्लाह तआला ने आदम علیہ السلام से दो हज़ार साल पहले पैदा किया था। फिर मैंने कहा, उसकी लंबाई और चोड़ाई कहां से कहां तक है? जिब्रईल ने अर्ज़ किया, अल्लाह तआला ने बहिश्त में एक चरागाह बनाई है और यह उसी में रहता है, उस जगह को अल्लाह عزوجل ने हुक्म फ़रमाया है कि वह आपके और आपकी उम्मत के हर उस शख़्स के लिये तसबीह पढ़े जो रोज़े रखते हैं।

मैंने उस फ़रिश्ते के आगे दो संदूक़ देखे और दोनों पर हज़ार नूरानी ताले थे। मैंने पूछा, जिब्रईल यह क्या है? उन्होंने कहा, इस फ़रिश्ते से पूछिये। मैंने उस अजीब व ग़रीब फ़रिश्ते से पूछा कि यह संदूक़ कैसी हैं? उसने जवाब दिया कि इसमें आपकी रोज़ा रखने वाली उम्मत की बराअत (छुटकारा) का ज़िक्र है। आपको और आपकी उम्मत के रोज़ा रखने वालों को मुबारक हो। *(तफसीरे रुहुल बयान, जिल्द दोम)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! कितना बड़ा अज्र है रोज़ेदार के लिये! अल्लाह عزوجل की बारगाह में दुआ है कि परवरदिगार ताजदारे कायनात صلی اللہ علیہ وسلم के सदक़ा व तुफ़ैल हम सबको रोज़े के आदा ब और रोज़े की हिफ़ाज़त की कमाहक्क़हू तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और मज़कूरा हदीस मुबारका में जो अज्र रखा गया है उसका हमें हक़दार बनायें।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ रोज़ादारों की मेहमान नवाज़ी ★

हदीस पाक में है, जब क़यामत में अल्लाह तआला अहले क़ुबूर को क़ब्रों से उठने का हुक्म देगा तो अल्लाह عزوجل मलाइका को फ़रमायेगा, ऐ रिज़वान! मेरे रोज़ादारों को आगे चलकर मिलो, क्योंकि वह मेरी ख़ातिर भूखे प्यासे रहे, अब तुम बहिश्त की ख़्वाहिशात की तमाम अशिया लेकर उनके पास पहुंच जाओ। उसके बाद रिज़वाने जन्नत ज़ोर से पुकारकर कहेगा, ऐ जन्नत के ग़िलमान! नूर के बड़े बड़े थाल लाओ, उसके बाद दुन्या की रेत के ज़र्रात और बारिश की बुंदों और आसमान के सितारों और दरख़्तों के पत्तों के बराबर मेवाजात और खाने पीने की लज़ीज़ अशिया जमा करके रोज़ादारों के सामने रख दी जायेंगी और उनसे कहा जायेगा, जितना मर्ज़ी हो खाओ! इन रोज़ों की जज़ा है जो दुनिया में तुमने रखे। *(रुहुल बयान, जिल्द दोम)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! कल बरोज़े क़यामत अल्लाह جل جلالہ रोज़ेदार को कितनी इज्ज़त व अज़मत अता फ़रमायेगा। **اللّٰہ اکبر!** फ़रिश्तों को इस्तिक़बाल का हुक्म देगा, नूर के बड़े बड़े थालों में क़िसम क़िसम की जन्नत की नेअमतें रोज़ेदारों के सामने रखी जायेंगी। कितना अज़ीम सिला है रोज़ा रखने का! अल्लाह جل جلالہ अपने प्यारे हबीब صلی اللہ علیہ وسلم के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको इन ख़ुश नसीबों में शामिल फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ एक रोज़ा की अहमियत ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमायाः बग़ैर उज़रे शरई के जिसने रमज़ान का एक रोज़ा भी छोड़ा तो उसकी फ़ज़ीलत पाने के लिये पूरी ज़िन्दगी के रोज़े ना काफ़ी हैं। *(बुखारी शरीफ व तिर्मिज़ी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! माहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़े की अज़मत आपने समाअत फ़रमाई। और दिनों में भी आदमी रोज़े रखे लेकिन जो फ़ज़ीलत माहे रमज़ानुल मुबारक को हासिल है वह दूसरे महीने को कहां? उसमें शैतान क़ैद कर दिया जाता है, रोज़ी बढ़ा दी जाती है, सवाब

बढ़ा दिया जाता है, ग़र्ज़ कि इस तरह की बहुत सारी बरकतें माहे रमज़ानुल मुबारक में रब की तरफ़ से अता होती हैं जो ग़ैरे रमज़ान में नहीं होतीं। इसलिये कि इस माह में सवाब इस हद तक बढ़ा दिया जाता है कि फ़र्ज़ का सवाब सत्तर फ़र्ज़ के बराबर, नफ़्ल का सवाब फ़र्ज के बराबर। लिहाज़ा माहे रमज़ानुल मुबारक के फ़र्ज़ रोज़े में कोताही नहीं करना चाहिये। रमज़ान के रोज़ा रखना फ़र्ज़ है। अल्लाह ﷻ हम सबको रोज़ों की पाबंदी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ फ़वाइदे रोज़ा ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जिहाद करो! माले ग़नीमत पाओगे। और रोज़ा रखो सेहतमंद हो जाओगे। और सफ़र करो मालदार हो जाओगे। *(अत्तरगीब वत्तरहीब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हुज़ूरे अक़दस ﷺ के हर फ़ेअल में सदहा हिकमतें और फ़वाइद पोशीदा हैं जिनकी गहराई तक हमारी अक़्ल का परिन्दा परवाज़ नहीं कर सकता। मसलन इस्लाम ने हम पर नमाज़ फ़र्ज़ फ़रमाई तो जहां नमाज़ों की अदायगी पर हमारे लिये आख़रत में अज्र व सवाब का वादा फ़रमाया गया वहीं दुनिया में नमाज़ की मुदावमत करने पर हमारे लिये बहुत सी बीमारियों के दफ़ा का ज़रिया भी बना दिया। गोया कि अल्लाह ﷻ और उसके प्यारे महबूब ﷺ के बताये हुए अहकाम की बजा आवरी में हमारे लिये दुनिया में भी भलाई है और आख़ेरत में भी भलाई है। आज का दौर साइंस और टेक्नालॉजी का दौर है, इंसान मुज़ाहिराए कुदरत में ग़ौर व फ़िक्र करके उनकी गहराई तक पहुंचना चाहता है। चुनांचे अग़यार इस्लाम के बताये हुए अहकामात व इरशादात पर मुसलसल तहक़ीक़ कर रहे हैं। **الحمد لله** ज्यों ज्यों साइंसी ईजादात और टेक्नालॉजी का फ़रोग़ हो रहा है इस्लाम की हक़्क़ानियत लोगों पर वाज़ेह होती जा रही है। इंसान चूंकि तबअन हरीस है, इस्लाम ने उसे हर अमल पर नफ़ा दिया है इसलिये सुन्नतों की साइंसी तहक़ीक़ हुई वरना हुज़ूरे अक़दस ﷺ की मुबारक सुन्नतें क़तअन साइंस की मोहताज नहीं। इस्लाम ने रोज़े को मोमिन के लिये शिफ़ा क़रार दिया है। इस ज़िम्न में साइंस क्या कहती है? मुख़्तसरन मुलाहेज़ा फ़रमाइये:

हकीम मुहम्मद तारिक़ महमूद चुग़ताई अपनी तसनीफ़ "सुन्नते नबवी और जदीद साइंस" में रक़म तराज़ हैं। प्रोफ़ेसर मोरपालड आक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी की पहचान हैं। उन्होंने अपना वाक़िया बयान किया है कि मैंने इस्लामी उलूम का मुताला किया और रोज़े के बाब पर पहुंचा तो चौंक पड़ा कि इस्लाम ने अपने मानने वालों के लिये कितना अज़ीम फ़ार्मूला दिया है! अगर इस्लाम अपने मानने वालों को और कुछ न देता सिर्फ़ यही रोज़े का फ़ार्मूला ही देता तो फिर भी इससे बढ़कर उन के पास और कोई नेअमत न होती। मैंने सोचा कि इसको आज़माना चाहिये। फिर मैंने रोज़े मुसलमानों के तर्ज़ पर रखना शुरू कर दिये। मैं अर्सए दराज़ से मेअदे के वरम **(Stomach Inflamation)** में मुब्तला था। कुछ दिनों के बाद ही मैंने महसूस किया कि इसमें कमी वाक़ई हो गयी है। मैंने रोज़ों की मश्क़ जारी रखी। फिर मैंने जिस्म में कुछ तबदीली भी महसूस की। और कुछ ही अर्सा बाद मैंने अपने जिस्म को नार्मल पाया। हत्ता कि मैंने एक माह के बाद अपने अंदर इंक़िलाबी तदबीली महसूस की।

★ पोप ऐलफ़ गाल का तर्जबा ★

यह हॉलैंड का बड़ा पादरी गुज़रा है उसने रोज़े के बारे में अपने तर्जबात ब्यान किये हैं मुलाहज़ा हों :—

"मैं अपने रूहानी पैरोकारों को हर माह तीन रोज़े रखने की तलक़ीन करता हूं। मैंने इस तरीक़े कार के ज़रिये जिस्मानी और वज़नी हम आहंगी महसूस की। मेरे मरीज़ मुझ पर मुसलसल ज़ोर देते हैं कि मैं उन्हें कुछ और तरीक़ा बताउं मैंने यह उसूल वज़अ कर लिया कि उनमें वह मरीज़ जो ला इलाज हैं उनको तीन योम नहीं बल्कि एक माह तक रोज़े रखवाये जायें।"

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ईसाई लोग फ़ज़ीलत के बजाए उसके तिब्बी फ़ायदे की तरफ़ मुतवज्जोह हुए और जब उसकी तह तक पहुंचे तो हिकमते इस्लाम के जल्वे उन को नज़र आने लगे और उन्होंने इस पर अमल करके फ़ायदा हासिल किया और मज़ीद फ़ायदे हासिल कर रहे हैं। अल्लाह ﷻ का कितना बड़ा करम है कि उसने हम सबको रोज़े की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और हम को रोज़े के ज़रिये जिस्मानी रूहानी और उख़रवी

फ़ायदे से भी मालामाल किया। अल्लाह جل جلاله हम सबको नेकियों की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ एक लाख रमज़ान का सवाब ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : जिसने मक्का में रमज़ान पाया और रोज़ा रखा और रात में जितना हो सका क़याम किया (नवाफ़िल पढ़े) तो अल्लाह جل جلاله उसके लिये दूसरी जगह की निसबत एक लाख रमज़ान का सवाब लिखेगा और हर दिन एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रोज़ जिहाद में घोड़े पर सवार कर देने का सवाब और हर दिन में हसना और हर रात में हसना लिखेगा।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में रमज़ान के अय्याम गुज़ारने की सआदत का क्या कहना ! यक़ीनन ! हरमैन तैयबैन में रोज़ों की कैफ़ियत ही जुदा होती है और उसकी बर्कतें भी बे पनाह होती हैं। अल्लाह عزوجل हम सबको माहे रमज़ान में हरमेन की हाज़िरी नसीब फ़रमाये। और बार बार दरबारे रसूल صلی اللہ علیہ وسلم की हाज़री से बहरावर फ़रमाये और आख़री वक़्त मदीने में दो गज़ ज़मीन अता फ़रमाये।

★ फ़ैज़ाने रमज़ान व कुरआन ★

हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि मक्की मदनी सरकार صلی اللہ علیہ وسلم इरशाद फ़रमाते हैं, रोज़ा और कुरआन बंदे के लिये शफ़ाअत करेंगे। रोज़ा अर्ज़ करेगा, ऐ रब करीम ! मैंने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया। मेरी शफ़ाअत इसके हक़ में क़बूल फ़र्मा। कुरआन कहेगा, मैंने इसे रात में सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअत इसके लिये क़बूल फ़र्मा। चुनांचे दोनों की शफ़ाअतें कुबूल हो जायेंगी। *(तिब्रानी व बैहकी)*

मेरे प्यारे आका صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! रोज़ा रखना बज़ाहिर इंसान के लिये थोड़ा सा तकलीफ़देह होता है, नफ़्स पर गिरां गुज़रता है इसी तरह दिन भर थक कर रात में क़याम करना भी तबीयत पर दुश्वार गुज़रता है लेकिन अगर कोई बंदाए मोमिन चंद दिनों की तकलीफ़ को बर्दाश्त करे और रोज़ा और तिलावते कुरआन को न छोड़े तो कल बरोज़े क़यामत अल्लाह جل جلاله की

बारगाह में यह हमारे सिफ़ारशी होंगे और अल्लाह جل جلاله उनकी सिफ़ारिश को क़बूल फ़रमाकर हम को बहिश्त का हक़दार बना देगा। लिहाज़ा हमको चाहिये कि रोज़ा और तिलावते कुरआने मुक़द्दस की पाबंदी की कोशिश करें और उनको अपना शफ़ीअ बनायें। रब्बे क़दीर हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और हम सबके हक़ में रोज़ा और कुरआन को शफ़ीअ बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ बरकाते माहे रमज़ान ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, जब रमज़ान की पहली रात होती है अल्लाह अपनी मख़लूक़ की तरफ़ नज़र फ़रमाता है और जब अल्लाह جل جلاله किसी बंदे की तरफ़ नज़र फ़रमायेगा तो उसे कभी अज़ाब न देगा। और हर रोज़ दस लाख को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब 29वीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उनके मजमूए के बराबर उस रात में आज़ाद करता है। फिर अब ईदुल फ़ित्र की रात आती है मलाइका ख़ुशी करते हैं और अल्लाह جل جلاله अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है। फ़रिश्तों से फ़रमाता है ऐ गरोहे मलाइका ! उस मज़दूर का क्या बदला है जिसने काम पूरा किया? फ़रिश्ते अर्ज़ गुज़ार होते हैं, उसको पूरा अज्र दिया जाये। अल्लाह फ़रमाता है मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैंने इन सबको बख़्श दिया।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! माहे रमज़ान की कितनी बरकतें हैं और अल्लाह तआला جل جلاله की कितनी इनायतें हैं आपने सुना। अल्लाह جل جلاله हम सबको माहे रमज़ानुल मुबारक के सदक़ा व तुफ़ैल में बख़्श दे और हम सब पर अपनी ख़ास नज़रे करम फ़रमाकर अज़ाब से बचाले।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ काश ! पूरा साल रमज़ान हो ★

इब्ने ख़ुज़ैमा ने हज़रत अबू मस्उद गिफ़ारी رضی اللہ عنہ से एक तवील हदीस रिवायत की इसमें यह भी है कि हुजूर रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, अगर बंदों को मालूम होता कि रमज़ान क्या चीज़ है? तो मेरी उम्मत तमन्ना करती

कि काश ! पूरा साल रमज़ान हो।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से यह पता चला कि जो कुछ फज़ीलतें माहे रमज़ानुल मुबारक की बतायी गयी हैं वह तो हैं ही उनके सिवा भी उसकी अज़्मतें और बरकतें बहुत हैं। अगर वह हमें मालूम हो जायें तो हम तमन्ना करते पूरा साल रमज़ान हो। इरशादे रसूलुल्लाह ﷺ से यह समझ में आया कि और भी बरकतें हैं तो हम को चाहिये कि माहे रमज़ानुल मुबारक का एहतेराम करें और दोनों जहां की बरकतों से मालामाल हों। अल्लाह عزوجل हम सबको माहे रमज़ानुल मुबारक की बरकतों से मालामाल फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ शयातीन क़ैद में ★

जब रमज़ानुल मुबारक तशरीफ़ लाता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। और एक रिवायत में है कि जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिये जाते हैं और शयातीन जंज़ीरों में जकड़ दिये जाते हैं। और एक रिवायत में है कि रहमत के दरवाज़े खुल जाते हैं। *(मिश्कात शरीफ)*

मेरे प्यारे आका ! ﷺ हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी अश्अ़तुल लम्आत जिल्द दोम में इस हदीस की शरह में तहरीर फ़रमाते हैं कि आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाने का मतलब यह है कि पय दर पय रहमत का भेजा जाना और बग़ैर किसी रुकावट के बारगाहे इलाही में आमाल का पहुंचना और दुआ का क़बूल होना। और जन्नत के दरवाजे खोल दिये जाने का मतलब यह है कि अल्लाह جل جلالہ रोज़ेदार को नेक आमाल की तौफ़ीक़ और हुस्ने कुबूल अता फ़रमाता है। और दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिये जाने का मतलब यह है कि रोज़ादारों के नफ़ूस, दिलों को ममनूआते शरइय्या की आलूदगी से पाक करना और गुनाहों पर उभारने वाली चीज़ों से नजात पाना और दिल से लज़्ज़तों के हुसूल की ख़्वाहिशात का तोड़ना। और शयातीन का जंज़ीरों में जकड़ दिये जाने का मायना यह है कि बुरे ख़्यालात के रास्तों का बंद होना। अल्लाह جل جلالہ की बारगाह में दुआ है कि हम सबको रमज़ानुल मुबारक की बरकतों से मालामाल फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ जन्नत को संवारा जाना ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! रमज़ानुल मुबारक की क्या अज़्मत व शान कि उसकी आमद के लिये जन्नत को सजाया जाता है और हूरें मुज़य्यन व आरास्ता होकर अपने अपने ख़ाविन्दों को प्यारे अलफ़ाज़ से बुलाती हैं। चुनांचे सैय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि आकाए रहमते आलम ﷺ ने फ़रमाया, बेशक ! जन्नत इब्तेदा साल से आइंदा साल तक रमज़ान शरीफ़ के लिये आरास्ता की जाती है। फ़रमाया, जब पहला दिन आता है तो जन्नत के पत्तों से अर्श के नीचे हवा सफ़ेद और बड़ी आंखों वाली हूरों पे चलती है तो वह कहती है कि ऐ परवर्दिगार! हमारे लिये इनको शोहर बना जिनसे हमारी आंखें ठंडी हों और उनकी आंखें हम से ठंडी हों।

★ सहरी व इफ़्तार का बयान ★

रसूले गिरामी वक़ार ﷺ का फ़रमाने आलीशान है सहरी खाओ कि सहरी खाने में बर्कत है, हमारे और अहले किताब के रोज़ों में फ़र्क़ सहरी का लुक़्मा है। *(बुखारी व मुस्लिम)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ज़रूर ज़रूर सहरी खाकर अपने मुसलमान और गुलामाने रसूलुल्लाह ﷺ होने का मुज़ाहिरा करो। सेहरी की फ़ज़ीलत में एक और इर्शाद रसूलुल्लाह ﷺ का सुनो, और झूम जाओ !

तबरानी अवसत मैं और इब्ने हब्बान सहीह में इब्ने उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, अल्लाह جل جلالہ और उसके फ़रिश्ते सेहरी खाने वालों पर दुरूद भेजते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इससे बढ़कर क्या फ़ज़ीलत होगी कि सहरी हम खायें और अल्लाह और उसके मासूम फ़रिश्ते सेहरी खाने वालों पर दुरूद भेजें।

लिहाज़ा ज़रूर सहरी खाने के लिये बेदार हुआ करें। एक और मक़ाम पर उम्मत पर करम फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया, इमाम अहमद अबू सईद

खुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूले हाशमी इरशाद फ़रमाते हैं, सेहरी कुल की कुल बर्कत है, इसे न छोड़ना अगरचे एक घूंट पानी ही पी ले, क्योंकि खाने वालों पर अल्लाह ﷻ और उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! यह सब बरकतें इस लिये बताई जा रही हैं ता कि किसी भी तरह उम्मत सेहरी के लिये बेदार हो और थोड़ा सा पानी ही सही ज़रूर पी ले। अगर हमने इस सुन्नत पर अमल किया तो हम अल्लाह ﷻ की बरकतों और मौला के दुरूद के हक़दार हो जायेंगे। रब्बे क़दीर हम सबके जाने अंजाने में हुए गुनाह माफ़ फ़रमाये और बरकतों से नवाज़े। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ इफ़्तार में जल्दी ★

अहमद व तिर्मिज़ी व इब्ने खुज़ैमा व इब्ने हब्बान हज़रत सैयदना अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रावी हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ﷻ ने इरशाद फ़रमाया, मेरे बंदों में मुझे ज़्यादा प्यारा वह है जो इफ़्तार में जल्दी करता है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि बातचीत में और दीगर कामों में मसरूफ़ नहीं रहना चाहिये अगर वक़्ते इफ़्तार इसी तरह हो जाये तो फ़ौरन इफ़्तार कर लो कि इफ़्तर में जल्दी करने वाला अल्लाह ﷻ को प्यारा है।

इसी तरह एक और इर्शादे रसूल ﷺ मुलाहज़ा फ़रमायें :–

तबरानी अवसत में है कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह ﷻ इफ़्तार में जल्दी करने और सहरी में देर करने वालों को पसंद फ़रमाता है।

★ इफ़्तार कराने की फ़ज़ीलत ★

नसाई व इब्ने खुज़ैमा ज़ैद बिन ख़ालिद जहन्नी رضی اللہ عنہ से रावी हैं कि फ़रमाया जो रोज़ादार को रोज़ा इफ़्तार कराये या ग़ाज़ी का सामान कर दे तो इसे भी उतना ही सवाब मिलेगा। *(निसाइ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जहां रोज़ा रखना बाइसे सवाब

है वहीं पर रोज़ादार को इफ़्तार कराना भी सवाब है। अल्लाह तआला ﷻ तौफ़ीक़ दे तो ज़रूर रोज़ा इफ़्तार करायें। और रोज़ा किन चीज़ों से इफ़्तार करें, तो आइये ताजदारे कायनात ﷺ का इर्शाद मुलाहेज़ा फ़रमायें।

हज़रत सलमान बिन आमिर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जब तुम में कोई रोज़ा इफ़्तार करे तो खजूर या छुआरे से इफ़्तार करे कि वह बरकत है और अगर न मिले तो पानी से कि वह पाक करने वाला है।

अल्लाह तआला अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको नबी करीम ﷺ की सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

रोज़े के मसाइल

★ रोज़े की नियत ★

मसअला : सहरी से फ़ारिग़ होने के बाद नियत करें और कहें :–

نَوَیْتُ اَنْ اَصُوْمَ غَداً لِلّٰہِ تَعَالیٰ مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ ھٰذَا "मैं ने नियत की अल्लाह तबारक व तआला के लिये इस रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा कल रखने की।"

मसअला : और अगर रात में नियत न कर सके तो दिन में यह कहे **نَوَیْتُ اَنْ اَصُوْمَ ھٰذَا الْیَوْمَ لِلّٰہِ تَعَالیٰ مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ ھٰذَا** मैं ने नियत की आज के दिन अल्लाह ﷻ के लिये इस रमज़ान का रोज़ा रखने की।

★ नियत किसे कहते हैं ? ★

मसअला : नियत दिल के इरादा का नाम है, ज़बान से कहना शर्त नहीं। यहां भी वही मुराद है मगर ज़बान से कह लेना मुस्तहब है।

मसअला : अगर किसी के माहे रमज़ान के कई रोज़े क़ज़ा हो गये हैं तो नियत में यह होना चाहिये कि यह रोज़ा फलां रमज़ान के फ़लां रोज़े की क़ज़ा है। अगर नियत में साल और दिन मुतय्यन न कर सके तो भी कोई हर्ज नहीं।

★ मगर रोज़ा नहीं टूटा ★

मसअला : भूल कर खाया, पिया, जमअ किया, रोज़ा न टूटा। ख़्वाह रोज़ा फ़र्ज़ हो या नफ़्ल। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : मक्खी, धुआं, गुबार हलक़ में जाने से रोज़ा नहीं टूटता। ख़्वाह वह गुबार आटे का ही क्यों न हो जो चक्की के पीसने से उड़ता है। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : तेल, सुरमा लगाया तो रोज़ा न टूटा। अगरचे तेल या सुरमा का मज़ा हलक़ में महसूस होता है बल्कि थूक में सुरमा का रंग भी दिखाई देता हो तब भी रोज़ा नहीं टूटत।

मसअला : एहतेलाम हो जाने, या हम बिस्तरी करने के बाद गुस्ल न किया और उसी हालत में पूरा दिन गुज़ार दिया तो वह नमाज़ों के छोड़ देने के सबब सख़्त गुनाहगार होगा। मगर रोज़ा अदा हो जायेगा। *(अन्वारुल हदीष)*

मसअला : बोसा लिया, मगर इंज़ाल न हुआ तो रोज़ा नहीं टूटता। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : औरत की तरफ बल्कि उसकी शर्मगाह की तरफ़ नज़र की मगर हाथ न लगाया, और इंज़ाल हो गया या बार बार जमअ के ख़्याल से इंज़ाल हो गया तो रोज़ा नहीं टूटा। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : तिल या तिल के बराबर कोई चीज़ चबाई और थूक के साथ हलक़ से उतर गयी तो रोज़ा न टूटा। मगर उस चीज़ का मज़ा हलक़ में महसूस होता हो तो रोज़ा टूट जायेगा। *(बहारे शरीअत)*

★ कभी रोज़ा टूटता नहीं ★

मसअला : हुक्क़ा, सिगार, सिगरेट, पान तम्बाकू, पीने खाने से रोज़ा टूट जाता है अगरचे पान या तम्बाकू की पीक थूक दी हो। क्योंकि इसके बारीक अजजा ज़रूर हलक़ में पहुंचते हैं। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : दूसरे का थूक निगल लिया या अपना ही थूक हाथ पर लेकर निगल लिया तो रोज़ा टूट गया। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : ओरत का बोसा लिया, छुआ, या मुबाशरत की, या गले लगाया, और इंज़ाल हो गया तो इन हालतों में रोज़ा टूट गया। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : क़सदन मुंह भर क़ै की और रोज़ादार होना याद है तो रोज़ा टूट जायेगा और अगर मुंह भर क़ै न होतो रोज़ा नहीं टूटेगा। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : सोते में ही पानी पी लिया कुछ खा लिया या मुंह खोला था पानी का क़तरा हलक़ में चला गया तो रोज़ा टूट जायेगा। *(बहारे शरीअत)*

★ सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम है ★

मसअला : यह गुमान था कि अभी सुबह नहीं हुई इसलिये खा लिया या पिया, या जमअ कर लिया और बाद को मालूम हुआ कि सुबह हो चुकी थी तो क़ज़ा लाज़िम है। यानी उस रोजे के बदले बाद रमज़ान एक रोज़ा रखना पड़ेगा।

मसअला : मुसाफ़िर ने इक़ामत की, हैज़ व निफ़ास वाली औरत पाक हो गयी, मरीज़ था अच्छा हो गया, काफ़िर था मुसलमान हो गया, मजनू को होश आ गया नाबालिग़ था बालिग़ हो गया। इन सब सूरतों में जो कुछ दिन का हिस्सा बाक़ी रह गया हो उसे रोज़े की मिस्ल गुज़ारना वाजिब है। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : हैज़ व निफ़ास वाली औरत सुबह सादिक़ के बाद पाक हो गयी, अगरचे ज़ह्वे कुबरा से पेशतर हो और रोज़े की नियत कर ली तो आज का रोज़ा न हुआ। न फ़र्ज़ न नफ़्ल। और मरीज़ या मुसाफिरने नियत कर ली या मजनू था होश में आकर नियत कर ली तो इन सब का रोज़ा हो गया।

मसअला : सुबह से पहले या भूलकर जमअ में मशगूल था सुबह होते ही याद आने पर फ़ौरन जुदा हो गया तो कुछ नहीं। और इसी हालत पर रहा तो क़ज़ा वाजिब, कफ़्फ़ारा नहीं। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : मैयत के रोज़े क़ज़ा हो गये थे तो उसका वली इस की तरफ़ से फ़िदया अदा करके यानी जब कि वसीयत की और माल छोड़ा हो। वरना वली पर ज़रूरी नहीं, कर दे तो बेहतर है। *(बहारे शरीअत)*

★ कफ़्फ़ारा भी लाज़िम ★

मसअला : जिस जगह रोज़ा तोड़ने का कफ़्फ़ारा लाज़िम आता है उसमें शर्त यह है कि रात ही को रोज़ाए रमज़ान की नियत की हो। अगर दिन में नियत की और तोड़ दिया तो लाज़िम नहीं। *(बहारे शरीअत)*

मसअला : कफ़्फ़ारा लाज़िम होने के लिये यह भी ज़रूरी है कि रोज़ा तोड़ने के बाद कोई ऐसा अम्र वाक़ेअ न हो जो रोज़ा के मनाफ़ी हो, या बग़ैर इख़्तेयार ऐसा अम्र न पाया गया हो जिसकी वजह से रोज़ा इफ़तार करने की रुख़सत होती। मसलन औरत को उसी दिन हैज़ या निफ़ास आ गया, या रोज़ा तोड़ने के बाद उसी दिन ऐसा बीमार हो गया जिसमें रोज़ा न रखने की इजाज़त है तो कफ़्फ़ारा साक़ित हो जायेगा। *(बहारे शरीअत)*

मसला : सहरी का निवाला मुंह में था कि सुबह तुलूअ हो गयी या भूलकर खा रहा था, निवाला मुंह में था कि याद आ गया और निगल लिया, दोनों सूरत में कफ़्फ़ारा वाजिब है अगर मुंह से निकाल कर फिर खाया हो तो सिर्फ़ क़ज़ा वाजिब होगी कफ़्फ़ारा नहीं। *(बहारे शरीअत)*

الصلوٰة والسلام عليك يارسول الله ﷺ

وعلىٰ آلك واصحابك يا حبيب الله ﷺ

ज़कात का बयान

अल्लाह तआला का फ़रमाने आलीशान है :— وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُوْنَ

और मुत्तक़ी वह हैं कि हमने जो उन्हें दिया है उसमें से हमारी राह में ख़र्च करते हैं।

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाता है :— وَاَقِيْمُوْا الصَّلٰوةَ وَآتُوْا الزَّكٰوةَ

और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा से ज़कात की फ़र्ज़ियत का सबूत मिलता है। ज़कात इस्लाम के अरकान में से एक अहम रुक्न है। आइये सबसे पहले ज़कात का माअना और मफ़हूम समझते चलें।

★ ज़कात का लुग़वी माअना ★

लुग़त के एतेबार से ज़कात का लफ़्ज़ दो माअने का हामिल है उसका एक माअना पाकीज़गी, तहारत, और पाक साफ़ होने या करने का है और दूसरा माअना नशू व नमू और बालीदगी का है। जिसमें किसी के बढ़ने फलने फूलने और फ़रोग़ पाने का मफ़हूम पाया जाता है। चूं कि ज़कात अदा करने से माल में इज़ाफ़ा होता है इसलिये वह माल जो अल्लाह ﷻ की राह में ख़र्च किया जाता है इसको ज़कात कहते हैं।

★ फ़र्ज़ियते ज़कात का सबब और ग़र्ज़ व ग़ायत ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! क़ुर्आने हकीम ने मुतअद्दिद मक़ामात पर इन अवामिल की निशानदेही फ़र्माई है जो फ़र्ज़ियते ज़कात का

सबब बने। चुनांचे रब तआला अहले ईमान से बराहे रास्त मुख़ातब होकर इर्शाद फ़र्माता है :– **يَآ يُّهَا الَّذِيۡنَ آمَنُوۡا اَنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقۡنٰكُمۡ** – *(सूरए बकरह, 254)*

ऐ ईमान वालो ! हमने जो तुम्हें रिज़्क़ दिया इसमें से ख़र्च करो। *(कन्ज़ुल इमान)*

एक दूसरी जगह दौलते रुश्द व हिदायत और तक़वा से बहरा याब ईमानदारों की अलामत बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया :–

هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ اَلَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ وَ يُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ

(सूरए बकरह)

इसमें हिदायत है डर वालों को, वह जो बे देखे ईमान लायें, और नमाज़ क़ायम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठायें। *(कन्ज़ुल इमान)*

एक और मक़ाम पर इर्शाद बारी तआला हुआ :–

وَ اَنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقۡنٰكُمۡ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ اَحَدَكُمُ الۡمَوۡتُ *(सूरए मुनाफिकून)*

"और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल उसके कि तुममें किसी को मौत आ जाये।" *(कन्ज़ुल इमान)*

इस आयते करीमा में ईमान वालों को आगाह किया गया है कि क़ब्ल उसके कि मौत आ जाये अपना माल अल्लाह ﷻ की राह में ख़र्च करना अपनी आदत बना लो। मौत के बाद जब ज़ाहिरी असबाब मुनक़तअ हो जायेंगे और क़यामत के दिन तुमसे पूछ गछ होगी तो सिवाए अफ़सोस और हसरत के तुम्हारे पास कुछ भी न होगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला ईमान वालों को बार बार झिंझोड़ता है कि उस माल में से मेरी राह में ख़र्च करो जो मैंने तुम्हें अता किया है।

مِمَّا رَزَقۡنٰكُمۡ अलफ़ाज़ ग़ोर तलब हैं कि बसा अवक़ात कोई अपनी कम ज़रफ़ी की बुनियाद पर यह ख़्याल कर लेता है कि इसका माल और उसकी कमाई उसकी ज़ात मेहनत व काविश का नतीजा है। उसका यह गुमान सरासर ग़लत है क्योंकि इंसान के पास जो कुछ माल व मताअ है वह उसके

रब की अता और फ़ज़्ल है जिससे उसे कभी महरूम भी होना पड़ सकता है।

★ इस्लाम की बुनियाद ★

हदीसे पाक में है, इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है :–

अल्लाह की वहदानियत और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु ﷺ की रिसालत का इक़रार करना नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, और हज करना।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ज़कात से मुताल्लिक़ हमारे आक़ा व मौला जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ ने भी ताकीद फ़रमाई है। चुनांचे हदीसे पाक में हज़रत अलक़मा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : **اِنَّ تَمَامَ اِسۡلَامِكُمۡ اَنۡ تُؤَدُّوۡا زَكٰوةَ اَمۡوَالِكُمۡ** तुम्हारे इस्लाम का पूरा होना यह है कि तुम अपने माल की ज़कात अदा करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जो अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ पर ईमान लाया, उस पर लाज़िम है कि अपने माल की ज़कात अदा करे। *(तिर्मिज़ी शरीफ, इब्ने माजह)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इन दोनों अहादीससे पता चलता है कि अल्लाह वहदहु लाशरीक की वहदानियत का इक़रार करने और रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत पर ईमान लाने के बाद मुसलमान मालिके निसाब पर अपने ईमान की तकमील के लिये ज़कात अदा करना ज़रूरी है ! जो मालिक निसाब होते हुए ज़कात अदा नहीं करते वह कामिल मुसलमान नहीं। ज़कात अदा करने वालों को अल्लाह, के रसूल ﷺ ने बड़ी बशारतें दी हैं।

चुनांचे तिबरानी ने अवसत में हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायात की कि हुज़ूर अक़दस ﷺ फ़रमाते हैं, जो मुझको छः चीज़ों की ज़मानत दे मैं उसके लिये जन्नत का ज़ामिन हूं। रावी कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि वह छः चीज़ें क्या हैं? अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया। नमाज़, ज़कात, अमानत, शर्मगाह, शिकम और ज़बान।

★ ज़कात देना रहमत ★

ज़कात देने वालों के लिये आख़ेरत की ज़िन्दगी में जन्नत की खुशख़बरी

है। जन्नत एक ऐसी जगह है जहां न कोई ख़ौफ़ न कोई ग़म, ख़ौफ़ व ख़तरा से हर तरह से इंसान आज़ाद और सुकून में होगा। और वहां इतनी आसाईश होगी कि इंसान दुनियावी ज़िन्दगी में तसव्वुर भी नहीं कर सकता। और यह अज़ीम मक़ाम लोगों के लिये है जो लोग अहले ईमान होंगे, नेक और सालेह अख़लाक़ के मालिक होंगे और उन तमाम सिफ़ात के हामिल होंगे जो कि एक मोमिन के लिये ज़रूरी हैं। तो ऐसे लोगों को जन्नत का वारिस बना दिया जायेगा। इससे मालूम हुआ कि जकात देने वालों के लिये जन्नत की वरासत है, जन्नत उनके लिये है और वह जन्नत के लिये।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! फ़िरदौस जन्नत का सबसे आला दर्जा है और मोमिनीन के लिये उसकी बशारत है। हज़रत अय्यूब رضی اللہ عنہ फरमाते हैं कि एक शख़्स नबी करीम ﷺ के पास आया और अर्ज़ करने लगा कि सरकार ! मुझे ऐसा अमल बता दें जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे। हुजूर ﷺ ने फ़रमाया, अल्लाह की इबादत कर, किसी को उस का शरीक न कर, नमाज़ क़ायम कर और ज़कात अदा कर।

★ जन्नत के दरवाज़े ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने खुत्बा पढ़ा और यह फ़रमाया कि क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है ! इसको तीन बार फ़रमाया, फिर सर झुका लिया। तो सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ने भी सर झुका लिया और रोने लगे, मालूम न हुआ कि आप ने किस चीज़ पर क़सम खाई है। फिर हुजूर ﷺ ने सर मुबारक उठा लिया। चेहराए अनवर पर ख़ुशी के आसार थे और इरशाद फ़रमाया : जो बंदा पांचों नमाज़ें पढ़ता है, रमज़ान के रोज़े रखता है और अपने माल की ज़कात देता है और कबीरा गुनाहों से बचता है उसके लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जायेंगे और उससे कहा जायेगा कि सलामती के साथ दाख़िल हो जा। *(निसाइ शरीफ)*

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़र्माया, जो शख़्स माल हासिल करे तो उस पर उस वक़्त तक ज़कात नहीं जब तक उस पर पूरा साल न गुज़र जाये। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

हज़रत समुरा बिन जंदुब رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ हमको इर्शाद फ़रमाया करते थे कि हम तिजारत के लिये तैयार की जान वाली चीजों की ज़कात निकाला करें। *(अबू दाउद)*

हज़रत मूसा बिन तलहा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हमारे पास हज़रत मआज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ का वह ख़त मौजूद है जिसे देकर हुजूर ﷺ ने उन्हें भेजा था। रावी ने कहा कि हुजूर ﷺ ने मआज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ को हुक्म फरमाया कि वह गेहूं, जव, अंगूर और खजूर की पैदावार में मुसलमानों से ज़कात वसूल कर लें। *(मिश्कात शरीफ)*

★ सदक़े के फ़ज़ाइल ★

मेरे प्यारे आका ﷺ के प्यारे दीवानो ! जिस तरह ज़कात न देने पर अज़ाब है उसी तरह ज़कात की अदायगी पर बेहिसाब सवाब भी है। फ़रमाया गया, अरकाने इस्लाम की अदायगी पर अल्लाह तआला की रहमत जोश में आयेगी और ज़कात देने वाले को सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ज़कात और सदक़ाए फ़ित्र, यह दोनों वाजिब हैं। जो इन दोनों को अदा न करेगा सख़्त गुनाहगार होगा। मगर उनके अलावा सदक़ा देने और ख़ुदाए वहदहु लाशरीक की राह में ख़ैरात करने का भी बहुत बड़ा सवाब है और दारैन में उसके बड़े बड़े फ़वाइद और मुनाफ़ेअ हैं। चुनांचे इसके बारे में हम यहां चंद अहादीस बयान करते हैं उन पर ग़ौर कीजिये और अपने प्यारे रसूल ﷺ के इन मुक़द्दस फ़रामीन पर अमल करके अपनी दुनिया और आख़ेरत संवार लीजिये।

★ माल में इज़ाफ़ा का ज़रिया ★

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :– मुसलमान जो एक छुआरा, या एक निवाला अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की राह में दे अल्लाह तआला उसे बढ़ाता है और पालता है जैसे कोई आदमी अपने बछरे या बोने को पालता है यहां तक कि वह बढ़कर उहद पहाड़ के बराबर हो जाता है। *(मुस्नदे इमाम अहमद)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जिस तरह मौला ज़कात अदा करने पर सवाब अता फ़रमाता है यूं ही सदक़े की अदायगी पर भी बेहिसाब सवाब अता फ़र्माता है। और अगर सदक़ा खुलूस के साथ दिया जाये तो अल्लाह तआला جل جلاله उसको ख़ूब बढ़ाता है और बलाओं को टालता है। हमने देखा है कि सदक़े की वजह से बहुत सी मुसीबतें अल्लाह جل جلاله दूर फ़रमाता है, बीमारियों को दूर फ़रमाता है। और याद रखें कि कभी भी यह गुमान मत करना कि सदक़े की वजह से माल कम हो जायेगा, बल्कि सदक़ा की वजह से हमेशा माल में इज़ाफ़ा होता है। अल्लाह तआला हम सबको सदक़ा देने की तौफ़ीक़ अदा फ़रमाये। आमीन।

★ फ़रिश्तों का ताज्जुब ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: कि जब अल्लाह तआला ने ज़मीन को पैदा फ़र्माया तो वह हिलने लगी, अल्लाह तआला ने पहाड़ों को पैदा फ़रमाया और जमीन को पहाड़ों के सहारे ठहरा दिया। यह देखकर फ़रिश्तों को उनकी ताक़त पर बड़ा ताज्जुब हुआ और उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ परवर्दिगार क्या तेरी मख़लूक़ में पहाड़ों से भी बढ़कर ताक़तवर कोई चीज़ है? अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि हां लोहा। फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि तेरी मख़लूक़ में लोहे से भी बढ़कर ताक़तवर कोई चीज़ है? तो फ़रमाया, हां आग है। फ़रिश्तों ने पूछा, क्या आग से ज़्यादा ताक़तवर कोई मख़लूक़ है? अल्लाह جل جلاله ने फ़रमाया हां पानी है, फिर फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि क्या तेरी मख़लूक़ में पानी से ज़्यादा ताक़तवर कोई चीज़ है? तो इरशाद हुआ, हवा है। यह सुनकर फ़रिश्तों ने सवाल किया कि क्या तेरी मख़लूक़ में हवा से भी बढ़कर कोई ताक़तवर चीज़ है? तो जवाब मिला के हां इब्ने आदम علیہ السلام कि वह अपने दाहिने हाथ से सदक़ा दे और बायें हाथ से छुपाये। *(मिश्कात शरीफ)*

मतलब यह है कि सदक़ा इस क़द्र छुपाकर दे कि दायें हाथ से सदक़ा करे तो बायें को ख़बर न हो। इस तरह सदक़ा करना पहाड़, लोहा, आग, हवा, पानी और तमाम चीज़ों से बढ़कर ताक़तवर है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज ख़ूद नुमाई का दौर दौरा है,

लोग कोई भी नेकी छुपाना नहीं चाहते। तो हुजूर ﷺ के फ़रमान की रौशनी में सबसे ज़्यादा ताक़तवर चीज़ वह सदक़ा है जो छुपाकर दिया जाये। अल्लाह तआला हम सबको इख़्लास के साथ मख़लूक़ की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ उम्र कैसे बढ़े ? ★

हज़रत उमर बिन औफ़ رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, बेशक ! सदक़ा के ज़रिये अल्लाह तआला उम्र बढ़ाता है और बुरी मौत को दफ़ा करता है। *(दुर्रे मन्सूर)*

★ ग़ज़बे इलाही से बचाओ ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़र्माया, बेशक ! सदक़ा अल्लाह तआला के ग़ज़ब को बुझाता है और बुरी मौत को दफ़ा करता है।

★ सदक़ा को बातिल न करो ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! सदक़ा देकर एहसान जताना बहुत बड़ी आफ़त है इसलिये छुपाकर सदक़ा देने की बड़ी फ़ज़ीलत वारिद है। सदक़ा देकर एहसान जताने से सदक़ा का सवाब ख़त्म हो जाता है। चुनांचे अल्लाह तआला का फ़रमान है لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى "अपने सदक़ात को एहसान रखकर और ईज़ा देकर बातिल न करो।"

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला अगर हमें मख़लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत करने का मौक़ा अता फ़रमाये तो ख़बरदार! ग़रीबों पर एहसान न जताया जाये अगर एहसान जतायेंगे तो यक़ीनन ! सदक़ात बातिल हो ही जायेंगे। उसी के साथ ग़रीबों की दिल आज़ारी का गुनाह भी होगा। लिहाज़ा किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिये। बल्कि हुजूर ﷺ की सुन्नत पर अमल करते हुए ग़रीब की भी मदद करनी चाहिये और इस के हक़ में दुआ भी करनी चाहिये अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ दे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

गज़बे रसूल صلى الله عليه وسلم

★ जहन्नमी कौन ? ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फ़रमाया, मुझ पर पेश हुआ कि तीन लोग जन्नत में पहले जायेंगे और तीन लोग जहन्नम में पहले जायेंगे। जन्नत में पहले जाने वाले तीन लोग यह होंगे : शहीद, गुलाम जो अपने रब की इबादत में मशगूल रहता था और अपने आक़ा के हुकूक़ भी अदा करता था और पाकदामन अयालदार। और जहन्नम में पहले जाने वाले तीन शख़्स यह होंगे : ज़बरदस्ती हाकिम बनने वाला, मालदार ज़कात न देने वाला, बदकार नादिर। *(सुनने दाउद)*

★ सोना चांदी और अज़ाब ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : जिसके पास सोना और चांदी हो और उसकी ज़कात न दे तो क़यामत के दिन उनकी तख़्तियां बनाकर जहन्नम की आग में तपायेंगे। फिर उनसे उस शख़्स की पेशानी और करवट दाग़ी जायेंगी। जब वह तख़्तियां ठंडी हो जायेंगी फिर इन्हीं तपाकर दाग़ेंगे। क़यामत का दिन पचास हज़ार बरस का है, यूं ही करते रहेंगे यहां तक कि तमाम मख़लूक़ का हिसाब हो जायेगा। *(मुस्लिम शरीफ)*

और हज़रत अबू ज़र رضی اللہ عنہ से रिवायत है : फ़रमाया कि ज़कात निकाले बग़ैर माल को जमा करने वालों को गर्म पत्थर की बशारत सुनाओ जिससे जहन्नम में इनको दाग़ा जायेगा। उसके सरे पिस्तान पर वह गर्म पत्थर रखेंगे कि सीना तोड़कर शाना से निकल जायेगा और शाना पर रखेंगे कि शाना की हड्डियां तोड़कर सीना से निकल जायेगा। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा صلى الله عليه وسلم के प्यारे दीवानो ! माल की ज़कात की अदायगी न करने की सज़ा कितनी सख़्त तरीन है ! यह बात हमें मज़कूरा हदीस शरीफ़ से समझ में आती है। हम में का कौन है जो इतना सख़्त अज़ाब बर्दाश्त कर सकेगा ? लिहाज़ा हम को चाहिये कि हम अपने मालों की ज़कात ज़रूर अदा

करें अल्लाह جل جلاله हमको ज़कात की अदायेगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ गले का अज़दहा ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बिन मस्उद رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने माल की ज़कात न देगा वह माल क़यामत के दिन गंजे अज़दहे की शक्ल बनेगा और उसके गले में तोक़ बन कर पड़ेगा। फिर हुजूर صلى الله عليه وسلم ने यह आयत तिलावत फ़रमाई :–

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهِ *(इब्ने माजा शरीफ)*

हज़रत षौबान رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फ़र्माया, जो बंदा अपने माल की ज़कात निकाले बग़ैर मर गया क़यामत के दिन वह माल गंजे अज़दहा की शक्ल में होगा जिसके दो फन होंगे, वह उसके पीछे दोड़ेगा वह शख़्स कहेगा ख़राबी हो तेरे लिये तू कौन है? वह कहेगा, मैं तेरा वही ख़ज़ाना हूं जिसे तू बग़ैर ज़कात अदा किये दुनिया में छोड़ आया था। फिर उसके पीछे दौड़ता रहेगा यहां तक कि वह मजबूर होकर उसके मुंह में अपना हाथ दे देगा। वह उसको चबायेगा यहां तक कि पूरा जिस्म चबा जायेगा। *(कन्जुल उम्माल)*

मेरे प्यारे आक़ा صلى الله عليه وسلم के प्यारे दीवानो ! जिस माल की बंदा जक़ात निकाले बग़ैर मर जाता है तो रहमते आलम صلى الله عليه وسلم के फ़रमान की रौशनी में वह माल क़यामत के दिन गंजे सांप की शक्ल में उस शख़्स के पीछे दौड़ेगा। अल्लाहु अक्बर! दुनिया में हमारे जमा किये हुए माल से दूसरे लोग फ़ायदा उठायेंगे और क़यामत के दिन जिसका माल था वह सांप के अज़ाब का मुस्तहिक़ होगा ! अल्लाह तआला ऐसा माल दे जिसकी हम सही तौर पर ज़कात अदा कर सकें। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ माल बर्बाद कैसे होता है ? ★

अमीरुल मोमिनीन हज़रत सैय्यदना फ़ारूके आज़म رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि सरकारे दो आलम صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फ़रमाया, ख़ुश्की और तरी में जो माल बर्बाद होता है वह ज़कात अदा न करने की वजह से होता है। और

हज़रत बुरीदा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़र्माया जो क़ौम ज़कात न देगी अल्लाह तआला उसे क़हत में मुब्तला कर देगा।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! इन दोनों रिवायतों से पता चलता है कि ज़कात का देना माल व दौलत की बर्बादी का सबब है। अगर आप चाहते हैं कि अल्लाह तआला की दी हुई नेअमतों से भरपूर फ़ायदा उठायें तो अपने माल की ज़कात अदा करें, ज़कात की बर्कत से माल महफूज़ हो जायेगा।

★ माल की मुहब्बत का अंजाम ★

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! सअलबा बिन हातिब एक निहायत ही मुफ़लिस मुसलमान थे। वह रब्बे क़दीर की बारगाह में बहुत ही ज़्यादा सज्दे किया करते थे। उनके कसरते सजूद की वजह से उनके माथे पर दाग़ ही नहीं बल्कि उनका माथा घुटने की तरह फूल गया था ! मगर वह नमाज़ पढ़ कर सबसे पहले मस्जिद से निकल जाते थे। एक मर्तबा सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने उनसे दर्याफ़्त फ़रमाया, ऐ सअलबा ! तुम मस्जिद से नमाज़ पढ़कर सबसे पहले क्यों निकल जाया करते हो? वह अर्ज़ करते हैं, या रसूलल्लाह ! صلی اللہ علیہ وسلم मेरे पास सिर्फ़ यही एक लिबास है लिहाज़ा जब मैं नमाज़ पढ़कर अपने घर को वापस जाता हूं तो इसी लिबास को पहनकर मेरी बीवी नमाज़ पढ़ती है। या रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم मेरे लिये अल्लाह तआला से दुआ फ़रमायें कि अल्लाह तआला मुझे माल की फ़रावानी अता फ़रमाये। सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, ऐ सअलबा! तुम्हारे लिये मुफ़लिसी ही बेहतर है। लेकिन सअबला ने हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की बात न मानी और अपनी बात पर बज़िद रहे। तो सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, ऐ सअलबा ! कौन सा माल पसंद है ? उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! मुझे बकरी सबसे ज़्यादा पसंद है। सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने उनके लिये दुआ फ़रमा दी। अभी कुछ ही दिन गुज़रे थे कि सअलबा को अल्लाह جل جلالہ ने बकरियों का एक रेवड़ अता फ़रमा दिया।

धीरे धीरे इन बकरियों की तादाद बढ़ती गयी हत्ता के सअलबा को मदीना के बाहर एक मैदान में पनाह लेनी पड़ी, और जब बकरियों की तादाद

बहुत ज़्यादा हो गयी तो सअलबा को मदीना से दूर जंगल में पनाह लेनी पड़ी। फिर क्या था, बकरियों की वजह से उनकी मशग़ूलियत बढ़ती गयी यहां तक कि उनकी मशग़ूलियत उनके लिए नमाज़ से मानेअ हो गयी। फिर एक वक़्त ऐसा आया कि वह सिर्फ़ नमाज़े जुम्आ अदा करने के लिये मस्जिदे नबवी का क़स्द करते थे। जब आयते ज़कात नाज़िल हुई तो सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने मुसलमानों को ज़कात अदा करने का हुक्म फ़रमाया और सअलबा के पास भी अपने क़ासिदों को रवाना फ़रमाया, जब क़ासिद सअलबा के पास पहुंचे और उनको सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم का हुक्म सुनाया तो उन्होंने सोचा कि इस तरह तो मेरी बहुत सारी बकरियां कम हो जायेंगी ! (معاذ اللہ) यह सोचकर उन्होंने क़ासिदों से कहा कि मैं बाद में सोचूंगा। जब दोबारा इनके पास सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم के क़ासिदों को रवाना फ़रमाया तो उन्होंने कहा कि यह तो एक क़िस्म का तावान है ! क़ासिदों ने सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم को इस अम्र की ख़बर दी तो सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, अब सअलबा की बर्बादी क़रीब है ! उस वक़्त क़ुरआने पाक की आयत करीमा नाज़िल हुई और उस आयत में सअलबा को मुनाफ़िक़ कहा गया।

इस आयत के नुज़ूल के वक़्त सअलबा का कोई क़रीबी वहां मौजूद था जिसने उनको इस अम्र की ख़बर दी तो वह बहुत ही पछताये और अपने माल का सदक़ा लेकर सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में हाज़िर हुए। सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, ऐ सअबला ! मैंने इसी लिये कहा था कि तुम्हारे लिये यही बेहतर है ! और अब अल्लाह तआला ने भी तुम्हारे सदक़े को रद्द कर दिया है लिहाज़ा मैं तुम्हारे सदक़े को क़बूल नहीं कर सकता। सअलबा मायूस होकर वहां से वापस हुए और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ के दौरे ख़िलाफ़त में अपने माल का सदक़ा लेकर हाज़िर हुए तो सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि जब कौनेन के ताजदार صلی اللہ علیہ وسلم ने तुम्हारे सदक़े को रद्द फ़रमा दिया तो मेरी क्या मजाल कि मैं तुम्हारे सदक़े को क़बूल कर लूं ! यूं ही वह हज़रत सैय्यदना उमर व सैय्यद उसमान رضی اللہ عنہما के दौरे ख़िलाफ़त में सदक़ा लेकर हाज़िर हुए तो इन हज़रात ने भी इनके सदक़े को रद्द फ़रमा दिया। अब सअलबा बिल्कुल मायूस होकर वापस हुए और इसी हसरत के आलम में इनका इंतक़ाल हो गया। *(सावी)*

★ ज़कात से मुताल्लिक़ चंद ज़रूरी मसाइल ★

ज़कात शरीअत में अल्लाह तआला के लिये माल के एक हिस्सा का जो शरअ ने मुक़र्रर किया है मुसलमान हाजतमंद को मालिक कर देने को कहते हैं।

★ वह माल जो तिजारत के लिये रखा हुआ हो उसे देखा जाये कि उसकी क़ीमत, साढ़े सात तौला या साढ़े बावन तौला चांदी के बराबर हो तो उस माले तिजारत की ज़कात अदा करना फ़र्ज़ है। माले तिजारत से मुराद हर क़िसम का सामान है ख़्वाह वह ग़ल्ला वग़ैरह के जिन्स से हो या मवेशी, घोड़े, बकरियां, गाय वग़ैरह। अगर यह अशिया बगर्ज़े तिजारत रखी हुई हैं तो पूरा साल गुज़रने के बाद उनकी ज़कात अदा करना फ़र्ज़ हैं

★ अगर माले तिजारत बक़द्रे निसाब नहीं है लेकिन सोना चांदी और नक़द रुपया मौजूद है तो इन सबको मिलाया जायेगा। अगर उनका मजमूआ बक़द्रे निसाब हो जाये तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है वरना नहीं।

★ जो मकानात या दुकानें किराये पर दे रखी हैं उन पर ज़कात नहीं लेकिन उनका किराया जमा करने के बाद अगर बक़द्रे निसाब हो जाये तो उस पर साल गुज़रने के बाद ज़कात फ़र्ज़ है। हां अगर मालिक पहले ही मालिके निसाब है तो किराया उसी पहले निसाब में शामिल होगा, और यह किराया की आमदनी का अलाहेदा निसाब शुमार किया जायेगा। इसलिये जब पहले निसाब पर साल गुज़र जाये तो किराये की रक़म भी निसाब में मिलाकर ज़कात अदा की जायेगी।

★ दुकानों में माले तिजारत रखने के लिये शोकेस, दराज़ व अलमारियां वग़ैरह नीज़ इस्तेमाल के लिये फ़र्नीचर, सर्दी गर्मी से बचाव के लिये हीटर, एयरकंडीशन, वग़ैरह और ऐसी चीज़ को ख़रीदो फरोख़्त में सामान के साथ नहीं दी जातीं बल्कि ख़रीदो फ़रोख़्त में उनसे मदद ली जाती है तो उन पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं। क्योंकि यह तिजारत में हवाइजे असलिया में शामिल हैं।

★ ज़कात फ़र्ज़ होने के लिये माल व दौलत की एक ख़ास हद और मुतय्यन मिक़दार है जिसको शरीअत की इस्तेलाह में निसाब कहा जाता है। ज़कात

उसी वक़्त फ़र्ज़ है जब माल बक़द्रे निसाब हो, निसाब से कम माल व दौलत पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं। सोने का निसाब साढ़े सात तौला है, और चांदी का निसाब साढ़े बावन तौला है और माले तिजारत का निसाब यह है कि उसकी क़ीमत सोने या चांदी के निसाब के बराबर हो। या सोने, चांदी की नक़द क़ीमत बसूरते रुपये हों।

★ ज़कात फ़र्ज़ है उसका मुन्किर काफ़िर और न देने वाला फ़ासिक़ और क़त्ल का मुस्तहिक़ है और अदा में ताख़ीर करने वाला गुनाहगार और मरदूद है। *(आलमगीरी)*

★ ज़कात वाजिब होने के लिये चंद शर्तें हैं : मुसलमान होना, आक़िल होना, बालिग़ होना, आज़ाद होना, माल बक़द्रे निसाब इसकी मिल्कियत में होना, पूरे तौर पर उसका मालिक होना, साहिबे निसाब का कर्ज़ से फ़ारिग़ होना, इस निसाब पर एक साल का गुज़र जाना।

★ मोती और जवाहेरात पर ज़कात वाजिब नहीं अगरचे हज़ारों के हों, हां अगर तिजारत की नियत से ली है तो ज़कात वाजिब हो गई। *(दुर्रे मुख़्तार)*

★ साल गुज़रने से मुराद क़मरी साल है यानी चांद के महीनों से बारह महीने, अगर शुरू साल और आख़िर साल में निसाब कामिल है और दर्मियान साल में निसाब नाक़िस भी हो गया हो तो भी ज़कात फ़र्ज़ है। *(आलमगीरी)*

★ ज़कात देते वक़्त या ज़कात के लिये माल अलाहेदा करते वक़्त ज़कात की नियत शर्त है नियत के यह माअना हैं कि अगर पूछा जाये तो बिला तामील बता सके के ज़कात है।

★ साल भर ख़ैरात करता रहा अब नियत की जो कुछ दिया है ज़कात है तो ज़कात अदा न होगी। माल को ज़कात की नियत से अलाहेदा कर देने से बरीउज ज़िम्मा होगा जब तक कि फ़क़ीर को न दे दे, यहां तक कि वह जाता रहा तो ज़कात साक़ित न हुई। *(दुर्रे मुख़्तार)*

★ ज़कात का रुपया मुर्दा की तजहीज़ व तकफ़ीन या मस्जिद की तामीर में नहीं सर्फ़ कर सकते कि फ़क़ीर को मालिक बनाना न पाया गया। अगर उन उमूर में ख़र्च करना चाहें तो उसका तरीक़ा यह है कि फ़क़ीर को मालिक कर दें और वह सर्फ़ करे और सवाब दोनों को होगा। बल्कि हदीस

पाक में है : अगर सो हाथों में सदक़ा गुज़रा तो सब को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसे देने वाले के लिये और उसके अज्र में कुछ कमी न होगी। *(रद्दुल मुहतार)*

★ ज़कात देने में यह ज़रूरी नहीं कि फ़क़ीर को ज़कात कह कर दे बल्कि सिर्फ़ नियते ज़कात काफ़ी है यहां तक कि हेबा या क़र्ज़ कह कर दे और नीयत ज़कात की हो तो भी अदा हो जायेगी। *(आलमगीरी)*

★ यूं ही नज़्र हदिया या ईदी या बच्चों की मिठाई खाने के नाम से दी तब भी अदा हो जाएगी। बाज़ मोहताज ज़रुरत मंद जकात का रुपया नहीं लेना चाहते, उन्हें ज़कात कह कर दिया जायेगा तो नहीं लेंगे लिहाज़ा ज़कात का लफ़्ज़ न कहे।

★ सोने, चांदी के अलावा तिजारत की कोई चीज़ हो जिसकी क़ीमत सोने, चांदी के निसाब को पहुंचे तो उस पर भी ज़कात वाजिब है यानी क़ीमत के चालीसवें हिस्से पर ज़कात वाजिब है।

★ ज़कात किस को दी जाये ? ★

अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने माले सदक़ा के मुस्तहेक़ीन की तफ़सील कुरआन अज़ीम में यूं बयान फ़रमाया है चुनांचे इरशादे बारी तआला है :–

اِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلۡفُقَرَاءِ وَالمَسَاكِيۡنَ وَالعَامِلِيۡنَ عَلَيۡهَا وَالمُؤَلَّفَةِ قُلُوۡبُهُمۡ وَفِىۡ الرِّقَابِ وَالغَارِمِيۡنَ وَفِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ

ज़कात तो उन ही लोगों के लिय है मोहताज और नरे नादार और जो उसे तहसील कर के लायें। और जिनके दिलों को इस्लाम से उलफ़त दी जाये और गर्दनें छुड़ाने में और क़र्ज़दारों को और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िरों को। यह ठहराया हुआ है अल्लाह का और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।" *(सू. तौबा, 60)*

मज़कूरा बाला आयत में ज़कात व सदक़ात के मुस्तहिक़ लोगों का ज़िक्र फ़रमाया गया है। यह वह लोग हैं जो ज़कात व सदक़ात के सही हक़दार हैं कुरआनी आयत में मज़कूरा सदक़ात के हक़दारों की तफ़सील यह है :

फ़क़ीर : वह है जिस के पास कुछ माल हो लेकिन इतने रुपये पैसे नहीं

जो निसाब के क़ाबिल हो, न घर में इतनी चीज़ें है कि जिनकी क़ीमत बक़द्रे निसाब हो या क़ीमत बक़द्रे निसाब है मगर सब चीज़ें हाजते असलिया में दाख़िल है, मसलन ज़रुरी किताबें, पहनने के कपड़े, रहने का मकान, काम काज के ज़रूरी आलात वग़ैरह हैं, कोई चीज़ ज़ायद इसके पास नहीं जिसकी क़ीमत निसाब को पहुंचे ऐसा फ़क़ीर कहलाता है, ज़कात का मुस्तहिक़ है। अगर ऐसा शख़्स आलिम भी हो तो उसकी ख़िदमत और भी ज़्यादा अफ़ज़ल है।

★ फ़क़ीर अगर आलिम हो तो देना जाहिल को देने से अफ़ज़ल है।

★ अगर आलिम को दे तो उसका लिहाज़ रखे कि इसका अेज़ाज़ मद्दे नज़र हो, अदब के साथ दे जैसे छोटे बड़े को नज़र दे देते हैं। और (معاذ الله)आलिमे दीन की हिक़ारत अगर दिल में आई तो यह हलाकत और बहुत सख़्त हलाकत । *(बहारे शरीअत)*

मिस्कीनः वह शख़्स है जिसके पास कुछ भी माल न हो। कुरआन मुक़द्दस में इरशादे ख़ुदावंदी है। **اَوۡ مِسۡكِيۡنًا ذَا مَتۡرَبَةٍ**"या ख़ाकनशीन मिस्कीन को।"

यानी मिट्टी जो उस पर पड़ी है वही उसकी चादर है और वही उसका बिस्तर है ऐसे शख़्स को ज़कात देकर सवाब हासिल करो। उस शख़्स को सवाल करना भी जाइज़ है और फ़क़ीर को नहीं, क्योंकि उसके पास कुछ माल है अगरचे निसाब के क़ाबिल नहीं, मगर जिसके पास इतना भी माल है कि एक दिन के ख़ुराक के क़ाबिल है तो उसको सवाल करना हलाल नहीं है। *(आलमगीरी)*

आमिल : आमिल को भी ज़कात दी जा सकती है अगरचे वह ग़नी हो। आमिल वह शख़्स है जिसको बादशाहे इस्लाम ने उश्र और ज़कात वसूल करने पर मुक़र्रर किया है। चूंकि यह अपना वक़्त उस काम में लगाता है लिहाज़ा उस आमिल को अपने अमल की उजरत भी मिलना ज़रूरी है ता कि उसके अख़राजात के लिये बदर्जा काफ़ी हो। मगर उजरत जमा करदा रक़म से ज़ायद न हो, अगर आमिल के हाथ से ज़ाया हो जाये तो ज़कात अदा करने वालों की ज़कात अदा हो गयी। अगर आमिल सैयद है तो ज़कात के माल से

उसको उजरत न दी जायेगी हां उजरत ग़ैर सैयद फ़क़ीर को देकर उसको दी जाये तो जाइज़ है मगर ग़नी आमिल को उसी ज़कात से उजरत देना जायज़ है इसलिये के हाशमी का शर्फ़ ग़नी के रुत्बे से ज़ायद है।

मोअल्लिफतुल कुलूब : का मतलब दिलजोई करना है। एक आम उसूल है कि जिस किसी हाजतमंद की माली इमदाद की जाये तो वह देने वालों की तरफ़ मुतवज्जेह होता है। इसलिये अल्लाह तआला ने लोगों को दीने इस्लाम की तरफ़ माइल करने के लिये क़लूब की मदद रखी है ताकि इस्लाम में हर नये दाखिल होने वाले की दिलजोइ हो और वह आसानी से मुसलमानों के ज़ाब्ताए हयात के मुताबिक़ अमल पैरा हो सके। लेकिन जब इस्लाम को ग़ल्बा हुआ तो ज़कात के उन आठ मसारिफ़ में से मोअल्लिफतुल कुलूब बइजमाए सहाबा साक़ित हो गया।

रक़ाब मकातिब : वह गुलाम जो माले मुअय्यन अदा करने की शर्त पर आज़ाद किया तो ऐसे गुलाम को ज़कात देना जाइज़ है, मगर यह गुलाम किसी सैयद का न हो कि इसको ज़कात देना जाइज़ नहीं कयोंकि ऐ लिहाज़ से यह मालिक की मिल्क में है और मालिक सैयद है तो यह सैयद ही को ज़कात पहुंचेगी। और इसको जाइज़ नहीं है।

गारिम यानी क़र्ज़दार को : क़र्ज़दार को ज़कात देना भी जाइज़ है, बशर्ते कि क़र्ज़ से ज़ायद कोई रक़म बक़द्रे निसाब उसके पास न हो। या कोई माल हाजते असलिया से उसके पास फ़ाज़िल न हो कि जिसकी क़ीमत निसाब को पहुंचे, तो ऐसे क़र्ज़दार को ज़कात देना जायज़ है।

फ़ी सबी लिल्लाह : इससे मुराद ऐसे मुजाहिदीन पर माल ज़कात का सर्फ़ करना है जो कि अल्लाह ﷻ की राह में जिहाद के लिये निकले हों। कि उनकी सवारी असलेहा, रास्ते के ख़र्च और आलात की फ़राहमी के लिये माले ज़कात का देना जाइज़ है। और या तो इससे मुराद वह हज्जाजे किराम हैं जो कि रास्ते में किसी हादसा के शिकार हो कर माली तआवुन के मोहताज हों। या वह तलबा मुराद हैं जो कि इल्मे दीन के हुसूल के लिये अल्लाह ﷻ की राह में निकले हों कि उनको भी ज़कात का माल लेना जाइज़ है।

इब्नुस्सबील : यानी मुसाफ़िर, इब्नुस्सबील से मुराद मुसाफ़िर है

जिसका ज़ादे राह ख़त्म हो चुका है, अगरचे वह घर पर माली एतेबार से ख़ुशहाल हो फिर भी उसको ज़कात लेना जाइज़ है।

ज़कात अदा करने में यह ज़रूरी है कि जिसको भी दें उसको मालिक बना दें लिहाज़ा ज़कात का माल मस्जिद में सर्फ़ करना, मैयत को कफ़न देना, पुल बनाना, सड़क बनाना, कुंवा खुदवाना, किताब वग़ैरह ख़रीद कर वक्फ़ कर देना काफ़ी नहीं है।

अगर किसी की मां हाशमी बल्कि सैयदा हो और उसका बाप हाशमी न हो तो वह हाशमी नहीं है। क्योंकि शरअ में नसब बाप से जोड़ा जाता है।

शौहर अपनी बीवी को और बीवी अपने शौहर को ज़कात नहीं दे सकती। हां अगर शौहर ने अपनी बीवी को तलाक़ दे दिया और उसकी इद्दत गुज़र गयी तो अब वह दोनों एक दूसरे को ज़कात दे सकते हैं।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الصلوٰۃ والسلام علیك یارسول الله ﷺ

وعلیٰ آلك واصحابك یا حبیب الله ﷺ

हज का बयान

اِنَّ اَوَّلَ بَیۡتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیۡ بِبَکَّۃَ مُبٰرَکًا وَّھُدًی لِّلۡعٰلَمِیۡنَ *(पारा–4, रुकूअ–71)*

"बेशक ! सबमें पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुआ है वह बरकत वाला और सारे जहां का रहनुमा।" *(कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा इस बात पर दलालत करती है कि हज़रत आदम علیہ السلام के तशरीफ़ लोने के बाद जो पहला घर इंसानों की हिदायत के लिये ज़मीन पर तामीर हुआ वह मक्का ही में हुआ। इस घर को मामूली शर्फ़ हासिल नहीं बल्कि इतना अज़ीम शर्फ़ हासिल है कि हज़रत इब्राहीम علیہ السلام ने इस घर की तामीर के वक़्त अल्लाह रब्बुल इज़्जत की बारगाह में जो दुआ की आज तक उस दुआ की क़बूलियत का असर नुमाया है। कोई भी मौसम हो वहां पर हर क़िस्म के ताज़ा फल मैयस्सर होते हैं। इससे यह बात भी समझ में आती है कि नबी की दुआ अल्लाह तआला कभी रद्द नहीं फ़रमाता। अल्लाह तआला हम सबको मक्का मुकर्ररमा और ख़ानाए काबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ मक्का की ताज़ीम ★

हज़रत अयाश बिन अबी रबीआ मख्ज़ूमी رضی اللہ عنہ फ़रमाते है कि सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया, इस उम्मत से ख़ैर व बरकत ज़ाइल न होगी जब तक कि यह हरमे मक्का की ताज़ीम करती रहेगी जैसा कि इसकी ताज़ीम का हक़ है और जब उसकी ताज़ीम को छोड देगी तो हलाक हो जायेगी। *(मिश्कात शरीफ, सफा–238)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि हरमे मक्का की ताज़ीम के सबब अल्लाह तआला ख़ैर व बरकत नाज़िल फ़रमाता रहेगा। आज बहुत से कम इल्म, हरम के मक़ाम को न जानने की वजह से उसका एहतेराम जैसा करना चाहिये वैसा नहीं करते। चिल्ला चिल्लाकर दुनियावी बातें करते हैं वगैरा ग़लतियां हरमे मक्का में दौराने तवाफ़ करते हुए नज़र आते हैं। ख़ुदारा ! ख़ुदारा ! हरम का एहतेराम लाज़िम है, ज़रूर उसका एहतेराम करें। (अल्लाह न करे कि बे अदबी की वजह से हलाक हो जाने का अंदेशा है) अल्लाह جل جلالہ मुसलमानों को हरम का एहतेराम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ एक नमाज़ लाख के बराबर ★

हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर علیہ السلام ने फ़रमाया, मस्जिदे हराम में एक नमाज़ एक लाख नमाज़ों के बराबर है। *(मिश्कात शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हज की सआदत से जो माला माल होता है उसके दामन को सवाब से भर दिया जाता है जैसा कि मज़कूरा हदीस शरीफ़ में ताजदारे कायनात ﷺ ने फ़रमाया कि मस्जिदे हराम में एक नमाज़ लाख नमाज़ों के बराबर है। आदमी अगर कोशिश करे और वक़्त की क़दर करते हुए अपना वक़्त इबादत व रियाज़त में गुज़ारे तो मैं समझता हूं कि बे हिसाब नेकी हासिल कर सकता है। काश ! ऐसा होता, कि हाजी मस्जिदे हराम में इबादत से ग़ाफ़िल न होता और इबादत व रियाज़त में मसरूफ़ रहने की कोशिश करता। लेकिन क्या किया जाये ? बाज़ार, दोस्त, अहबाब, मुताल्लेक़ीन इन सारे मामलात में ही ज़्यादा तर वक़्त गुज़ार दिया जाता हैं। हमें वक़्त की क़द्र करनी चाहिये, दोस्त अहबाब वग़ैरह सब बाद में मिल जायेंगे लेकिन ख़ानाए काबा कहीं नहीं मिल सकता।

अल्लाह तआला हम सबको नेकियों की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ एक सो बीस रहमतों का नुज़ूल ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما फ़रमाते हैं कि हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की हर दिन और रात में एक सो बीस रहमतें उस घर में नाज़िल होती हैं। साठ तवाफ़ करने वालों पर, चालीस नमाज़ पढ़ने वालों के लिये होती हैं और बीस ख़ानाए काबा को देखने वालों के लिये। *(फ़ज़ाइले हज्ज, 100)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से यह सबक़ मिला कि ख़ानाए काबा पर अल्लाह तआला की एक सो बीस रहमतों का नुज़ूल होता है, जिसमें सबसे ज़्यादा तवाफ़ करने वालों पर नाज़िल होती है यानी 60, और 40 नमाज़ पढ़ने वालों के लिये और 20 ख़ानाए काबा को देखने वालों के लिये। यह फ़ज़ीलत इसलिये बयान की गयी ता कि लोग अपना वक़्त फ़ुजूल कामों में ख़र्च करने के बजाए अल्लाह तआला के घर में गुज़ारें। अगर तवाफ़ कर सकें तो तवाफ़ करें, नमाज़ पढ़ सकें तो नमाज़ पढ़ें वरना कम अज़ कम ख़ानाए काबा की ज़ियारत तो बैठ कर सकते हैं ! अल्लाह तआला جل جلالہ हम सबको रब की इनायतों से इस्तेफ़ादा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ सत्तर फ़रिश्तों की आमीन ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि रुक्ने यमानी पर सत्तर फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं तो जो शख़्स वहां यह कहे कि ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया व आख़रत में अफ़्व व आफ़ियत मांगता हूं। ऐ हमारे परवर्दिगार! हमें दुनिया व आख़रत में भलाई अता फ़रमा। जहन्नम के अज़ाब से बचा। तो वह फ़रिश्ते कहते हैं। "आमीन।" *(मिश्कात शरीफ़–228)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! ज़ियारते हरमैन तैयबेन से मुशर्रफ़ होने वाले पर अल्लाह جل جلالہ का कितना करम है कि जब कोई रुकने यमानी और हज्रे अस्वद के दर्मियान यानी मक़ामे मुस्तजाब पर दुआ करता है तो अल्लाह ने सत्तर मासूम फ़रिश्तों को मुक़र्रर कर दिया है जो दुआ करने वाले की दुआ पर आमीन कहते हैं। **سبحان اللہ !** अल्लाह جل جلالہ जल्द से जल्द हम

सबको इस मक़ामे मुक़द्दस पर हाज़री की सआदत और दुआ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ दुआ क़बूल होने के चौदह मक़ामात ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم से सुना, फ़रमाया कि मुलतज़िम ऐसा मुक़ाम है जहां दुआ कुबूल होती है। किसी बंदे ने इसमें दुआ नहीं की मगर यह कि वह क़ुबूल हुई। मक्का मुकर्रमा में चौदह मक़ाम हैं जहां दुआयें क़ुबूल होती हैं। मुल्तज़िम के क़रीब, मीज़ाब रहमत के नीचे, रुक्ने यमानी के क़रीब, सफ़ा व मरवा की पहाड़ी पर, सफ़ा व मरवा के दर्मियान, रुक्ने यमानी और मक़ाम इब्राहीम के दर्मियान, बैतुल्लाह शरीफ़ के अंदर, मिना (मस्जिद खैफ़) में, अरफ़ात में, तीन जमरों के क़रीब।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा मक़ामात पर जहां दुआ क़ुबूल होती है अल्लाह عزوجل हम सबको इन मक़ामात पर दुआ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और हमारी दुआ को शर्फ़े क़बूलियत से नवाज़े।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ आम दावते हज ★

وَاَذِّنۡ فِی النَّاسِ بِالۡحَجِّ یَاۡتُوۡکَ رِجَالًا وَّ عَلٰی کُلِّ ضَامِرٍ یَّاۡتِیۡنَ مِنۡ کُلِّ فَجٍّ عَمِیۡقٍ

(पारा–17, रुकूअ–11)

"और लोगों में हज की आम निदा कर दे कि वह ते पास हाज़िर होंगे और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दौर की राह से आती हैं।" *(कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह علیہ السلام को लोगों को हज के लिये आम निदा करने का हुक्म दिया। ज़रा सोचें उस दौर में आम निदा का हुक्म दिया जा रहा है जो मार्डन टेक्नालॉजी **(Modern Technology)** का दौर नहीं, न माइक ईजाद हुआ था, न कम्प्यूटर **(Computer)** की दर्याफ़्त हुई थी। टेलीविज़न **(Television)** का वजूद भी नहीं था मगर फ़रमाया जा रहा है कि लोग तेरी दावत पर, पैदल दुबले पतले जानवरों पर सवार होकर आयेंगे। सवाल यह पैदा होता है कि

मक्का से बुलंद होने वाली आवाज़ सब को कानों तक कैसे पहुंचेगी ? दिल कहता है नादान जिस ख़ुदा ने निदाए आम का हुक्म दिया है वही ख़ुदा आवाज़ पहुंचाने की कुव्वत भी रखता है। रिवायत में है कि कि हज़रत इब्राहीम عليه السلام की निदा सिर्फ़ ज़मीन के लोगों ने ही नहीं सुनी बल्कि आलमे अरवाह में उन रूहों को भी सुनाया गया और वहां भी अपनी अपनी इस्तेअदाद के मुताबिक़ सबने लब्बेक़ कहा, यह है नबी की आवाज़ की कुव्वत ! जब ख़लील की आवाज़ का यह आलम है तो हबीब ﷺ की आवाज़ का आलम क्या होगा ? سُبۡحٰنَ اللهِ अल्लाह तआला हम सबको हज करने की तौफ़ीक़ अता फ़रामये।

آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم

★ हज सिर्फ़ अल्लाह के लिये ★

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الۡبَيۡتِ مَنِ اسۡتَطَاعَ اِلَيۡهِ سَبِيۡلاً (पारा–4, रुकूअ–1)

"और अल्लाह के लिये लोगों पर उस घर का हज करना है जो इस तक चल सके।" *(कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आपने हज के बयान की इब्तेदा में पढ़ लिया कि हज किन पर फर्ज़ है? और साहिबे इस्तेताअत किसे कहते हैं? अगर कोई साहिबे इस्तेताअत है और हज की अदायगी के लिये निकलता है तो उसे आयत करीमा के पहले लफ़्ज़ को याद रखना है। हज सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिये ही किया जाये न कि शोहरत की तमन्ना। न लक़ब की आरजू, बस एक ही तड़प हो कि ऐ अल्लाह ! عزوجل तेरे लिये ही हज कर रहा हूं। इंशाअल्लाह ! उसकी बरकतें दोनों जहां में नज़र आयेंगी। अल्लाह तआला हम सबको उसकी रज़ा के लिये हज की सआदत नसीब फ़रमाये।

آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم

★ सफ़रे हज व उमरा ★

فَمَنۡ حَجَّ الۡبَيۡتَ اَوِاعۡتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِ اَنۡ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا (पारा–2, रुकूअ–3)

"तो जो इस घर का हज या उमरा करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि दोनों के फेरे करे।" *(कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! दौरे जाहिलियत में अरबों की

एक रस्म, हज और उमरा से मुताल्लिक़ यह थी कि हज और उमरा की अदायगी के लिये अलग अलग सफ़र करना चाहिये, एक ही सफर में हज और उमरा नहीं हो सकता। इसी वजह से उन्होंने हज और उमरा के लिये अगर अलग महीने मुक़र्रर किये थे और इसी लिये वह जुदा जुदा सफ़र भी करते थे। इस्लाम की आमद से इस रस्म को मंसूख़ कर दिया गया और एक ही सफ़र में हज और उमरा करने की इजाज़त मिल गयी। मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! यह इस उम्मत पर सरकार ﷺ के सदक़े व तुफ़ैल आसानी है वरना अलग अलग सफ़र कितना गिरां गुज़रता ?! अल्लाह तआला हम सबके लिये दोनों जहां का सफ़र आसान फ़रमाये।

آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم

★ हज की पाबंदी ★

[illegible]

(पारा–2, रुकूअ–9)

"हज के कई महीने हैं जाने हुए, तो जो इन में हज की नियत करे तो न औरतों के सामने सोहबत का तज़किरा हो न कोई गुनाह न किसी से झगड़ा, हज के वक़्त तक।" *(कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयत करीमा में अल्लाह عزوجل ने हज में तीन चीज़ों से ख़ास तौर पर मना फ़रमाया है:–

1. शहवत को उभारने वाली हरकात 2. फ़िस्क़ व फ़िजूर 3. लड़ाई झगड़े। इसलिये कि शैतान हाजी की तवज्जोह को अल्लाह तआला की तरफ़ से हटाकर दूसरे कामों की तरफ़ लगाना चाहता है ताकि बंदा हज की बरकतों से महरूम हो जाये। और हज, जिन आदतों से नजात दिलाकर अल्लाह جل جلاله और उसके रसूल ﷺ के फ़रमान का पैकर बनाना चाहता है इससे वह महरूम रह जाये। वैसे तो झगड़े फ़साद, फ़िस्क़ व फ़ुजूर तो कभी भी जाइज़ नहीं। लिहाज़ा चाहिये कि हज के अय्याम में मज़कूरा तीनों चीज़ों से अपने दामन को बचायें। उसका फ़ायदा यह होगा कि अल्लाह तआला के फ़रमान पर अमल भी हो जायेगा और हज की बरकतें भी हासिल होंगी। अल्लाह तआला हम सबको अय्यामे हज के एहतेराम करने और फ़िस्क़ व फ़ुजूर और लड़ाई

झगड़े से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

हज अहादीस की रौशनी में

★ अफ़ज़ल अमल ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है, आप ने कहा कि हुजूर ﷺ से दर्याफ़्त किया गया कि कौन सा अमल सबसे अफ़ज़ल है? तो आप ﷺ ने फ़रमाया, अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ पर ईमान लाना। अर्ज़ किया गया, फिर कौन सा? आप ﷺ ने फ़रमाया, राहे ख़ुदा में जिहाद करना। अर्ज़ किया गया, फिर कौन सा अमल अफ़ज़ल है? फ़रमाया कि हज्जे मबरूर।

★ हाजी के गुनाह ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है, उन्होंने फ़रमाया कि मैंने हुजूर ﷺ को यह फरमाते सुना कि जिसने हज किया और उसने न बेहूदगी की, और न फ़ुस्क़ व फ़ुजूर का मुरतकिब हो तो वह हज से इस तरह लौटेगा गोया इसको मां ने अभी जन्म दिया है। (यानी गुनाहों से पाक) *(बुखारी व मुस्लिम)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से हज की अहमियत का पता चलता है कि हज में अगर कोई बे पर्दगी, लड़ाई झगड़ा और फ़िस्क़ व फ़ुजूर से बचे तो अल्लाह तआला उसको इस तरह पाक फ़रमाता है जैसे आज ही अपनी मां के पेट से पैदा हुआ हो। पता चला कि जिस तरह नव मोलूद के दामन पर कोई गुनाह का दाग़ नहीं होता वैसे ही हज्जे मबरूर की सआदतों से मालामाल होने वाले को बना दिया जाता है। अल्लाह तआला सबको हज्जे मबरूर की सआदतों से मालामाल फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ हज जन्नत के सिवा ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुजूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि एक उमरा दूसरे उमरा तक सरज़द होने वाले गुनाहों का कुफ़्फ़ारा बन

जाता है और हज का सवाब सिवाए जन्नत के कुछ नहीं।" *(बुखारी व मुस्लिम)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीस शरीफ़ में उमरा को गुनाहों का कफ़्फ़ारा फ़रमाया गया है और हज का सवाब जन्नत फ़रमाया गया। इससे मालूम हुआ कि बंदे का उमरा और हज के लिये तकलीफ़ का बर्दाश्त करना और अपने नफ़्स पर क़ाबू रखना और अल्लाह तआला के लिये सफ़र करना अल्लाह तआला को कितना महबूब है कि हज के सवाब में अल्लाह जन्नत अता फ़रमाता है। अल्लाह हम सबको हज व उमरा की बरकतों से मालामाल फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ यौमे अरफ़ा को गुनाहगार ★

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से मरवी है कि हुजूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, कोई दिन ऐसा नहीं है जिसमें अल्लाह तआला यौमे अरफ़ा की निस्बत ज़्यादा बंदों को आग (जहन्नम) से आज़ाद करता हो। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह عزوجل ने बाज़ दिनों को फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है। उन दिनों में यौमे अरफ़ा का मक़ाम बहुत ही बुलंद है। यौमे अरफ़ा को अल्लाह तआला की ख़ास नज़रे करम अपने बंदों पर होती है। एक ही लिबास और एक ही की जानिब तवज्जोह और फिर गुनाहों पर नदामत के आंसू, उसकी रहमत को जोश में लाते हैं और वह करीम अपने बंदो को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है। अल्लाह तआला हम सबको यौमे अरफ़ा मैदाने अरफ़ात में नसीब फ़रमाये और जहन्नम से आज़ादी अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ मौत के बाद हिसाब न होगा ★

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से मरवी है कि हुजूर ﷺ ने फ़रमाया, जो किसी हरमे पाक (मक्का मुकर्रमा या मदीना मुनव्वरा) में फ़ौत हो जाये तो न वह हिसाब के लिये पेश किया जायेगा और न उससे हिसाब लिया जायेगा और उससे कहा जायेगा कि जन्नत में दाख़िल हो। *(दारकुत्नी)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हरमैन तयय्यबैन में फ़ौत हो जाने पर बे हिसाब किताबो जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा। यक़ीनन! यह बंदों

पर अल्लाह का बड़ा एहसान है। बस, अल्लाह अपने फ़ज़्ल से जन्नत अता फ़रमाये और दौज़ख़ से बचाये और मदीना मुनव्वरा में मौत नसीब फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ हाजी व मोअतमिर शफ़ाअत करेंगे ★

हदीस शरीफ़ में है कि हुजूर रहमते आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि हज करने वाले और उमरा करने वाले अल्लाह तआला के वफ़्द और उसके मेहमान हैं, अगर वह उससे मांगते हैं तो वह उन्हें अता फ़रमाता है। और उससे मग्फ़िरत चाहते हैं तो उनकी मग़्फ़िरत फ़रमाता है और अगर दुआ मांगते हैं तो उनकी दुआ क़बूल फ़रमाता है और अगर सिफ़ारिश करते हैं तो उनकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाती है। *(अह्याउल उलूम)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला ने हाजी को बड़ा बुलंद दर्जा अता किया है जैसा कि मज़कूरा हदीस शरीफ़ से पता चलता है कि हाजी जिसके लिये दुआ करे अल्लाह तआला उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाता है। हमें चाहिये कि हाजी के घर पहुंचने से पहले उससे अपनी और अपने घर वालों की और पूरी उम्मते मुस्लेमा की मग़्फिरत की दुआ करवायें। अल्लाह तआला हम सबको हज्जे मबरूर की दौलत से नवाज़े और हाजियों की दुआ में हमारा हिस्सा भी रखे। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ एक तवाफ़ गुलाम आज़ाद करने के बराबर ★

हुजूर ﷺ का इरशाद मुबारक है कि जो शख़्स नंगे सर, पांव, सात मर्तबा तवाफ़ करे उसे एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और जो शख़्स बारिश में सात मर्तबा तवाफ़े बैतुल्लाह करे उसके तमाम पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। *(अह्याउल उलूम)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हम सबको मज़कूरा हदीस शरीफ़ पर अमल करने का मौक़ा अता फ़रमाये कि हम भी ख़ानाए काबा की ज़ियारत को जायें और नंगे सर और नंगे पैर बैतुल्लाह का तवाफ़ करके अपने गुनाहों को मिटायें। अल्लाह तआला हम सबको यह सआदते उज़्मा अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ बख़्शिश न होने का गुमान भी गुनाह ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से मरवी है कि हुजूर का इरशादे गिरामी है कि लोगों में बड़ा गुनाहगार वह है जो अरफ़ा के दिन वक़ूफ़ करे और यह ख़्याल करे कि अल्लाह तआला ने उसकी मग़्फ़िरत नहीं की।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से अल्लाह तआला के करम पर यक़ीन का दर्स मिला कि वक़ूफ़े अरफ़ा को शक व तज़बज़ुब में नहीं पड़ना चाहिये, बल्कि यक़ीने कामिल रखना चाहिये कि आज के दिन अल्लाह करीम ने मग़्फ़िरत फ़रमा ही दी, और शक रखने वाले को गुनाहगार ठहराया गया। अल्लाह तआला हम सबको मग़्फ़िरत व बख़्शिश पर यक़ीन की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और शुकूक व तजबज़ुब से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ फ़र्ज़ हज... और सूए ख़ात्मा ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुजूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स (हज फ़र्ज़ होने के बाद) हज किये बग़ैर मर जाये तो वह चाहे तो यहूदी मरे और चाहे तो नसरानी मरे। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से हमें यह दर्स मिला के जैसे ही हज फ़र्ज़ हो जाये तो उसकी अदायेगी में ताख़ीर नहीं करनी चाहिये वरना बुरे ख़ात्मे का अंदेशा है, यह मस्अला ज़ेहन में रखना चाहिये कि लड़की या लड़के की शादी के इंतज़ार में हज फ़र्ज़ होने पर भी जो लोग हज अदा नहीं करते उनको मज़कूरा हदीस शरीफ़ से सबक़ हासिल करना चाहिये। याद रखें कि फ़र्ज़ हज अदा करने के लिये शादी वग़ैरह का कहीं ज़िक्र नहीं है। लिहाज़ा जब हज फ़र्ज़ होने की शर्तें पा ली जायें तो फ़ौरन हज अदा कर लेना चाहिये। अल्लाह तआला हम सबका ख़ात्मा बिलख़ैर फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ हज्जे बदल ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि एक औरत ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! ﷺ जिन बंदों पर हज फ़र्ज़ है अगर उन्होंने

अपने मां बाप को इस हाल में पाया कि वह बहुत ज़ईफ़ हैं और सवारी पर जम कर बैठ नहीं सकते तो क्या मैं उनकी तरफ़ से हज करूं? तो आप صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, हां।

★ हज ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, रमज़ान के महीने में उमरा करना हज के बराबर है। या फ़रमाया कि मेरे साथ हज करने के बराबर है।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! माहे रमज़ानुल मुबारक में उमरा का कितना सवाब है कि रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि माहे रमज़ान में उमरा करना मेरे साथ हज करने बराबर है। अल्लाह तआला हम सबको तादमे ज़ीस्त माहे रमज़ानुल मुबारक में उमरे की सआदत और आख़री वक़्त मदीने में दो गज़ ज़मीन अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ तवाफ़ की फ़ज़ीलत ★

इमाम अहमद ने उबैद बिन उमर से रिवायत की कहते हैं कि, इब्ने उमर رضی اللہ عنہما से पूछा, क्या वजह है कि आप हज्रे असवद व रुक्ने यमानी को बोसा देते हैं? जवाब दिया कि मैंने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم को फरमाते सुना है कि इन को बोसा देना ख़ताओं को गिरा देता है। और मैंने हुज़ूर अकरम صلی اللہ علیہ وسلم को फ़रमाते सुना, जिसने सात फेरे तवाफ़ इस तरह किया कि उसके आदाब को मलहूज़ रखा और दो रकअत नमाज़ पढ़ी तो यह गर्दन (गुलाम) आज़ाद करने की मिस्ल है। मैंने हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ وسلم को फ़रमाते सुना कि तवाफ़ में हर क़दम उठाने और रखने पर दस नेकियां लिखी जाती हैं और दस गुनाह मिटाये जाते हैं और दस दर्जात बुलंद किये जाते हैं। *(बहारे शरीअत)*

★ सत्तर की शफ़ाअत ★

अस्बहानी ने अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस رضی اللہ عنہ से रिवायत की कि जिसने कामिल वुज़ू किया फिर हज्रे अस्वद के पास बोसा देने को आया वह रहमत में दाख़िल हुआ फिर जब बोसा दिया और यह पढ़ा :–

उसे रहमत ने ढांक लिया फिर जब बैतुल्लाह का तवाफ़ किया तो हर क़दम के बदले सत्तर हज़ार नेकियां लिखी जायेंगी और सत्तर हज़ार गुनाह मिटा दिये जायेंगें और सत्तर हज़ार दरजात बुलंद किये जायेंगे और तवाफ़ करने वाला अपने घर वालों में से सत्तर की शफ़ाअत करेगा फिर जब मक़ाम इब्राहीम पर आया और वहां दो रकअत नमाज़ तलबे सवाब की नियत से पढ़ी तो उसके लिये औलादे इस्माईल علیہ السلام में से चार गुलाम आज़ाद करने का सवाब लिखा जायेगा और गुनाहों से ऐसा निकल जायेगा जैसे आज ही अपनी मां के पेट से पैदा हुआ हो।

★ तवाफ़ करने का तरीक़ा ★

तवाफ़ शुरू करने से पहले चादर को दाहिनी बग़ल के नीचे से निकाल कर बायें कंधे पर डाल ले कि दाहिना मूंढ़ा खुला रहे अब काबा की तरफ़ मुंह करके रुक्ने यमानी की जानिब संगे असवद के क़रीब यूं खड़ा हो कि हज्रे असवद और मक़ामे इब्राहीम अपने दाहिने हाथ की तरफ़ रखे फिर तवाफ़ की नियत करे। **اَللّٰھُمَّ اِنِّی اُرِیْدُ طَوَافَ بَیْتِکَ الْمُحَرَّمِ فَیَسِّرْہُ لِیْ وَتَقَبَّلْہُ مِنِّیْ** इस नियत के बाद काबा की तरफ़ मुंह करके अपनी दाहिनी जानिब चलो। जब संगे अस्वद के मक़ाबिल हो कानों तक हाथ इस तरह उठाओ कि हथेलियां हज्रे अस्वद की तरफ़ रहें और कहो : ऐ अल्लाह! मैं तेरे इज़्ज़त वाले घर का तवाफ़ करना चाहता हूं इसको तू मेरे लिये आसान कर दे और इसको मुझसे क़बूल कर।

بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صلی اللہ علیہ وسلم

★ बनामे तवाफ़ नवाफ़िल नमाज़ ★

तवाफ़ के बाद मक़ाम इब्राहीम में **وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاھِیْمَ مُصَلًّی** पढ़कर दो रकअत नमाज़े तवाफ़ पढ़े। और यह नमाज़ वाजिब है। पहली रकअत में **قل یا ایھا الکافرون** और दूसरी रकअत में **قل ھو اللہ احد** पढ़े बशर्ते कि वक़्त कराहत न हो यानी तुलूअ आफ़ताब, जवाल आफ़ताब और गुरूब आफ़ताब का वक़्त न हो। और नमाज़े अस्र अदा करने के बाद भी न पढ़े यानी इन

औक़ात को छोड़कर बाक़ी औक़ात में नमाज़े तवाफ़ अदा करे और अगर इन औक़ात में तवाफ़ करे तो यह नमाज़ बाद में पढ़े।

★ मक़ामें इब्राहीम की दुआ ★

जो शख़्स मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़े उसके अगले पिछले सब गुनाह बख़्श दिये जायें और क़यामत के दिन अम्न में उसका हश्र होगा। यह दो रकअतें पढ़कर दुआ मांगे। यहां हदीस शरीफ़ में एक दुआ इरशाद हुई जिसके फ़ायदों की अज़मत उसका लिखना ही चाहती है। वह दुआ यह है :–

اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ تَعْلَمُ سِرِّیْ وَ عَلَانِیَتِیْ
فَاقْبَلْ مَعذِرَتِي وَ تَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِی سُوَالِی وَتَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِی فَاغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ .اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ اِیْمَاناً یُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَ یَقِیْناً صَادِقاً حَتّٰی اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا اُصِیْبُنِیْ اِلَّا مَا کَتَبْتَ لِیْ وَرِضیً مِّنَ الْمَعِیْشَةِ بِمَا قَسَّمْتَ لِیْ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ.

ऐ अल्लाह ! तू मेरे पौशीदा और ज़ाहिर को जानता है तू मेरी मअज़रत क़बूल कर और तू मेरी हाजत को जानता है मेरा सवाल मुझको अता कर और जो कुछ मेरे नफ़्स में है उसे तू जानता है तू गुनाहों को बख़्श दे। ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे उस ईमान का सवाल करता हूं जो मेरे क़ल्ब में सरायत कर जाये और यक़ीने सादिक़ मांगता हूं ताकि मैं जान लूं कि मुझे ही पहुंचेगा तो तूने मेरे लिये लिखा है और जो कुछ तूने मेरी क़िस्मत में किया है उस पर राज़ी रहूं। ऐ सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान !

सरकारे मदीना, राहते क़ल्ब व सीना ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है, जो यह दुआ करेगा मैं उसकी ख़ता बख़्श दूंगा और ग़म व मोहताजी उससे दूर करूंगा, हर ताजिर से बढ़कर उसकी तिजारत रखूंगा और फिर दुनिया उसके पास नाचार व मजबूर बनकर आयेगी। यानी जो सच्चे दिल से अल्लाह جل جلاله और रसूलुल्लाह ﷺ का हो जाता है तो फिर दुनिया चाहती है कि वह मेरी आग़ोश में आये मगर वह दुनिया को ठोकर मार देता है और फिर दुनिया ख़ूद मजबूर व लाचार होकर उसके कदमों मे आकर

गिर जाती है। *(बहारे शरीअत)*

★ मुल्तज़िम की दुआयें ★

मुल्तज़िम के पास जाये और क़रीब जो (पत्थर) है उससे लिपटे और अपना सीना और पेट और कभी दाहिना रुख़सारा और कभी अपना चेहरा इस पर रखे और दोनों हाथ सर से ऊंचे करके दीवार पर फैलाये दाहिना हाथ दरवाज़े काबा और बायां हज्रे असवद की तरफ फैलाये और यह दुआ पढ़े। **يَا وَاحِدُ يَا مَاجِدُ لَا تُزِلْ عَنِّی نِعْمَةً اَنْعَمْتَهَا عَلَیَّ** ऐ क़ुदरत वाले ! ऐ बुज़ुर्ग ! तूने मुझे जो नेअमत दी उसको मुझसे ज़ायल न फ़रमा।

सरकारे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जब मैं चाहता हूं जिब्राईल عليه السلام को देख लेता हूं कि मुल्तज़िम से लिपटे हुए दुआ कर रहे हैं। निहायत ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ व आजिज़ी व इंकेसारी के साथ दुआ करे और अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़े।

★ ज़मज़म पीने की दुआ और तरीक़ा ★

सरकारे दो आलम ﷺ फ़रमाते हैं कि ज़मज़म जिस नियत के साथ पिया जाये वही नियत पूरी होती है। ज़म ज़म क़िब्ला रू खड़े होकर तीन सांसों में पीना चाहिये हर सांस पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ से शुरू और **الحمد لله** पर ख़त्म करे। और हर बार काबा मोअज़्ज़मा की जानिब निगाह उठाकर देखें और अपने दिल में तमन्ना करें जो भी हो। और ज़मज़म पीने की ख़ुसूसी दुआ यह है :–

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ عِلْماً نَافِعاً وَرِزْقاً وَّا سِعاً وَعَمَلاً مُّتَقَبَّلاً وَشِفَاءً مِّنْ کُلِّ دَاءٍ

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे इल्मे नाफ़ेअ और कुशादा रिज़्क़ और अमले मक़बूल और हर बीमारी से शिफ़ा का सवाल करता हूं।

हज के पांच ऐयाम एक नज़र में

★ हज का पहला दिन ८ ज़िल हज्जा ★

★ मक्का से मिना को रवानगी ★ मिना में आज के दिन ज़ुहर , अस्र, मग़रिब व ईशा पढ़नी हैं ★ रात मिना में क़याम।

★ हज का दूसरा दिन ९ ज़िल हज्जा ★

★ फ़ज्र की नमाज़ मिना में अदा करके अरफ़ात को रवानगी ★ जुहर की नमाज़ अरफ़ात में पढ़नी है ★ वकूफ़े अरफ़ात ★ अस्र की नमाज़ अरफ़ात में पढ़नी है ★ मग़्रिब के वक़्त मग़्रिब की नमाज़ पढ़े बग़ैर मुज़दल्फ़ा को रवानागी ★ मग़्रिब और ईशा की नमाज़ें ईशा के वक़्त में अदा करनी हैं ★ रात को कयाम करना है।

★ हज का तीसरा दिन १० ज़िल हज्जा ★

★ मुज़दलफ़ा में फ़ज्र की नमाज़ के बाद मिना को रवानगी ★ पहले बड़े शैतान की रमी (कंकरी मारना) फिर कुर्बानी करना ★ फिर सर के बाल मुंडवाना ★ कतरवाना ★ फिर तवाफ़े ज़ियारत को मक्का जाना ★ रात मिना में क़याम करना

★ हज का चौथा दिन ११ ज़िल हज्जा ★

मिना में ज़वाल के बाद रमी करना ★ पहले छोटे शैतान की ★ फिर दर्मियाने शैतान की ★ फिर बड़े शैतान की ★ तवाफ़े ज़ियारत अगर कल नहीं किया तो आज कर लें ★ मिना में क़याम।

★ हज का पांचवा दिन १२ ज़िलहज्जा ★

★ मिना में ज़वाल के बाद रमी करना ★ पहले छोटे शैतान की ★ फिर दर्मियाने शैतान की ★ फिर बड़े शैतान की ★ तवाफ़ ज़ियारत अगर नहीं किया था आज मग़्रिब से पहले ज़रूर कर ले ★ 12 ज़िलहज्जा को अगर क़याम का इरादा है तो कंकरियां ज़वाल से पहले मारी जा सकती हैं।

नोट : शबे अरफ़ा और मिना के मामूलात की तफ़सील आगे मौजूद है इसके अलावा हज के दूसरे दिनों में रोज़ मर्रा की तरह नमाज़ें अदा करें। तवाफ़े ज़ियारत का वक़्त 10 ज़िल हज्जा की फ़ज्र से 12 ज़िल हज्जा के गुरूब आफ़ताब तक है। तवाफ़े ज़ियारत से रात के किसी भी हिस्से में फ़ारिग़ हों तो बक़िया रात के लिये मिना चले जायें।

मिना को रवानगी और अरफ़ा का वक़ूफ़

★ ८ तारीख़ को मिना के मामूलात ★

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा ताहेरा तैयबा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, अरफ़ा से ज़्यादा किसी दिन में अल्लाह तआला अपने बंदों को जहन्नम से आज़ाद नहीं करता फिर उनके साथ मलाइका पर मुबाहात (फ़ख़्र) फ़रमाता है।

उमर बिन शोएब رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, अरफ़ा की सबसे बेहतर दुआ वह जो मैंने और मुझसे पहले अंबिया ने की यह है :—

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

अमीरुल मोमिनीन सैयदना हज़रत अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم से वक़ूफ़ के बारे में सवाल हुआ कि इस पहाड़ में क्यों मुक़र्रर हुआ ? हरम में क्यों न हुआ ? आपने इरशाद फ़रमाया, काबा बैतुल्लाह और हरम उसका दरवाज़ा तो जब लोग उसकी ज़ियारत के मक़सद से आये दरवाज़े पर खड़े किये गये कि तज़र्रुअ करें। अर्ज़ किया गया, या अमीरुल मोमिनीन ! फिर वकूफ़े मुज़दलफ़ा का क्या सबब है? आपने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि जब इन्हें आने की इजाज़त मिली तो अब दूसरी देवढ़ी पर रोके गये थे फिर जब तज़रअ ज़्यादा हुआ तो हुक्म हुआ कि मिना में कुर्बानी करें। फिर जब अपने मेल कुचेल उतार चुके और कुरबानी कर चुके और गुनाहों से पाक हो चुके तो अब बा तहारत ज़्यारत की इन्हें इजाज़त मिली। अर्ज़ किया गया, या अमीरुल मोमिनीन ! अय्यामे तशरीक़ में रोज़े क्यों हराम हैं ? फ़रमाया कि वह लोग अल्लाह के मेहमान हैं और मेहमान को बग़ैर इजाज़त रोज़े रखना जायज़ नहीं। अर्ज़ की गइ, या अमीरुल मोमिनीन ! ग़िलाफ़े काबा से लिपटना किस लिये है? आपने इरशाद फ़रमाया, इसकी मिसाल यह है कि किसी ने दूसरे का गुनाह किया है वह इसके कपड़ों से लिपटता है और आजिज़ी करता है कि यह उसे बख़्श दे, जब वकूफ़ के सवाब से आगाह हुए तो अब गुनाहों से पाक व साफ़ होने का वक़्त क़रीब आया इसके लिये तैयार हो जाओ और हिदायत पर अमल करो।

जिसने अेहराम न बांधा हो बांध ले और नहा धोकर मस्जिदुल हराम शरीफ़ में आये और तवाफ़ करे, उसके बाद तवाफ़ की नमाज़ बदस्तूर अदा करे, फिर दो रकअत सुन्नत अहराम की नियत से पढ़े, उसके बाद हज की नियत करे और लब्बेक कहे। जब आफ़ताब निकल आये मिना को चले, अगर आफ़ताब निकलने से पहले ही चला गया जब भी जाइज़ है मगर बाद में बेहतर है और ज़वाल के बाद भी जा सकता है मगर जुहर की नमाज़ मिना में पढ़े और हो सके तो पैदल जाये कि जब तक मक्का मोअज़्ज़मा पलट कर आओगे हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां लिखी जायेंगी। रास्ते भर लब्बेक व दुआ और दुरूद व सना की कसरत करें। जब मिना नज़र आपे तो यह दुआ पढ़े : **اللّٰهمَّ هذا منیً فَامُنُن عَلَیَّ بِمَا مَنَنۡتَ بِهٖ عَلٰی اَوۡلِیَائك** इलाही ! यह मिना है। मुझ पर तू वह एहसान कर जो अपने औलिया पर तूने किया।

यहां रात को ठहरें। आज जुहर से नववीं की सुबह तक पांच नमाज़ें यहीं अदा करें। आज कल बाज़ मतूफ़ों ने यह निकाली है कि आठवीं को मिना में नहीं ठहरते सीधे अरफ़ात में पहुंचते हैं उनकी न मानें और इस सुन्नते अज़ीमा को हरगिज़ न छोड़ें, क़ाफ़िला के इसरार से उन्हें भी मजबूर होना पड़ेगा। जुहर की नमाज़ के बाद खाने से फ़ारिग़ होकर थोड़ी देर आराम करें। अस्र की नमाज़ के बाद तौबा व इस्तिगफ़ार, तिलावते कुरआन, दुरूद शरीफ़ और लब्बेक की कसरत करें। मग़्रिब की नमाज़ के बाद भी दुरूद शरीफ़ और लब्बैक की कसरत करें। तौबा व इस्तिग़फ़ार और कुरआने करीम की तिलावत करें फिर जुमला ज़रूरयात से फ़ारिग़ होकर इशा की तैयारी में लग जायें। आज की रात बड़ी क़ीमती है। शबे अरफ़ा की बे पनाह फ़ज़ीलत है।

★ शबे अरफ़ा ★

मिना में ज़िक्र व इबादत के ज़रिये जाग कर रात गुज़ारते हुए सुबह करें। सोने के लिये बहुत दिन पड़े हैं कुछ न हो सके तो कम से कम ईशा और फ़ज्र बा जमाअत तकबीरे उला के साथ पढ़ें। (याद रहे नजदी इमाम के पीछे न पढ़ें) कि शब बेदारी का सवाब हासिल होगा और बा वुजू होकर सोयें कि रूह अर्श तक बुलंद होगी। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्उद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि जो शख़्स अरफ़ा की रात में यह दुआ हज़ार मर्तबा पढ़ेगा तो जो कुछ

अल्लाह तआला से मांगेगा पायेगा। मगर गुनाह या क़तअे रहम का सवाल न करे।

سُبۡحَانَ الَّذِیۡ فِیۡ السَّمَاءِ عَرۡشُهٗ سُبۡحَانَ الَّذِیۡ فِیۡ الۡاَرۡضِ مَوۡطِئُهٗ سُبۡحَانَ الَّذِیۡ فِیۡ الۡبَحۡرِ سَبِیۡلُهٗ سُبۡحَانَ الَّذِیۡ فِیۡ النَّارِ سُلۡطَانُهٗ سُبۡحَانَ الَّذِیۡ فِیۡ الۡجَنَّةِ رَحۡمَتُهٗ سُبۡحَانَ الَّذِیۡ فِیۡ الۡقَبۡرِ قَضَائُهٗ سُبۡحَانَ الَّذِیۡ فِیۡ الۡهَوَاءِ رُوۡحُهٗ سُبۡحَانَ الَّذِیۡ رَفَعَ السَّمَاءَ سُبۡحَانَ الَّذِیۡ وَضَعَ الۡاَرۡضَ سُبۡحَانَ الَّذِیۡ لَامَلۡجَاَ وَلَا مَنۡجَاَ مِنۡهُ اِلَّا اِلَیۡه

पाक है वह जिसका अर्श बुलंदी में है। पाक है वह जिसकी हुकूमत ज़मीन में है। पाक वह कि दरिया में उसका रास्ता है। पाक है वह कि आग में उसकी सलतनत है। पाक वह है कि जन्नत में उसकी रहमत है। पाक है वह कि क़ब्र में उसका हुक्म है। पाक है वह कि हवा में जो रूहें हैं उसी की मिल्क हैं, पाक है वह जिसने आसमान को बुलंद किया। पाक है जिसने ज़मी को पस्त किया, पाक है वह जिसके अज़ाब से पनाह व नजात की कोई जगह नहीं मगर उसी की तरफ़।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अरफ़ा की शाम को अपनी उम्मत के लिये मग़्फ़िरत की दुआ की और वह मक़बूल हुई। फ़रमाया, मैंने इन्हें बख़्श दिया सिवाए हुक़ूकुल बाद के, मज़लूम के लिये ज़ालिम से मवाख़ज़ा करूंगा। तो सरकारे दो आलम ﷺ ने अर्ज़ की ऐ रब्बे क़दीर! अगर तू चाहे तो जन्नत अता करे और ज़ालिम की मग़्फ़िरत फ़रमा दे। उस दिन यह दुआ क़बूल न हुई। फिर मज़दलफ़ा में सुबह के वक़्त अल्लाह के मुक़द्दस रसूल ﷺ ने यही दुआ की तो उस वक़्त यह दुआ क़बूल हुई। इस पर ताजदारे कायनात ﷺ ने तबस्सुम फ़रमाया। हज़रत सैयदना सिद्दीक़े अकबर और सैयदना फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہما ने अर्ज़ की, हमारे मां बाप हुजूर ﷺ पर कुरबान ! इस वक़्त तबस्सुम फ़रमाने का क्या सबब है? इरशादे गिरामी हुआ, दुश्मने ख़ुदा, इबलीस को जब यह मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने मेरी दुआ क़बूल की और मेरी उम्मत की बख़्शिश फ़रमा दी तो वह अपने सर पर ख़ाक उड़ाने लगा और वावीला करने लगा, उसकी यह घबराहट देखकर मुझे हंसी आ गयी। *(बहारे शरीअत)*

हज़रत जाबिर से रिवायत है कि सरकारे दो आलम ने इरशाद फ़रमाया कि ज़िल हिज्जा के दस दिन से ज़्यादा कोई दिन अफ़ज़ल नहीं है। एक शख़्स ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! ﷺ यह अफ़ज़ल है या इतने दिनों अल्लाह की राह में जेहाद करना ? इरशाद फ़रमाते हैं, यह दिन उस तादाद से अल्लाह की राह में जेहाद करने से भी अफ़ज़ल हैं और अल्लाह के नज़दीक अरफ़ात से ज़्यादा कोई दिन अफ़जल नहीं। अल्लाह तआला अरफ़ात के दिन आसमाने दुनिया पर ख़ास तजल्ली फरमाता है और ज़मीन वालों के साथ आसमान पर मबाहात (फ़ख़्र) फ़रमाता है, उनसे फ़रमाता है कि मेरे बंदों को देखो कि परागंदा सर, गर्द आलूदा, धूप खाये हुए दूर दूर से मेरी रहमत के उम्मीदवार हाज़िर हुए तो अरफ़ा से ज़्यादा जहन्नम से आज़ाद होने वाले किसी दिन में न देखे गये। और एक रिवायत में यह भी मिलता है कि अल्लाह तबारक व तआला मलाइका से फ़रमाता है कि मैं तुम को गवाह करता हूं कि मैंने इन्हें बख़्श दिया। फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं परवर्दिगारे आलम ! इनमें फलां फ़लां फ़लां काम करने वाले हैं ! रब्बे क़दीर ﷻ इरशाद फ़रमाता है कि मैंने सबको बख़्श दिया। *(बहारे शरीअत)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि एक शख़्स ने अरफ़ात के दिन व रात की तरफ़ नज़र की तो रसूले अरबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया आज वह दिन है कि जो शख़्स कान, आंख और ज़बान क़ाबू में रखे तो उसकी मग्फ़िरत हो जायेगी। –*(बहारे शरीअत)*

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे कायनात ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जो मुसलमान अरफ़ा के दिन पिछले पहर को अरफ़ात में वक़ूफ़ करे फिर सो बार कहे :–

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ المُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ يُحيِي وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

और सो मर्तबा **قل هو الله احد** पण्हे, फिर सो बार यह दुरुद पढ़े :–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَّ عَلَيْنَا مَعَهُمْ

अल्लाह ﷻ इरशाद फ़रमाता है, ऐ मेरे फ़रिश्तो ! बताओ ! मेरे उस बंदे

को क्या सवाब दिया जाये जिसने मेरी तसबीह व तहलील की और तकबीर व ताज़ीम की, मुझे पहचाना और मेरी सना की। मेरे महबूबे आज़म ﷺ पर दुरूद भेजा। ऐ फ़रिश्तो! गवाह हो कि मैंने उसे बख़्श दिया, उसकी शफ़ाअत ख़ूद उसके हक़ में क़बूल की और अगर मेरा यह बंदा मुझसे सवाल करे तो उसकी शफ़ाअत जो यहां हैं सब के हक़ में क़बूल करूंगा। (यानी सारे अहले अरफात के लिए)

★ ९ तारीख़ के मामूलात ★

९ तारीख़ को सुबह मुस्तहब वक्त में नमाज़ पढ़ कर लब्बैक व ज़िक्र और दुरूद शरीफ़ में मशगूल रहे यहां तक कि आफ़ताब कोहे षबीर (पहाड़ का नाम) पर जो मस्जिदे खैफ़ के सामने से चमके। अब अरफ़ात को चलें, दिल को ख़्याले ग़ैर से पाक करने की कोशिश करें कि आज वह दिन है कि बंदों का हज क़बूल किया जायेगा और न जाने कितनों को उनके सदक़े में बख़्श दिया जायेगा। महरूम वह है जो आज महरूम रहा, अगर वसवसे आयें तो लड़ाई न करो कि यूं भी दुश्मन का मक़सद पूरा होगा। वह तो यही चाहता है कि आप किसी और ख़्याल में लग जाओ, बल्कि वसवसों की तरफ़ ध्यान ही न दें। इंशाअल्लाह ! वह मरदूद शैतान नाकाम ही वापस जाएगा। रास्ते भर ज़िक्र और दुरूद में मसरूफ़ रहें, बे ज़रूरत कोई बात न करें, लब्बैक की बार बार कसरत करें और मिना से निकल कर यह दुआ पढ़ें :–

اَللّٰهُمَّ اِلَيْکَ تَوَجَّهْتُ وَ عَلَيْکَ تَوَكَّلْتُ وَلِوَجْهِکَ الْكَرِيْمِ اَرَدْتُّ فَاجْعَلْ ذَنْبِیْ مَغْفُوْرًا وَّ حَجِّیْ مَبْرُوْرًا وَّارْحَمْنِیْ وَلَا تُخَيِّبْنِیْ وَ بَارِکْ لِیْ فِیْ سَفَرِیْ وَا قْضِ بِعَرَفَاتٍ حَاجَتِیْ اِنَّکَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ .اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا اَقْرَبَ غَدْوَتِهَا مِنْ رِّضْوَانِکَ وَاَبْعَدَ هَا مِنْ سَخَطِکَ .اَللّٰهُمَّ اِلَيْکَ غَدَوْتُ وَعَلَيْکَ اِعْتَمَدْتُّ وَ وَجْهَکَ اَرَدْتُّ فَاجْعَلْنِیْ مِمَّنْ تُبَاهِیْ بِهِ الْيَوْمَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِّنِّیْ وَ اَفْضَلُ .اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ وَ الْمُعَا فَاةَ الدَّائِمَةَ فِی الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ ط

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुआ और तुझ पर मैंने तवक्कुल किया और तेरे वजहे करीम का इरादा किया, मेरे गुनाह बख़्श और मेरे हज को मबरूर कर और मुझ पर रहम कर और मुझे टोटे में न डाल और मेरे लिये मेरे सफ़र में बरकत दे और अरफ़ात में मेरी हाजत पूरी कर। बेशक! तू हर शै पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह ! मेरा चलना अपनी ख़ुशनूदी से क़रीब कर और अपनी नाख़ुशी से दूर कर, इलाही ! मैं तेरी तरफ़ चला और तुझ पर एतेमाद किया और तेरी ज़ात का इरादा किया तू मुझको इनमें से कर जिनके साथ क़यामत के दिन तू मबाहात (फ़ख़्र) फ़रमायेगा जो मुझ से बेहतर व अफ़ज़ल हैं। इलाही ! मैं तुझसे अफव व आफ़ियत का सवाल करता हूं और उस आफ़ियत का जो दुनिया व आख़रत में हमेशा रहने वाली है। और अल्लाह दुरूद भेज बेहतरीन मख़लूक़ मुहम्मद ﷺ और उनकी आल व असहाब पर।

जब जबले रहमत पर निगाह ठहरे दुआ की ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करें कि इंशाअल्लाह तआला वक़्ते क़बूल है अरफ़ात में इस पहाड़ के पास ही जहां जगह मिले शारेअ आम से बच कर उतरें। आज हुजूम में लाखों आदमी हज़ारों डेरे, ख़ेमें होते हैं अपने डेरे का मिलना दुश्वार होता है इसलिये पहचान का निशान इस पर क़ायम करें कि दूर से नज़र आये। मस्तूरात साथ हों तो इनके बुरक़अ पर भी कोई कपड़ा ख़ास अलामत चमकते हुए रंग का लगा दें कि दूर से देखकर तमीज़ कर सकें और दिल में खटका न रहे। दोपहर तक ज़्यादा वक़्त अल्लाह के हुज़ूर गिरया व ज़ारी नीज़ हस्बे ताक़त सदक़ा व ख़ैरात व ज़िक्र व लब्बैक व दुरूद, दुआ इस्तिगफ़ार कलिमा तौहीद में मशगूल रहें। हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम ﷺ फ़रमाते हैं कि सब में बेहतर वह दुआ है कि जो आज के दिन मैंने और मुझ से पहले अंबिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने की यह है :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ اور چاہے تو اس کے ساتھ یہ بھی کہیں "لَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ وَلَا نَعْرِفُ رَبًّا سِوَاهُ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَ يَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَسَاوِسِ الصُّدُوْرِ وَ تَشْتِيْتِ الْاَمْرِ

وَعَذَابِ الْقَبْرِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا يَلِجُ فِي اللَّيْلِ وَ شَرِّ مَا يَلِجُ فِي النَّهَارِ وَ شَرِّمَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيْحُ وَ شَرِّ بَوَائِقِ الدَّهْرِ ، اَللّٰهُمَّ هٰذَا مُقَامُ الْمُسْتَجِيْرِ الْعَائِذِ مِنَ النَّارِ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ لِعَفْوِكَ وَ اَدْخِلْنِي الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِذْ هَدَيْتَنِي الْاِسْلَامَ فَلَا تَنْزِعْهُ عَنِّيْ حَتّٰى تَقْبِضَنِيْ وَاَنَا عَلَيْهِ .

तर्जुमा : उसके सिवा हम किसी की इबादत नहीं करते और उसके सिवा किसी को रब नहीं जानते। ऐ अल्लाह ! तू मेरे दिल में नूर पैदा कर और मेरे कान और निगाह में नूर पैदा कर। ऐ अल्लाह ! मेरे सीने को खोल दे और मेरे अमर को आसान कर, और तेरी पनाह मांगता हूं सीने के वसवसों और काम की परागंदगी और अज़ाबे क़ब्र से, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इसके शर से जो रात और दिन में दाख़िल होती है और उसके शर से जिसकी साथ हुवा चलती है और आफ़ाते ज़माना के शर से, ऐ अल्लाह ! यह अमन के तालिब और जहन्नम से पनाह मांगने वाले खड़े होने की जगह है अपने उफ़्व के साथ मुझको जहन्नम से बचा और अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल कर। ऐ सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान! ऐ अल्लाह ! जब तूने इस्लाम की तरफ़ मुझे हिदायत की तो उसको मुझसे जुदा न करना यहां तक कि मुझे इस्लाम पर वफ़ात देना।

★ ज़रूरी गुज़ारिश ★

दोपहर से पहले खाने पीने वग़ैरह ज़रूरियात से फ़ारिग़ हो लें कि दिल किसी तरफ़ न लगा रहे। आज के दिन जैसे हाजी को रोज़ा मुनासिब नहीं कि दुआ में ज़ोअफ़ पैदा होगा। यूं ही पेट भर खाना भी सख़्त ज़हर और गफलत व सुस्ती का बाइस है। तीन रोटी की भूख वाला एक ही खाये। नबी करीम ﷺ ने तो हमेशा के लिये यही हुक्म दिया है और ख़ूद इसी पर अमल भी फ़रमाया कि जव की रोटी कभी पेट भर न खायी, हालांकि अल्लाह के हुक्म से तमाम जहान पर क़ब्ज़ा व इख़्तेयार है। अनवार व बरकात हमेशा हासिल करने में सहूलत के लिये बेहतर तो यह है कि न सिर्फ़ आज बल्कि हरमेन शरीफ़ैन में जब तक हाज़री रहें तिहाई पेट से ज़्यादा हरगिज़ न खायें। तो

इंशाअल्लाह इसका फ़ायदा आंखों से देख लेंगे। जब दोपहर का वक़्त क़रीब आये तो नहा लें कि सुन्नत मोअक्किदा है और न हो सके तो सिर्फ़ वुज़ू ही कर लें।

मौकूफ़ : यानी वह जगह कि जहां नमाज़ के बाद से गुरूब आफ़ताब तक खड़े होकर ज़िक्र करो दुआ का करने का हुक्म है इस जगह रवाना हो जाये और मुमकिन हो तो ऊंट पर जाये कि सुन्नत भी है और हुजूम में दबे कुचलने से मुहाफ़िज़त भी है। बाज़ मतूअ इस मजमा में जाने से मना करते हैं और तरह तरह से डराते हैं उनकी न सुनें कि वह ख़ास नुजूल रहमत की जगह है हां औरतें और कमज़ोर मर्द यहीं से खड़े होकर दुआ में मशगूल हों कि बतने अरफ़ा के सिवा यह सारा मैदान मौकूफ़ है, और यह लोग भी यही तसव्वुर करें कि हम इस मजमअ में हाज़िर हैं अपने को अलग न समझें इस मजमअ में यक़ीनन बकसरत औलिया बल्कि दो नबी भी मौजूद हैं, यह तसव्वुर करें कि अनवार व बरकात जो इस मजमा में उन पर उतर रहे हैं उनका सदक़ा हम भिखारियों को भी मिल रहा है। अफ़ज़ल यह है कि जबले रहमत के क़रीब जहां स्याह पत्थर का फ़र्श है क़िब्ला रूह खड़ा होकर जबकि उन फ़ज़ाइल के हुसूल में दिक़्क़त या किसी और अज़िय्यत न हो वरना जहां जिस तरह हो सके वक़ूफ़ करे। यह वक़ूफ़ ही दर असल हज की जान है और इसका बड़ा रुक्न है। वकूफ़ के लिये खड़ा रहना अफ़ज़ल है शर्त या वाजिब नहीं। अगर कोई बैठा जब भी वक़ूफ़ हो गया। वकूफ़ में नियत और क़िब्ला रूह होना अफ़ज़ल है। बाज़ नादान यह करते हैं कि पहाड़ पर चढ़ जाते और वहां खड़े होकर रुमाल हिलाते हैं इनसे बचो और उनकी तरफ़ भी बुरा ख़्याल न करो। यह वक़्त औरों के ऐब देखने का नहीं अपने ऐबों पर शर्मसारी और गिरया व ज़ारी का है। अब वह लोग जो यहां हैं और वह लाग जो डेरों में हैं सब हमातन सिद्क़ दिल से अपने करीम, मेहरबान रब की तरफ़ मुतवज्जेह हो जायें। और मैदाने क़यामत में हिसाब आमाल के लिये उसके हुजूर हाज़िरी का तसव्वुर करें निहायत ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ लरज़ते कांपते डरते उम्मीद करते आंखें बंद किये गर्दन झुकाये दस्ते दुआ आसमान की तरफ़ सर से ऊंचा फैलाये तकबीर व तहलील व तसबीह व लब्बेक व हम्द व ज़िक्र व दुआ व तौबा व इस्तिग़फ़ार में डूब जाये। कोशिश करे कि एक क़तरा आंसू

का टपके कि दलीले इजाबत व सआदत है वरना रोने के जैसा मुंह बनाये कि अच्छों की सूरत भी अच्छी होती है। असनाए दुआ व ज़िक्र में लब्बेक की बार बार तकरार करे आज के दिन दुआयें बहुत मंकूल हैं और जामेअ दुआयें जो ऊपर गुज़रीं काफ़ी हैं। चंद बार उसे कह लो और सबसे बेहतर कि सारा वक़्त दुरूद व ज़िक्र व तिलावते कुरआन में गुज़ार दो कि ब वादाए हदीस दुआ वालों से ज़्यादा पाओगे। नबी ﷺ का दामन पकड़ो, ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से तवस्सुल करो अपने गुनाह और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की कहहारी याद करके ख़ूब लरज़ो और यक़ीन जानो कि उसकी मार से उसी के पास पनाह है और उससे भाग कर कहीं नहीं जा सकते उसके दर से सिवा कहीं ठिकाना नहीं। लिहाज़ा इन शफ़ीयों का दामन पकड़ो और उसके अज़ाब से उसकी पनाह मांगो और इसी हालत में रहो कि कभी उसके ग़ज़ब की याद से ही कांप जाता है और उसकी रहमते आम्मा की उम्मीद से मुरझाया दिल निहाल हो। जाता है यूं ही गिरया ज़ारी में रहो यहां तक कि आफ़ताब डूब जाये! इससे पहले कूच मना है। बाज़ जल्द से जल्द दिन ही में चल देते हैं उनका साथ हरगिज़ न दें। क्या मालूम कि रहमते इलाही किस वक़्त तवज्जोह फ़रमायेगा अगर तुम्हारे चल देने के बाद उतरी तो कैसा अज़ीम ख़सारा है! और गुरूब से पहले हुदूद व अरफ़ात से निकल गये जब तो पूरा जुर्म है। बाज़ मतूअ यहां यूं डराते हैं कि रात में ख़तरा है यह एक दो के लिये ठीक है और जब सारा क़ाफ़िला ठहरेगा तो इंशाअल्लाह तआला कुछ अंदेशा नहीं। इस मक़ाम पर पढ़ने के लिये बाज़ दुआयें लिखी जाती हैं।

दुआ : **اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ** तीन मर्तबा फिर कलमए तौहीद, उसके बाद ये दुआ :–

اَللّٰهُمَّ اِهْدِنِىْ بِالْهُدٰى وَنَقِّنِىْ وَاعْصِمْنِىْ بِالتَّقْوٰى وَاغْفِرْلِىْ فِى الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى

ऐ अल्लाह! मुझको हिदायत के साथ रहनुमाई फ़रमा और पाक कर परहेज़गारी के साथ गुनाह से महफ़ूज़ रख और दुनिया व आख़ेरत में मेरी मग्फ़िरत फ़रमा। फिर तीन बार यह दुआ पढ़े :–

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّذَنْبًا مَغْفُوْرًا، اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَالَّذِىْ نَقُوْلُ وَخَيْرًا مِّمَّا نَقُوْلُ، اَللّٰهُمَّ لَكَ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ

وَاِلَيْکَ رَبِّ تُرَاثِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَوَسْوَسَةِ الصُّدُوْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ مِنْ خَيْرِ مَا تَجِئُی بِهِ الرِّيْحُ وَنَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا تَجِئُی بِهِ الرِّيْحُ اَللّٰهُمَّ اِهْدِنَا بِالْهُدٰی وَزَيِّنَّا بِالتَّقْوٰی وَاغْفِرْلَنَا بِالْآخِرَةِ وَالْاُوْلٰی، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ رِزْقًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا، اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ اَمَرْتَ بِالدُّعَاءِ وَقَضَيْتَ عَلٰی نَفْسِکَ بِالْاِجَابَةِ وَاِنَّکَ لَاتُخْلِفُ الْمِيْعَادَ وَلَاتُنْکِثُ عَهْدَکَ، اَللّٰهُمَّ مَا اَحْبَبْتَ مِنْ خَيْرٍ فَحَبِّبْهُ اِلَيْنَا وَجُنْبَاهُ وَلَا تَنْزِعْ عَنَّا الْاِسْلَامَ بَعْدَ اِذْهَدَيْتَنَا، اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ تَرٰی مَکَانِیْ وَتَسْمَعُ کَلَامِیْ وَتَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَا نِيَتِیْ وَلَايَخْفٰی عَلَيْکَ شَيْئٌ مِّنْ اَمْرِنَا. اَلْبَائِسُ الْفَقِيْرُ الْمُسْتَغِيْثُ الْمُسْتَجِيْرُ الْوَجِلُ الْمُشْفِقُ الْمُقِرُّ الْمُعْتَرِفُ بِذَنْبِهٖ اَسْئَلُکَ مَسْأَلَةَ مِسْکِيْنٍ وَاَبْتَهِلُ اِلَيْکَ اِبْتِهَالَ الْمُذْنِبِ الذَّلِيْلِ وَاَدْعُوْکَ دُعَاءَ الْخَائِفِ الْمُضْطَرِّ دُعَآءَ مَنْ خَضَعَتْ لَکَ رُکْبَتُهٗ وَفَاضَتْ لَکَ عَيْنَاهُ وَنَحَّلَ لَکَ جَسَدُهٗ وَرَغِمَ اَنْفُهٗ، اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْنِیْ بِدُعَائِکَ رَبِّیْ شَقِيًّا وَّکُنْ بِیْ رَؤُوْفًا رَّحِيْمًا. يَا خَيْرَ الْمَسْئُوْلِيْنَ وَخَيْرَ الْمُعْطِيْنَ۔

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! इसे हज्जे मबरूर कर और गुनाह बख़्श दे। इलाही ! तेरे लिये हम्द है जैसे हम कहते और उससे बेहतर जिसको हम कहते हैं, ऐ अल्लाह ! मेरी नमाज़ व इबादत और मेरा जीना मरना तेरे ही लिये है और तेरी ही तरफ मेरी वापसी है। और ऐ अल्लाह ! तू ही मेरा वारिस है। ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं अज़ाबे क़ब्र और सीना के वसवसे और काम की परागंदगी से। इलाही ! मैं सवाल करता हूं कि उस चीज़ की ख़ैर का जिसको हवा लाई है और उस चीज़ के शर से पनाह मांगता हूं जिसे हवा लाती है। इलाही ! हिदायत की तरफ़ हमारी रहनुमाई फ़रमा और तक़वा से मुज़ैयन कर और दुनिया व आख़रत में हम को बख़्श दे। इलाही ! मैं पाकीज़ा और मुबारक रिज़्क़ का तुझसे सवाल करता हूं। इलाही ! तूने दुआ करने का हुक्म दिया है और क़बूल करने का ज़िम्मा तूने ख़ुद लिया है और बेशक ! तू वादा के

ख़िलाफ़ नहीं करता और अपने अहद को नहीं तोड़ता, इलाही ! जो अच्छी बातें तुझे महबूब हैं उन्हें हमारे लिये भी महबूब कर दे और हमारे लिये मयस्सर कर और जो बातें तुझे नापसंद हैं हमको उनसे बचा, और इस्लाम की तरफ़ तूने हिदायत फ़रमाई तो इसको हम से जुदा न कर। इलाही ! तू मेरे मक़ाम को देखता है और मेरा कलाम सुनता है और मेरे पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है। मेरे काम में कोई शै तुझ पर मख़्फ़ी नहीं। मैं ना मुराद मोहताज फ़रियाद करने वाला, पनाह चाहने वाला, ख़ौफ़ से डरने वाला, अपने गुनाह का मोतरिफ़ हूं। मिस्कीन की तरह तुझसे सवाल करता हूं और गुनाहगार ज़लील की तरह तुझसे आजिज़ी करता हूं और डरने वाले मुज़तर की तरह तुझसे दुआ करता हूं उस बंदे की मिस्ल जिसकी गर्दन तेरे लिये झुक गयी और आंखें जारी और बदन लाग़िर और नाक ख़ाक में मिली है। ऐ परवर्दिगार ! तू मुझे बदबख़्त न कर और मुझ पर बहुत बहुत मेहरबान हो जा। ऐ बेहतर सवाल पर, बेहतर देने वाले !!

★ मख़्सूस दुआयें ★

जो रिवायत हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ से मज़कूर हो चुकी है उसमें जो दुआयें हैं उन्हें भी पढ़ें यानी :–

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

100 बार :–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰی سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰی آلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَّ عَلَيْنَا مَعَهُمْ

100 बार, हज़रत अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم से रिवायत है कि सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, मेरी और अंबिया की दुआ अरफ़ा के दिन की यह है:

لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْکَ لَهٗ. لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِیْ سَمْعِیْ نُوْرًا وَّفِیْ بَصَرِیْ نُوْرًا وَّفِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ لِیْ

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, उसी का मिल्क है, वही लाइके हम्द है, वही मारता जिलाता है, और हर चीज़ उसी के क़ाबू में है। ऐ अल्लाह ! मेरे कान, आंख और दिल को नूर से मुनव्वर फ़रमा। ऐ अल्लाह ! मेरा सीना खोल दे

صَدْرِیْ وَیَسِّرْ لِیْ اَمْرِیْ وَ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ وَسَاوِسِ الصَّدْرِ وَتَشْتِیْتِ الْاَمْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا یَلِجُ فِیْ اللَّیْلِ وَ النَّھَارِ وَشَرِّ مَا تَھُبُّ بِہِ الرِّیْحُ وَشَرِّ بَوَائِقِ الدَّھْرِ.

और मेरा काम आसान कर दे, और मैं तेरी पनाह मांगता हूं सीना के वसवसों और काम की परागंदगी और अज़ाबे क़ब्र से, ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं उसकी बुराई से जो रात व दिन में दाख़िल होती है और उसकी बुराई से जिसे हवा उड़ा लाती है और आफ़ाते दहर की बुराई से।

इस मक़ाम पर पढ़ने की बहुत दुआयें किताबों में मज़कूर हैं मगर इतनी ही किफ़ायत है और दुरूद शरीफ़ व तिलावत कुरआन मजीद सब दुआओं से ज़्यादा मुफ़ीद है। एक अदब वाजिबुल हिफज़ इस रोज़ का यह है कि अल्लाह तआला के सच्चे वादों पर भरोसा करके यक़ीन करे कि आज मैं गुनाहों से ऐसा पाक हो गया जैसे मां के पेट से पैदा हुआ था। अब कोशिश करो कि आइंदा गुनाह न हों और जो दाग़ अल्लाह तआला ने अपनी रहमत से मेरी पेशानी से धोया है फिर न लगे।

★ ख़बरदार ! कहीं हज बर्बाद न.... ★

वैसे तो बद निगाही ही हराम है मगर एहराम में या मौकिफ़ या मस्जिदे हराम या काबा मोअज़्ज़मा के सामने या तवाफ़े बैतुल हराम में ख़ुसूसन निगाह की हिफ़ाज़त करें, यह तुम्हारे इम्तेहान का मौक़ा है। औरतों को हुक्म दिया गया है कि यहां मुंह न छुपाओ और तुम्हें हुक्म दिया गया है कि उनकी तरफ़ निगाह न करो, यक़ीन जानो कि यह बड़े ग़ैरत वाले बादशाह की बांदिया हैं। और उस वक़्त तुम और वह ख़ास दरबार में हाज़िर हो। बिला शुबह शैर का बच्चा उसकी बग़ल में हो तो उस वक़्त कौन उसकी तरफ़ निगाह उठा सकता है। तो अल्लाह तआला वाहिद व क़हार की कनीज़ें उसके ख़ास दरबार में हाज़िर हैं उन पर बदनिगाही किस क़दर सख़्त होगी। **اللّٰہ اکبر!** हां ! हां ! होशियार ! ईमान बचाये हुए क़ल्ब व निगाह संभालें। हरम वह जगह है जहां निगाह के इरादे पर भी पकड़ा जाता है और एक गुनाह एक लाख गुनाह के बराबर होता है। अल्लाह तआला अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़े व तुफ़ैल ख़ैर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन। (آمین)

★ मुज़दलफ़ा की रवानगी और उसका वकूफ़ ★

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हज्जतुल विदाअ में ताजदारे कायनात ﷺ अरफ़ात से मुज़दलफ़ा में आकर यहां मग़रिब व ईशा की नमाज़ पढ़ी फिर आराम फ़रमाया यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त हुआ और उस वक़्त अज़ान व इक़ामत के साथ नमाज़ फ़ज्र अदा फ़रमाई, फिर क़सवा पर सवार होकर मशअरे हराम में तशरीफ़ लाये और क़िब्ला जानिब चेहरा अनवर करके दुआ तकबीर व तहलीम व तौहीद में मशगूल रहे और वकूफ़ फ़रमाया यहां तक कि ख़ूब उजाला हो गया और तुलूअ आफ़ताब से पहले यहां से रवाना हुए। *(मुस्लिम शरीफ)*

रास्ते भर में ज़िक्र, दुरूद, दुआ, लब्बैक, और गिरया व ज़ारी में मसरूफ़ रहे। उस वक़्त की बाज़ दुआयें यह हैं :–

اَللّٰھُمَّ اِلَیْکَ اَفَضْتُ وَفِیْ رَحْمَتِکَ رَغِبْتُ وَمِنْ سَخَطِکَ رَھِبْتُ وَمِنْ عَذَابِکَ اَشْفَقْتُ فَاقْبَلْ نُسُکِیْ وَاَعْظِمْ اَجْرِیْ وَتَقَبَّلْ تَوْبَتِیْ وَارْحَمْ تَضَرُّعِیْ وَاَجِبْ دُعَائِیْ وَاَعْطِنِیْ سُؤَالِیْ اَللّٰھُمَّ لَاتَجْعَلْ ھٰذَا آخِرَ عَھْدِنَا بَیْنَ ھٰذَاالْمَوْقَفِ الشَّرِیْفِ الْعَظِیْمِ وَارْزُقْنَا الْعَوْدَ اِلَیْہِ مَرَّاتٍ کَثِیْرَۃٍ بِلُطْفِکَ الْعَمِیْمِ.

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी तरफ़ वापस हुआ और तेरी रहमत में रग़बत की और तेरी नाराज़गी से डरा, और तेरे अज़ाब से ख़ौफ़ किया, तू मेरी इबादत क़बूल फ़रमा और मेरा अज्र अज़ीम फ़रमा, और मेरी तौबा क़बूल फरमा और मेरी आजिज़ी पर रहम फ़रमा, और मेरा सवाल अता फ़रमा, मेरी यह हाज़िरी आख़री हाज़िरी न कर और तू अपनी मेहरबानी से यहां बहुत मर्तबा आना नसीब फ़रमा।

★ दख़ूले मुज़दलफ़ा की दुआ ★

اَللّٰھُمَّ ھٰذَا جَمْعٌ اَسْئَلُکَ اَنْ تَرْزُقَنِیْ جَوَامِعَ الْخَیْرِ کُلَّھَا اَللّٰھُمَّ رَبَّ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الرُّکْنِ وَالْمَقَامَ وَرَبَّ الْبَلَدِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَسْئَلُکَ بِنُوْرِ وَجْھِکَ الْکَرِیْمِ اَنْ تَغْفِرَ لِیْ ذُنُوْبِیْ وَتَجْمَعَ عَلَی الْھُدیٰ اَمْرِیْ وَتَجْعَلَ التَّقْوٰی زَادِیْ وَذُخْرِیْ وَالْآخِرَۃَ مَآبِیْ

وَهَبُ لِیُ رَضَاکَ عَنِّیُ فِیُ الدُّنُیَا وَالآخِرَةِ یَا مَنُ بِیَدِہِ الخَیُرُ کُلُّہٗ اِعُطِنِیُ الخَیُرَ کُلَّہٗ وَاَصُرِفُ عَنِّیُ الشَّرَّ کُلَّہٗ اَللّٰھُمَّ حَرِّمُ لَحُمِیُ وَعَظُمِیُ وَشَحُمِیُ وَشَعُرِیُ وَسَائِرَ جَوَارِحِیُ عَلَیَ النَّارِ یَا اَرُحَمَ الرّٰحِمِیُنَ "

★ नूरुन् अला नूर ★

हदीस शरीफ़ में आया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जमरों की रमी करना तेरे लिये क़यामत के दिन नूर होगा।

हज़रत अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है वह कहते हैं कि हम ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह ! ﷺ यह जमरों पर जो कंकरियां हर साल मारी जाती थीं, हमारा गुमान है कि कम हो जाती हैं। सरकारे मदीना ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जो क़बूल होती हैं वह उठाई जाती हैं ऐसा न होता तो पहाड़ों के मिस्ल तुम देखते। *(तिबरानी व हाकिम)*

सहीह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उम्मुल हसबेन رضی اللہ عنہا से मरवी है कि रहमते आलम ﷺ ने हज्जतुल विदाअ में सर मुंडवाने वालों के लिये तीन बार दुआ की और कतराने वालों के लिये एक बार दुआ की। इसी की मिस्ल हदीस शरीफ़ हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ व हज़रत मालिक बिन रबीया رضی اللہ عنہ ने भी रिवायत कीं।

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि मदनी आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि बाल मुंडवाने पर हर बाल के बदले में एक नेकी है और एक गुनाह मिटाया जाता है। हज़रत उबादा बिन सामत رضی اللہ عنہ से मरवी है कि सरकारे कायनात رضی اللہ عنہ का फ़रमाने पाक है कि सर मुंडवाने में जो बाल ज़मीन पर गिरेगा वह तेरे लिये क़यामत के दिन नूर होगा।

10 तारीख़ को नमाज़े फ़ज्र के बाद तुलूअ आफ़ताब में दो रकअत पढ़ने का वक़्त जब बाक़ी रह जाये तो मिना को चलो और यहां (मुज़दल्फ़ा)से सात छोटी छोटी कंकरियां खजूर की गुठली बराबर की पाक जगह से उठाकर तीन बार धो लो ! किसी पत्थर को तोड़कर कंकरियां न बनाओ और यह भी हो सकता है कि तीनों दिन जमरों पर मारने के लिये यहीं से कंकरियां ले लो या सब किसी और जगह से ले लो मगर नजिस जगह की न हों। और न मस्जिद

की न जमरा के पास की हो।

रास्ते में फिर बदस्तूर ज़िक्र करो और दुआ व दुरूद कसरते लब्बेक में मशगूल रहो और यह दुआ पढ़ो :—

اَللّٰھُمَّ اِلَیُکَ اَفَضُتُ وَمِنُ عَذَابِکَ اَشُفَقُتُ وَاِلَیُکَ رَجَعُتُ وَمِنُکَ رَمَیُتُ فَتَقَبَّلُ نُسُکِیُ وَعَظِّمُ اَجُرِیُ وَارُحَمُ تَضَرُّعِیُ وَتَقَبَّلُ تَوُبَتِیُ وَاَجِبُ دُعَائِیُ

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी तरफ़ वापस हुआ और तेरे अज़ाब से डरा, और तेरी तरफ़ रुजू किया। और तुझसे ख़ौफ़ किया। तू मेरी इबादत कुबूल़ कर और मेरा अज्र ज़्यादा कर और मेरी आजिज़ी पर रहम फ़रमा और मेरी तौबा क़बूल कर और मेरी दुआ क़बूल फ़रमा।

जब वादीए मुहस्सर पहुंचो तो 545 हाथ बहुत जल्द तेज़ी के साथ चल कर निकल जाओ। मगर किसी को ईज़ा भी न दो। और इस अर्सा में यह दुआ पढ़ते जाओ : اَللّٰھُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَ لَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذَالِكَ

ऐ अल्लाह ! جل جلالہ अपने ग़ज़ब से हमें क़त्ल न कर और अपने अज़ाब से हमें हलाक न कर और इससे पहले हम को आफ़ियत दे।

★ वादीए मुहस्सर क्या है ? ★

मिना व मुज़दलफ़ा के बीच में एक नाला है जिसे वादीए मुहस्सर कहते हैं, दोनों की हुदूद से ख़ारिज मुज़दलफ़ा से मिना को जाते हुए बायें हाथ पर जो पहाड़ पड़ता है उसकी चोटी से शुरू होकर पांच सो पेंतालिस (545) हाथ तक है, यहां अस्हाबे फ़ील आकर ठहरे, उन पर अबाबील का अज़ाब उतरा था। इस जगह से जल्द गुज़रना और अज़ाबे इलाही से पनाह मांगना चाहिये। मिना नज़र आने पर वही दुआ पढ़ी जाये जो मक्का से आते वक़्त मिना को देखकर पढ़ते हैं।

मिना पहुंचने पर सबसे पहले जमरतुल उकबा को जाओ जो मिना से अगला और मक्का से पहला है, जमरा से कम से कम पांच हाथ हटे हुए यूं खड़े हों कि मिना दाहिने हाथ पर और काबा बायें हाथ पर हो और जमरा की तरफ़ मुंह हो, सात कंकरियां एक एक करके मारो, सीधा हाथ ख़ूब उठाकर मारो कि बग़ल की रंगत ज़ाहिर हो। बेहतर यह है कि कंकरियां जमरा (शैतान) तक पहुंचे वरना तीन हाथ के फ़ासले तक गिरें, इससे ज़्यादा फ़ासला पर गिरें

तो वह कंकरियां शुमार में न आयेगी पहली कंकरी से लब्बेक कहना शुरू करो और कंकरी मारते वक़्त यह दुआ पढ़ो :—

بِسۡمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَکۡبَرُ رَغۡماً لِّلشَّیۡطَانِ رِضاً لِلرَّحۡمٰنِ، اَللّٰهُمَّ اجۡعَلۡهُ حَجّاً مَّبۡرُوۡراً وَّ سَعۡیاً مَّشۡکُوۡراً وَّ ذَنۡباً مَّغۡفُوۡراً

अल्लाह ﷻ के नाम से, अल्लाह बहुत बड़ा है, शैतान को ज़लील करने के लिये अल्लाह की रज़ा के लिये, ऐ अल्लाह ! इस हज को मक़बूल और सई को मशकूर फरमा और गुनाह बख़्श दे।

कंकरी सिर्फ़ **بِسۡمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَکۡبَرُ** कहकर भी मारी जा सकती है। **اللّٰه اکبر** के बदले **سُبۡحٰنَ اللّٰهِ** या **لا اله الا الله** कहा जब भी हर्ज नहीं।

जब सात कंकरियां मारकर पूरी हो जायें तो फिर वहां न ठहरो, फ़ौरन ज़िक्र व दुआ करते हुए पलट आओ।

इस रमी का वक़्त दसवीं की फ़ज्र से ग्यारहवीं की फ़ज्र तक है मगर मसनून यह है कि तुलूअ आफ़ताब से ज़वाल आफ़ताब तक हो और ज़वाल से गुरूब तक मुबाह और गुरूब से फ़ज्र तक मकरूह। ऐसे ही दसवीं की फ़ज्र से तुलू आफ़ताब तक मकरूह और अगर किसी उज़्र के सबब हो मिसाल के तौर पर चरवाहों ने रात में रमी की तो कराहत नहीं। *(दुर्रे मुखतार व रद्दुल मुहतार)*

अब रमी से फ़ारिग़ होकर कुरबानी में मशगलू हो। यह वह कुरबानी नहीं जो बकरा ईद में हुआ करती है कि वह तो मुसाफ़िर पर अस्लन नहीं और मुक़ीम मालदार पर वाजिब है अगरचे हज के सफ़र में हो और हज की कुरबानी असल में यह हज का शुकराना है। क़ारिन और मुतमत्तेअ पर वाजिब है। अगरचे फ़क़ीर हो और मुफ़रिद के लिये मुस्तहब अगरचे ग़नी हो। उस कुरबानी के जानवर की भी उमर व आज़ा में वही शर्तें हैं जो ईद की कुरबानी में हैं। ज़बह करना आता हो तो ख़ूद ज़बह करे कि सुन्नत है वरना ज़बह के वक़्त हाज़िर रहें।

जानवर को क़िब्ला रू लिटाकर खूद भी क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके यह पढ़ो:

اِنِّیۡ وَجَّهۡتُ وَجۡهِیَ لِلَّذِیۡ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالاَرۡضَ حَنِیۡفاً وَّ مَا اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِکِیۡنَ، اِنَّ صَلاَتِیۡ وَ نُسُکِیۡ وَ مَحۡیَایَ وَ مَمَاتِیۡ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ لاَ شَرِیۡکَ لَهٗ وَ بِذٰلِکَ اُمِرۡتُ وَاَنَا مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ.

उसके बाद कहते हुए निहायत तेज़ छुरी से बहुत जल्द ज़बह कर दो कि चारों रगें कट जायें ज़्यादा हाथ न बढ़ाओ कि बे सबब की तकलीफ़ हो।

कुरबानी के बाद अपने और तमाम मुसलमानों के हज व कुरबानी क़ुबूल होने की दुआ मांगो।

इसके बाद क़िब्ला रुख़ बैठकर मर्द हलक़ करें यानी तमाम सर मुंडवायें कि अफ़ज़ल है या बाल कतरवायें कि रुख़सत है। औरतों को बाल मुंडवाना हराम है, एक बाल बराबर कतरवायें। मुफ़रिद अगर कुरबानी करे तो उसके लिये मुस्तहब यह है कि कुरबानी के बाद हलक़ करें और अगर हलक़ के बाद कुरबानी की जब भी हर्ज नहीं मगर तमत्तोअ व किरान वाले पर वाजिब है कि पहले कुरबानी करे फिर हलक़ यानी अगर कुरबानी से पहले सर मुंडवायेगा तो दम वाजिब होगा।

बाल कतरवाते वक़्त यह ख़्याल बेहद ज़रूरी है कि सर में जितने बाल हैं उनमें के चहारुम (1/4) बालों में से करतवाना जरूरी है लिहाज़ा एक पोरे से ज़्यादा कतरवायें कि बाल छोटे, बड़े होते हैं, मुमकिन है कि चहारुम बालों में से सब एक एक पोरा न तराशें। हलक़ हो या तक़सीर दाहिनी तरफ़ से शुरू करो यानी मुंडवाने वाले की दाहिनी जानिब यही हदीस से साबित है। और इमामे आज़म عَلَيۡهِ الرَّحۡمَةُ وَ الرِّضۡوَانُ ने ऐसा ही किया। बाज़ किताबों में जो हजाम की दाहिनी जानिब से शुरू करने को बताया सहीह नहीं है। हलक़ या तक़सीर के वक़्त यह तकबीर कहते जाओ :—

اَللّٰهُ اَکۡبَرُ اَللّٰهُ اَکۡبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَکۡبَرُ وَ لِلّٰهِ الۡحَمۡدُ

और फ़ारिग़ होने के बाद भी कहो। हल्क़ या तक़सीर के वक़्त यह दुआ पढ़ो :—

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ عَلٰی مَا هَدٰنَا وَ اَنۡعَمَ عَلَیۡنَا وَ قَضٰی عَنَّا نُسُکَنَا ،اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ نَاصِیَتِیۡ بِیَدِکَ فَاجۡعَلۡ لِیۡ بِکُلِّ شَعۡرَةٍ نُّوۡراً یَّوۡمَ الۡقِیٰمَةِ وَامۡحُ عَنِّیۡ بِهَا سَیِّئَةً وَّارۡفَعۡ لِیۡ بِهَا دَرَجَةً فِیۡ الۡجَنَّةِ الۡعَالِیَةِ،اَللّٰهُمَّ بَارِکۡ لِیۡ فِیۡ نَفۡسِیۡ وَ تَقَبَّلۡ مِنِّیۡ ،اَللّٰهُمَّ اغۡفِرۡ لِیۡ وَ لِلۡمُحَلِّقِیۡنَ وَالۡمُقَصِّرِیۡنَ یَا وَاسِعَ الۡمَغۡفِرَةِ

हम्द है अल्लाह तआला के लिये उस पर कि उसने हमें हिदायत की और इनाम किया और हमारी इबादत पूरी करा दी। ऐ अल्लाह! यह मेरी चोटी तेरे हाथमें है मेरे लिये हर बाल के बदले में क़यामत के दिन नूर कर, उसकी वजह से मेरे गुनाह मिटा दे और जन्नत में दर्जा बुलंद कर, इलाही ! मेरे नफ़्स में बरकत कर, और मुझसे क़बूल कर, और ऐ अल्लाह ! मुझको और सर मुंडवाने वालों और बाल कतरवाने वालों को बख़्श दे, ऐ बड़ी मग्फ़िरत वाले।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

अफ़ज़ल यह है कि आज यानी दसवीं तारीख़ को ही फ़र्ज़ तवाफ़ के लिये जिसे तवाफ़े ज़ियारत भी कहते हैं मक्का मोअज़्ज़मा जाओ बदस्तूर मज़कूर पैदल, बा वुजू जवाफ करो मगर उस तवाफ़ में इज़्तेबाअ नहीं।

ग्यारहवीं तारीख़ को बाद नमाज़े जुहर फिर रमी को चलो, उस वक़्त रमी जमराए उला से शुरू करो जो मस्जिद ख़ैफ़ से क़रीब है। इसकी रमी के लिये मक्का की तरफ़ से आकर चढ़ाई पर चढ़ो कि यह जगह ब निसबत के बुलंद है यहां क़िब्ला रू होकर सात कंकरिया मारो फिर बतौर मज़कूरा जमरा से कुछ आगे बढ़ जाओ और क़िब्ला रू दुआ में यूं हाथ उठाओ कि हथेलियां क़िब्ला रू हों। हुजूरे क़ल्ब से हम्द व दुरूद व दुआ व इस्तिग़फ़ार में कम से कम बीस आयतें पढ़ने की क़दर मशगूल रहो वरना पोन पारा या सूरए बक़रह की मिक़दार तक, फिर जमरा वसती पर जाकर वैसा ही करो फिर जमराए उकबा पर जाओ मगर यहां रमी करके न ठहरो, फ़ौरन पलट आओ, वापसी में दुआ करो।

बाहरवीं तारीख़ को बाद ज़वाल तीनों जमरों की रमी करो बाज़ लोग दोपहर से पहले रमी करके मक्का मोअज़्ज़मा चल देते हैं यह हमारे असल मज़हब के ख़िलाफ़ और एक ज़ईफ़ रिवायत है तुम उस पर अमल न करो। बाहरवीं की रमी के गुरूबे आफ़ताब से पहले इख़्तेयार है कि मक्का मुकर्रमा को रवाना हो जाओ मगर गुरूब के बाद चला जाना मोअयूब है।

हाजियो ! आओ ! शहंशाह का रोज़ा देखो !
काबा तो देख चुके काबे का काबा देखो !

(आला हज़रत)

ज़ियारते रसूलुल्लाह ﷺ

الصلوٰۃ والسلام علیك یارسول الله ﷺ

हुजूर सरवरे आलम महबूबे ख़ुदा ﷺ की ज़ियारत करना क़रीब ब वाजिब है, कुरबते इलाही के हुसूल का सबसे मुस्तहकम ज़रिया और वसीला है, इस बारे में कुरआने मुक़द्दस की आयते मुबारका मौजूद है :–

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَآؤُكَ فَاسْتَغْفَرُوْا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوْا اللّٰهَ تَوَّاباً رَّحِيْماً

और अगर जब वह अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब ! तुम्हारे हुजूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से माफ़ी मांगे और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमायें तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला और मेहरबान पाएं। *(सूरए निसाअ)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया **مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ** जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उसके लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गयी। *(वफाउल वफ़ा, जिल्द–2, सफ़ा–394)*

दूसरा इरशाद है :–

مَنْ جَآءَ نِیْ زَائِراً لَا یُهِمُّهٗ اِلَّا زِیَارَتِیْ کَانَ حَقًّا عَلَیَّ اَنْ اَکُوْنَ لَهٗ شَفِیْعاً یَّوْمَ الْقِیٰمَةِ

जो मेरी ज़ियारत को आये और ज़ियारत के सिवा उसकी और कोई नियत न हो तो मुझ पर यह हक़ है कि मैं रोज़े क़यामत उसकी शफ़ाअत करूं। *(वफाउल वफा, जिल्द–2, सफ़ा–396)*

हुजूर अकरम ﷺ का फ़रमान है :–

जिसने मेरे विसाल के बाद मेरी ज़ियारत की तो ऐसा ही है जैसे मेरी हयाते ज़ाहिरी में ज़ियारत की।

इसी मफ़हूमे आली को दूसरी हदीसे पाक वाज़ेह करती है :–

مَنْ حَجَّ فَزَارَ قَبْرِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ کَانَ کَمَنْ زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ जिसने हज किया और मेरी वफ़ात के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत की तो वह शख़्स उस तरह है जिसने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़्यारत कीं। *(मिश्कातुल मसाबिह, सफा–241)*

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم का फ़रमान है :–

مَنْ زَارَنِیْ فِیْ الْمَدِیْنَةِ مُحْتَسِباً کَانَ فِی جِوَارِیْ وَکُنْتُ لَهٗ شَفِیْعاً یَّوْمَ الْقِیٰمَةِ

जो मदीना में मेरी ज़ियारत के लिये आए नियत ख़ालिस सवाब की हो तो वह क़यामत के दिन मेरी पड़ोस में होगा और मैं उसकी शफ़ाअत करूंगा। *(जामिउस्सग़ीर, सफा–117)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है :–

مَنْ حَجَّ اِلیٰ مَکَّةَ ثُمَّ قَصَدَنِی فِی مَسْجِدِیْ کُتِبَ لَهٗ حَجَّتَانِ مَبْرُوْرَتَانِ

जो शख़्स मक्का मोअज़्ज़मा के लिये जाये और मेरी ज़ियारत की नियत से मेरी मस्जिद में आये तो उसे दो मक़बूल हज का सवाब है। *(जज़्बुल क़ुलूब, 196)*

मुज़दाए जांफ़िज़ा

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ
اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا خَلِیْفَةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ
اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰهِ
فِیْ الْغَارِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ

सफ़रे मदीना और क़यामे मदीना में मुसीबतों और परेशानियों का सामना करके उन पर सब्र करने वालों को क्या मुज़दाए जांफिज़ा सुनाया जा रहा है और जिन खुश नसीबों को मक्का मुकर्रमा और मदीना तैयबा में मौत आ गयी उन को नुवेदे उखरवी मरहमत हो रही है मुलाहज़ा फ़रमायें :–

जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की वह क़यामत के रोज़ मेरे पड़ोस में होगा और जिसने मदीना में सुकूनत इख़्तेयार किया, उसकी परेशानियों पर सब्र किया, मैं उसके लिये क़यामत के दिन गवाही दूंगा और शफ़ाअत करूंगा और जिसे हरमे मक्का या हरमे मदीना में मौत आ जाये तो क़यामत के दिन अमन वालों में उठेगा। *(मिश्कातुल मसाबिह, सफा–240)*

अज़ान के बाद हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के दर्जा रफ़ीआ और वसीला की दुआ करने वाले के लिये और ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने वाले के लिये खुश ख़बरी है : जिसने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم के लिये दर्जाए रफ़ीआ और वसीला की दुआ की तो उसे हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की शफ़ाअत नसीब हो और जिसने आप की क़ब्रे अतहर की ज़ियारत की वह रोज़े क़यामत हुज़ूर के पड़ोस में हो। *(जज़्बुल क़ुलूब, 197)*

इन तमाम तरग़ीबी इरशादात और फ़रामीन के पहुंचने के बाद हर ईमान व मुहब्बत वाला अपने दर्दे इसयां की दवा के लिये यक़ीनन इस्तेताअत होने पर मदीना तैयबा की जानिब दौड़ेगा। अपने आक़ा व मौला के दरबार में हाज़िर होकर गमका मरहम, दुख, दर्द की दवा और सामाने आख़रत फ़राहम करेगा और अगर किसी ने वसाइल होते हुए मक्का शरीफ़ आकर अरकाने हज अदा कर लिये और हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की ज़ियारत को ग़ैर अहम समझकर छोड़ दिया और ज़ियारते रसूल से फ़ैज़याब हुए बग़ैर वापस चला गया ता न सिर्फ़ यह कि वह महरूम रहा। बल्कि उसने सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم पर जुल्म किया, हुज़ूर की हक़ तलफ़ी की। और जिस उम्मती का हाल यह हो कि उसकी सरकशी से नबी और रसूल पर जुल्म हो रहा हो उसे अपना अंजाम जान लेना चाहिये ! फ़रमाने सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم दिल से सुनिये :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, जिस्ने हज किया और मेरी ज़ियारत नहीं की, यक़ीनन ! उसने मुझ पर जुल्म किया। *(वफाउल वफा, जिल्द–2, सफा–398)*

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने मक्का मुकर्रमा से हिजरत कर ली तो वहां की हर चीज़ पर अंधेरा छा गया। और जब मदीना मुनव्वरा में नुज़ूले इजलाल फ़रमाया तो वहां का ज़र्रा, ज़र्रा रौशन और मुनव्वर हो गया। हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, मदीना मुनव्वरा में मेरा घर है और

इसी में मेरी क़ब्र भी होगी लिहाज़ा हर मुसलमान पर हक़ है उसकी ज़ियारत करे। *(मिश्कातुल मसाबिह, सफा–547)*

रसूले अकरम ﷺ की ज़ियारत की अहमियत, फ़ज़ीलत व अफ़ादियत पर अश्शैख इमामुल फकीह मुहद्दिष तक़ीउद्दीन عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ की अज़ीमुश्शान तसनीफ़ **شفاء السقام فی زیرة خیر الانام** अरबी जुबान में मौजूद है जो मुन्केरीने ज़ियारत के जुमला एतेराज़ात के काफ़ी शाफ़ी जवाब फ़राहम करती है। इसके अलावा उर्दू जुबान में इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिषे बरेलवी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ और दीगर फ़क़ीहे हनफ़िया ने भी मज़ामीन और किताबें तसनीफ़ की हैं। बंदा राक़िमुल हुरूफ़ उन अकाबिर की तहरीरों से इस्तेफ़ादा करते हुए ज़ियारते रसूलुल्लाह ﷺ से मुताल्लिक़ कुछ बातें सुपुर्द क़लम करता है।

★ सहाबा किराम का जज़्बाए ज़ियारतुन्नबी ﷺ ★

सहाबाए रसूल ﷺ व رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ सरकार के मज़ार पुर अनवार की ज़ियारत को बहुत अहमियत देते थे और क्यों न हो कि इन्हें मालूम था कि हुज़ूर की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत भी हुज़ूर की ज़ियारत है, जैसा कि ऊपर हदीस से साबित हुआ है।

फ़ुतुहुश्शाम वग़ैरह में है कि उहदे फ़ारूक़ी में जब मुल्के शाम फ़तह और बैतुल मुक़द्दस पर बग़ैर जिहाद के इस्लामी परचम लहराया उसी दौरान हज़रत कबअ رضی اللہ عنہ ने इस्लाम क़बूल कर लिया। इस वाक़ेया से सैयदना उमर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ को बहुत शादमानी हुई। मदीना तैयबा वापस लौटते हुए ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन ने कअब अहबार को ज़ियारतुन्नबी ﷺ की दावत दी। हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने उनसे फ़रमाया, आप हमारे साथ मदीना तशरीफ़ ले चलेंगे? और नबी करीम ﷺ की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत से मुस्तफ़ीज़ होंगे? तो उन्होंने हज़रत उमर से कहा, हां! मैं ऐसा करूंगा।

चुनांचे अमीरुल मोमिनीन और हज़रत कअब अहबार رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا यह तवील सफ़र करके मदीना तैयबा हाज़िर हुए और सबसे पहले सरकारे दो आलम ﷺ का मवाजा मुक़द्दसा में जाकर ज़ियारत से शाद काम हुए। *(फ़ुतुहुश्शाम, वफाउल वफा, जिल्द–2, सफा–409)*

सैयदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ का मामूल था कि जब किसी सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते थे तो सबसे पहला उनका काम यह होता था कि हुज़ूर ﷺ की बारगाह में हाज़िरी देते थे और इस तरह सलाम कहते :–

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ

सैयदना इब्ने उमर رضی اللہ عنہ के गुलाम हज़रत नाफ़ेअ से लोगों ने दर्याफ़्त किया कि आपने कभी अपने आक़ा (इब्ने उमर) को हुज़ूर ﷺ की बारगाह में हाज़िर होकर सलाम अर्ज़ करते हुए देखा है? तो उन्होंने जवाब दिया मैंने एक बार नहीं बल्कि सेंकड़ों बार इन्हें हुज़ूर ﷺ की बारगाह में आपकी क़ब्रे अतहर के सामने खड़े होकर सलाम कहते हुए सुना है। आप इस तरह सलाम पेश फ़रमाया करते थे :–

★ اَلسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ ★ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَبِیْ بَكْر ★ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَبِیْ

(मोअत्ता इमाम मालिक, जि. 1, सफा. 382)

सैयदना अबू उबैदा बिन जर्राह رضی اللہ عنہ ने अपना क़ासिद बनाकर मयसरा बिन मसरूक़ को बैतुल मुक़द्दस से मदीना मुनव्वरा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ की ख़िदमत में भेजा। हज़रत मैयसरा मदीना तैयबा पहुंचे तो रात हो चुकी थी। आप सबसे पहले हुज़ूर अक़दस ﷺ की ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए। सलात व सलाम का हदिया पेश किया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ عنہ को सलाम पेश किया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ عنہ का मामूल था कि मुल्के शाम से मदीना तैयबा हुज़ूरे अक़दस ﷺ की ख़िदमत आली में सलाम पेश करने के लिये क़ासिद भेजा करते थे।

★ बिलाल आशेफ़्ता हाल ★

हज़रत बिलाले हबशी رضی اللہ عنہ मोअज़्ज़िन रसूलुल्लाह ﷺ का वाक़िया है कि आप मुल्के शाम फ़तह होने के बाद दरबारे फ़ारूक़ी में अर्ज़ गुज़ार हुए कि अगर आप इजाज़त मरहमत फ़रमायें तो मदीना तैयबा से बैतुल मुक़द्दस जाकर सकूनत पज़ीर हो जाऊं। क्योंकि जिस महबूब दिल नवाज़ के रुख़े ज़ेबा की ज़ियारत क़ल्बे महज़ून का इलाज थी अब वह खाकी चादर ओढ़े हुए मह्वे ख्वाब हैं। उन्होंने अपना चेहरा छुपा लिया है तो उश्शाक़ के लिये इज़्तेराब का आलम तारी हो गया। मस्जिदे नबवी के बाम व दर देखें, महराम व मिम्बर

पर नज़र उठेगी तो उनके लिये तड़प जाऊंगा। क़लबे मजूंन को कैसे समझाऊंगा ? तसल्ली का सामान कहां से पाऊंगा ? कभी कभी इश्क़ व आगही की राह में दूरी भी इख़्तेयार करनी पड़ती है मगर कब? जब इश्क़ का कमाल रफ़अते बिलाल हासिल कर ले।

बिलाल आशेफ़्ता हाल को अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ ने मुल्के शाम जाने की इजाज़त दे दी। बिलाल को अमीरे पुर जलाल से ज़्यादा कौन पहचाने। एक दुखियारे को दुख को दूसरा दुखियारा ही समझे, यही अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ हैं। हुब्बे रसूल का नशा उन की रूह व दिल में इतनी गहराईयों तक उतरा हुआ है कि सरकार के विसाल की ख़बर सुनकर तलवार खींच लेते हैं और लहराते हुए कहते जाते हैं अगर किसी ने कहा कि रसूल विसाल फ़रमा गये तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूंगा। कोई तावील करे कि यह कौन सा जज़्बा है? यह कौन सी सरशारी है? जिन सहाबा किराम की निगाहों के सामने कुरआन फुरक़ान लेकर हज़रत जिब्रईल अमीन علیہ السلام आया करते थे, मलाइका मुक़र्रेबीन जिनकी तालीम व तादीब का अहकाम लेकर उतरा करते थे उन कुरआनी नमूनों में से किसी ने हज़रत उमर का हाथ नहीं पकड़ा, रास्ता नहीं रोका। नबी रहमते आलम ﷺ की रहलत का सदमा ज़ेहन व दिमाग़ को चर के दे गया, मगर इसी रसूल करीम व हकीम ने इन्हें तर्बियत के सांचे में भी उतारा था। इश्क़ वह भी था जो अक़्ल व शऊर को कुछ देर के लिये झिंझोड़ गया। और वह भी इश्क़ ही था जिसने तमानीयत की चादर ओढ़ ली। जो उमर (رضی اللہ عنہ) ग़मे मुस्तफ़ा ﷺ में अपने आपको संभाल न पा रहे थे आज पूरी उम्मत को संभाले हुए हैं। नयाबते रसूल की अज़ीम ज़िम्मेदारी को उठाए हुए हैं और मिनहाजे नुबुव्वत पर आलमे इस्लाम की रहबरी कर रहे हैं।

मरहबा ऐ इश्क़ ख़ुश सोदाए मा
ऐ दवाए जुमला इल्तहाए मा

हज़रत सैयदना बिलाल के दिल का हाल अमीरुल मोमिनीन को ख़ूब मालूम है। उन्होंने इजाज़त दे दी और बिलाल शाम में सुकूनत पज़ीर हो गये। मगर तसव्वुर की निगाहें मदीना को कहां छोड़ती हैं। उन्हीं की याद, उन्हीं का ख़्याल, और उन्हीं की याद में इन्हमाक।

हो गयी दिल को तेरी याद से एक निसबते ख़ास
अब तो शायद ही मयस्सर कभी तंहाई हो

शबो रोज़ आशिक़ रसूल को इस तरह खोया खोया देखा होगा तो अहले इख़लास ने मश्वरा किया होगा कि हज़रत बिलाल رضی اللہ عنہ के लिये दिलजूई का कोई सामान किया जाये। चुनांचे आपका निकाह भी हो गया। मगर दर नबवी की नूरानियत और रहमतों की बारिश का कैफ़ हज़रत बिलाल कैसे फ़रामोश कर सकते हैं?

एक शब महवे ख़्वाब थे कि उनको रूही फ़दाह हुजूर ﷺ की ज़ियारत नसीब हुई। सरकारे दो आलम ﷺ ने पूछा। ऐ बिलाल! अब मेरी ज़ियारत को नहीं आओगे? अल्लाह अल्लाह! मालूम नहीं कि इनके इस फ़रमान में क्या तासीर थी कि बिलाल की आंख खुल गयी रूह व दिल से एक ही सदा आ रही थी :—

शुक्रे यज़दा के बुलाया शहे दींने हाफिज़
लिल्लाहिल हम्द के महबूब का पयगाम आया

हज़रत बिलाल को अब चैन कहां? फ़ौरन उठे और दयारे नबी ﷺ की जानिब चल पड़े। मदीना तैयबा में वारिद हुए तो रहमत व नूर की वही गलियां, कैफ़ व सरवर की वही भीनी भीनी ख़ुश्बू, मगर जिस मर्कज़े ख़ैरात व हसानात का यह सब सदक़ा व तुफ़ैल है वह तो नज़र आते नहीं ! तेज़ तेज़ क़दमों से बढ़े और हुजूर अक़दस ﷺ के मवाजेह मुक़द्दसा में हाज़िर हो गये, धड़कते दिल, धकते सीने और बहती हुई आंखों से सलात व सलाम पेश किया। और रोज़तुर्रसूल ﷺ से लिपट गये और जी भरकर रोये। जिगर गोशहाए रसूल ﷺ सैयदना इमाम हसन व हुसैन رضی اللہ عنہما ने ख़ादिमे रसूल बिलाल को देखा तो नाना जान का ज़माना याद आ गया। सैयदना बिलाल उन दोनों नौ निहालों को गोद में खिलाते थे। कांधे पर बिठाते थे, उंगलियां पकड़कर चिल्लाते थे। दोनों बढ़कर हज़रत बिलाल से लिपट गये। ऐ नाना जान के प्यारे मोअज़्ज़िन! क्या दौरे नबवी की अज़ान अब हम कभी नहीं सुनेंगे ? नमाज़ का वक़्त हो चला है, आइये ! आज आप अज़ान कहिये! बिलाल कुश्ता जिगर आज़माईश में मुब्तला हो गये।

जन्नती जवानों के सरदार का हुक्म टाला भी तो नहीं जा सकता। वक़्ते अज़ान बिलाल को रसूले कायनात ﷺ का जमाले जहांआरा सामने चाहिये। अज़ान ख़ाना पर हज़रत बिलाल खड़े कर दिये गये और मदीना तैयबा की फ़िज़ा में मोअज़्ज़िने रसूल की अज़ान का पहला कलिमा गुंजा! कुलूब कांप उठे, दिलों में बरछियां चुभ गयीं, अज़ाने बिलाल के साथ ही उहदे रसूल ﷺ का तसव्वुर ज़िन्दा हो गया। अल्लाहु अक्बर की आवाज़ महराबे नबवी में बुलंद करके ईमान व इरफ़ान की फ़स्ले बहार लाने वाले रसूल का ज़माना याद आ गया। जिसने जहां से अज़ाने बिलाली सुनी वहीं से दौड़ पड़ा, ज़मानाए रसूल लौट आया, दौरे नबवी ओद कर आया, बिलाल की अज़ान ने दिलों में दबी हुई इश्क़े रसूल की चिंगारियों को कुरेद डाला, मुहब्बत की आतिशे पाकीज़ा भड़क उठी, बाज़ारे मदीना में शोर मच गया, खेतों के काम रुक गये और पर्दा नशीनाने मदीना बे ख़ूद होकर महबूबे रब्बुल आलमीन के इश्क़ में घरों से निकल पड़ीं। हज़रत बिलाल ने अज़ान में **اشهد ان لا اله الاالله** कहा और आवाज़ भर्रा गयी, क्योंकि हुजूर ﷺ के ज़माने में **اشهد ان محمدا رسول الله** पर पहुंचते तो अपनी शहादत की उंगली से हुजूर ﷺ की जानिब इशारा किया करते थे। आज जब आशिक़े रसूल ने **اشهد ان محمدا رسول الله** कहा और आंखें खोलीं तो हुजूर ﷺ को न पाया तो दिल बैठ गया और आवाज़ रुक गयी और बिलाल अज़ान पूरी न कर सके, गश खाकर गिर गये, हज़रत बिलाल का यह सफ़र किस मक़सद के लिये था महज़ ज़ियारत रसूल के लिये **سبحان الله !**

★ एक अेअराबी दरबारे रसूल में ★

अहले इस्लाम का चौदह सौ साल से यही अक़ीदा है कि सरकार ही हर दर्द की दवा, हर मर्ज़ का ईलाज, हर ग़म का मुदावा हैं, दीन व दुनिया की सब हाजतें इसी मुक़द्दस दर पर पूरी होती हैं। सलफ और ख़लफ हर एक का यही ईमान व अक़ीदा है। दौरे क़दीम में अहले ईमान अपनी हाजतें लेकर किस तरह दरबारे आली में हाज़िर होते थे, इसके सबूत में यह वाक़िया मुलाहज़ा फ़रमायें :–

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल उत्बा बयान फ़रमाते हैं कि मुझे मदीना तैयबा की हाज़िरी नसीब हुई मवाजह मुक़द्देसा में हाज़िर था। हुजूरे अक़दस ﷺ की बारगाह में सलाम अर्ज़ करने के बाद एक जानिब गोशा में बैठा हुआ

था, इतने में क्या देखता हूं कि एक देहाती ऊंट पर सवार होकर आया और सरकारे दो आलम ﷺ के रूबरू इस तरह गोया हुआ : या खयरुर्रुसूल! आप पर अल्लाह तआला ने अपना कलाम नाज़िल फ़रमाया है जिसमें है **وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَاءُ وْكَ** और अगर जब वह अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब! तुम्हारे हुजूर हाज़िर हों। और फिर अल्लाह से माफ़ी मांगेगें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमायें तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला और मेहरबान पायेंगे।

और कहा कि ऐ अल्लाह के हबीब! ﷺ मैं आपकी बारगाह में हाज़िर हो गया और अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहता हूं और उसमें आपकी शफ़ाअत चाहता हूं। इतना कहते कहते उसकी हिचकियां बंध गयीं, वह रोने लगा। इसी आलम में यह अशआर पढ़ा :–

يَاخَيْرَ مَنْ دُفِنَتْ بِالْقَاعِ اَعْظُمُهٗ   فَطَابَ مِنْ طِيْبِهِنَّ الْقَاعُ وَالْاَ كَمْ

نَفْسِیْ الْفِدَاءُ لِقَبْرٍاَنْتَ سَاكِنُهٗ   فِيْهِ الْعِفَافُ وَفِيْهِ الْجُوْدُ وَ الْكَرَمْ

اَنْتَ الشَّفِيْعُ الَّذِیْ تُرْجٰی شَفَاعَتُهٗ   عَلَى الصِّرَاطِ اِذَا مَا زَالَتِ الْقَدَمْ

وَصَاحِبَاكَ لَا اَنْسَاهُمَا اَبَداً   مِّنِّیْ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ مَا جَرَى الْقَلَمْ

ऐ बेहतरीन ज़ात! इन सब में जिनकी हड्डियां हमवार ज़मीन में दफ़न की गयीं और उनकी वजह से उम्दगी और निफ़ासत ज़मीन और टीलों में फैल गयी। मेरी जान कुरबान! इसी मुबारक क़ब्र पर जिसमें आप राहत गज़ीं हैं। इस में उफ्फ़त है जूद व सख़ा और इनामात व इकरामात हैं। आप ऐसे शफ़ीअ हैं जिनकी शफ़ाअत के हम उम्मीदवार हैं। जिस वक़्त पुल सिरात पर लोगों के क़दम फिसल रहे होंगे और आपके दो साथियों को तो मैं कभी नहीं भूल सकता, मेरी तरफ़ से आप सब पर सलाम होता रहे जब तक दुनिया में लिखने के लिये क़लम चलता रहे।

इसके बाद उस देहाती ने इस्तिग़फ़ार किया और वहां से रुख़सत हो गया। (रावी कहते हैं) कि इसी दौरान वहां बैठे बैठे मेरी आंख लग गयी। मैं ख़्वाब में हुजूर की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ। हुजूर ﷺ ने फ़रमाया, जाओ! उस देहाती से कह दो कि मेरी शफ़ाअत से रब तआला ने उसकी मग़्फ़िरत

फ़रमा दी। *(शिफाउस्सिक़ाम की ज़ियारति खैरुल अनाम, सफा–16)*

अल्लामा नईमुद्दीन मुरादाबादी ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में आयत وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا की तफ़सीर में इस वाक़िया को नक़ल करने के बाद लिखते हैं :–

इससे चंद मसाइल मालूम हुए।

मसअला : अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़े हाजत के लिये उस्के मक़बूलों का वसीला बनाना ज़रियाए कामयाबी है।

★ क़ब्र पर हाजत के लिये जाना भी جَآءُوْكَ में दाख़िल है और ख़ैरुल कुरून का मामूल है।

★ बाद वफ़ात मक़बूलाने हक़ को या के साथ निदा करना जाइज़ है।

★ मक़बूलाने हक़ मदद फ़रमाते हैं और उनकी दुआऐ हाजत रवाई होती है। *(ख़ज़ाइनुल इर्फान)*

★ मामूलाते मदीना मुनव्वरा ★

मदीना मुनव्वरा बेहद बरकतों वाला शहर है उसकी बरकत व फ़ज़ीलत अेहाताए तहरीर से बाहर है। इस मुक़द्दस शहर में हमेशा बा अदब रहना चाहिये इसलिये कि यह अल्लाह तआला का पसंदीदा शहर है। इसलिये तो आला हज़रत इमामे इश्क़ व मुहब्बत इमाम अहमद रज़ा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि :–

हरम की ज़मीं और क़दम रखके चलना
अरे सरका मौक़ा है ओ जाने वाले !

★ चंद ज़रूरी गुज़ारिशात ★

मक्का और मदीना में हमेशा बा वुज़ू रहें। वुज़ू की फ़ज़ीलत हस्बे ज़ैल है।

वुज़ू भी आमाले जन्नत में से एक अमल और जन्नत की सड़कों में से एक शाहेराह है। वुज़ू के फ़ज़ाइल और अज्र व सवाब के बारे में मुंदरजा ज़ैल चंद हदीसें बहुत ज़्यादा ईमान अफ़रोज़ हैं :–

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसे कामों का रास्ता न बताऊं ? जिससे अल्लाह

तआला तुम्हारे गुनाहों को भी मिटा दे और तुम्हारे दरजात को भी बुलंद फ़रमा दे। सहाबाए किराम ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं? ऐसे अमल की तो बहुत ज़रूरत है ! तो आपने इरशाद फ़रमाया कि तकलीफ़ों के बावजूद कामिल वुज़ू करना और मस्जिदों की तरफ़ बकसरत क़दम रखना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इंतज़ार करना। यह चीज़ें जिहाद के हुक्म में हैं। *(मिश्कात शरीफ, जिल्द–1 सफा–38)*

हज़रत उष्मान رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया जो बेहतरीन तरीक़ा से वुज़ू करे। तो उसके बदन से उसके तमाम गुनाह निकल जाते हैं। यहां तक कि उसके नाख़ूनों के नीचे के गुनाह भी निकल जाते हैं। *(मिश्कात शरीफ, जिल्द–1 सफा–38)*

हज़रत उक़बा बिन आमिर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि जो मुसलमान अच्छी तरह वुज़ू करे फिर खड़े होकर दो रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े कि अपने दिल और चेहरे के साथ उन दोनों रकअतों पर तवज्जोह रखे तो उसके लिये जन्नत वाजिब हो जाती है। *(मिश्कात शरीफ, जिल्द–1, सफा–39)*

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि तुममें से जो कोई ख़ूब कामिल वुज़ू करे फिर इन कलिमात को पढ़ ले :–

اشهد ان لا اله الا الله و ان محمداً عبده ر رسوله तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं कि व जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाये। *(मिश्कात शरीफ, जिल्द–1, सफा–39)*

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, मेरी उम्मत क़यामत के दिन उस हालत में बुलाई जायेगी कि उन की पेशानी रौशन और हाथ, पांव वुज़ू के असरात से चमकते होंगे। तो जो अपनी रौशनी बढ़ा सकता हो उसको चाहिये कि वह अपनी रौशनी को बढ़ाये। *(मिश्कात शरीफ, जिल्द–1, सफा–39)*

★ तशरीहात व फ़वायद ★

वुज़ू ख़ुद बज़ाहिर कोई इबादत का काम नहीं मालूम होता। इसलिये कि

पानी बहाना और चंद आज़ा को धो लेना बज़ाहिर कोई इबादत का अमल नहीं, लेकिन चूंकि वुज़ू नमाज़ अदा करने का वसीला है और इबादत का वसीला भी इबादत होता है इसलिये वुज़ू इस लिहाज़ से इबादत बन गया और ऐसी शानदार इबादत कि जन्नत वाला अमल और बहिश्त की सड़कों में से एक सड़क बल्कि शाहे राह बन गया।

हदीसे पाक में तकलीफ़ों के बावजूद वुज़ू करने का मतलब यह है कि सर्दी वग़ैरह के मवाक़े पर तकलीफ़ के बावजूद आज़ा को पूरा पूरा कामिल तरीक़े से सुन्नत के मुताबिक़ धोए इसमें हरगिज़ कोई सुस्ती या कोताही न करे।

इस हदीस में कामिल वुज़ू करने और कसरत से मस्जिदों में आने जाने और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इंतज़ार करने, इन तीनों बातों को हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया : **فَذٰلِكُمُ الرِّبَاطُ** रबात के माअना इस्लामी सरहद पर घोड़ा बांध कर कुफ़्फ़ार के हमलों से बचाना। हदीस का मतलब यह है कि गोया इन तीनों कामों को बजा लाने का सवाब जिहाद के मिस्ल है।

इस तरह तमन्ना गुनाहों के बदन से निकल जाने का मतलब यह है कि वुज़ू करने से गुनाहे सग़ीरा (छोटे गुनाह) सबके सब माफ़ हो जाते हैं। गुनाहे कबीरा (बड़े गुनाह) अगर हुकूक़ से इनका ताल्लुक़ है मसलन नमाज़, रोज़ा छोड़ दिया बग़ैर सच्ची तौबा के गुनाहे माफ़ नहीं हो सकता और अगर हुकूकुल अेबाद से ताल्लुक़ रखने वाले गुनाहे कबीरा हों जैसे किसी का माल चुरा लिया है तो उसको माफ़ कराने के लिये तौबा के साथ साथ बंदों से माफ़ करा लेना ज़रूरी है।

★ वुज़ू के दुनियावी फ़ायदे ★

वुज़ू से आख़रत के फ़ायदे के अलावा बहुत से दुनियावी फ़ायदे भी हैं।

मसलन बा वुज़ू रहने वाला मुसलमान शैतान के वसवसों और शैतानी हमलों से महफ़ूज़ रहता है।

★ वुज़ू बहुत सी बीमारियों का ईलाज और तंदुरुस्ती का मुहाफ़िज़ है।

★ वुज़ू करके जिस काम के लिये लिये घर से निकलेंगे इंशाअल्लाह तआला वह काम पूरा हो जायेगा। इसीलिये औलियाए किराम का यह तरीक़ा

रहा है कि वह हमेशा या अक्सर औक़ात बा वुज़ू रहा करते थे।

★ मदीना मुनव्वरा में हाज़री ★

जब मदीना मुनव्वरा में क़दम रखें तो सलात व सलाम अर्ज़ करते हुए रखें और रोज़ए रसूल ﷺ पर हाज़री के लिये बेचैन हो जायें, इसलिये कि महबूब से मिलने की हर आशिक़ को आरज़ू होती है। लिहाज़ा जल्दी जल्दी ज़रूरयात से फ़ारिग़ होकर दरबारे रसूल ﷺ की हाज़री के लिये तैयार हो जायें। नये लिबास, सुरमा, इत्र, ख़ुश्बू, कंघी, अमामा शरीफ़ वग़ैरह से संवर कर आक़ा ﷺ के हुज़ूर की हाज़िरी के लिये तैयार हो जायें।

★ हाज़री का तरीक़ा ★

बाबे जिब्रईल علیہ السلام के पास इस अंदाज़ से रुकें गोया कि इजाज़त तलब कर रहे हों, थोड़ी देर इंतज़ार के बाद मस्जिदे नबवी शरीफ़ में :–

بسم اللّٰہ الرّحمٰن الرحیم

الصلوۃ و السلام عیك یا رسولَ اللّٰہ

بسم اللّٰہِ دخلتُ و علیہ توکّلتُ و نویتُ سنّۃَ الا عتکافِ

पढ़ते हुए सीधा पैर रखें। मस्जिदे नबवी में दाख़िल होते ही थोड़ी देर के लिये बायें जानिब थोड़ा सा चलें और खड़े हो जायें। सलात व सलाम मुख़्तसर पढ़कर फिर दायें जानिब को आयें और सीधा चलना शुरू कर दें। अब आहिस्ता आहिस्ता सुनहरी जालियों की जानिब क़दम बढ़ाते जायें। रियाज़ुल जन्नह से गुज़रते हुए सरकार ﷺ के मिम्बर शरीफ़ के क़रीब होकर रोज़ा رضی اللہ عنہ शरीफ़ की जालियों की जानिब बढ़ते चलें। यह देखो सुनहरी जालियां नज़र आ गईं ! सरापा अदब बन कर सलात व सलाम अर्ज़ करें।

أَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ

أَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہِ ﷺ

أَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نور اللّٰہِ ﷺ

أَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا خَیْرَ خَلْقِ اللّٰہِ ﷺ

وَعَلٰی آلِكَ وَ ذَوِیْكَ فِیْ کُلِّ آنٍ وَّلَحْظَاۃٍ عَدَدَ کُلِّ ذَرَّۃ اَلْفَ اَلْفِ مَراتٍ

उसके बाद जिन लोगों ने सलाम पेश किया है सब का सलाम पेश करें।

उसके बाद ख़ूब दुआ करें अपने लिये, घर वालों के लिये, दोस्त अहबाब के लिये, रिश्तेदार के लिये और सारे मोमिनीन के लिये और अगर मुमकिन हो तो मेरे लिये भी मग़िफ़रत की दुआ करें और **सुन्नी दावते इस्लामी** के लिये ज़रूर ज़रूर दुआ करें।

फिर सैयदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ के मवाजे अक़दस की जानिब बढ़ें और उनकी बारगाह में भी सलाम का नज़राना पेश करें।

उसके बाद फिर थोड़ा सा हटें और सैयदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ की बारगाह में नज़रानाए सलाम पेश करें।

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُتَمِّمَ الْاَرْبَعِيْنَ
السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عِزَّ الْاِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रहमते आलम ﷺ की बारगाह में हाज़री के हवाले से आयत और अहादीस आप समाअत फ़रमा चुके हैं। आइये दुआ करें कि अल्लाह तआला हम सबको अदब के साथ मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी की ख़ैरात अता करे और जब तक मदीना मुनव्वरा में रहें अदब के साथ रखे। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ हिकायात ★

एक बुर्जुग गिलाफ़े काबा पकड़े बारगाहे इलाही में अर्ज़ गुज़ार हैं :—

इलाही! इस घर की ज़ियारत को हज कहते हैं और कलिमाए हज दो हर्फ़ हैं। "ح" और "ج" इस "ح" से तैरा हिलम और "ج" से मेरे जुर्म अदा हैं, तू अपने हिल्म से मरे जुर्म माफ़ फ़रमा। आवाज़ आयी कि ऐ मेरे बंदे! तूने कैसी उम्दा मुनाजात की। फिर से कहो। मौसूफ़ दोबारा नये अंदाज़ से यूं गोया हुए, ऐ मेरे ग़फ़्फ़ार! तेरी मग्फ़िरत का दरया गुनाहगारों की मग्फ़िरत व बख़्शिश के लिये रवां दवां है और तेरी रहमत का ख़ज़ाना हर सवाली के लिये खुला है, इलाही! इस घर की ज़ियारत को हज कहते हैं और हज में दो हर्फ़ हैं "ح" और "ج"। "ح" से मेरी हाजत और "ج" से तेरा जूद मुराद है और

तू अपने जूद व करम से इस मिस्कीन की हाजत पूरी फ़रमा। आवाज़ आयी कि ऐ जवान मर्द! तूने क्या ख़ूब हम्द की। फिर कह! उसने कहा, ऐ ख़ालिक़े कायनात! तेरी वह ज़ात पाक है कि जिसने आफ़ियत का पर्दा मुसलमानों को मरहमत फ़रमाया, इस घर की ज़ियारत को हज कहते हैं और हज में दो हर्फ़ हैं "ح" और "ج"। इलाही अगर "ح" से मेरी ईमानी हलावत और "ج" से तेरी जहांदारी की जलालत मुराद है तो तू अपनी जहां दारी की जलालत की बरकत से ज़ईफ़ की ईमान की हलावत को शैतान की घात से महफ़ूज़ रख। आवाज़ आयी, ऐ मेरे मुख़्लिस और आशिक़ सादिक़ बंदे! मेरे हिल्म, मेरे जूद, मेरे जहांदारी की जलालत से जो कुछ तूने तलब किया मैंने तुझे अता फ़रमाया, हमारा तो काम यही है कि हर मांगने वाले को दामने मुराद भर दूं मगर कोई मांगे तो सही!

हम तो माइल ब करम हैं कोई साइल ही नहीं
राह दिखायलें किसे रह रवे मंज़िल ही नहीं

हज़रत शैख़ यहया قدس سرہٗ जब हज से फ़ारिग़ हुए तो वापसी में ख़ानाए काबा के दरवाज़े पर आकर यूं इल्तेजा की! इलाही शाहाना दुनिया का दस्तूर है कि वह अपने ख़ुद्दाम को बर वक़्त रुख़सत ख़िदमतगारी के सिले में बेश क़ीमत तहाइफ़ और गुना गूं इनाम व इकराम से इज्ज़त अफ़ज़ाई करते हैं और जब ख़ुद्दाम अपने ख़ेश व अक़रबा, अहबा व रुफ़क़ा से मिलते हैं तो उनसे तहाइफ़ के ख़्वाहिशमंद होते हैं और वह ख़ुद्दाम बादशाह से हासिल शुदा इनाम व तहाइफ़ में से अपने अहबाब व अक़ारिब को दे कर मुसर्रत व शादमानी की दौलत से मालामाल करते हैं।

ख़ुदावंद! मैं तेरा बंदा और तू बादशाहों का भी हाकिम व मालिक है इलाही! मैं चंद रोज़ तेरे इस हुरमत वाले घर की ख़िदमत से मुशर्रफ़ हुआ हूं। अब मेरी वापसी क़रीब है, कुछ तहायफ़ तेरे आस्तानाए फ़ैज़ रसां से ले जाने का तालिब होता हूं ताकि वह रहमत व मग़्फ़िरत के तोहफ़े जब मैं सही व सालिम लेकर अपने वतन पहचुं तो अपने खेश व अक़ारिब के मुतालबा पर पेश कर सकूं और कहूं!

अज़ीज़ो! मैं दरबारे इलाही से तुम्हारे लिये रहमत व मग़्फ़िरत के दो

तोहफ़े लाया हूं। ऐ मेरे मौला ! मुझे यह तोहफ़ा अता फ़रमा। ताकि मुझे इनके सामने शर्मसार न होना पड़े। आवाज़ आई, ऐ यहया! जो तोहफ़े तूने तलब किये हैं मैंने अता फरमा दिये। इनको मेरी रहमत व मग्फ़िरत की बशारत सुना। बेशक ! मैं करीम हूं, जब गदा और बेनवा करीम के दरवाज़े पर जाता है तो करीम उसकी मुराद पूरी करता है, उसकी हाजत बर लाता है, इस मोहताज की ज़रूरयात पूरी करता है।

जाओ ! मैंने अपने जूद व करम के बे पायां दरया से तुझे ईमानदारों के लिये शफ़ाअत व मग्फ़िरत के तोहफ़े अता कर दिये।

एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि मैंने एक दरवेश देखा (जिन्होंने अपने मुंह पर कपड़ा डाला हुआ था) तशरीफ़ लाये और चश्मे ज़मज़म में दाख़िल होकर अपने बर्तन में ज़मज़म डाल कर पीने लगे। मैंने उनसे उनका झूटा तलब किया और लेकर पीने लगा तो वह शहद की तरह मीठा और ऐसा लज़ीज़ था कि ऐसा मैंने पहले कभी नहीं पिया था। पीने के बाद मैंने देखा तो वह बुजुर्ग जा चुके थे। दूसरे दिन ज़मज़म के पास इंतज़ार में फिर बैठ गया, तो वह बुजुर्ग चेहरे पर कपड़ा लटकाये हुए फिर तशरीफ़ लाये और ज़मज़म के कुंए से दो डोल निकाल कर पिया। तो मैंने फिर उनसे इनका बचा हुआ लेकर पिया तो वह ऐसा मीठा दूध था जैसे शकर मिलाकर बनाया गया हो इससे पहले मैंने ऐसा कभी नहीं पिया । *(रौज़, सफा–513)*

हज़रत शैख़ अबू याकूब अलबसरी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा मक्का में दस रोज़ तक भूखा रहा। जिससे मुझे बहुत ज़्यादा ज़ोअफ़ हो गया तो मुझे मेरे दिल ने सख़्त मजबूर किया कि बाहर निकलूं, शायद कोई चीज़ मिल जाये जिससे मेरी भूख में कुछ कमी हो। मैं बाहर निकला तो एक गला सड़ा शलग़म पड़ा हुआ पाया। मैंने उसको उठा लिया लेकिन मेरे दिल में उससे वहशत सी हुई गोया कि कोई कह रहा है कि दस दिन की भूख के बाद भी तुझे नसीब हुआ तो सड़ा हुआ शलग़म। मैंने उसको फेंक दिया और वापस मस्जिदे हराम में आकर बैठ गया। थोड़ी देर के बाद एक आदमी आया और मेरे आगे आकर बैठ गया और एक जुज़दान मेरे सामने रखकर कहने लगा इसमें एक थैली है जिसमें पांच सो दीनार हैं, यह आपकी नज़र है। मैंने उससे कहा कि इसके लिये आपने मुझे कैसे मख़सूस किया। उसने कहा, हम

लोग दस रोज़ से समुन्द्र में थे कि हमारी कश्ती डूबने के क़रीब हो गयी तो हम में से हर एक ने नज़र मानी कि अगर अल्लाह तआला हम सबको मुसीबत से नजात अता फ़रमाकर सही व सलामत पहुंचा दे तो हम अपनी यह नज़रें पूरी कर देंगे और मैंने यह नज़र मानी थी कि यह अशरफ़ियों की थैली हरम पाक के मुजावरों में से उसको दूंगा जिस पर सबसे पहली मेरी नज़र पड़ेगी तो सबसे पहले मैं आप से ही मिला हूं। लिहाज़ा यह आपकी नज़र है। मैंने कहा, इसको खोलो ! तो उसने कहा उसको खोला तो उसमें से सफ़ेद आटे की मीठे केक, छिले हुए बादाम और शकर पारे थे। तो मैंने हर एक में से एक एक मुट्ठी भर लिया और कहा यह बाक़ी मेरी तरफ़ से अपने बच्चों के लिये हदिया ले जाओ। मैंने तुम्हारी नज़र को क़बूल किया फिर मैंने अपने दिल से कहा कि तेरा रिज़्क़ दस रोज़ से तेरे पास खिंचा हुआ चला आ रहा था और तू उस (रिज़्क़) को बाहर वादी में तलब करता फिरता है।

الصلوٰة والسلام عليك يارسول الله ﷺ
وعلىٰ آلك واصحابك يا حبيب الله ﷺ

ज़िक्रे इलाही की बरकतें

अल्लाह रब्बुल इज्ज़त कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाता है :–

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا وَ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا

ऐ ईमान वालो ! याद किया करो अल्लाह को कसरत से और उसकी पाकी बयान किया करो सुबह व शाम। *(कन्जुल इमान, सूरए अहबाब–22)*

★ लफ़्ज़े ज़िक्र की वुस्अत ★

ज़िक्र के मायने हैं याद करना, चर्चा करना वग़ैरह निहायत छोटा सा लफ़्ज़ है लेकिन कूज़े में समन्दर के मुतरादिफ़ अपने अंदर तमाम इबादात व मामुलात को समूए हुए है। जिसको हम यूं बयान कर सकते हैं कि हर वह अमल जो अल्लाह ﷻ और उसके प्यारे हबीब ﷺ की तामील में उनकी रज़ा व ख़ुशनूदी के लिये किया जाये ज़िक्र है। चाहे इसका ताल्लुक़ इबादात से हो, जैसे नमाज़, रोज़, हज व ज़कात वग़ैरह या मामलात से मुताल्लिक़ हो जैसे वालदैन की ख़िदमत, उनकी इताअत व फ़रमाबरदारी, पड़ौसियों, रिश्तेदारों, यतीमों और मोहताजों से हुस्ने सुलूक और हुसूले मआश के लिये हलाल व हराम का इम्तेयाज़ करते हुए मेहनत व मशक़्क़त करना वग़ैरह वगैरह यह सब ज़िक्र हैं।

ख़ुदाए वहदहु ला शरीक एक और मक़ाम पर अपने महबूब ﷺ को ज़िक्र करने का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमाता है :–

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّ سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ **तर्जमा :** और अपने रब को बकसरत याद करो और पाकी बयान करो सुबह व शाम। *(आले इमरान, 41)*

आयते करीमा में अल्लाह तआला ने अपने प्यारे महबूब को बार बार बकसरत ज़िक्र का हुक्म दिया कि जो सारी कायनात में सबसे ज़्यादा महबूब हैं। उनकी हर अदा महबूब है।

नबी अकरम ﷺ का अपने रब्बे करीम का ज़िक्र करना न सिर्फ़ महबूब व पसंदीदा है बल्कि तमाम ज़िक्र करने वालों के ये ज़िक्र की क़बूलियत का वसीला व वास्ता है, गोया अपने महबूब ﷺ को फ़रमाया, तुम ज़िक्र करते रहो ताकि सबका ज़िक्र क़बूल होता रहे और ताकि तुम्हारे ज़िक्र के तुफ़ैल इस कायनात पर हमारी रहमतों की बारिश जारी रहे। नीज़ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ प्यारे हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलंद कर दिया है। इस नेअमत के बदले बतौरे शुक्र तुम हमारा ज़िक्र करते रहो।

चंद और आयात मुलाहज़ा हों जिसमें रब्बे करीम ने अपने महबूब को ज़िक्र का हुक्म दिया है :–

इरशादे रब्बानी है :–

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِيْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ

तर्जुमा : और याद करो अपने रब को अपने दिल में आज़िज़ी करते हुए और डरते डरते। *(अअराफ़–205)*

और सूरए मुज़म्मिल में इरशाद फ़रमाता है :–

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا और अपने रब का नाम याद करो और सबसे टूटकर उसी के रहो।

और सूरए दहर में इरशादे बारी है :–

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا और रब का नाम सुबह व शाम याद करो।

चुनांचे महबूबे मुकर्रम ﷺ ने मौला तआला के हुक्म की तामील में इसका ऐसा ज़िक्र किया कि सारी कायनात झूम उठी, ज़मीन के चप्पे चप्पे पर اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की सदायें गुंजने लगीं। بالله العظيم उनकी हर अदा जिक्रे इलाही थी, उनकी जलवत में अल्लाह के ज़िक्र की गुंज होती, उनकी ख़लवत में अल्लाह के ज़िक्र की रिफ़ाक़त होती, उनकी ज़बान मुबारक ज़ाकिर

थी, उनका क़ल्बे मुनव्वर ज़िक्र से लबरेज़ था। उनका रोंगटा रोंगटा उनके रब का ज़िक्र कर रहा था। वह किसी लम्हे अपने रब के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न हुए हत्ता के सोते तब भी क़ल्बे सलीम ज़िक्र में मसरूफ़ रहता। इसी कैफ़ियत को उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا को बताया :–

اِنَّ عَیْنَیَّ تَنَامَانِ وَ لا یَنَامُ قَلْبِی यानी आंखें तो सोती हैं लेकिन मेरा दिल नहीं सोता।

इरशादे बारी तआला है :– فَاذْکُرُوْنِی اَذْکُرْکُمْ وَاشْکُرُوْلِی وَلَا تَکْفُرُوْنِ पस तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद किया करूंगा और शुक्र अदा किया करो और मेरी नाशुक्री न किया करो। *(सूरए बकरह)*

ज़ाकिरीन के लिये कितना बड़ा एअजाज़ है कि अल्लाह अहकमुल हाकिमीन उनका ज़िक्र फ़रमाता है। हर सूरत में जो बंदे हर हाल और हर लम्हे में अपने रब्बे करीम को याद करते हैं वह अपने फ़ज़्ल व करम से उनके हर हाल को दुरुस्त रखता है और हर लम्हा अपने इनामात से नवाज़ता रहता है, नीज़ इस तरह के हम तो सिर्फ़ ज़मीन पर उसका ज़िक्र करते हैं और वह मालिके अर्श व कुरसी अपनी नूरानी मख़्लूक़ मलाइका में हमारा ज़िक्र फ़रमाता है और उन्हीं को गवाह बनाकर हमारी बख़्शिश व मग़्फ़िरत का ईलाज फ़रमाता है।

मश्हूर सहाबी रसूल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ से एक तवील हदीस बुख़ारी शरीफ़ में है। जिसका तर्जुमा पेश किया जाता है। यक़ीनन। आप इसको पढ़कर झूम उठेंगे। ग़ौर कीजिये, अल्लाह के फ़ज़्ल व करम पर नाज़ कीजिये। और ज़ाकिरीन में से हो जाइये।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते रास्तों में ज़िक्र करने वालों की तलाश में घूमते रहते हैं। जब वह ज़ाकिरीन की किसी जमाअत को पाते हैं तो एक दूसरे को पुकारते हैं कि आओ ! अपने मक़सद की तरफ़ (यानी मिल गये जिन्हें हम तलाश कर रहे थे) फिर वह फ़रिश्ते ज़ाकिरीन को अपने परों से ढांप लेते हैं (मुहब्बत व उलफ़त के तौर पर) फिर वह अपने रब के दरबार में हाज़िर होते हैं तो अल्लाह तआला उनसे पूछता है। हालांकि अल्लाह अपने बंदों का हाल जानता है लेकिन फ़रिश्तों से

अपने ज़ाकिर बंदों की तारीफ़ सुनना पसंद फ़रमाता है) ऐ फ़रिश्तो! तुमने मेरे बंदों को किस हाल में पाया ?

फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं :–

یُسَبِّحُوْنَکَ، وَیُکَبِّرُوْنَکَ، وَیَحْمَدُوْنَکَ، وَیَمْجِدُوْنَکَ

रब ! तेरे बंदे तेरी तस्बीह बयान कर रहे थे, तेरी बडाई बयान कर रहे थे, तेरी तारीफ़ें बयान कर रहे थे, तेरी बुज़ुर्गी बयान कर रहे थे। अल्लाह तआला फ़रमाता है : هَلْ رَاَوْنِی ؟ क्या उन्होंने मुझे देखा है? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं مَا رَأَوْكَ नहीं मौला ! उन्होंने तुझे नहीं देखा।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : کَیْفَ لَوْ رَأَوْنِی ؟ अगर वह मुझे देख लेते तो उनका क्या हाल होता ? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं अगर वह तुझे देख लेते तो वह और ज़्यादा तेरी इबादत करते और ज़्यादा बुज़ुर्गी बयान करते और ज़्यादा तस्बीह बयान करते।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : فَمَا یَسْئَلُوْنَ ؟ वह मुझसे क्या मांग रहे थे ? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं, मौला ! वह तुझसे जन्नत मांग रहे थे। अल्लाह جل جلالہ फ़रमाता है, क्या उन्होंने जन्नत देखी है? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं, नहीं। बक़सम रब! उन्होंने जन्नत नहीं देखी। अल्लाह तआला फरमाता है, अगर वह जन्नत देख लेते तो उनका क्या हाल होता? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं, अगर वह जन्नत देख लेते तो वह उसकी बहुत हिर्स करते। उसके बहुत तलबगार हो जाते और उसकी तरफ़ उनकी रग़बत और ज़्यादा हो जाती।

अल्लाह तआला फ़रमाता है, वह किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे ? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं : مِنَ النَّارِ जहन्नम की आग से।

अल्लाह तआला फ़रमाता है, क्या उन्होंने जहन्नम की आग को देखा है?

फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं नहीं, बक़सम ऐ रब ! उन्होंने उसे नहीं देखा।

अल्लाह तआला फ़रमाता है अगर वह उसे देख लेते तो उनका क्या हाल होता ?

फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं अगर वह उसे देख लेते तो वह उससे मज़ीद भागते और ज़्यादा डरते ।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है :–

ऐ फ़रिश्तो! मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैंने उन सबको बख़्श दिया।

फ़रिश्ते कहते हैं : ऐ अल्लाह! उनमें एक शख़्स था जो ज़िक्र नहीं कर रहा था बल्कि अपनी किसी ज़रूरत के लिये उनके पास आया था। अल्लाह तआला फ़रमाता है, **لَا يَشْقٰى جَلِيْسُهُمْ** उनके पास बैठने वाला भी महरूम नहीं रहता। *(बुख़ारी शरीफ़)*

★ जन्नत के तरफ़ ले जाने वाला अमल ★

عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَوَّلُ مَنْ يُدْعٰی اِلَی الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الَّذِيْنَ يَحْمَدُوْنَ اللّٰهَ فِی الْبَأْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ۔

तर्जमा : हज़रत इब्ने अब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जिन्हें क़यामत के दिन सबसे पहले जन्नत की तरफ़ बुलाया जायेगा वह होंगे जो ख़ुशी व ग़म में अल्लाह तआला की हम्द करते हैं। *(बयहकी–343)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अक्सर इंसान ख़ुशी के मौक़े पर अपने अल्लाह तआला को भूल जाता है जब कि होना तो यह चाहिये था कि ख़ुशी के वक़्त अपने अल्लाह तआला का ज़िक्र ज़्यादा करे और अपने मअबूदे हक़ीक़ी का शुक्र बजा लाये। इसी लिये औलियाए किराम अपने अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ का ज़िक्र ख़ुशी व ग़म में ज़्यादा करते ता कि अल्लाह तआला राज़ी हो जाये। इंसान ख़ुशी और ग़म में अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ का ज़िक्र करे तो अल्लाह तआला उस बंदे से ग़म दूर और ख़ुशियों में इज़ाफ़ा करता है इसलिये कि ख़ुशी और ग़म दोनों अल्लाह तआला की तरफ़ से हैं जब बंदा मान लेता है और तै कर लेता है कि अल्लाह तआला जिस चीज़ से राज़ी, मैं भी उस चीज़ से राज़ी तो बंदा जब कमज़ोर होकर उसकी रज़ा पर राज़ी रहता है तो अल्लाह तआला ऐसे बंदे पर करम की नज़र फ़रमाकर जन्नत का मुज़दाए जांफ़िज़ा सुना देता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सरकारे दो आलम ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको हर हाल में ज़िक्र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ सौ हज का सवाब ★

रिवायत है हज़रत उमर व बिन शोएब رَضِیَ اللهُ عَنْهُ से वह अपने वालिद से, वह अपने दादा से रावी हैं। उन्होंने फ़रमाया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, जो सुबह को सौ बार **سُبْحَانَ اللّٰهِ** पढ़े और शाम को सौ बार तो उसकी तरह होगा जो सौ हज करे। और जो सुबह को सो बार **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** पढ़े और शाम को सो बार तो उस जैसा होगा जो अल्लाह तआला की राह में सौ घोड़े ख़ैरात करे और जो सुबह सौ बार **لا اله الا الله** पढ़े और सो बार शाम को तो उसकी तरह होगा जो औलादे हज़रत इस्माईल عَلَیْهِ السَّلَام से सौ गुलाम आज़ाद करे और जो सौ बार सुबह को **اَللّٰهُ اَكْبَرُ** पढ़े और सौ बार शाम को तो कोई उससे ज़्यादा नेकियां उस दिन न कर सकेगा सिवाए उसके जो इतनी ही बार यह कलिमात कह ले या इससे ज़्यादा। *(मिश्कात शरीफ़, जिल्द–2, सफ़ा–346)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! सौ बार सुबह और सौ बार शाम **سُبْحَانَ اللّٰهِ** पढ़ने पर जो सौ हज का मज़दा जांफ़िज़ा सुनाया गया है इसका मतलब यह है कि जो बंदा मोमिन सुबह **سُبْحَانَ اللّٰهِ** सो बार और शाम में सो बार **سُبْحَانَ اللّٰهِ** पढ़े तो उसे सौ नफ़ली हज का सवाब मिलेगा। ख्याल रहे कि हज का सवाब मिलना और है हज की अदायगी कुछ और है। यहां सवाब का ज़िक्र है न कि अदाए हज का। इसलिये कोई यह न समझे कि सौ बार **سُبْحَانَ اللّٰهِ** सुबह और शाम को पढ़े तो सौ हज हो जायेंगे ! लिहाज़ा हज़ारों रुपये ख़र्च करने और तकलीफ़ उठाकर जाने की ज़रूरत ही क्या है? नहीं ! ऐसा नहीं बल्कि हज तो अदा करने से ही होगा। जिस तरह तबीब कहता है कि एक गर्म किये हुए मुनक़्क़ा में एक रोटी की ताक़त है मगर पेट रोटी ही से भरता है कोई शख़्स दो वक्त में तीन तीन मुनक़्क़े खाकर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता। यक़ीनन ! मज़कूरा तस्बीहात में सवाब बे पनाह है। इस किस्म के सवाब का जिक्र कुरआन मुक़द्दस में भी किया गया है। इरशाद है :– **مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ** यानी जो लोग राहे ख़ुदा में अपने माल ख़र्च करते हैं उनके ख़र्च की मिसाल उस दाना की तरह है जिससे सात बालियां पैदा हों हर बाली से सौ दाने और अल्लाह जिसे चाहे उससे भी ज़्यादा अता फ़रमाये।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला की बारगाह में किस चीज़ की कमी है? वह करीम है, रहीम है, वह जव्वाद है वह ग़फ़्फ़ार है इसलिये उसके करम पर भरोसा करना चाहिये और यक़ीन रखना चाहिये।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! सुबह शाम सौ बार اَلْحَمْدُلِلّٰہِ पढ़ने वाले को अल्लाह ﷻ जिहाद के लिये सौ घोड़े ख़ैरात करने के बराबर सवाब अता फ़रमायेगा। इससे मुराद यह है कि जिहाद वग़ैरह का मक़सद ऐलाए कलिमतुल हक़ और अल्लाह के ज़िक्र की इशाअत है। मोमिन मुल्क गीरी के लिये नहीं लड़ता बल्कि ज़िक्र की रुकावटें दूर करने के लिये लड़ता है और हम्दे इलाही यक़ीनन ! सौ जिहादों से अफ़ज़ल है। और यह फ़रमाया गया कि सुबह व शाम सो बार لاالٰه الا الله पढे तो औलादे हज़रत इस्माईल علیہ السلام से सौ गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब है। औलादे हज़रत इस्माईल علیہ السلام फ़रमाने की वजह यह है कि औलादे हज़रत इस्माईल से मुराद अहले अरब हैं कि वह सब उनकी औलाद हैं, चूं कि अरब हुज़ूर रहमते आलम से कुर्ब रखते हैं इस लिये उन पर एहसान करना अफज़ल है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! थोड़ी सी कुरबानी से अगर इतना अज़ीम अज्र मिलता है तो सुस्ती नहीं करना चाहिये। अल्लाह तआला हम सबको अपने अवक़ात ज़िक्रे इलाही में गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये। आमीन।

★ जुबान का सही इस्तेमाल करो ★

हज़रत उम्मे हबीबा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, इब्ने आदम का हर कलाम उसके लिये वबाल है, उसको इसका कोई नफ़ा नहीं मिलता सिवाए नेकी का हुक्म करने और बुराई से रोकने और ज़िक्रे इलाही के। *(इब्ने माजा)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! जुबान को बंद रखना यह निहायत ही मुश्किल अम्र है लिहाज़ा जुबान से कोई ऐसा जुमला न निकालें जिसका दुनिया में कोई फ़ायदा न हो और हर वह कलाम जिसमें भलाई न हो वह वबाल है और बेहतरीन कलाम जुबां से अदा करने वाले कौन से है ? तो फ़रमाया कि नेकी का हुक्म करना, बुराई से रोकना और अल्लाह तआला का

ज़िक्र करना। तो मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! नेकी का हुक्म देते रहो और बुराईयों से रोकते रहो। साथ ही साथ अल्लाह का ज़िक्र करते रहो। अल्लाह हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये आमीन।

★ महफ़िल में फ़रिश्तों की हाज़री ★

हज़रत अबू हुरैरा व अबू सईद से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, जब कोई जमाअत ज़िक्रे इलाही के लिये बैठती है तो फ़रिश्ते उनको घेर लेते हैं। रहमत उनको ढांप लेती है, सुकून व इत्मिनान की दौलत उनके लिये नाज़िल होती है। अल्लाह उनका तज़किरा उन फ़रिश्तों में फ़रमाता है जो उससे क़रीब होते हैं। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! दुनिया में इंसान दोस्त व अहबाब से मिलकर बैठना और कुछ न कुछ गुफ़्तगू करना पसंद करता है। कोई दुनियावी गुफ़्तगू करता है कोई लहव लइब की बातें करता है, ग़र्ज़ कि हर शख़्स अपने साथियों के ज़ौक़ के मुताबिक़ गुफ़्तगू करता है लेकिन वह ख़ुश नसीब बंदे जो मिलकर सिर्फ़ बैठते हैं कि अल्लाह का ज़िक्र करें, उसके प्यारे हबीब का ज़िक्र करें तो अल्लाह तआला के मासूम फ़रिश्ते जो रहमत के फ़रिश्ते हैं उन्हें घेर लेते हैं, रहमते इलाही उनको ढांप लेती है। सुकून व इत्मिनान की दौलत उनके लिये नाज़िल होती है और अल्लाह उनका तज़किरा फरिश्तों के दर्मियान फ़रमाता है। दुआ करें अल्लाह तआला हम सबको यह शर्फ़ नसीब फ़रमाये।

★ मोतियोंके मिम्बर ★

हज़रत अबू दर्दा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह का इरशाद है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला बाज़ क़ौमों का हश्र इस तरह फ़रमायेगा कि उनके चेहरों पर नूर चमकता होगा। वह मोतियों के मिम्बरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करते होंगे, वह अंबिया, शोहदा न होंगे। किसी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ! उनका हाल बयान फ़रमा दीजिये ता कि हम उनको पहचान लें। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया, यह वह लोग होंगे जो अल्लाह

तआला की मुहब्बत में मुख़्तलिफ़ जगहों से मुख़्तलिफ़ ख़ानदानों से आकर एक जगह जमा हो गये हों और अल्लाह तआला के ज़िक्र में मश्गूल हों। *(तिबरानी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिये सफ़र करना चाहिये और अल्लाह तआला के ज़िक्र की मेहफ़िल में हाज़री देनी चाहिये, यह न देखें कि अपने ज़ात बिरादरी वाले हों, अपने मुहल्ले वग़ैरह के हों तभी जायेंगे नहीं, बल्कि अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो जहां भी उसका और उसके प्यारे हबीब का ज़िक्र हो वहां जायें। हां ! अलबत्ता सुन्नी सहीहुल अक़ीदा की महफ़िल में ही जायें। इंशाअल्लाह इसका अज्र अज़ीम मेरे प्यारे आक़ा के फ़रमान के मुताबिक़ यह मिलेगा कि ऐसे लोगों के चेहरों पर नूर चमकता होगा, वह मोतियों के मिम्बरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करेंगे। अल्लाह अपने हबीब के सदक़ा व तुफ़ैल हमें उन ख़ुश नसीबों में शामिल फ़रमाये।

★ अज़ाब से नजात का ज़रिया ★

हज़रत मआज़ बिन जबल रिवायत करते हैं कि इब्ने आदम का कोई अमल ऐसा नहीं जो उसको अज़ाबे इलाही से नजात दिला दे सिवाए ज़िक्रे इलाही के।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ईमान की पुख़्तगी के साथ हमें अल्लाह तआला का ज़िक्र करना चाहिये। इसलिये कि आमाल की क़बूलियत का दारो मदार ईमान पर है और ईमान के साथ अल्लाह तआला का ज़िक्र नजात का ज़रिया है। मज़कूरा हदीस शरीफ़ में मुतलक़ नजात का ज़रिया अल्लाह तआला का ज़िक्र फ़रमाया गया है यानी दुनिया व आख़ेरत की तकलीफ़ों से अगर नजात चाहिये तो अल्लाह तआला का ज़िक्र करना चाहिये। अल्लाह तआला हम सबको ज़िक्रे इलाही की बदौलत दुनिया व आख़ेरत की तकलीफों से नजात अता फ़रमाये, आमीन।

★ सुबह व शाम ज़िक्र ★

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन सहल बिन हनीफ़ رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن हुज़ूर

रहमते आलम के दौलत कदा में थे कि आयत :–

ना ज़ि ल

हुई। जिसका तर्जुमा यह है :–

अपने आपको उन लोगों के पास बैठने का पाबंद कीजिये जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं। रसूलुल्लाह इस आयत के नाज़िल होने पर उन लोगों की तलाश में निकले। एक जमाअत को देखा कि अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशगूल है। बाज़ लोग उनमें बिखरे बाल वाले और ख़ुश्क खालों वाले और सिर्फ़ एक कपड़े वाले हैं। जब रहमते आलम ने उनको देखा तो उनके पास बैठ गये। और इरशाद फ़रमाया कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फ़रमाये कि ख़ूद मुझे उनके पास बैठने का हुक्म दिया। *(तिबरानी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से यह बात समझ में आयी कि हमें अल्लाह तआला के ज़िक्र में मसरूफ़ रहने वालों के पास बैठना चाहिये, उनकी सोहबत से फ़ायदा हासिल करना चाहिये। और यक़ीनन ! दुनिया व आख़रत का फ़ायदा उन के पास है जो सुबह व शाम अल्लाह का ज़िक्र करते हैं जभी तो अल्लाह तआला ने बैठने का हुक्म फ़रमाया। लेकिन कम नसीबी यह है कि आज का गुनाहगार मुसलमान फ़िल्मी तज़किरे करने वालों की महफ़िल तलाश करता है और यही नहीं बल्कि अल्लाह तआला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहने वालों से मिलने पर उनसे ताल्लुक़ात रखने पर फख़्र करता है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! डरो अपने अल्लाह तआला से। बचो ऐसी महफ़िलों से जहां अल्लाह और उसके प्यारे हबीब का ज़िक्र न होता हो। क्या जवाब दोगे अल्लाह को मैदाने हश्र में? जब वह सवाल करेगा कि तुमने अपनी ज़िन्दगी किन कामों में गुज़ारी? सरकारे दो आलम ज़ाकिरीन (अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों) के पास तशरीफ़ ले जाते हैं तो उन मुक़द्दस बंदों की कैफ़ियत यह थी कि उनके बाल बिखरे हुए, ख़ुश्क खालों वाले और सिर्फ़ एक कपड़े वाले थे। कुरबान जाइये उनकी अज़्मतों पर कि अल्लाह के ज़िक्र में इतने मसरूफ़ होते कि बाल संवारने, नीज़ खाने, पीने, लिबास वग़ैरह में बक़द्र ज़रूरत अवक़ात ख़र्च करते

बक़िया वक़्त वह अपने अल्लाह तआला के ज़िक्र में सर्फ़ करते इसलिये तो ऐसे मुक़द्दस अफ़राद को देखकर अल्लाह के प्यारे हबीब ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा फ़रमाया।

★ ज़बान को ज़िक्रे इलाही से तर रखो ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुसर से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह की बारगाह में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! इस्लाम के मुझ पर बहुत से एहकाम हैं। आप मुझे ऐसी बात बता दें जिस पर मैं तकिया करूं। तब रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, तुम्हारी ज़बान अल्लाह तआला की याद में हमेशा तर है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ नेकियों के मुताल्लिक़ फ़िक्रमंद रहते इसलिये इस्लामी एहकाम की बजा आवरी के साथ वह मज़ीद अवक़ात नेक कामों में गुज़ारने के ख़्वाहिशमंद रहते थे। सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ के सवालात से हम गुनाहगारों का फ़ायदा हो गया कि हमें भी ज़िन्दगी के लम्हात गुज़ार ने का तरीक़ा नसीब हो गया।

मज़कूरा हदीस शरीफ़ में मेरे प्यारे आक़ा ने ज़िक्रे इलाही से ज़बान तर रखने का हमेशा हुक्म फ़रमाया। इससे मुराद यह है कि तुम दिल व ज़बान को कभी ख़ाली मत रखो जब दुनियावी कामों से फ़रागत मिले अपने अल्लाह के कामों में मशगूल हो जाओ कि यह ज़िक्र दोनों जहां में तुम्हारे लिये कामयाबी का सबब बन जायेगा। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ ज़िक्रे इलाही की ताकीद ★

हज़रत इब्ने उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि अपनी गुफ़्तगू ज़िक्रे इलाही से खाली न रखो। क्योंकि तुम्हारी ज़्यादा गुफ़्तगू ज़िक्रे इलाही से ख़ाली होना सक़ावते क़ल्बी की निशानी है और सख़्त दिली अल्लाह से दूरी का सबब होती है। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! इंसान की ज़बान सिर्फ़ रात को

सोते वक़्त ही ख़ामोश रहती है वरना वह मुस्तक़िल चलती रहती है। मुख़्तलिफ़ लोगों से मुलाक़ात के वक़्त इंसान अच्छी बुरी बातें करता ही रहता है। लेकिन मेरे प्यारे आक़ा ने अपनी गुफ़्तगू में ज़िक्रे इलाही की ताकीद फ़रमाकर ज़िक्रे इलाही हासिल करने का तरीक़ा बता दिया है और इंसान को चाहिये कि वह भी फ़ुज़ूल व बे मक़सद बातें न किया करे, इससे दिल सख़्त होता है। और अल्लाह की दूरी नसीब होती है। शैतान यही चाहता है कि सरकारे दो आलम के दीवाने फ़ुजूल बातें करके अल्लाह से दूर हो जायें। अब अगर हम अपनी ज़बान को ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रखेंगे तो शैतान ज़लील होगा और अल्लाह तआला राज़ी हो जायेगा। कोशिश करें कि कोई भी गुफ़्तगू ज़िक्रे इलाही से ख़ाली न हो। चाहे मवाक़े के एतेबार से सिर्फ़ (माशाअल्लाह, सुबहानल्लाह, इंशाअल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह) ही कह लिया जाये तब भी रहमते इलाही से उम्मीद है कि हम सक़ावते क़ल्बी से महफ़ूज़ हो जायेंगे। दौराने गुफ़्तगू अल्लाह और सरकारे दो आलम का ज़िक्र ज़रूर कर लिया करें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ बेहतरीन ख़ज़ाना ★

हज़रत षौबान से रिवायत है कि जब आयते करीमा :— नाज़िल हुई तो हम रसूलल्लाह के साथ सफ़र में थे। इस मौक़े पर बाज़ सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ने अर्ज़ किया, यह आयत तो सोने और चांदी के बारे में नाज़िल हुई है। अगर हमें यह पता चल जाता कि कौन सा माल बेहतर है तो हम इसी को लेते। तो हुजूर ने फ़रमायाः बेहतरीन दौलत यादे इलाही में मशगूल रहने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल है और मुसलमान की वह बीवी जो उसके ईमान पर मदद करने वाली है। *(अहमद ,तिर्मिज़ी शरीफ, इब्ने माजा)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! आज के दौर का इंसान दुनिया की दौलत को सबसे बड़ा ख़ज़ाना समझता है। और उसी को जमा करने की फ़िक्र में लगा रहता है अगर दौलत न मिले तो वह शिकवा और शिकायत

करता हुआ नज़र आता है। इंसान यही सोचता है कि दौलत हो और फ़ैशन परस्त बीवी हो तो गोया सब कुछ मिल गया। लेकिन हमारे प्यारे आक़ा फ़रमाते हैं, बेहतरीन माल व दौलत यह है कि ज़बान ज़िक्रे इलाही में मशगूल हो और हर हाल में बंदा अपने मौला का शुक्र अदा करता हो और ऐसी बीवी नसीब हो जो तक़ाज़ाए ईमान पर मदद करती हो। मार्डन बीवी के बजाए नेक सीरत बीवी को तलाश करना चाहिये और औरतों को भी चाहिये कि गुनाहों की तरफ़ अपने ख़ाविन्द को जाने से रोकें। और उनके अंदर मुहब्बते रसूल पैदा करें और ख़ूद भी नेकियां करें। और अपने शौहर को भी नेकियों की तरफ़ माइल करें। अल्लाह हम सबको सरकारे दो आलम के सदक़ा व तुफ़ैल ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और ईमान के तक़ाज़ों पर मदद करने वाली बीवी नसीब फ़रमाये। आमीन।

★ अल्लाह का साथ ★

हज़रत अबू हुरैरा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, जब बंदा ज़िक्रे इलाही के लिये अपने होंटों को हिलाता है और ज़िक्र करता है तो अल्लाह तआला उसके साथ होता है। *(सहीह बुख़ारी शरीफ़)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला हम गुनाहगारों पर कितना करम फ़रमाता है कि वह अपना साथ अता फ़रमाना चाहता है। हम अगर अपने होटों को और जुबान को ज़िक्रे इलाही के लिये जुंबिश देते हैं तो अल्लाह का करम और उसकी रहमत नसीब हो जाती है। इसलिये बुजुर्गाने दीन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن फ़रमाते हैं कि ज़िक्रे इलाही के बग़ैर जो साअत गुज़रती है उसके लिये कल बरोज़े क़यामत बंदा अफ़सोस करेगा, काश! मैंने यह वक़्त अपने अल्लाह के ज़िक्र में गुज़ारा होता। लिहाज़ा अपने अवक़ात की क़द्र व क़ीमत को समझें और ज़िक्रे इलाही करके अल्लाह तआला का करम और उसकी रहमत हासिल करें। आज मुसलमान जितना वक़्त लिबास, जिस्म वगैरह संवारने में लगाता है उतना वक़्त भी अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिये नहीं देता। ख़ुदारा ख़ुदारा! ऐसी महफ़िलों को तलाश करो जहां अल्लाह का ज़िक्र होता हो। और अंबियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام और बुजुर्गाने दीन का ज़िक्र होता हो, ख़ुदारा! कुछ वक़्त अपने

अल्लाह और सरकारे दो आलम के ज़िक्र के लिये कुरबान करो कि इसका फ़ायदा दुनिया व आख़ेरत दोनों में आप देखेंगे। अल्लाह हम सबको ज़िक्र की महफ़िलोंमें शिरकत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ हुज़ूर की शफ़ाअत ★

कलिमा सरकारे मदीना की शफ़ाअत हासिल करने का ज़रिया है। क़यामत के रोज़ अल्लाह तआला के हुक्म से अंबिया और औलियाए किराम और शोहदाए इज़ाम आम मुसलमानों की शफ़ाअत करेंगे। अल्लाह रब्बुल इज्ज़त उनकी शफ़ाअत से बे शुमार गुनाहगारों को बख़्श देगा। शफ़ाअत का अव्वलीन हक़ मेरे आक़ा शाफ़अे यौमुन् नुशूर को हासिल होगा और जिस शख़्स ने कलिमा पढ़ा होगा सरकार उसकी शफ़ाअत फ़रमायेंगे, उसके मुताल्लिक़ रहमते आलम का फ़रमान आलीशान हस्बे ज़ैल है :–

हज़रत अबू हुरैरा ने एक मर्तबा रसूलुल्लाह से पूछा, या रसूलुल्लाह! क़यामत के दिन आपकी शफ़ाअत का हक़दार कौन होगा? तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरा मुझे अहादीस पर तुम्हारी ख़्वाहिश देखकर यही गुमान हुआ था कि इस बात को तुमसे पहले दूसरा कोई न पूछेगा। फिर रहमते आलम ने फ़रमाया कि क़यामत के रोज़ मेरी शफ़ाअतकी सआदत उसे हासिल होगी जो अपने दिल और नफ़्स के खुलूस के साथ कहेगा। *(बुख़ारी शरीफ़)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! कलिमा तैयबा बंदाए मोमिन को हुजूर की शफ़ाअत का हक़दार बना देता है। मैदाने महशर में जहां कोई किसी के काम न आयेगा वहां पर रहमते आलम कलिमा पढ़ने वालों की शफ़ाअत फ़रमायेंगे। सरकारे दो आलम की शफ़क़त का अंदाज़ा कोई क्या कर सकता है? हज़ारों शफ़क़तें हुजूर की शफ़क़तों के सामने हेच हैं। दुनिया व आख़रत में अल्लाह के बाद सबसे ज़्यादा हमारे हुजूर की करम नवाज़ियां हैं। लिहाज़ा इख़लास से पढ़कर हुजूर की शफ़ाअत के हक़दार बनें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ रफ़ीक़े नसीब फ़रमाये।

★ मौत के वक़्त कलिमा की बरकत ★

मौत के वक़्त आलमे सकरात में कलिमा तैयबा नसीब होना मौत की सख़्तियों को दूर करता है। कलिमा पढ़ने से ख़ात्मा ईमान पर होता है, जान आसानी से निकल जाती है। इस सिलसिले में रसूले अक़्दस इरशाद फ़रमाते हैं : हज़रत यहया बिन तलहा बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि हज़रत तलहा को अफसुर्दा देखकर लोगों ने कहा, क्या बात है ? उन्होंने कहा, बेशक ! मैंने रसूलुल्लाह से सुना है कि मुझे एक कलिमा मालूम है जो शख़्स उसे मौत के वक़्त पढ़े तो उससे मौत की तकलीफ़ दूर हो जाये, चेहरे का रंग चमकने लगे और आसानी देखे। मगर मुझे वह कलिमा पूछने की जुर्अत नहीं हुई। हज़रत उमर ने फ़रमाया, बेशक! मुझे मालूम है। तो उन्होंने पूछा क्या है ? हज़रत उमर ने फ़रमाया कि हमें मालूम है कि कोई कलिमा इससे बड़ा नहीं जो हुजूर ने अपने चचा (अबू तालिब) को पेश किया था। वह है हज़रत तलहा ने कहा, तो क्या यही है ? फ़ारूक़े आज़म ने फ़रमाया, वल्लाह ! यही है। *(बयहकी)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मौत के वक़्त की तकलीफ़ निहायत ही सख़्त तरीन होती है। फ़रमाया गया कि जिस्म पर 360 तलवार की ज़र्बें लगायी जायें तो इतनी तकलीफ़ नहीं होती जितनी जिस्म से रूह निकलते वक़्त होती है। मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! कलिमा तैयबा यानी ( ) मौत के वक़्त आने वाली तकलीफ़ से नजात का ज़रिया है लिहाज़ा कलिमा तैयबा के विर्द की आदत बना लें ता कि मरते वक़्त मौत की तकलीफ़ से नजात मिल जाये। अल्लाह तआला हम सबको मौत की तकलीफ़ से महफ़ूज़ रखे और ईमान पर मदीना में मौत नसीब फ़रमाये। आमीन

★ नूर के सुतून की सिफ़ारिश ★

कलिमा पढ़ने वालों के हक़ में दीगर चीज़ें भी मग़्फ़िरत की सिफ़ारिश करती हैं यह कितना बड़ा अेजाज़ है जो कलिमा पढ़ने वाले को हासिल है। हमारे प्यारे आक़ा रहमते आलम नूरे मुजस्सम इसकी फ़ज़ीलत यूं बयान फ़रमाते हैं कि :–

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूले कायनात ने इरशाद फ़रमाया कि बेशक ! अर्श मौला के सामने एक नूर का सुतून है, जब कोई कहता है तो वह सतून हिलने लगता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है, रुक जा। वह अर्ज़ करता है, कैसे रुक जाऊं? क्यों कि कलिमा पढ़ने वाले की अभी तक मग़्फ़िरत नहीं हुई। फिर हुक्मे इलाही होता है कि अच्छा, मैंने उसकी मग्फ़िरत कर दी। तो वह सुतून रुक जाता है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! इससे बढ़कर सआदत और क्या होगी कि कलिमा पढ़ने वाला जब कलिमा तैयबा पढ़ता है तो अर्शे आज़म के क़रीब नूर का सुतून उस बंदाए मोमिन की बख़्शिश करवाने के लिये हरकत में आ जाता है पता यह चला कि कलिमा तैयबा पढ़ने वाले से हर चीज़ मुहब्बत करती है। मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला की अता करदा ज़बान को ज़िक्रे इलाही के लिये मसरूफ़ रखो ता कि हमारी बख़्शिश के लिये अल्लाह तआला की मख़्लूक़ बे बक़रार हो जाये। अल्लाह तआला हम सबको उसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ अर्श की सिफ़ारिश ★

एक और रिवायत है कि अल्लाह के मुक़द्दस रसूल ताजदारे कायनात मिम्बर पर वअज़ फ़रमा रहे थे कि एक अअराबी हाज़िर हुए (देहात के रहने वाले) और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! मैं गुनाहगार हूं और गुनाह भी बहुत रखता हूं। आपने बैठने के लिये फ़रमाया। जब आप वअज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपने उसे अअराबी को याद फ़रमाया, वह हाज़िर हुआ और अपना हाल अर्ज़ किया। आपने फ़रमाया, क्या तेरे गुनाह सितारों से भी ज़्यादा हैं? उसने कहा, हां ! फिर आपने फमार्या, क्या तेरे गुनाह सहरा की रेत से भी ज़्यादा हैं? तो उसने कहा, हां ! फिर आपने फ़रमाया, तेरे गुनाह बारिश के क़तरों से भी ज़्यादा हैं? तो उसने कहा, हां ! फिर आपने फ़रमाया, क्या तेरे गुनाह दरख़्तों के पत्तों से भी ज़्यादा हैं? तो उसने कहा, हां ! फिर आपने फ़रमाया कि तेरे गुनाह ख़ुदा की रहमत से भी ज़्यादा हैं ? वह शख़्स उसके जवाब में ख़ामोश हो गया और रोने लगा। आपने फ़रमाया, कुछ ग़म न कर।

यह कलिमा पढ़ ख़ुदा तेरे सब गुनाह बख़्श देगा। अगरचे कितने ही क्यों न हों। और फ़रमाया, जो कोई रात दिन में यह कलिमा पढ़ता है और ला की मद को खींचता है तो अल्लाह तआला उसके चार हज़ार गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। और फ़रमाया, जब बंदा यह कलिमा पढ़ता है तो अर्श को जुंबिश होती है, हुक्मे रब्बी होता है, ऐ अर्श ! साकिन हो जा। अर्श अर्ज़ करता है, ऐ अल्लाह! कलिमा पढ़ने वाले को बख़्श दे ता कि मैं सुकून की हालत में रहूं। रब्बे क़दीर इरशाद फ़रमाता है, मैंने बख़्श दिया।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अगर हम अपनी ज़िन्दगी का हिसाब लगायें कि ज़िन्दगी भर में कितने गुनाह किये तो मैं समझता हूं कि ऐसा महसूस होगा कि पूरी ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़री है। लेकिन अल्लाह तआला के प्यारे हबीब अल्लाह तआला की रहमत को गुनाहों से ज़्यादा फ़रमाकर तसल्ली दे रहे हैं ता कि तेरे गुनाहों से अल्लाह तआला की रहमत ज़्यादा है और सच्चे दिल से कलिमा पढ़ ले अल्लाह तआला तेरे जुमला गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा और पूरे कलिमा की बात तो बहुत बुलंद है सिर्फ़ कलिमा **ला** की मद को अगर खींचकर अदा करेगा तो मेरा मौला इसके एवज़ में चार हज़ार गुनाह माफ़ फ़रमा देगा। यहां कलिमा तैयबा पढ़ने से मुराद यह है कि कलिमा तैयबा पढ़ने वाला सच्चे दिल से तौबा करे और आइंदा गुनाह न करने का अहद करे। सुबहानाल्लाह! ख़ुश नसीब हैं वह लोग जो अपने अल्लाह तआला का ज़िक्र और कलिमा तैयबा की कसरत करते हैं। अल्लाह तआला हमें भी कलिमा तैयबा की बरकतों से मालामाल फ़रमाये और अपनी रहमत का हक़दार बनाये।

★ जहन्नम की आग से बचने का ईलाज ★

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह को फ़रमाते सुना कि मैं एक ऐसा हुक्म जानता हूं कि जो कोई उसे दिल से हक़ समझकर पढ़ ले और इसी हालत में मर जाये तो वह आग से बच जायेगा और वह है *(हाकिम)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! इससे मुराद यह है कि जो

कलिमा तैयबा यानी ( ) पढ़ने के साथ अल्लाह तआला ही को अपने माबूद हक़ीक़ी माने, उसी को रज़्ज़ाक़ उसी को ख़ालिक़ माने, ग़र्ज़ कि अल्लाह के मुताल्लिक़ जो अक़ीदा होना चाहिये वह अक़ीदा रखे और उसी के साथ हुजूर रहमते आलम को अल्लाह तआला का आख़री रसूल माने और इसी पर क़ायम रहते हुए इस दुनिया से कूच करे तो इंशाअल्लाह जहन्नम से बच जायेगा। अल्लाह तआला हुज़ूर के सदक़ा व तुफ़ैल हमें इस्तक़ामत फ़ीद्दीन नसीब फ़रमाये।

★ जहन्नम हराम हो जाये ★

हज़रत उतबान बिन मालिक से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर पढ़ता हुआ क़यामत के दिन आयेगा उस पर जहन्नम हराम होगी।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से हमें यह समझ में आया कि कलिमा तैयबा अल्लाह को राज़ी करने के लिये पढ़ना चाहिये बल्कि हर काम अल्लाह की रज़ा ही के लिये करना चाहिये कि रियाकारी अल्लाह तआला को सख़्त नापसंद है बल्कि रियाकार को जन्नत की ख़ुश्बू तक मयस्सर न होगी। जो बंदाए मोमिन दुनिया में सारा काम अल्लाह तआला की रज़ा के लिये करता होगा नीज़ कलिमा तैयबा का विर्द भी करता होगा वह बंदाए मोमिन क़यामत के दिन भी अल्लाह की रज़ा के लिये कलिमा पढ़ता हुआ आयेगा और अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से उस पर जहन्नम हराम फ़रमा देगा। अल्लाह तआला हमें इख़लास के साथ कलिमा तैयबा का विर्द करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये, आमीन।

★ अल्लाह जहन्नम हराम फ़रमा देगा ★

हज़रत अनस बिन मालिक कहते हैं कि हुज़ूर उस हाल में कि हज़रत मआज़ सवारी पर हुज़ूर के पीछे थे आप ने फ़रमाया, ऐ मआज़ बिन जबल ! उन्होंने कहा, लब्बैक या रसूलुल्लाह ! फिर आप ने फ़रमाया, ऐ मआज़ ! उन्होंने अर्ज़ किया, लब्बैक या

रसूलुल्लाह ! तीसरी मर्तबा भी ऐसा ही फ़रमाया, फिर इरशाद फ़रमाया, ऐ मआज़ ! जो कोई अपने दिलसे इस बात की गवाही दे कि सिवाए ख़ुदा के कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह तआला उस पर जहन्नम की आग हराम कर देगा। हज़रत मआज़ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! क्या मैं लोगों को उसकी ख़बर कर दूं ता कि वह ख़ुश हो जायें ! आप ने फ़रमाया, इस वक़्त अगर तुम ख़बर दोगे तो लोग इसी पर भरोसा कर लेंगे और अमल नहीं करेंगे। हज़रत मआज़ ने यह हदीस मुबारक अपने विसाल के वक़्त बख़ौफ़े गुनाह बयान कर दी। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हज़रत मआज़ बिन जबल को तीन मर्तबा पुकारने की वजह यह थी कि जो कुछ बयान किया जा रहा है उसकी अहमियत वाज़ेह हो जाये और अल्लाह तआला की उलूहियत गवाही सिर्फ़ ज़बान से नहीं बल्कि दिल से भी दे और हुजूर को दिल से अल्लाह तआला का महबूब व रसूल माने और उसकी गवाही भी दे तो ऐसे ख़ुश नसीब पर अल्लाह जहन्नम की आग को हराम फ़रमा देगा। उसी वक़्त ख़बर से रोक देने की वजह यह थी कि लोग दीगर इबादतों पर अमल करना छोड़ देंगे। पता यह चला कि हुजूर रहमते आलम यह चाहते थे कि उनकी उम्मत कसरते इबादत से कल बरोज़े क़यामत सुर्ख़रूइ हासिल करे और इसी सबब से हज़रत मआज़ बिन जबल ने आख़री उमर में लोगों तक हदीस शरीफ़ पहुंचा दी। अल्लाह तआला हम सबको कसरत इबादत की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ जन्नत की कुंजी ★

कलिमा तैयबा जन्नत की कुंजी है जिसके पास यह कुंजी होगी वह जन्नत में दाख़िल हो जायेगा। उसके मुताल्लिक़ हदीस शरीफ़ में है। हज़रत मआज़ बिन जबल से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि का इक़रार जन्नत की कुंजी है।

ज़िक्रे इलाही की बरकतें

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि बे ईमान को जन्नत नसीब नहीं होगी। जन्नत तो कलिमा तैयबा पढ़ने वाले मोमिनों के लिये है, जो बंदाए मोमिन सिद्क़ दिल से कलिमा तैयबा पढ़े और उस पर क़ायम रहे और उसी आलम में अगर दुनिया से कूच कर जाये तो वह जन्नत का हक़दार हो जाता है। कलिमा तैयबा को जन्नत की कुंजी इस लिये फ़रमाया गया ता कि कलिमा तैयबा पढ़ने वाले को यह बात मालूम हो जाये कि कलिमा तैयबा पर क़ायम रहने से अल्लाह तआला उस नेअमत का हक़दार कर देगा जिसको न कभी देखा है और न नेमतें दुनिया में मैयस्सर हो सकती हैं। लिहाज़ा अपनी ज़बान से कलिमा तैयबा के विर्द के साथ अल्लाह तआला की नेअमतों का यक़ीन भी रखें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ पत्थरों की गवाही ★

एक दफ़ा का ज़िक्र है हज़रत इब्राहीम वासती मैदाने अरफ़ात में थे। उन्होंने हाथ में सात पत्थर ले कर कहा, ऐ पत्थर ! गवाह हो जा कि मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। उस रात जब इब्राहीम वासती जब सो गये तो उन्होंने देखा कि क़यामत क़ायम हो चुकी है। हिसाब व किताब किया जा रहा है, कुछ लोगों के बाद उनकी बारी आयी उनका हिसाब लिया गया, नाकाम हो जाने की वजह से वह नारे जहन्नम के मुस्तहिक़ हुए। फ़रिश्ते उनको गिरफ़्तार करके जहन्नम की तरफ़ रवाना हो गये और जहन्नम के एक दरवाज़े पर आ गये तो उन सात पत्थरों में से एक पत्थर दरवाज़े पर गिर पड़ता है और रास्ता मसदूद हो जाता है। अज़ाब के फ़रिश्ते उस पत्थर को हटाने की कोशिश करते हैं मगर वह ज़रा भी नहीं हटता। दूसरे और तीसरे हत्ता के सातों दरवाज़ों पर यह वाक़िया पेश आता है। आख़िरकार फ़रिश्ते उनको अर्शे मौला के पास ले जाते हैं तो अल्लाह रब्बुल इज्ज़त इरशाद फ़रमाता है, तूने इन पत्थरों को गवाह बनाया था। पत्थरों ने तेरा हक़ ज़ाया नहीं किया। ऐ मेरे बंदे मैं ख़ूद तेरे इक़रार तोहीद व रिसालत की गवाही देता

हूं और सिला में तुझे जन्नत का हक़दार बनाता हूं। जब मैं जन्नत के दरवाज़े पर पहुंचा तो जन्नत के दरवाज़े बंद थे इतने में की मुबारक सदा आयी और जन्नत के दरवाज़े खुल गये और मैं जन्नत में दाख़िल हो गया।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला का ज़िक्र बुलंद आवाज़ से करते रहो ता कि जहां तक ज़िक्रे इलाही की आवाज़ पहुंचे वह दरो दीवार कल बरोज़ क़यामत हमारे हक़ में गवाही दें। इसलिये ज़िक्रे इलाही में सुस्ती न करना चाहिये। नीज़ गुनाहों से बचना चाहिये वरना याद रखो जहां जहां गुनाह करोगे वह जगह हमारे ख़िलाफ़ अल्लाह तआला की बारगाह में गवाही देंगी। लिहाज़ा ज़िक्रे इलाही की कसरत करके ज़मीन के चप्पों को और ज़र्रों को गवाह बना लो। और गुनाहों से बचो। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ आसमानों की कुंजी ★

कलिमा तैयबा का एक अेजाज़ यह भी है कि इसके पढ़ने वाले की इज्ज़त और तकरीम के लिये आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं। इसके मुताल्लिक़ हदीस में है :–

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि कोई बंदा ऐसा नहीं कि वह कलिमा तैयबा पढ़े तो उसके लिये आसमान के दरवाज़े न खुल जायें। हत्ता कि यह कलिमा सीधा अर्श तक पहुंचता है। बशर्ते कि वह कबीरा गुनाहों से बचा हो। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! गोया कलिमा तैयबा आसमान के दरवाज़ों की कुंजी है। कलिमा तैयबा सीधा अर्श तक पहुंचता है। अगर कोई बंदा गुनाहे कबीरा से बचे और कलिमा तैयबा पढ़े तो उसके लिये आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं। लिहाज़ा कलिमा तैयबा की कसरत करो। इंशाअल्लाह इसका फ़ायदा दोनों जहां में मैयस्सर होगा। और यह कलिमा अर्श तक पहुंचकर हमारी बख़्शिश की सिफ़ारिश करेगा। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ ईमान ताज़ा रखता है ★

ईमान की तरो ताज़गी से मुराद अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करना है यानी ईमान का तक़ाज़ा है कि दिल में हुब्बे इलाही और ख़ौफ़े इलाही हो कि इंसान अल्लाह को छोड़कर किसी और तरफ़ मुतवज्जेह न हो और यह बात उस वक़्त पैदा होगी जब इंसान बार बार कलिमा पढ़ेगा। इस लिये फ़रमाया गया कि कलिमा की कसरत किया करो कि इससे ईमान में तरो ताज़गी पैदा होती है।

चुनांचे हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि अपना ईमान तरो ताज़ा करते रहो। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! हम अपने ईमान को किस तरह तरो ताज़ा करें। इरशाद फ़रमाया कि कसरत से पढ़ा करो।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! इंसान की ज़बान से ग़लती से पता नहीं कैसे कैसे जुमला निकल जायें। बसा औक़ात ग़लती से इंसान की ज़बान से कुफ़्र तक निकल जाता है और उसे होश तक नहीं रहता और उसे मालूम भी नहीं होता कि दौलते ईमान ख़त्म हो चुकी है और अब ख़ुदा नख़ास्ता इसी हालत में वह दुनिया से कूच कर गया तो उसकी मौत कुफ़्र पर होगी। लिहाज़ा रहमते आलम के फ़रमान पर अमल करते हुए कलिमा तैयबा की कसरत किया करो ता कि ईमान तरो ताज़ा होता रहे। इस लिये कम से कम रात को सोते वक़्त और सुबह उठने के बाद भी कलिमा तैयबा पढ़ने की आदत बनायें। इंशाअल्लाह ! इसका फ़ायदा भी आप को दोनों जहां में नज़र आयेगा कि हम सोयें तो आख़री कलिमा हमारी ज़बान पर कलिमा तैयबा हो और उठें तो पहला कलिमा ज़बान पर कलिमा तैयबा हो, इससे हमारा मौला ज़रूर राज़ी होगा। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ सबसे बेहतर शाख़ ★

रहमते आलम ने इरशाद फ़रमाया, ईमान की सतर से ज़्यादा शाख़ें हैं इनमें सबसे बेहतर कलिमा है और सबसे छोटी शाख तकलीफ़देह चीज़ों को लोगों के रास्ते से दूर कर देना और शर्म व हया ईमान

की शाख़ में से एक शाख है। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हर नेक अमल का दारो मदार ईमान पर है। ईमान दर हक़ीक़त असल है और नेक आमाल उसकी शाख रहमते आलम ने फ़रमाया कि ईमान की सतर शाखें हैं। इनमें सबसे बेहतर कलिमा है यानी सवाब में बेहद ज़्यादा है इसलिये कि इसमें बंदा अल्लाह तआला का रसूल मानता है और ईमान की सबसे छोटी शाख रास्ते से तकलीफ़देह दूर करना है और ईमान की शाखों से शर्म व हया भी ईमान की शाख ही है लिहाज़ा कलिमा तैयबा का विर्द करें और रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ों को भी हटायें और शर्म व हया को भी अपनायें। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ ईमान ताज़ा करो ★

हदीस शरीफ़ में है हज़रत अनस रिवायत करते है कि एक रोज़ ताजदारे कायनात अरफ़ात के पहाड़ पर तशरीफ़ फ़रमाये हुए मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर था। आपने दोगाना नमाज़ पढ़ी और क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके पढ़ना शुरू किया, आप कलिमा पढ़ते जा रहे थे और चश्मे मुबारक से आंसू बहते थे। यहां तक कि आप की दाढ़ी मुबारक और सीनाए अनवर से बहते हुए ज़मीन पर टपकते थे। आपके रोने से मैं भी रोता था। थोड़ी देर बाद आप खामोश हुए और मेरी तरफ देखकर फमार्या, अनस ! मैं तुम्हारी आंखे आंखें तर देखती हूं ! मैंने अर्ज़ किया, सरकार ! आपको रोता हुआ देखकर मैं भी रोने लगा। फमार्या, ख़ुशख़बरी है उस शख़्स के लिये जिसकी ज़बान अल्लाह के कलिमा के ज़िक्र में तर रहे और उसकी आंखों से आंसू जारी रहे। (क्योंकि इससे दिलों में ईमान ताज़ा रहता है।)

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! कलिमा तैयबा हो या अल्लाह तआला का और कोई भी ज़िक्र हो बंदाए मोमिन को चाहिये कि निहायत ही खुशूअ व खुजूअ के साथ ख़ौफ़े ख़ुदा को पेशे नज़र रखे और कोशिश करे के कि ज़िक्रे इलाही करते वक़्त आखें अश्कबार हो जायें कि यह भी मेरे आक़ा की सुन्नते मुबारका है और मेरे प्यारे आक़ा रहमते आलम की हर

अदा इबादत है। हज़रत अनस हुज़ूर को गिरयावज़ारी करते देखकर रोने लगे तो मेरे प्यारे आक़ा ने उनको ख़ुशख़बरी अता फ़रमा दी कि ज़िक्रे इलाही के वक़्त आंखों का अश्कबार होना अल्लाह और सरकारे दो आलम को पसंद है। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़े रफ़ीक़ फ़रमाये।

★ शैतान के फ़रेब से बचने का तरीक़ा ★

शैतान ने इंसान को गुनाहों में मुब्तला करने के लिये उसके चारों तरफ़ फ़रेबों के जाल बिछा रखे हैं, उसके मकर व फ़रेब से बचने के लिये कलिमा तैयबा बहुत अकसीर है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ सरकारे दो आलम से नक़ल फ़रमाते हैं कि और इस्तिग़फ़ार को बहुत कसरत से पढ़ा करो। शैतान कहता है मैंने लोगों को गुनाहों से हलाक किया और उन्होंने मुझे और इस्तिगफ़ार से हलाक कर दिया जब मैंने यह देखा तो मैंने उनको हवाए नफ़्स से हलाक किया और वह अपने को हिदायत पर समझते रहे। *(जामिउस्सग़ीर)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! शैतान जो हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है वह एक लम्हे के लिये हम से ग़ाफ़िल नहीं लेकिन ताज्जुब है कि हम उससे बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं। उसने चारों तरफ़ मकर व फ़रेब के जाल फैला रखे हैं कि हम किसी तरह उसके दामे फ़रेब में आ जायें, लेकिन हमारे आक़ा की रहमतों पर कुरबान कि रहमते आलम ने उसके फ़रेब से बचने का सामान भी अता फ़रमा दिया कि कलिमा तैयबा और इस्तिगफ़ार की कसरत शैतान को हलाक करने का बेहतरीन हथियार है।

लिहाज़ा कलिमा तैयबा और इस्तिग़फ़ार की कसरत करके शैतान को हलाक करो। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ रफ़ीक़े अता फ़रमाये।

★ कलिमए नजात ★

हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

के विसाल के वक़्त सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को इस क़दर सख़्त सदमा पहुंचा था कि बाज़ सहाबाए किराम के दिल में मुख़्तलिफ़ ख़्यालात पैदा हुए। हज़रत उसमान ग़नी फ़रमाते हैं, मैं भी उन ही लोगों में था। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म मेरे पास तशरीफ़ लाये और मुझे सलाम किया मगर मुझे मुतलक़ पता न चला। उन्होंने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इसकी शिकायत की। उसके बाद दोनों हज़रात एक साथ तशरीफ़ लाये और सलाम किया। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुमने अपने भाई उमर के सलाम का भी जवाब न दिया क्या बात है? मैंने अर्ज़ किया कि मैने तो ऐसा नहीं किया। हज़रत उमर ने फ़रमाया, ऐसा ही हुआ है। मैने अर्ज़ किया कि मुझे तो आपके आने की ख़बर भी नहीं हुई कि आप कब आये और न ही सलाम का पता चला। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया, सच है ऐसा ही हुआ होगा। ग़ालिबन तुम किसी सोच में बैठे होगे। मैंने अर्ज़ किया, वाक़ई मैं गहरी सोच में था। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने दर्याफ़्त किया क्या था? मैंने अर्ज़ किया कि सरकार का विसाल हो गया और हम ने यह भी न पूछा कि इस काम की नजात किस चीज़ में है। हज़रत अबू बक्र ने जवाब दिया, मैं पूछ चुका हूं। मैं उठा और मैंने कहा, तुम पर मेरे मां बाप कुरबान! वाक़ई तुम ही यह दर्याफ़्त करने के ज़्यादा मुस्तहिक़ थे। हज़रत अबू बक्र ने फ़रमाया, मैं ने हुज़ूर से दर्याफ़्त किया था कि इस काम की नजात क्या है तो आप ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स इस कलिमा को क़बूल कर ले जिसको मैंने अपने चचा (अबू तालिब) को पेश किया था और उन्होंने रद कर दिया था वही कलिमा नजात है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! कुरबान सहाबा किराम की अज़मतों पर! हम गुनाहगारों पर उनके किस क़दर एहसानात हैं कि उनके दिल में हमेशा नजात की फ़िक्र रहती थी और उनके सवालात से हमें सामाने नजात मिला। अगर वह सवाल न फ़रमाते तो हमें उन आमाल की ख़बर कैसे होती। सैयदना अबू बक्र के सवाल पर कि इस काम की नजात क्या है? तो हुज़ूर ने कलिमे को क़बूल करने को फ़रमाया। मुराद इससे यह है कि अल्लाह ही को वहदहु लाशरीक इबादत के लायक़ माने और हुज़ूर

को अल्लाह का रसूल माने। लिहाज़ा इस्तेक़ामत के साथ अपने दीन पर क़ायम रहें और कलिमा तैयबा को विर्दे ज़बान रखें। अल्लाह हम सबका ख़ात्मा ईमान के साथ फ़रमाये।

★ हिकायात ★

हज़रत जुनेद बग़दादी का कहना है कि एक मर्तबा मैं फ़रीज़ाए हज अदा करने के लिये घर से निकल खड़ा हुआ। और अपनी सवारी को रुख़े क़िब्ला दौड़ाना शुरू किया। मगर मेरी सवारी विलायते रोम के एक शहर कुसतुनतुनिया की जानिब चल पड़ी। मैंने उसे काबा मोअज़्ज़मा की जानिब ले जाने की बहुत कोशिश की मगर वह कुसतुनतुनिया ही की जानिब बढ़ती रही। यहां तक कि मैं कुसतुनतुनिया पहुंच गया। वहां लोगों के एक जम्मे गफ़ीर पर नज़र पड़ी जो एक दूसरे से बातें कर रहे थे। मैंने बाज़ लोगों से सूरते हाल मालूम की। तो उन्होंने जवाब दिया, हमारे बादशाह की बेटी पर दीवानगी का दौरा पड़ा है और किसी तबीब की तलाश की जा रही है। मैंने कहा, मैं उस लड़की का इलाज करूंगा। वह लोग मुझे शाही महल में ले गये। जब मैं दरवाज़े के क़रीब पहुंचा तो अंदर से आवाज़ आयी। ऐ जुनेद! तू अपनी सवारी को कब तक हमारी तरफ आने से रोकता रहेगा? जब कि वह तुम्हें हमारी तरफ़ ला रही है?! जब मैंने अंदर क़दम रखा तो एक हसीन व जमील औरत के सरापा पर नज़र पड़ी जो कि पा बा जंज़ीर थी। उस औरत ने मुझसे कहा, हज़रत! मेरे वास्ते दवा तजवीज़ फ़रमायें जिससे मैं सेहत याब हो जाऊं और मेरी दीवानगी जाती रहे। मैंने उससे पढ़ने को कहा, उसने बा आवाज़ बुलंद कलिमा शरीफ़ पढ़ा। पढ़ते ही जंज़ीर टूट कर गिर पड़ी। बादशाह बड़ा हैरान हुआ। और कहने लगा, वल्लाह! कितना प्यारा और कामयाब हकीम है कि एक पल में मेरी बेटी की बीमारी दूर करके उसे अच्छा कर दिया! मैं ने बादशाह से कहा, तुम भी कलिमा शरीफ़ पढ़ो (तुम्हारे दिल से कुफ़्र की बीमारी ख़त्म हो जायेगी) उसने कलिमा शरीफ़ पढ़ा और मुसलमान हो गया। कलिमा शरीफ़ का यह कमाल देखकर बेशुमार लोग उसी वक़्त हलक़ा बगोशे इस्लाम हो गये। *(नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! जब एक काफ़िर कलिमा तैयबा पढ़े तो उसको ईमान की दौलत मिल जाये तो अगर एक मोमिन कलिमा तैयबा पढ़े तो क्या उसे जहन्नम से नजात नहीं मिल सकती ?! और क्या वह अल्लाह की रहमतों से मालामाल नहीं हो सकता? यक़ीनन ! हो सकता है।

लिहाज़ा कलिमा तैयबा की कसरत करें और उसके फ़ायदे से मालामाल हों। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ सबसे भारी कलिमा ★

अल्लाह तआला चूं कि हर चीज़ पर ग़ालिब है इस लिये उसका नाम ज़मीन व आसमान की हर चीज़ पर ग़ल्बा रखता है। उसके नाम के बराबर कोई चीज़ नहीं। लिहाज़ा जो इस कलिमा का ज़िक्र करे वह ज़मीन व आसमान की हर चीज़ पर ग़ालिब हो सकता है।

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम ! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर ज़मीन व आसमान और जो कुछ उनके अंदर है और जो उनके दर्मियान है और जो कुछ उनके नीचे है अगर वह तमाम तराजू के एक पलड़े में रख दिया जाये और कलिमा दूसरे पलड़े में तो फिर भी वह वज़न में बढ़ जायेगा। *(तिब्रानी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला के नाम से बढ़कर किस का नाम हो सकता है ? यक़ीनन ! जिस पलड़े में मेरे मौला का ज़िक्र और उसके प्यारे हबीब का ज़िक्र हो वह भारी न होगा तो कौन सा पलड़ा भारी होगा? लिहाज़ा कलिमा तैयबा का ज़िक्र कसरत से किया करो ता कि कल बरोज़े क़यामत नेकियों का पलड़ा भारी हो जाये। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ अल्लाह बेहतर मजमा में याद फ़रमाता है ★

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रहमते आलम ने इरशाद

फ़रमाया, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि मैं अपने बंदे के गुमान के नज़दीक होता हूं जो मुझसे रखे। जब बंदा मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूं अगर बंदा मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसको अकेले ही याद करता हूं और अगर मुझे मजमामें याद करता है तो मैं उसे बेहतर मजमा में याद करता हूं। *(मुस्लिम व बुखारी)*

यानी बंदाए मोमिन अल्लाह से जैसी उम्मीद रखेगा अल्लाह तआला उससे वही मामला फ़रमायेगा। मतलब यह है कि बंदा ज़िक्रे इलाही व दुआ वग़ैरह की क़बूलियत की उम्मीद करेगा तो अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से उसकी दुआ क़बूल फ़रमायेगा।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! आमाले ख़यर भी करो और अल्लाह से क़बूलियत की उम्मीद भी रखो। बंदाए मोमिन ज़िक्रे इलाही करते वक़्त अल्लाह से बहुत क़रीब होता है। जो हर वक़्त ज़िक्रे इलाही करता है वह गोया अल्लाह। से हर वक़्त क़रीब रहता है। और दिल में अल्लाह का ज़िक्र करने से मुराद यह है कि बंदाए मोमिन आहिस्ता यानी ज़िक्रे ख़फ़ी करे तो अल्लाह के वहां भी ज़िक्रे ख़फ़ी होता है और बंदा मोमिन अगर चंद मोमिनीन के साथ मिलकर बुलंद आवाज़ से अल्लाह का ज़िक्र करे तो अल्लाह के वहां ऐलानिया ज़िक्र होता है जिसे फ़रिश्ते, अंबिया, औलिया व सुनते हैं।

हम मुसलमानों को चाहिये कि अपने अल्लाह का ज़िक्र बुलंद आवाज़ से सरकारे दो आलम के दीवानों के साथ मिलकर करें ता कि हमारा ज़िक्र मजमाए अंबिया علیہم السلام और औलिया किराम में हो। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

इस फ़ज़ीलत को हासिल करने के लिये हर हफ़्ता सुन्नी दावते इस्लामी के हफ़्तावारी इज्तेमा में बुलंद आवाज़ से सरकार के गुलाम अपने अल्लाह का ज़िक्र करते हैं आप भी ज़िक्रे इलाही की महफ़िल में ज़रूर शिरकत फ़रमाकर मज़कूरा फ़ज़ीलत से मालामाल हों।

★ नजात का बेहतरीन अमल ★

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है। फ़रमाते हैं, ताजदारे कायनात ने इरशाद फ़रमाया, जो दिन में 100 बार पढ़े तो उसकी तमाम ख़ताएं बख़्श दी जाती हैं अगरचे समन्द्रर के झाग के बराबर हों। *(बुखारी ,मुस्लिम, मिर्अत)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! 100 मर्तबा आप एक ही साथ पढ़ें या थोड़ा सुबह या थोड़ा शाम पढ़ें। बहर हाल बेहतर यह है कि सुबह व शाम पढ़ें जिस तरह पढ़ेंगे मगर ज़रूर पढ़ें और गुनाह से माफ़ी का परवाना हासिल करें। गुनाहों की माफ़ी से मुराद गुनाहे सग़ीरा हैं जो अल्लाह के हुकूक़ से मुताल्लिक़ हों। हुकूक़े शरइय्या और हुकूक़े अेबाद इससे अलाहेदा हैं। लिहाज़ा फ़ौत शुदा नमाज़, रोज़े बंदों के क़र्ज़ वग़ैरह मज़कूरा वज़ीफ़े से माफ़ न हो जायेंगे, वह तो अदा ही करने होंगे। अल्लाह हम सबको ज़िक्रे इलाही के साथ नमाज़, रोज़ा वग़ैरह की पाबंदी के साथ हुकूक़ुल अेबाद अदा करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ नुज़ूले सकीना ★

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! इंसानों की ज़िन्दगी का मक़सद यादे इलाही है। सारी मख़लूक़ अल्लाह की याद में है। इंसान अशरफ़ुल मख़लूक़ात होकर उसकी याद से ग़ाफ़िल रहे ताज्जुब की बात है।

अल्लाह ने कुरआन मुक़द्दस में इरशाद फ़रमाया :–

अल्लाह को बहुत बहुत याद करो।

ज़िक्र की फ़ज़ीलत में मेरे प्यारे आक़ा की हदीसे पाक समाअत फ़रमायें :–

हज़रत अबू हुरैरा और हज़रत सईद رضی اللہ عنہما इरशाद फ़रमाते हैं कि ताजदारे कायनात ने फ़रमाया :–

ऐसी कोई जमाअत नहीं जो ज़िक्रे इलाही के लिये बैठे मगर उन्हें फ़रिश्ते घेर लेते हैं, रहमत ढांप लेती है उन पर सकीना उतरता है और अपने पास

वाले फ़रिश्तों में अल्लाह उनका ज़िक्र फ़रमाता है। *(मिर्अत, जिल्द–2, सफ़ा–304)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! ज़िक्र के चंद मायने हैं :–

1. याद करना। **2.** याद रखना। **3.** चर्चा वगैरह करना।

अल्लाह तआला को हर जाइज़ काम की इब्तेदा में याद करना चाहिये और हम कुछ भी करें वह देख रहा है इस तसव्वुर से उसे याद रखना चाहिये। और उसकी तसबीह व तमहीद वग़ैरह करके उसका चर्चा करना चाहिये। रहमते आलम के इस इरशाद पर ग़ौर फ़रमाइये और नाज़ कीजिये इस अेजाज़ पर जिससे अल्लाह करीम ने हमें नवाज़ा। बशर्ते कि हम उसे हर हाल में याद रखते हों, ज़बान से, दिल से और अपने आमाल से, ज़ाकिरीन को यह शर्फ़ हासिल होता है कि फ़रिश्ते उनको घेरे में ले लेते हैं ता कि जिन्न व इन्स के हर ख़तरे से वह महफ़ूज़ रहें। रहमते इलाही उन पर साया फगन रहती है जिससे वह दुनिया व माफ़ीहा की सारी उलझनों से आज़ाद हो जाते हैं। उन पर सकीना का नुज़ूल होता है जिनसे उनके दिलों को चैन नसीब हो जाता है। अल्लाह सरकारे दो आलम के सदक़ा व तुफ़ैल हम सब को ज़िक्रे इलाही की तौफ़ीक़ नसीब हो।

★ रोज़ाना हज़ार नेकियां कमाओ ★

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत है : फ़रमाते हैं, हम रहमते आलम के पास थे तो ताजदारे कायनात ने इरशाद फ़रमाया, क्या तुममें से कोई इससे आजिज़ है कि रोज़ाना एक हज़ार नेकियां कर लिया करे। हम नशीनों में से किसी ने पूछा कोई रोज़ाना हज़ार नेकियां कैसे कर सकता है ? रहमते आलम ने फ़रमाया 100 मर्तबा पढ़ लिया करे। उसके लिये हज़ार नेकियां लिखी जायेंगी और उसकी हज़ार ख़तायें माफ़ की जायेंगी। *(मुस्लिम शरीफ, मिर्अत)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! रोज़ाना हज़ार नेकियां कमाना यह बहुत दुश्वार है ताक़त से बाहर है। यह आम इंसान का हाल है अलबत्ता अल्लाह के बुरगुज़ीदा बंदे तो हर सांस में नेकी करते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा का कितना करम है कि हम जैसे नातवां को कम ज़िक्र करने पर भी बे शुमार नेकियां अता फ़रमाने का मुज़दाए जांफ़िज़ा सुना दिया और यही नहीं बल्कि हज़ार गुनाहों की माफ़ी का परवाना भी अता फ़रमा दिया। अगर इसके बावजूद हम ज़िक्रे इलाही न करें तो कितने कम नसीब होंगे? लिहाज़ा रोज़ाना कम से कम 100 मर्तबा पढ़कर अल्लाह का ज़िक्र कर लिया करो अल्लाह हम सबको अपने ज़िक्र की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ मौला का बे हिसाब करम ★

हज़रत अबू ज़र से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि ताजदारे कायनात ने इरशाद फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रमाता है, जो एक नेकी करे उसे दस गुना सवाब है और ज़्यादा भी दोगुना और जो एक बुराई करे तो एक बुराई का बदला उसी के बराबर है या उसे बख़्श दूं। और जो मुझ से एक बालिश्त क़रीब होता है मैं उससे एक गज़ क़रीब हो जाता हूं। और जो मुझसे एक गज़ क़रीब होता है मैं उससे एक लिश्त क़रीब हो जाता हूं। जो मेरे पास चलता हुआ आता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़ता हूं। और जो किसी को मेरा शरीक न ठहराये फिर ज़मीन भर गुनाह ले कर मुझसे मिले तो मैं उतनी ही बख़्शिश के साथ उसे मिलूंगा।

यानी मेरा मौला नेकी करने वाले मुसलमान को एक का दस गुना देगा बल्कि बाज़ सूरतों में अपने फ़ज़ल व करम से बे हिसाब अता फ़रमायेगा। जो हमारे वहम व गुमान से मावरा है। ख़्याल रहे कि एक का दस गुना आम हालात में हैं जैसा कि अल्लाह तआल का फ़रमान है :– यानी जो एक नेकी लाये तो उसके लिये उस जैसी दस हैं और कभी ज़माना या जगह की ख़ुसूसियत से एक नेकी का बदला 700 या 50000 बल्कि 100000 या इससे भी ज़्यादा है। जैसा कि मदीना मुनव्वरा की एक नेकी 50000 के बराबर और मक्का मुकर्रमा की एक नेकी 100000 के बराबर और गुनाह का मामला यह है कि आम हालात में मोमिन का एक गुनाह का बदला एक ही है या वह भी अताए इलाही से बख़्श

दिया जाये करीम का करम बे हिसाब! क्या कहना? (लेकिन मक्का मुकर्रमा का एक गुनाह भी एक लाख गुनाह है। *–प्रकाशक*)

जब इंसान दोनों हाथ सीधा करके फैला दे तो दाहिने हाथ की उंगली से बायें हाथ की उंगली तक बाअ कहते हैं।

मज़कूरा हदीस में मिसाल के लिये फ़रमाया गया है कि मतलब यह है कि अगर तुम इख़लास के साथ थोड़े अमल के ज़रिये कुर्बे इलाही हासिल करो तो अल्लाह अपनी रहमत से बहुत ज़्यादा करम के साथ बख़्शेगा। लिहाज़ा नेक आमाल किये जाओ थोड़ा या ज़्यादा न देखो। हमारे आमाल अगर चे ऐसे न हों कि इनसे जल्द कुर्बे इलाही हासिल हो सके फिर भी रब तआला अपने फ़ज़ल व करम से जिसे चाहता है उसे जल्द ही बारगाह का तक़र्रुब अता फ़रमाता है। यह महज़ रब्बे क़दीर की रहमते कामिला की वजह से है, वरना हमारे आमाल ऐसे कहां? और अगर कोई मोमिन अल्लाह का शरीक किसी को न ठहराये यानी कुफ़्र व शिर्क से बचता रहे तो कितना ही गुनाहगार क्यों न हो मेरा परवर्दिगार उसको बख़्श देगा। मक़सद यह है कि कोई बड़े से बड़ा गुनाहगार भी रहमते इलाही से नाउम्मीद न हो। बल्कि अल्लाह की रहमत पर उम्मीद रखकर तौबा कर ले अल्लाह रहीम है, अपने फ़ज़ल व करम से अपने प्यारे हबीब के सदक़े में बख़्श देगा।

★ सोना चांदी ख़ैरात करने से बेहतर अमल ★

हज़रत अबू दर्दा से रिवायत है कि ताजदारे कायनात ने इरशाद फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसे बेहतरीन आमाल न बता दूं? जो अल्लाह के नज़दीक बहुत सुथरे और तुम्हारे दरजे बहुत बुलंद करने वाले और तुम्हारे लिये सोना चांदी ख़ैरात करने से भी बेहतर हों और तुम्हारे लिये इससे भी बेहतर हो कि तुम दुश्मन से जिहाद करो कि तुम उनकी गर्दनें मारो और वह तुम्हें शहीद करें। सहाबाए किराम ने अर्ज़ किया, हां! रहमते आलम ने इरशाद फ़रमाया, वह अमल अल्लाह तआला का ज़िक्र है। *(तिर्मिज़ी, मालिक, अहमद, मिर्अत,जि–3, 311)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मेरे प्यारे आक़ा ने मज़कूरा हदीस शरीफ़ से गुरबा की हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई और उन्हें तसल्ली भी दी

कि उमरा सोना चांदी ख़ैरात करते हैं यक़ीनन नियत की दुरुस्तगी के साथ उनको उसका अज्र तो मिलेगा लेकिन अगर ग़रीब सवाब हासिल करना चाहे तो मायूस न हो। और उसी के साथ वाज़ेह फ़रमा दिया कि दौलतमंद सोना चांदी तो ख़र्च करे लेकिन यह तसव्वुर न करे कि बस इससे बेहतर और क्या हो सकता है और अब मैं जो चाहूं सो करूं। लिहाज़ा फ़रमाया गया, इससे अफ़ज़ल भी एक चीज़ है और वह है अल्लाह का जिक्र। ऐ ग़रीबो ! तुम यह न सोचना कि मालदार ख़ैरात करके सवाब में आगे निकल जायेगा, नहीं ! तुम अल्लाह का ज़िक्र करो यह इससे भी अफ़ज़ल है। और जिहाद के बारे में जो फ़रमाया उससे वह जिहाद मुराद है जो अल्लाह तआला के ज़िक्र के बग़ैर हो वरना वह जिहाद जिसमें हाथों में तलवार भी हो और ज़िक्रे इलाही ज़बान पर हो उस जिहाद की फ़ज़ीलत का क्या कहना ? अल्लाह हमें ज़िक्रे इलाही की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ कौन सा अमल अफ़ज़ल है ? ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुसर फ़रमाते हैं कि एक बदवी ताजदारे कायनात की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, अर्ज़ किया, कौन शख़्स अच्छा है ? रहमते आलम ने फ़रमाया, मुज़दा हो उसे जिसकी उमर लंबी हो और आमाल अच्छे हों। अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! कौन सा अमल अफज़ल है ? रहमते आलम ने फ़रमाया कि दुनिया को इस हाल में छोड़ो कि तुम्हारी ज़बान ज़िक्रे इलाही से तर हो। *(अहमद, तिर्मिज़ी, मिर्अत)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह हम सबको नेकियों वाली लंबी उम्र नसीब फ़रमाये ता कि अच्छे लोगों में हमारा शुमार हो और वक़्ते रुख़सत ज़बान ज़िक्रे इलाही से तर हो।

तर होने का मतलब यह है कि मौत के वक़्त अल्लाह का नाम ब आसानी उसकी ज़बान पर जारी हो। जैसे तर लकड़ी को आग नहीं जला सकती उसी तरह ज़िक्रे इलाही से तर ज़बान को इंशाअल्लाह दौज़ख़ की आग न जलायेगी। पता चला कि ज़बान से ज़िक्रे इलाही करना चाहिये न कि

लग्वीयात में उसे मशगूल रखना चाहिये। तिबरानी में मरफ़ूअन हदीस नक़ल फ़रमायी गयी है कि ताजदारे कायनात ने इरशाद फ़रमाया, हर ख़ुश्क व तर चीज़ों के पास अल्लाह का ज़िक्र करो ता कि यह चीज़ तुम्हारे ईमान की गवाह हों। अल्लाह हम सबको तौफ़ीके रफ़ीक़ ज़िक्रे इलाही की नसीब फ़रमाये।

★ जन्नत की क्यारियों से कुछ चुन लिया करो ★

हज़रत अनस फ़रमाते हैं कि ताजदारे कायनात ने इरशाद फ़रमाया, जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रो तो कुछ चुन लिया करो। लोगों ने पूछा, जन्नत की क्यारियां क्या हैं ? फ़रमाया ज़िक्र के हलक़े।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह के प्यारे हबीब ने ज़िक्र की महफ़िल को जन्नत की क्यारियां फ़रमाया। अब शायद ही कोई मोमिन ऐसा हो जो जन्नत की क्यारियों की तलाश न करे। और जब जन्नत की क्यारियां मिल जायें तो कुछ इसमें से हासिल करे यानी ज़िक्रे इलाही करे। मज़कूरा हदीस शरीफ़ से चंद बातें समझ में आयी वह यह कि ज़िक्रे इलाही के जलसों में जाना, ज़िक्रे इलाही के लिये हलक़े लगाना, मिलाद शरीफ़ की महफ़िल का इनेक़ाद करना (कि इसमें अल्लाह की शान और उसके प्यारे महबूब का ज़िक्र होता है) ज़िक्रे रसूल भी ज़िक्रे इलाही ही है। लिहाज़ा ऐसी पाकीज़ा महफ़िलों की तलाश करके उसमें शरीक होकर अपनी आख़ेरत को संवार लेना चाहिये। ज़िक्र के हलक़ों की तलाश में लगे रहो इस लिये कि तन्हा ज़िक्र करने से अफ़ज़ल मजमा के साथ ज़िक्र करना है कि अगर एक का क़बूल होगा तो उसके सदक़े में अल्लाह सबका ज़िक्र करना क़बूल फ़रमायेगा। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़े रफ़ीक़े दे।

★ अफ़ज़ल कलिमात ★

हज़रत समुरा बिन जंदुब से रिवायत है कि फ़रमाते हैं कि ताजदारे कायनात ने फ़रमाया, अफ़ज़ल कलिमात चार हैं और और एक रिवायत में यूं है

कि अल्लाह को चार कलिमात प्यारे हैं :–

और जिस कलिमा से इब्तेदा करो मुज़िर नहीं। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! तसबीह के माअना हैं अल्लाह को तमाम अुयूब व नुक़सान से पाक जानना। या पाक बयान करना। अस्माए इलाही विर्द करने वाले पर उस नाम की तजल्ली वारिद होती है तो का विर्द करे तो इन्शाअल्लाह ! ये बंदा बुराइयों से पाक होता चला जाएगा। तस्बीह बहुत आला जिक्र है। इस लिए नमाज़ शुरुअ करते है से, रुकूअ में ,सज्दे में और ताज्जुब ख़ैज़ ख़बर पर कहते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ने मज़कूरा कलिमात को अफ़ज़ल फ़रमाया क्योंकि इन कलिमात में अल्लाह की बेशुमार तारीफ़ें मज़कूर हैं का माअना है अल्लाह सारे अुयूब से पाक है। का माअना हैं तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये हैं जो तमाम सिफ़ाते कमालिया का जामेअ है। वह कलिमा है जिसे पढ़कर बंदा मुसलमान होता है। अल्लाह सबसे बड़ा है गोया कहने वाला बंदा अल्लाह तआला की किब्रियाई और हर एक से उसकी बड़ाई का एतेराफ़ करता है। यह कलिमात अल्लाह तआला के जामेअ सिफ़ात हैं।

अल्लाह सरकारे दो आलम के सदक़ा व तुफ़ैल हम सबको इन अफ़ज़ल कलिमात के विर्द की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ जन्नत में दरख़्त ★

हज़रत जाबिर से रिवायत है कि फ़रमाते हैं कि ताजदारे कायनात ने इरशाद फ़रमाया :–

जो पढ़े उसके लिये जन्नत में दरख़्त लगाया जायेगा। *(रवाहुत्तिर्मिज़ी)*

ज़िक्रे इलाही की बरकतें

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह की रहमतों पर कुरबान जाओ कि एक बार पढ़ने पर जन्नत में हमारे लिये दरख़्त लगाया जाता है। दरख़्त लगाने की वजह यह है कि दरख़्त से इन्सान को बे पनाह फ़ायदा होता है। दरख़्त कभी साए का काम देता है और कभी वह मेवे देता है। कभी फल फूल होते हैं जिनसे खुराक व लज़्ज़त हासिल की जाती है। तमाम दरख़्तों में खजूर का दरख़्त बहुत ही मुफ़ीद और लज़ीज़ है। और हदीस शरीफ़ में तादाद का ताय्युन नहीं, लिहाज़ा यह यक़ीन रखना चाहिये कि अगर हम एक मर्तबा भी यह जुमला कहेंगे तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से जन्नत में हम एक दरख़्त के मुस्तहिक़ होंगे वह दरख़्त भी खजूर का होगा क्योंकि नख़ला खजूर ही के दरख़्त को कहा जाता है और खजूर हुजूर की पसंदीदा ग़िज़ा है। लिहाज़ा जो गुलाम अपने आक़ा व मौला के हुक्म की तामील करते हुए रब की तसबीह करेंगे उनके लिये महबूब के पसंदीदा फल के दरख़्त लगाये जायेंगे। इस तसबीह का एक फ़ायदा यह है कि जो शख़्स उसे सुबह को तीन मर्तबा पढ़े वह बर्स, जुज़ाम और जुनून से महफ़ूज़ रहेगा।

अल्लाह अपने करम से हमें कसरत से पढ़ने की तौफ़ीक़ रफ़ीक़ नसीब फ़रमाकर अपने करम से बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाये। आमीन सुम्मा आमीन।

★ सौ गुनाह माफ़ ★

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है। फ़रमाते हैं कि रहमते आलम ने फ़रमाया, जो एक दिन में 100 मर्तबा यह कहे :–

उसके लिये दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा। और उसके लिये 100 नेकियां लिखी जायेंगी और उसके सौ गुनाह माफ़ किये जायेंगे और उस दिन दिन भर उसकी शैतान से हिफ़ाज़त होगी हत्ता कि शाम पा ले और कोई शख़्स उससे बेहतर अमल न करे सकेगा उसके सिवा ज़्यादा पढ़ ले।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हमारे नामाए आमाल गुनाहों से

भरे हुए हैं यह तो अल्लाह का करम है कि वह छोटे से अमल के सबब हमारे बे शुमार गुनाहों को माफ़ भी फ़रमा देता है और बेशुमार नेकियां भी अता फ़रमाता है और यही नहीं बल्कि शैतान से उस दिन हमारी हिफ़ाज़त भी अता फ़रमाता है। मज़कूरा हदीस शरीफ़ में जो दिन भर शैतान से हिफ़ाज़त का ज़िक्र है उसकी वजह यह है कि बंदा दिन में चूं कि जागता है और जागते ही में शैतान ज़्यादा गुनाह कराता है इसलिये दिन का ज़िक्र फ़रमाया। अगर चे मज़कूरा कलिमात किसी भी वक़्त पढ़ना दुरुस्त हैं लेकिन सुबह के वक़्त ज़्यादा अफ़ज़ल है ता कि दिन भर शैतान से महफ़ूज़ रहे। यह तासीर तो सिर्फ़ 100 बार पढ़ने की है। अगर उससे ज़्यादा पढ़े तो ज़्यादा फ़ायदा होगा।

अल्लाह सरकारे दो आलम के सदक़ा व तुफ़ैल हम सबको नेकियों की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और शैतान के शरुर से महफ़ूज़ रखे।

★ फ़रिश्तों की तस्बीह ★

हज़रत अबू ज़र से रिवायत है कि रहमते आलम से पूछा गया, कौन सा कलाम अफ़ज़ल है? फ़रमाया, रसूलुल्लाह ने जो अल्लाह ने अपने फ़रिश्तों के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीस शरीफ़ में फ़रिश्तों की तसबीह का ज़िक्र फ़रमाया गया है। यानी सारे फ़रिश्ते पढ़ा करते हैं। फ़रिश्तों का यह पढ़ना अल्लाह की तालीम से है इसलिये यह कलिमात बहुत अफ़ज़ल हैं। इससे मेरे आक़ा की शान अरफ़ा व आला भी ज़ाहिर होती है कि ताजदारे कायनात फ़रिश्तों की इबादत को भी जानते हैं और उनके हालात से भी बाख़बर हैं जो आसमान में रहते हैं। पता यह चला कि जो रसूलुल्लाह अर्श वालों के हालात से बा ख़बर हों वह फ़र्श वालों के हालात से क्यों बेख़बर होंगे!

लिहाज़ा ऐसे प्यारे प्यारे अमल करो जिसे देखकर मेरे प्यारे आक़ा राज़ी हो जायें। अल्लाह हमें फ़रिश्तों की तसबीह पढ़ने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ जन्नत का एक ख़ज़ाना ★

हज़रत अबू मूसा अशअरी रिवायत फ़रमाते हैं कि हम रहमते आलम के साथ एक सफ़र में थे तो लोग बुलंद आवाज़ से तकबीर कहने लगे। उस पर रहमते आलम ने फ़रमाया, ऐ लोगो! अपनी जानो पर नर्मी करो! तुम लोग न बहरे को पुकारते हो न ग़ायब को, तुम समीअ व बसीर को पुकार रहे हो जो तुम्हारे साथ है, जिसे तुम पुकार रहे हो वह तुम में से हर एक की सवारी की गर्दन से भी ज़्यादा क़रीब है।

अबू मूसा अशअरी फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर के पीछे था। अपने दिल में कह रहा था तो हुज़ूर ने फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह बिन क़ैस! क्या मैं तुमको जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना पर रहबरी न कर दूं? मैंने अर्ज़ क्या, हां! या रसूलुल्लाह! फ़रमाया :

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! रहमते आलम ने जो बुलंद आवाज़ से तकबीर के लिये मना न फ़रमाया उसकी वजह यह है कि ज़िक्र बिल ज़हर (बुलंद आवाज़ से) से मना है बल्कि इस लिये मना फ़रमाया था कि सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर सफ़र करते हुए यह नारे तकलीफ़ का बाइस थे इस लिये फ़रमाया, अपनी जानों पर नर्मी करो। और अश्अतुल लम्आत में है कि यह सफ़र गज़्वए ख़ैबर का था कि सरकार मअ सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के ख़ैबर फ़तह फ़रमाने तशरीफ़ ले जा रहे थे। इस सफ़र में हुज़ूर रहमते आलम का इरादा यह था कि ख़ैबर पर हम अचानक चढ़ें। लोगों को इस हमला की ख़बर भी न हो सके ता कि दुश्मनाने इस्लाम तैयारी न कर सकें और बहुत कम ख़ून ख़राबा हो और ख़ैबर फ़तह हो जाये। इस नारे से यह मक़सद फ़ौत हो जाता। वरना बहुत मवाक़ेअ पर जहां ज़िक्र बिज्जहर के मवानेअ न होते। सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن बल्कि ख़ूद हुज़ूर बुलंद आवाज़ से ज़िक्रे इलाही किया करते। चुनांचे बा जमाअत नमाज़ के बाद बुलंद आवाज़ से ज़िक्र करते थे। वह मवानेअ मसलन वहां कोई नमाज़ पढ़ रहा हो या कोई मोअतकिफ़ सो रहा हो।

हज़रत अबू मूसा अश्अरी अपने दिल में पढ़ रहे थे तो ग़ैब से ख़बर बताने वाले आक़ा उनकी कैफ़ियते दिल से बाख़बर होकर इरशाद फ़रमाते हैं, शरीफ़ जन्नत का ख़ज़ाना है इसलिये के इसमें इंसान इंतेहाई बेकसी बेबसी का इक़रार और अल्लाह की कुदरत का एतेराफ़ करता है। यही बंदगी का मदार है के माअना हैं ज़ाहिरी ताक़त के, कुव्वत के माअना हैं बातिनी कुदरत। यानी बंदे में बग़ैर रब तआला की मदद के न ज़ाहिरी ताक़त है न बातनी कुव्वत। अल्लाह के करम के बग़ैर बंदा न गुनाहों से बच सकता है न नेकियां कर सकता है। हुजूर ने उन कलिमों को ख़ज़ाना इस लिये फ़रमाया कि यह कलमे जन्नती नेअमतों के खज़ानें मिलने के सबब हैं।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! रहमते आलम के सदक़े में हमें जन्नत का ख़ज़ाना मिल गया है। इस लिये इस ख़ज़ाने की क़दर करो और क़दर यह है कि कसरत से इसको पढ़ा करो। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आमीन। *(मिर्अत, पेज–340)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हर जाइज़ काम की इब्तेदा में अल्लाह से उसके मुकम्मल और अच्छे होने की इल्तेजा कर लेना चाहिये, इंशाअल्लाह ! काम मुकम्मल और अच्छा होगा, इस लिये कि जो काम की इब्तेदा में अपने मौला को न भूलेगा उसके जाइज़ काम को अहसन तरीक़े पर पायअे तकमील तक पहुंचायेगा और मज़कूरा हदीस शरीफ़ में यह भी इरशाद फ़रमाया गया है कि हर मुसीबत पर ख़्वाह छोटी हो या बड़ी आला हो या अदना पढ लेना चाहिए। यह भी सुन्नते रहमते आलम है। और यह भी फर्माया गया कि हर नेअमत पर पढ़ लेना चाहिये। यह इज़हारे तशक्कूर के लिये है कि नेअमत देने वाला अल्लाह इससे ख़ुश होकर और ज़्यादा नेअमतें अता फ़रमायेगा और यह भी फ़रमाया गया कि गुनाह पर पढ़ लेना चाहिये। गोया इस फ़रमान में बंदो को तसल्ली दी जा रही है कि अगर गुनाह सरज़द हो जाये तो अर्हमुर्राहिमीन की शाने रहमत व मग़्फ़िरत पर नज़र रखो, वो बंदो को माफ़ करनेवाला ग़फ़ूरे रहीम है सच्चे दिल से तौबा कर लोगे वह तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा। लिहाज़ा गुनाह सरज़द होने पर ज़रूर पढ़ लिया करो।

मज़कूरा हदीस शरीफ़ पर अमल करने के बदले में अल्लाह जन्नत में घर अता फ़रमायेगा, इंशाअल्लाह ! अल्लाह सरकारे दो आलम के सदक़ा व तुफ़ैल में हम को तौफ़ीक़े रफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ सब्र का सवाब ★

अहमद व बैहक़ी ने हज़रत इमाम हुसैन से रिवायत की कि जब पुरानी मुसीबत याद आये तब भी पढ़ ले नये सब्र का सवाब पायेगा।

दर्स : रहमते आलम के प्यारे दीवानो ! इन्सान ख़ुशी और ग़म के अैयाम को फ़रामोश नहीं कर सकता, उसे ख़ुशी के दिन भी याद आते रहे हैं और ग़म के दिन भी याद आते रहते हैं, लिहाज़ा ख़ुशी के लम्हात याद आयें तो पढ़ ले और माज़ी की कोई मुसीबत याद आये तो उस पर पढ़ ले। यक़ीनन सब्र का सवाब अल्लाह अता फ़रमायेगा। अल्लाह हम सबको सब्र और ज़िक्रे इलाही की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ मुसीबत में ज़िक्रे इलाही का निराला अंदाज़ ★

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! यह दुनिया मुसीबतों का घर है इंसान पर इस दुनिया में छोटी, बड़ी बे शुमार मुसीबतें आती हैं लेकिन कुरबान जाइये रहमते आलम के करम पर कि छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी मुसीबतों का ईलाज और उन्हें दूर करने का तरीक़ा हम सियाकारों को अता फ़रमाया है। ऐ काश ! हम इस पर अमल पैरा होकर मुसीबतों से नजात पायें।

हुजूर चिराग़ गुल होने, नअलैन का तसमा टूट जाने और हाथ फांस लग जाने, पर पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि यह भी मुसीबत है। सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने अर्ज़ किया कि हुजूर यह तो मामूली बातें हैं ! फ़रमाया हुजूर ने कि कभी मामूली बात भी बड़ी हो जाती है। *(दुर्रे मन्सूर, अज़ीज़ी वगेरा)*

रहमते आलम के शयदाईयों को ! आप अंदाज़ा लगायें कि अगर

हमारे यहां लाईट चली जाये तो पता नहीं कैसे कैसे नाज़ेबा जुमले ज़बान से हम निकालते हैं लेकिन ऐसे मौक़े पर हमें अपनी ज़बान को किन जुमलों के लिये जुंबिश देनी चाहिये और वह रसूले आज़म ने इरशाद फ़रमाया, ऐसे मौक़े पर ग़लत जुमले निकालने की बजाए पढ़ना मेरे आक़ा की सुन्नते मुबारका हैं इसी तरह जूते के तसमें टूट जायें यानी जूते की रस्सी टूट जाये तो भी चिड़ चिड़े पन का शिकार होकर अल्लाह के ना पसंदीदा जुमलों को अदा करने के बजाए पढ़ें कि ऐसे मौक़े पर पढ़ना मेरे आक़ा की सुन्नते मुबारका है। अल्लाह हम सबको आक़ाए नेमत रहमते आलम की सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये आमीन।

इंशाअल्लाह पढ़ने के फ़ायदे आपको बाद में बताये जायेंगे।

★ घर जन्नत में ★

बैहक़ी में है कि जिसमें चार बातें हों उस का घर जन्नत में है : एक यह कि हर काम में अल्लाह से इल्तेजा करे। दूसरा यह कि मुसीबत पर इन्ना पढ़े। तीसरा यह कि नेअमत पर पढ़े। चौथा यह कि गुनाह पर पढ़े।

रिवायत है कि हज़रत इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से आपने फ़रमाया, सारी मख़लूक़ की इबादत है। और कलिमए शुक्र है और इख्लास का कलिमा है। और आसमान और ज़मीन के दर्मियान फ़िज़ा भर देता है। और जब बंदा कहता है तो अल्लाह फ़रमाता है, मेरा बंदा मुतीअ हो गया और अपने को मेरे सुपुर्द कर दिया।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! अल्लाह की सारी मख़लूक़ उसकी तसबीह करती है। ख़ूद अल्लाह इरशाद फ़रमाता है : हर चीज़ अल्लाह तआला की तसबीह करती है। औलिया उनकी तसबीहों को सुनते हैं। सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن खाते वक़्त लुक़्मे की तस्बीह सुनते हैं। यहां तक कि सब्ज़ा की तस्बीह की बरकत से अज़ाबे क़ब्र में तख़फ़ीफ़ होती है। लिहाज़ा

पढ़कर दीगर मख़लूक़ के साथ ख़ूद भी इबादत में शरीक हो जायें और कलिमा कलिमए शुक्र है लिहाज़ा अल्लाह का शुक्र पढ़कर अदा किया करो। और फ़रमाया गया कि से मुराद पूरा कलिमा है और यह पूरा कलिमा इख़लास का कलिमा है यानी इस कलिमा तैयबा की बरकत से दुनिया में कुफ़्र और आख़ेरत में दौज़ख़ से रिहाई पाता है और आसमान व ज़मीन के दर्मियान फ़िज़ा भर देता है। दर हक़ीक़त यह हमें समझाने के लिये है कि हमारी कोताह नज़रें उन आसमान और ज़मीन की हद तक ही महदूद हैं वरना रब तआला की किब्रियाई के मुक़ाबिल आसमान व ज़मीन की क्या हक़ीक़त है। उसकी मिल्कियत आसमान व ज़मीन तक ही महदूद नहीं। और पढ़ने वाला गोया अल्लाह का इताअत गुज़ार बंदा हो गया और अपने आपको मौला के सुपुर्द करने वाला हो गया। जब अल्लाह फ़रमा दे कि यह मेरा बंदा फ़रमांबर्दार और मेरी पनाह में है तो उसे दारैन की तकलीफ़ कैसे पहुंच सकती है? लिहाज़ा मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा कलिमात को ज़बान पर जारी करके नेकियों को जमा करें और अल्लाह के इताअत गुज़ार बंदे बनें।

अल्लाह रहमते आलम के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको ज़िक्रे इलाही में ज़बान तर रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ शैतान घर से भाग जाता है ★

हदीस शरीफ़ में है कि से शैतान मायूस हो जाता है और उसको वहां से भागना ही पड़ता है और हाए वाए करने से शैतान की शिर्कत हो जाती है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा इरशाद मुबारक मुसीबत के वक़्त के मुताल्लिक़ है। यानी बंदा जब मुसीबत में गिरफ़्तार होता है ख़ास तौर पर किसी का इंतेक़ाल हो जाये तो औरतें और मर्द हज़रात हाए और वाए वग़ैरह जैसे अलफ़ाज़ अपनी जुबान पर जारी करते हैं और इन्हें यह ख़्याल भी नहीं होता कि इस तरह से इज़हारे ग़म में शैतान उनके साथ शरीक हो जाता

है। लिहाज़ा अगर आप यह चाहते हैं कि शैतान भाग जाये और उसकी शिर्कत न हो तो मुसीबत और ग़म के वक़्त हाए वाए कहने की बजाए ज़रूर पढ़ लिया करें। इंशाअल्लाह ग़म हलका भी होगा और ज़िक्रे इलाही का सवाब भी मिलेगा। अल्लाह सरकारे दो आलम के सदक़े तुफ़ैल में हम सबको नेकियों की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

★ ज़िक्रे इलाही से ग़फ़लत का नतीजा ★

ज़िक्रे इलाही की अहमियत और उसके फ़वाइद के बाद अब मुख़्तसरन इस से ग़फ़लत का अंजाम और उन लोगों की सज़ा भी मुलाहिज़ा हो जो रब्बे करीम के ज़िक्र से मुंह मोड़कर दुनिया के ऐश व इशरत में मुब्तला हो जाते हैं। यह वह लोग हैं जो शरीअत की पाबंदी तो दरकिनार उनकी ज़बान पर मुद्दतों अल्लाह और उसके रसूल का नाम तक नहीं आता। काश! वह अल्लाह और उसके रसूल के इरशादात को पढ़ कर तौबा कर लें और अपने दिल से गुनाहों की स्याही साफ़ करने के लिये अल्लाह के ज़िक्र में मसरूफ़ हो जायें चंद ही दिन में उनका क़ल्ब रौशन व मुनव्वर होगा और वह अपने आपको एहकामे शरअ की तरफ़ माइल पाने लगेंगे।

मुनाफ़िक़ीन का हाल बयान करते हुए अल्लाह फ़रमा रहा है कि इनमें दीगर अुयूब के साथ एक ऐब यह भी है कि अल्लाह का ज़िक्र बहुत कम करते हैं।

इरशाद होता है :–

तर्जुमा : बेशक! मुनाफ़िक़ीन (अपने गुमान में) धोका दे रहे हैं अल्लाह को और अल्लाह सज़ा देने वाला है इन्हें (इस धोकेबाज़ी की) और जब खड़े होते हैं नमाज़ की तरफ़ काहिल बन कर लोगों को दिखाने के लिये और अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते मगर थोड़ा। *(सूरए निसाअ, 142)*

वह तो बिल्कुल ही गुमराह हैं जिन्हें अल्लाह का ज़िक्र सुनाया जाता है लेकिन फिर भी उनके दिल ज़िक्रे इलाही की तरफ़ माइल नहीं होते ऐसे लोगों

के लिये **वेल** हलाकत व ज़िल्लत व ख़ुवारी है दुनिया में भी और आख़रत में भी। तो मतलब यह होगा कि यह लोग अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होकर दुनिया की अय्याशी में ख़ूब मस्त हैं इन्हें अल्लाह को याद करने की फ़ुरसत ही नहीं। अगर कोई मुबल्लिग़ इन्हें महफ़िले ज़िक्र में शिर्कत की दावत देता है या तौबा व ज़िक्र की नसीहत करता है तो यह निहायत ही मुतकब्बिराना अंदाज़ में उसे घूरते हैं और उसकी दावत को ठुकरा देते हैं। जब कि हक़ीक़त यह है कि ज़िक्र से ग़लफ़त के बाइस उनके दिल मुर्दा हो चुके हैं और उनके घर क़ब्रस्तान हो चुके हैं उनकी मेहनतों पर अल्लाह की लानत बरस रही है यह ख़ूद तरह तरह की आफ़ात व बलइय्यात में मुब्तला रहे हैं। बेचैन हैं, मज़तरिब हैं, किसी नासेह की नसीहत पर ग़ौर करने के लिये आमादा नहीं होते।

दर्जे ज़ैल आयात पर ग़ौर कीजिये और पनाह मांगिये! जिक्रे इलाही में ग़फ़लत से :–

फ़रमाने इलाही है :–

जो रहमान के ज़िक्र से मुंह फेरे मुसल्लत कर देते हैं हम उस पर एक शैतान को वह उसका साथी बन जाता है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! आज मुसलमानों को ब आसानी गुनाहों की तरफ़ जो शैतान ले जाता है इसका सबब रहमान के ज़िक्र से ग़फ़लत इख़्तेयार करना है। ऐ सरकारे मदीना के प्यारे दीवानो! क्या तुम यह पसंद करते हो कि शैतान तुम्हारा साथी बने? हरगिज़ नहीं! तो ख़ुदारा ख़ुदारा ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल न हों ता कि कल बरोज़े क़यामत रहमान के महबूबों का साथ नसीब हो और अल्लाह के महबूबों का साथ जिस्को नसीब हो जाये उसकी दुनिया व आख़रत दोनों संवर जायेगी। इंशाअल्लाह! अल्लाह सरकारे दो आलम के सदक़ा व तुफ़ैल हम सबको ज़िक्रे रहमान की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये। आमीन।

★ शैतान मुसल्लत हो जाता है ★

परवर्दिगारे आलम इरशाद फ़रमाता है :–

(सूरए मुजादिल–19)

तसल्लुत जमा लिया है उन पर शैतान ने, उसने अल्लाह का ज़िक्र इन्हें भुला दिया, यही लोग शैतान का टोला हैं बग़ौर सुनो ! शैतान का टोला ही नुकसान उठाने वाला है। और इरशाद फ़रमाता है :–

और जो मुंह मोड़ेगा अपने रब्बे करीम के ज़िक्र से तो वह उसे दाख़िल करेगा सख़्त अज़ाब में। *(सूरए जिन)*

हुकूके वालिदैन

रब्बे क़दीर ने अपनी मुक़द्दस किताब कुरआन मजीद में मुतअद्दिद मक़ामात पर वालदैन के साथ हुस्ने सुलूक, उनकी ताज़ीम व तौक़ीर, उनकी इताअत फ़रमाबर्दारी और उनकी ख़िदमत करने का हुक्म सादिर फ़रमाया। चुनांचे सूरए अस्रामें ख़ुदाए वहदहु ला शरीक इरशाद फ़रमाता है :–

और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उनमें एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जायें तो उनसे हूं न कहना और इन्हें न झिड़कना और उनसे ताज़ीम की बात कहना और उनके लिये आजिज़ी का बाजू बिछा नर्म दिली से और अर्ज़ कर कि ऐ मेरे रब ! तू इन दोनों पर रहम कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छटपन में पाला। *(सूरए अस्रा, पारा–15, आयत–23)*

एक जगह और इरशाद फ़रमाता है :–

और जब हमने बनी इस्राईल से अहद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ भलाई करो। *(पारा–1, आयत–83)*

दुसरी जगह इर्शाद फर्माता है :–

وَوَصَّيْنَا الاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّ فِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

और हमने आदमी को उसके मां बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई, उसकी मां ने उसे पेट में रखा, कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई और उसका दूध छूना दो बरस में है। यह कि हक़ मान मेरा और अपने मां बाप का आख़िर मुझी तक आना है और अगर वह दोनों तुझसे कोशिश करें कि मरो शरीक ठहराये ऐसी चीज़ को जिसका तुझे इल्म नहीं तो उनका कहना न मान और दुनिया में अच्छी तरह उनका साथ दे और उसकी राह चल जो मेरी तरफ़ रुजूअ लाया फिर मेरी ही तरफ़ तुम्हें फिर आना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें जो तुम करते थे। *(सूरए लुकमान, पारा–21, आयत–14)*

एक जगह यूं इरशाद फ़रमाता है :–

और अल्लाह की बंदगी करो और उसका शरीक किसी को न ठहराओ और मां बाप से भलाई करो। *(सूरए निसाअ, आयत–36)*

एक मकाम पर इस तरह फर्माता है :–

तुम फ़रमाओ ! जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वह मां बाप और करीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और राहगीर के लिये है और जो भलाई करो बेशक ! अल्लाह उसे जानता है। *(पारा–2, आयत–215)*

एक मकाम पर इस तरह फर्माता है :–

और हमने आदमी को ताकीद की अपने मां बाप के साथ भलाई की और

अगर वह तुझसे कोशिश करें ता कि तू मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझे इल्म नहीं तो उनका कहना न मान, मेरी ही तरफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें जो तुम करते हो। *(पारा–20, आयत–8)*

यह आयत और सूरए लुक़मान और सूरए एहक़ाफ़ की आयतें सअद बिन वक़्क़ास के हक़ में व बक़ौल इब्ने इस्हाक़ सअद बिन मालिक ज़हरी के हक़ में नाज़िल हुई। उनकी मां हमना बिनते अबी सुफ़यान बिन उमैया बिन अब्दुश्शमस थी। हज़रत सअद साबेक़ीने अव्वलीन में से थे और अपनी वालदा के साथ अच्छा सलूक करते थे। जब आप इस्लाम लाये तो आपकी वालदा ने कहा, तूने यह क्या नया काम किया ? ख़ुदा की क़सम ! अगर तू इससे बाज़ न आया तो मैं न खाऊं न पियूं यहां तक कि मर जाऊं और तेरी हमेशा के लिये बदनामी हो और तुझे मां का क़ातिल कहा जाये। फिर उस बुढ़िया ने फ़ाक़ा किया और एक शबाना रोज़ न खाया न पिया न साया में बैठी, उससे ज़ईफ़ हो गयी। फिर एक रात दिन और इसी तरह रही। हज़रत सअद बिन वक़्क़ास उसके पास आये और आपने उससे फ़रमाया कि ऐ मां ! अगर तेरी सौ जानें हों और एक एक करके सब ही निकल जाये तो भी मैं अपना दीन छोड़ने वाला नहीं ! तू चाहे खा, चाहे मत खा। जब वह हज़रत सअद की तरफ़ से मायूस हो गयी तो खाने पीने लगी, उस पर यह आयत नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि वालदैन के साथ नेक सलूक किया जाये और अगर वह कुफ़्र व शिर्क का हुक्म दें तो न माना जाये। *(ख़ज़ाइनुल इर्फ़ान)*

हज़रत सअद ने ख़ुसूसन् और बाक़ी जुमला अहले इस्लाम को ताकीद फ़रमाई कि मां बाप के साथ एहसान व मुरव्वत करो और उनकी ख़िदमत में कोताही न करो। और शिर्क और नाफ़रमानीए शरअ के सिवा बाक़ी अमर में वह राज़ी हों इन्हें राज़ी करें। हां जब वह शिर्क या हुक्मे शरअ के ख़िलाफ़ फ़रमायें तो उनका कहना न मानें।

बुलबुले शीराज़ हज़रत शैख़ सअदी ने क्या ख़ूब फ़रमाया :–

चूं न बूवद खैशरा दियानतो तक़वा
कतअे रहम बेहतर अज़ मवद्दते कुर्बा

यानी जब रिश्तेदारान में दयानत व तक़्वा न हो ऐसे रिश्तेदारों से क़तअे रहमी होती हो तो कोई हर्ज नहीं।

एक और जगह फ़रमाने ख़ुदावंदी है :–

और हमने आदमी को हुक्म किया कि अपने मां बाप के साथ भलाई करे उसकी मां ने उसे पेट में रखा तकलीफ़ से उसे जनी तकलीफ़ से। *(कन्जुल इमान, पारा–26, आयत–2)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! आम तौर पर कुरआने करीम में तौहीद, दलाइले तौहीद और फ़राइज़े ज़िन्दगी के ज़िक्र के बाद हुकूक़े वालदैन की तरफ़ ज़ोरदार अल्फ़ाज़ में तवज्जोह दिलाई जाती है। यहां भी मुश्रेकीन की ग़लत फ़हमियों के इज़ाले के बाद और अहले इस्तेक़ामत की कामरानियों के बाद क़ारेईन की तवज्जोह वालदैन की ख़िदमत और दिलजोई की तरफ़ मबजूल कराई जा रही है।

अल्लामा इब्ने मंजूर लिखते हैं कि जब वसीअत का फ़ाइल अल्लाह हो उसका माअना फ़र्ज़ करना होता है। *(लिसानुल अरब)*

इस आयत में अगरचे मां बाप दोनों के साथ हुस्ने सुलूक और उनकी ख़िदमत और हर तरह से दिलजोई का हुक्म बार बार दिया जा रहा है। इस आयत से सराहतन मालूम होता है कि मां का हक़ बाप से कई गुना ज़्यादा है। यहां उन तकालीफ़ और मशक़्क़तों का मुफ़स्सल तज़किरा है जो बच्चे के सिलसिले में सिर्फ़ मां बर्दाश्त करती है। जिस रोज़ रहम मादर में हमल क़रार पकड़ता है उस वक़्त से मां की सारी जिस्मानी कुव्वतें जनीन की परवरिश और निगहदाश्त में सर्फ़ होने लगती हैं। उसकी अपनी सेहत का निज़ाम बुरी तरह मुतास्सिर होता है। नींद, भूख वग़ैरह मामूलात में नुमायां फ़र्क़ रूनुमा हो जाता हैं। तबीयत गिरां और अफ़सुरदा रहती है और आए दिन उन मुशक़्क़तों में इज़ाफ़ा हो जाता है। पैदाईश के लम्हे तो मां को जांकनी की कैफ़ियत से दो चार कर देते हैं। इन जान लेवा मरहलों से गुज़रने के बाद फिर एक तवील

रियाज़त का अमल शुरू हो जाता है, दूध पिलाना, सुबह व शाम उसकी निगहदाश्त करते रहना, बीमारी की सूरत में रात रात इसको गोद में उठाए रखना, उसकी आराम की ख़ातिर अपना आराम बड़ी ख़ुशी और मुहब्बत से कुरबान कर देना सिर्फ़ मां का हिस्सा है। इन तमाम मशक्क़तों का ज़िक्र करके बता दिया कि मां का हक़ बाप से ज़्यादा है। आप इसकी मज़ीद तफ़सील अगले सफ़हात में मुलाहज़ा करेंगे।

★ अल्लाह की रज़ा वालदैन की रज़ा में है ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया :

अल्लाह की रज़ामंदी मां बाप की रज़ामंदी में है और अल्लाह की नाराज़गी मां बाप की नाराज़गी में है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हुजूर रहमते आलम ने अल्लाह को राज़ी करने का एक तरीक़ा बता दिया कि अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह तआला तुमसे ख़ुश हो जाये तो आसान सा तरीक़ा यह है कि तुम अपने मां बाप को ख़ुश रखो, मां बाप को ख़ुश रखना उनको राज़ी रखना, कोई मुश्किल बात नहीं है। बहुत सारे लोग सारी दुनिया को ख़ुश रखने की फ़िक्र में तो लगे रहते हैं लेकिन वालदैन के मामला में निहायत ही ला परवाह होते हैं। इसी तरह दोस्तों की नाराज़गी पर फ़िक्रमंद होते हैं और वालदैन की नाराज़गी पर कोई अफ़सोस नहीं करते, उन्हें हुजूर के मज़कूरा फ़रमान से सबक़ हासिल करना चाहिये कि वालदैन की नाराज़गी दर हक़ीक़त अल्लाह की नाराज़गी है और उनको ख़ुश करना अल्लाह को ख़ुश करना है और जिससे अल्लाह राज़ी हो जाये उसको दोनों जहां की ख़ुशियां हासिल हो गयीं। अल्लाह तबारक व तआला हुजूर के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको अपने वालदैन को ख़ुश रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ वालिद की इताअत अल्लाह की इताअत है ★

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया :

वालिद की इताअत अल्लाह की इताअत है और बाप की नाफ़रमानी ख़ुदा वहदहु ला शरीक की नाफ़रमानी है। *(तिब्रानी)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! आज के दौर में वालिद की बात को मानने में लोग बहुत ही ताम्मुल करते हैं और झिझकते रहते हैं। उन्हें वालिद के दर्जे का इल्म नहीं होता, अल्लाह के रसूल ने वालिद की बात मानने को रब की बात मानने का दर्जा देकर और वालिद की बात न मानने को रब की नाफ़रमानी का दर्जा देकर अपनी उम्मत को आगाह फ़रमा दिया है कि वालिद के हुक्म को मामूली न समझो। लिहाज़ा हमें इस बात का ख़्याल रखना चाहिये कि वालिद की हर जाइज़ बात मानने की कोशिश करनी चाहिये और उनकी नाफ़रमानी के वबाल से अपने आपको बचाना चाहिये। अल्लाह हम सबको वालिद की इताअत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ वालिदैन औलाद के लिये जन्नत है ★

हज़रत अबू अमामा करते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! वालदैन का औलाद पर क्या हक़ होता है? इरशाद फ़रमाया : वह दोनों तेरी जन्नत या दौज़ख़ हैं। *(मिश्कात शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ताजदारे कायनात ने **वालदैन को जन्नत या दौज़ख़ हैं** फ़रमाकर अपने उम्मतियों को वाज़ेह कर दिया है कि वालदैन तुम्हारे लिये बहुत बड़ी नेअमत हैं जिस तरह दुनिया में वह तुम्हारी राहत का ज़रिया हैं कि तुम्हारी पैदाईश से पहले तुम्हारे लिये घर, रिज़्क़, इलाज व मुआलेजा, निगहदाश्त वग़ैरह उन सारी चीज़ों का इंतेज़ाम करते हैं इसी तरह अगर तुम उनकी ख़िदमत करो, उन का ख़्याल रखो तो यह तुम्हारे हुसूले जन्नत का ज़रिया बन जायेंगे। और अगर तुमने उन को नाराज़ रखा तो उनकी नाराज़गी से उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा बल्कि एहसान फ़रामोशी के बदले में तुम जहन्नम के हक़दार बन जाओगे। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम वालदैन को ख़ुश करके उनकी ख़िदमत करके जन्नत के

हक़दार बनें। अल्लाह हम सबको रहमते आलम के सदक़ा व तुफ़ैल में वालदैन की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ मां के क़दमों में जन्नत ★

हज़रत मआविया बिन जाहमा से मरवी है कि जाहमा ने हुज़ूरे अक़दस की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैं जिहाद पर जाना चाहता हूं आपकी ख़िदमत में मश्वरा के लिये हाज़िर हुआ हूं। आप ने फ़रमाया, तेरी वालिदा हैं ? अर्ज़ किया, हां ! वालिदा हैं ! फ़रमाया :–

अपनी वालिदा की ख़िदमत करो जन्नत उसके क़दमो के तले है। *(मिश्कात शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! जिहाद यक़ीनन बहुत बड़ी इबादत है लेकिन अगर मां घर में मौजूद है और इस हाल में है कि उसको ख़िदमत के लिये औलाद की ज़रूरत है तो चाहिये कि अपनी मां की ख़िदमत करके उसके क़दमों को चूमे। कि अल्लाह ने मां के क़दमों के नीचे जन्नत रख दिया है। जिस तरह अल्लाह की राह में जान देकर जन्नत मिल सकती है उसी तरह अगर कोई अपनी मां की ख़िदमत के लिये अपना माल, वक़्त, जान ख़र्च करे तो अल्लाह उसे जन्नत का मुस्तहिक़ बना देगा। और जन्नत मां के क़दमों से दूर नहीं है बल्कि क़दमों के नीचे है। ख़ुदारा! अगर मां ज़िन्दा हो तो रोज़ उसके क़दमों को चूमकर जन्नत की चोखट के चूमने का मज़ा लेते रहो। अल्लाह हम सब पर वालदा का साया दराज़ तर फ़रमाये और उनके क़दमों को चूमकर जन्नत की चोखट चूमने का सवाब हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ मां–बाप का दीदार हज्जे मक़बूल के बराबर ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया :–

मां–बाप के साथ हुस्ने सुलूक करने वाली औलाद जब भी मुहब्बत की

नज़र से वालदैन को देखे तो हर नज़र के बदले अल्लाह मक़बूल हज का सवाब लिख देता है।

सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अगर कोई वालदैन की ज़ियारत दिन में 100 बार करे तो? फ़रमाया अल्लाह बहुत बड़ा है और निहायत ही तक़्दुस वाला है। *(मिश्कात, बाबुल बिर्रे वस्सिला)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मां बाप के दीदार की फ़ज़ीलत रहमते आलम ने बयान फ़रमाई कि महब्बत भरी नज़र पर हज्जे मक़बूल का सवाब। हज्जे मक़बूल की जज़ा सिवाए जन्नत के क्या हो सकती है? अगर हज मक़बूल हो गया तो बंदा गुनाहों से ऐसा पाक हो गया जैसे आज ही अपनी मां के पेट से पैदा हुआ। गोया मां बाप को मुहब्बत की नज़र से देखना गुनाहों से छुटकारे का ज़रिया है और हुसूले जन्नत का भी ज़रिया है। काश ! कि आज का मुसलमान इस हदीसे पाक की अहमियत समझता और मुहब्बत की नज़र से मां बाप के दीदार की सआदत हासिल करता। अल्लाह हम सबको मुहब्बत के साथ वालदैन के दीदार की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ वालिद की दुआ ★

मां बाप औलाद के लिये बारगाहे ख़ुदावंदी में जो भी दुआ करें अल्लाह उसे क़बूल फ़रमाता है। चुनांचे हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, तीन आदमियों की दुआ क़बूल होती है :—

वालिद की दुआ औलाद के लिये। मुसाफ़िर की दुआ। मज़लूम की दुआ।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! वालिद जो भी दुआ अपनी औलाद के लिये करेगा उसमें रिया का दख़ल नहीं होगा बल्कि दिल से दुआ करेगा और जो दुआ दिल से हो वह बारगाहे समदियतमें मक़बूल होती है। शायद ही दुनिया में कोई ऐसा बाप हो जो अपने बच्चों के लिये इख़लास न रखता हो, हर बाप के लिये औलाद आंखों की ठंडक हुआ करती है। बाप बड़े नाज़ों से अपने बच्चों की परवरिश करता है और उनक लिये दुखों को सहता और

बर्दाश्त करता है। अब औलाद जवान होने के बाद बाप की ज़रूरत, उनकी शफ़क़त से अपने आपको बे नियाज़ समझने लगती है और उनकी दुआओं से भी बे नियाज़ हो जाती है और उनकी दुआ लेने की कोशिश नहीं करती, उनको बाप की अहमियत बताई जा रही है कि जिस तरह बचपन में तुम्हारे बाप तुम पर शफ़ीक़ थे वैसे आज भी उनकी दुआ तुम्हारे लिये निहायत ही अहम है अगर आज वह तुम्हारी ख़िदमत नहीं कर सकते तो कोई बात नहीं तुम उनकी ख़िदमत करके उनसे दुआ लो, उनकी दुआ तुम्हारी बिगड़ी बना देगी। अल्लाह हम सबको रहमते आलम के सदक़ा व तुफ़ैल में अपने वालिद की दुआ लेने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ मां का हक़ ज़्यादा है ★

बाप के मुक़ाबले में मां के एहसानात ज़्यादा हैं इसलिये परवर्दिगारे आलम ने मां का हक़ बाप से ज़्यादा मुतय्यन किया है और मां के साथ खुसूसी हुस्ने सलूक की ताकीद फ़रमाई है।

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि एक मर्तबा एक शख़्स रसूलुल्लाह की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुआ, उसने सवाल किया या रसूलुल्लाह! सबसे ज़्यादा मेरी ख़िदमत का मुस्तहिक़ कौन है? आक़ा ने इरशाद फ़रमाया, तेरी मां। उसने अर्ज़ किया फिर कौन? आप ने इरशाद फ़रमाया। तेरी मां। साइल ने अर्ज़ किया, फिर कौन? इरशाद हुआ तेरी मां। दर्याफ़्त किया उसके बाद? रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, तेरा बाप। *(सहीह बुख़ारी शरीफ, मिश्कात शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! इस हदीसे पाक से मां की फ़ज़ीलत रोज़े रौशन की तरह अयां है कि ख़ुदा वहदहू ला शरीक और उसके महबूब की नज़र में मां की कितनी अज़मत और कितना बुलंद मक़ाम है। साइल ने एक ही सवाल चार मर्तबा दोहराया, तीन मर्तबा ज़बाने नबवी से जवाब मिलता है वो मां है और चौथी मर्तबा ज़बाने नबवी पर आता है, वह बाप है।

ग़ौर कीजिये हुज़ूर ने एहसान और हुस्ने सुलूक की सबसे ज़्यादा

मुस्तहिक़ मां को क़रार दिया और चौथी दफ़ा बाप को। इसकी वजह यह है कि वह नो माह तक हमल का बोझ उठाती और जनने की तकलीफ़ व मशक़्क़त बर्दाश्त करती है, फिर दो साल तक बच्चे को दूध पिलाती है। यह दूध क्या है? दर हक़ीक़त उसका ख़ून है जो बच्चे को ख़ुशी ख़ुशी पिलाती है। फिर अपने पास सुलाती है और उसका बोल व बुराज़ धोती है अगर बिस्तर पर पेशाब कर दे तो गीली जगह पर ख़ूद सोती है और बच्चे को ख़ुश्क जगह सुलाती है। सारी सारी रात उसकी बीमारी का ग़म सहती है और हज़ार हा तकलीफ़ बर्दाश्त करती है, यही वह असबाब हैं कि इस्लाम ने वालदा का हक़ औलाद पर ज़्यादा रखा है।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा बयान करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह की ख़िदमत में अर्ज़ किया, औरत पर किसका हक़ ज़्यादा है? फ़रमाया उसके ख़ाविन्द का। फिर मैंने अर्ज़ किया।

मर्द पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है ? फ़रमाया, उसकी वालिदा का। *(मुस्नदे बज़्ज़ार अलमुस्तदरक लिल हाकिम)*

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहमद रज़ा खां मुहद्दिसे बरेलवी قدس سرہ फ़रमाते हैं, इस ज़ियादत के माअना यह हैं कि ख़िदमत देने में बाप पर मां को तरजीह दे मसलन सौ रुपये हैं और कोई ख़ास वजह मानेअे तफ़ज़ीले मादर नहीं तो बाप को पच्चीस दे और मां को पछत्तर, या मां बाप दोनों ने एक साथ पानी मांगा तो पहले मां को पिलाये फिर बाप को, या दोनों सफ़र से आये तो पहले मां के पांव दबाये फिर बाप के, व अला हाज़ल क़ियास। (याअनी इस तरह सब कामोंमे खयाल करे।) न यह कि अगर वालदैन में बाहर तनाज़ेअ हो तो मां का साथ देकर मआज़ल्लाह बाप के दर पए ईज़ा हो या उस पर किसी तरह दरश्ती करे या उसे जवाब दे या बे अदबाना आखें मिलाकर बात करे, यह सब बातें हराम हैं और अल्लाह तआला की मअसियत। और अल्लाह तआला की मअसियत में न मां की इताअत न बाप की। तो उसे मां बाप में किसी का ऐसा साथ देना हरगिज़ जाइज़ नहीं। वह दोनों उसकी जन्नत व नार हैं, जिसे ईज़ा देगा दौज़ख़ का मुस्तहिक़ होगा।

मअसियते ख़ालिक़ में किसी की इताअत नहीं। अगर मसलन मां चाहती है कि यह बाप को किसी तरह आज़ार पहुंचाये और यह नहीं मानता तो वह नाराज़ होती है, होने दे और हरगिज़ न माने, ऐसे ही बाप की तरफ़ से मां के मामले में उनकी ऐसी नाराज़ियां कुछ क़ाबिले लिहाज़ न होंगी, उनकी नरी ज़्यादती है कि इससे अल्लाह तआला की नाफ़रमानी चाहते हैं। बल्कि हमारे उलेमाए किराम ने यूं तक़सीम फ़रमायी है कि ख़िदमत में मां को तरजीह है जिसकी मिसालें हम लिख आये और ताज़ीम बाप की ज़ायद है कि वह उसकी मां का भी हाकिम व आक़ा। *(फतावा रज़विय्यह, हिस्सा अव्वल)*

अल्लाह तआला हम सबको अपनी मां का हक़ और उनकी ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ मां की ममता ★

मां को अपनी औलाद से बेहद मुहब्बत होती है वह सब कुछ बर्दाश्त कर लेती है लेकिन औलाद को कोई तकलीफ़ पहुंचे तो बर्दाश्त नहीं कर सकती। मां को अपनी औलाद जान से ज़्यादा प्यारी होती है।

रसूलुल्लाह के ज़माने में किसी सहाबी ने किसी बात पर अपनी बीवी को तलाक़ दे दी और चाहा कि अपना बच्चा भी ले लें। मां का बुरा हाल था। एक तो शौहर के छूटने का सदमा दूसरे यह ग़म कि जिगर का टुकड़ा, ग़म ग़लत करने का सहारा भी छीना जायेगा। ग़म से निढाल, परेशान हाल, रहमते आलम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अपनी ममता (दास्ताने ग़म) बड़े ही दर्द भरे अलफ़ाज़ में सुनायी।

ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे शौहर ने मुझे तलाक़ दे दी और मैं उनकी सरपरस्ती से महरूम हो गयी। ऐ अल्लाह के रसूल! अब वह मुझसे मेरे इस नन्हें को छीनना चाहते हैं।

ऐ रहमते आलम! यह मेरा प्यारा बच्चा है, मेरा पेट इसकी आरामगाह है, मेरी छातियां इसकी मश्कीज़ा हैं और मेरी गोद इसका घर है। मुझे इससे आराम व सकून है। ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इस सदमे को कैसे बर्दाश्त करूंगी? रहमते आलम ने इरशाद फ़रमाया! कुर्रा अंदाज़ी कर लो! बाप ने आगे बढ़कर कहा, या रसूलुल्लाह! यह मेरा बच्चा है। मेरे बच्चे का

भला और कौन दावेदार हो सकता है ? आप ने लड़के की तरफ़ मुख़ातब होकर फ़रमाया, बेटे ! तुम जिसका हाथ चाहो पकड़ लो। लड़के ने मां का हाथ पकड़ लिया। रहमते आलम ने लड़के की मां से फ़रमाया, जाओ ! जब तक तुम दूसरा निकाह न कर लो तुमसे इसको कोई नहीं छीन सकता।

★ कलेजे से मां की ममता भरी आवाज़ ★

बयान किया जाता है कि एक शख़्स एक बदकार औरत पर आशिक़ हो गया और उसने उससे शादी करने का ख़्याल ज़ाहिर किया। उस बदकार औरत ने यह शर्त रखी कि अगर तुम अपनी मां का सीना चाक करके उसका कलेजा मेरे पास लाओ तो मैं शादी के लिये तैयार हूं। वह बदबख़्त इंसान उस औरत के दामे फ़रेब में आकर रात अपनी मां को छुरी से हलाक करके सीना चीर कर कलेजा निकाल कर उसक बदकार औरत के पास जाने के लिये रवाना हो जाता है। रास्ते में ठोकर खाकर गिर पड़ता है और हाथ से कलेजा भी दूर जा गिरता है तो उस कलेजे से आवाज़ आती है, बेटा ! तुम को चोट तो नहीं लगी? यह है मां की मुहब्बत जिसकी मिसाल नहीं मिलती कि मरने के बाद भी औलाद की तकलीफ़ को गवारा नहीं करती।

★ मां का हक़ ★

एक शख़्स ने अपनी मां को कंधे पर सवार करके सात हज कराये। सातवें हज पर ख़्याल आया कि शायद मैंने मां का हक़ अदा कर दिया। रात को ख़्वाब में देखा कि कोई कहने वाला कह रहा था कि जब तू बच्चा था और सर्दी सख़्त थी तो मां के पास सो रहा था। तूने पाख़ाना कर दिया, तेरी मां ने बिस्तर उठाकर धोया ग़रीबी की वजह से दूसरा बिस्तर न था। तेरी मां उसी गीले बिस्तर पर कड़कती सर्दी में लेट गयी और तुझको रात भर अपने सीने पर लिटाये रखा। तू कहता है कि हक़ अदा हो गया ?! ऐ नादान! अभी तो उस एक रात का भी हक़ अदा नहीं हुआ।

हदीस शरीफ़ में है कि एक सहाबा ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! एक राह में ऐसे गर्म पत्थरों पर कि गोश्त उन पर डाला जाता तो कबाब बन जाता मैं छः मील तक अपनी मां को अपनी गर्दन पर सवार करके ले गया हूं। क्या अब उसका हक़ अदा हो गया ? रसूलुल्लाह

ने इरशाद फ़रमाया, तेरे पैदा होने में जिस क़दर दर्दों के झटके उसने उठाये हैं शायद उनमें से एक झटके का बदला हो सके। *(तिब्रानी)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हमारी विलादत के वक़्त दर्द के जो झटके मां ने बर्दाश्त किये हैं रहमते आलम उस दर्द की अहमियत को बयान फ़रमा रहे हैं और सहाबीए रसूल की ख़िदमत पर क़ुरबान जाइये कि छः मील तक कंधे पर उठाकर ले जा रहे हैं और वह भी सख़्त चिल्लाती धूप में कि काश ! मेरी वालदा का हक़ अदा हो जाये। लेकिन रसूलुल्लाह उस ख़िदमत की अहमियत और मां के दर्द दोनों का मक़ाम बता रहे है। ता कि हर बच्चा अपनी मां के दर्द और तकलीफ़ को महसूस करे और पूरी ज़िन्दगी उनके क़दमों से लिपटा रहे और हक़ की अदायगी में कोताही न करे। रब्बे क़दीर हम सबको अपनी वालदा के मक़ाम को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ मां के साथ सुलूक ★

सैय्यदना हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہما कहते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह ! मुझसे एक बड़ा गुनाह हो गया, क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ? आक़ा ने उससे दर्याफ़्त फ़रमाया, क्या तुम्हारी मां ज़िन्दा है ? उसने कहा, नहीं। आप ने फ़रमाया, क्या तुम्हारी ख़ाला हैं ? कहा, हां। हुज़ूरे अकरम ने इरशाद फ़रमाया, उसके साथ भलाई करो। *(तिर्मिज़ी शरीफ, जिल्द–2, सफा–12)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! इस वाक़िये से मां की अज़मत व हुरमत और मां की दीनी अहमियत का अंदाज़ा हो सकता है कि अगर इंसान बड़े से बड़े गुनाह कर ले तो उसके अज़ाब से बचने और ख़ुदा को राज़ी करने की शक्ल प्यारे मुस्तफ़ा ने यह बताई कि मां के साथ नेक सुलूक किया जाये। और यह ख़ुदा की रहमत की इंतेहा है कि अगर मां दुनिया से कूच कर गयी हो तो मां की बहन के साथ हुस्ने सुलूक करके इंसान अपनी आख़ेरत संवार सकता है। इससे क़राबत दारों से हुस्ने सुलूक की अहमियत भी समझ में आती है।

★ रज़ाई मां के साथ सुलूक ★

हज़रत अबुल तुफ़ैल से मरवी है :–

यानी मैंने मक़ाम जाअराना में रसूलुल्लाह को देखा कि गोश्त बांट रहे थे। इतने में एक ख़ातून आयीं और नबी करीम के बिल्कुल क़रीब चली गयीं। आप ने उनके लिये अपनी चादर मुबारक बिछा दी। मैंने लोगों से पूछा, यह कौन साहिबा हैं? लोगों ने बताया कि यह नबी करीम की वालेदा हैं, इन्होंने आपको दूध पिलाया था।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! रहमते आलम की ज़िन्दगी हमारे लिये उसवए हसना है। अल्लाह ने सरकारे दो आलम के नक़्शे क़दम पर चलने का हुक्म दिया। लेकिन हमारा हाल यह है कि जो चीज़ नफ़्स के लिये आसान है उसे इख़्तेयार कर लेते हैं और जो चीज़ नफ़्स पर गिरां है उसको छोड़ देते है और बहाना बाज़ी शुरू कर देते हैं। आप अंदाज़ा लगाइये कि ताजदारे कायनात रज़ाई मां का एहतेराम और ख़िदमत का अंदाज़ा बता रहे हैं। रज़ाई मां कौन है? अपनी हक़ीक़ी मां के अलावा बच्चा जिस औरत का दूध पीता है वह उसकी रज़ाई मां कहलाती है। आज सरकारे दो आलम की मुहब्बत के दावेदार हक़ीक़ी मां से कैसा सुलूक कर रहे हैं इसका एहतेसाब हमें ख़ूद करना चाहिये। अल्लाह हम सबको तालीमाते रसूल पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ मां के क़दम को बोसा देने की फ़ज़ीलत ★

एक रोज़ एक शख़्स ने हज़रत अबू इस्हाक़ से ज़िक्र किया कि रात को ख़्वाब में मैंने आपकी दाढ़ी याकूत और जवाहिर से मुरस्सअ देखी है। हज़रत अबू इस्हाक़ फरमाने लगे, तूने सच कहा। रात को मैंने अपनी मां के क़दम चूमे थे यह उसकी बरकत है। फिर एक हदीसे पाक सुनाई कि शहंशाहे कोनैन इरशाद फ़रमाते हैं कि

अल्लाह ने लोहे महफ़ूज़ पर लिख दिया है :

यानी मैं ही खुदा हूं मेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, जिस शख़्स के वालदैन उससे राज़ी हैं मैं भी उससे राज़ी हूं। *(नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हिकायत व हदीस शरीफ़ से यह बात साबित होती है कि मां के क़दमों के बोसा लेने पर दाढ़ी जो सुन्नते रसूल है वह याकूत व जवाहिर से मुरस्सा हो जाती है और रब्बे क़दीर ने लोहे महफ़ूज़ पर अपने मअबूदे बरहक़ होने के साथ इस बात का भी ज़िक्र फ़रमाया कि वालदैन को ख़ुश रखने वालो! बज़ाहिर तुम्हारे अमल से वालदैन राज़ी होते हैं लेकिन दर हक़ीक़त तुम उनको ख़ुश करके मेरी ख़ुशी के हक़दार बन रहे हो। लिहाज़ा हमको चाहिये कि वालदैन की रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल करने में कोताही न करें।

★ फ़रिश्ते ज़ियारत को आयें ★

हुजूर अक़दस ने इरशाद फ़रमाया, जो सवाब की नियत से मां बाप या उन दोनों में से एक की ज़ियारते क़ब्र करे तो हज्जे मबरूर का सवाब पाये। जो मां बाप या उन दोनों में से किसी एक की क़ब्र की ज़ियारत कसरत से करता हो तो फ़रिश्ते उसकी क़ब्र की ज़ियारत को आयेंगे।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! वालदैन जब बक़ैदे हयात होते हैं तो ज़मीन के ऊपर अपनी औलाद की राहत का ज़रिया होते हैं और फ़रमाबर्दार औलाद कभी वालदैन की ख़िदमत करके, कभी उनकी ज़ियारत करके, कभी उनको ख़ुश करके बे शुमार नेकियों का हक़दार बन जाती है। इसी तरह वालदैन की अज़मत को और उनकी ख़िदमत को ताजदारे कायनात उनके इंतेक़ाल के बाद भी ज़रुरी क़रार देते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : वालदैन की क़ब्रों की ज़ियारत करने वालों को सिर्फ़ फ़ातेहा पढ़ने का सवाब नहीं बल्कि हज्जे मबरूर का सवाब मिलने की बशारते उज़्मा अता फ़रमायी। ओर करम बालाए करम यह कि जब वालदैन की क़ब्र की ज़ियारत करने वाला इस दुनिया से कूच करेगा तो उसकी क़ब्र की ज़ियारत के लिये अल्लाह के मासूम फ़रिश्ते तशरीफ़ लायेंगे। रब्बे क़दीर अपने प्यारे

महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल हम सबको अपने वालदैन की ख़िदमत बग़र्ज़े सवाब व हक़ जानते हुए करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ वालिदा की ख़िदमत का सिला ★

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी बयान करते हैं कि सख़्त तरीन सर्दी की रातों में एक रात मेरी वालिदा माजिदा ने पानी तलब किया। जब पानी लाया तो वालिदा माजिदा सो चुकी थीं, मैंने अदबन जगाना पसंद न किया और बेदारी के इंतज़ार में खड़ा रहा। जब बेदार हुईं तो उन्होंने पानी मांगा, मैंने प्याला पेश कर दिया। मेरी उंगली पर एक क़तरा पानी गिरा सर्दी की शिद्दत से वह जम गया मैंने उतारना चाहा तो मांस उखड़ा और ख़ून जारी हो गया। वालदा माजदा ने देखा तो पूछा यह क्या है ? मैंने तमाम माजरा बयान कर दिया। आप दुआ फ़र्माने लगीं, इलाही। मैं इस पर राज़ी हूं तू भी राज़ी रह। आप जब अपनी वालदा के शिकम मुबारक में थे तो उन्होंने कभी मशतबा खाना न खाया।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी फ़रमाते हैं कि मैं बीस बरस का था कि वालेदा माजेदा ने मुझे बुलाया और अपने साथ सुलाया। मैंने बतौर तकिया वालदा के सर के नीचे हाथ रख दिया जो सुन हो गया । मैंने अदब व एहतेराम को मलहूज़ रखते हुए हाथ को निकालना मुनासिब न समझा ता कि वालदा की नींद और आराम में ख़लल वाक़ेअ न हो। उस दौरान मैं सूरए इख़्लास का वज़ीफ़ा करता रहा यहां तक कि दस हज़ार मर्तबा मैंने पढ़ा और वालेदा के हक़ की मुहाफ़ज़त के लिये अपने हाथ से बे नियाज़ हो गया। (यानी फिर मैं उस हाथ के मफ़लूज होने के बाइस काम न ले सका)

आपके विसाल के बाद किसी दोस्त ने ख़्वाब में देखा कि आप जन्नत में बड़े मज़े से टहल रहे हैं और अल्लाह तआला की तस्बीह में महवे परवाज़ हैं। पूछा गया कि आप को यह मक़ाम कैसे नसीब हुआ? फ़रमाया, वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक, ख़िदमत गुज़ारी और उनकी सख़्त बातों पर सब्र व इस्तेक़ामत की वजह से क्योंकि नबी करीम ने फ़रमाया, जो शख़्स अपने वालदैन और रब्बुल आलमीन का फ़रमांबर्दार होगा उसका मक़ाम आला इल्लीयीन में है।

★ हज़रत मूसा की जन्नत में रिफ़ाक़त ★

अल्लामा इब्ने जौज़ी अपनी मशहूर तालीफ़ किताब में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा ने दुआ की इलाही! मुझे मेरा रफ़ीक़े जन्नत दुनिया ही में दिखा दे। इरशाद हुआ, फ़लां शहर जाइये वहां एक क़स्साब से मुलाक़ात करें कि वही तुम्हारा जन्नत में साथी है। हज़रत मूसा उसके पास पहुंचे। उसने आपको देखते ही अर्ज़ किया, ऐ नौजवान! क्या तुम मेरी दावत क़बूल करोगे ? आपने फ़रमाया, हां ! वह अपने घर ले गया । उसने आपके सामने खाना चुना। जब खाने लगे तो वह एक लुक़मा ख़ुद उठाता और दो लुक़मे अपनी क़रीब पड़ी ज़ंबील में डाल देता। उसी असना में दरवाज़ा खटका वह उठा और हज़रत मूसा ने जंबील में देखा, उसके वालिदैन निहायत बुढ़े और नहीफ़तरीन हालत में हैं, हज़रत मूसा को देखकर दोनों मुस्कुराए फिर आपकी रिसालत की तस्दीक़ करके ईमान की दौलत से मुशर्रफ़ होते ही फ़ौत हो गये।

वह नौजवान वापस पलटा, जंबील में देखा कि उसके मां बाप फ़ौत हो चुके हैं वह मुस्कुराया फिर उसने हज़रत मूसा के हाथ चूमे और आप पर ईमान ले आया। कहने लगा, ऐ मूसा ! आप अल्लाह के नबी और रसूल हैं। आपने फ़रमाया, तुझे कैसे मालूम हुआ? कहा इन दोनों ने जो इस जंबील में हैं। यह मेरे मां बाप हैं, यह इतने बूढ़े हो चुके थे कि मैं इन्हें अकेले नहीं छोड़ता था जहां जाता साथ लिये फिरता, जब तक इन्हें खिला पिला न लेता ख़ूद नहीं खाता था, जब यह शिकम सैर होकर खाना खा लेते तो रोजाना दुआ फ़रमाते, इलाही! हमारे इस बेटे को जन्नत में हज़रत मूसा का साथ नसीब फ़रमा और हमारी उस वक़्त तक जान न निकले जब तक तेरे कलीम की ज़ियारत न कर पायें। आप ने फ़रमाया, ऐ नौजवान ! फिर तुझे बशारत हो के तेरे वालदैन की दुआ तेरे हक़ में अल्लाह ने क़बूल फ़रमा ली है। *(नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! वालदैन की दिल से ख़िदमत का सिला क्या क्या मिलता है ? कितने साहिबे अक़्ल थे वह वालदैन जिन्होंने हज़रत मूसा की रफाक़त की दुआ अपनी औलाद को दी। दर असल

वालदैन के दिल से दुआ का अज खूद निकलना यह मौकूफ़ है उनकी ख़ुशनूदी और उनकी ख़िदमत पर। कस्साब को हज़रत कलीम की दावत में भी वालदैन की भूख का ख़्याल था और उस क़स्साब ने अपने वालदैन के लिये उस खाने में से कुछ हिस्सा रखा और उन को पेश किया तो अल्लाह ने हज़रत कलीम का उसे जन्नत का साथी बना दिया। मौला तआला सरकारे दो आलम के सदक़ा व तुफ़ैल में वालदैन की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ मां की दुआ ★

हज़रत मूसा इंताकिया से शाम का इरादा करके बाहर निकले, चलते चलते थक गये तो अल्लाह तआला ने वही फ़रमाई कि मेरे कलीम इस पहाड़ की वादी में अतराफ़ व अकनाफ से आये हुए लोग मौजूद हैं, उनमें मेरा एक ख़ास बंदा भी है। उससे सवारी तलब करें। आपने उसे नमाज़ पढ़ते देखा। जब वह फ़ारिग़ हुआ तो आपने कहा, ऐ बंदए ख़ुदा! मुझे सवारी चाहिये। उसने आसमान की तरफ़ निगाह उठायी तो बादल का एक टुकड़ा आता दिखाई दिया उसने कहा नीचे आ और इस इंसान को जहां चाहता है पहुंचा दे। चुनांचे हज़रत मूसा उस पर सवार हुए और चल दिये अल्लाह ने फ़रमाया। ऐ मेरे कलीम! तुम्हें मालूम होना चाहिये कि यह मर्तबा उसे कैसे हासिल हुआ? सुनिये। यह मर्तबा मैंने उसे मां की ख़िदमत के सिले में दिया ! उसकी मां ने बवक़्ते अजल दुआ मांगी थी, इलाही ! उसने मेरी ज़रूरियात का ख़्याल रखा इसलिये तेरे हुजूर मेरी दुआ है, तुझ से यह जो भी तलब करे उसे अता फ़रमा। अगर यह मुझसे आसमान को ज़मीन पर उलट देने की भी दरख़्वास्त करे तो मंजूर कर लूंगा। *(नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला औलाद के हक़ में मां की दुआ को किस तरह क़बूल फ़रमाता है इसका अंदाज़ा आपने मज़कूरा वाक़ि‌ये से बख़ूबी लगा लिया होगा। ख़ुशनसीब है वह शख़्स जो वालदैन की ख़िदमत करके मौला की रहमतों और नेअमतों का हक़दार बनता है। रब्बे क़दीर अपने प्यारे महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको वालदैन की

कमा हक़्क़हू ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ उम्र में बरकत ★

हज़रत मआज़ से रिवायत है कि नबी करीम का फ़रमाने आलीशान है :–

जो मां बाप की ताबेदारी करता है अल्लाह उसकी उम्र में इज़ाफ़ा फ़रमाता है। *(अदबुल मुफ़रद)*

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो। कौन अपनी उम्र में बरकत नहीं चाहता? कोई दवा के ज़रिये, कोई दुआ के ज़रिये लेकिन सब मुतमन्नी हैं लेकिन ताजदारे कोनैन का फ़रमान यक़ीनी है। आक़ाए कायनात ने जब इरशाद फ़रमा दिया कि वालदैन की इताअत फ़रमाबर्दारी से अल्लाह तआला उम्र में बरकतें अता फ़रमाता है। लिहाज़ा जिस किसी को अपनी उम्र में बरकत और कामयाबी दरकार हो उसे चाहिये कि वालदैन की ताबेदारी व फ़रमाबर्दारी करे। इंशाअल्लाह उम्र में बरकतों के अलावा उसकी औलाद भी उसकी फ़रमाबर्दारी करेगी।

और इसी तरह हज़रत वहब बिन मुनब्बिह से मरवी है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा पर वही नाज़िल फ़रमाइ, ऐ मूसा ! अपने वालदैन का एहतेराम किया करो, इसलिये कि जो वालदैन का एहतेराम करेगा मैं उसकी उम्र में इज़ाफ़ा करता हूं और उसे ऐसी औलाद अता फ़रमाता हूं जो उसकी फ़रमाबर्दारी करे। और जो वालदैन की नाफ़रमानी करता है उसकी उम्र कम कर देता हूं और उसकी औलाद भी उसकी नाफ़रमानी करती है।

★ औलाद का माल वालदेन का होता है ★

मरवी है कि एक शख़्स ने हुजूरे अकरम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि उससे उसका बाप उसका माल व असबाब छीन लेता है। हुजूर ने उसके बाप को बुलाया तो वह लाठी के ज़रिये चलता हुआ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुआ। आपने उससे माजरा पूछा तो उसने अर्ज़ किया कि जब यह कमज़ोर और मैं क़वी था और मैं दौलतमंद और यह फ़क़ीर

था तो मैं उसे माल व असबाब से नहीं रोकता था। अब मैं ज़ईफ़ और यह क़वी और यह दौलतमंद और मैं फ़क़ीर हूं लेकिन मुझसे अपने माल के मुताल्लिक़ बख़ीली करता है। हुजूर बुढ़े की बात सुनकर रो पड़े और फ़रमाया कि तेरी बात जिस पत्थर और ढेले ने सुनी सब रोए। उसके बाद उस शिकायत करने वाले नौजवान को फ़रमाया तू और तेरा तमाम माल तेरे बाप का है। *(तफसीरे रुहुल बयान, जिल्द हश्तुम)*

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो! हमें कभी भी अपने बचपने को फ़रामोश नहीं करना चाहिये। हम जब छोटे थे तो कितने कमज़ोर व नातवां थे। कोई काम ख़ूद न कर सकते थे और न अपनी आरजूओं की तकमील ख़ूद से कर पाते थे। उस वक़्त हमारे वालदैन ही हमारी आरजूओं और तमन्नाओं की तकमील के लिये जद्दो जोहद और कुरबानियां देते रहे। अब अगर वह बुढ़ापे व कमज़ोर हैं तो हमारी ज़िम्मेदारी है कि उनकी आरजूओं की तकमील में कोताही न करें। आखिर हमें भी तो बुढ़ा होना है। आज जब वालदैन के बुढ़ापे पर हम उनका ख़्याल रखेंगे तो इंशाअल्लाह जब हम बूढ़ें होंगे तो हमारी औलाद भी हमारा ख़्याल रखेगी। अल्लाह हम सबको अपने वालदेन पर माल व जान कुरबान करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ वालिदैन की नाफ़रमानी का अंजाम ★

वालदैन की नाफ़रमानी यह है कि उनकी इताअत व फ़रमाबर्दारी न की जाये, उनके हुकूक अदा न किये जायें और ऐसे काम किये जायें जो उनको नाराज़ करने वाले हों, उनको ईज़ा पहुंचाई जाये, ख्वाह उफ़ कह कर या तहक़ीर की नज़र से देख कर या उनकी अहानत करके हो, अल्लाह के मुक़द्दस कलाम, कुरआन मजीद ने नाफ़रमानी के मुआमला में बहुत सख़्ती की है। उनसे तंग दिल और उफ़ तक कहने से रोका है। इरशादे बारी तआला है : तो तुम उनसे "हूं" भी न कहना और न उन्हें झिड़कना। और जो लोग वालदेन के लिये ऐसा जुमला निकालते हैं, उन पर सख़्त वईद फ़रमाई है। चुनांचे इरशाद है :–

यानी जिसने अपने मां बाप से कहा "उफ़" तुम से दिल पक गया है! क्या मुझे वादा देते हो कि फिर ज़िन्दा किया जाऊंगा ? हालांकि मुझसे पहले संगतें गुज़र चुकी हैं और वह दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते हैं तेरी ख़राबी हो ईमान ला। *(सूरए अहनाफ, पारा–26, आयत–17)*

वालदैन का नाफ़रमान किस क़िस्म के अज़ाब में मुब्तेला होता है? अब अहादीस की रौशनी में मुलाहज़ा करें।

★ जन्नत की ख़ुश्बू से महरूम ★

मोहसिने इंसानियत रहमते आलम ने इरशाद फ़रमायाः कि मां बाप की नाफ़रमानी से बचो, इस लिये कि जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है और वालदैन का नाफ़रमान उसकी ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा और इसी तरह रिश्ता तोड़ने वाला, बुढ़ा ज़ानी, और तकब्बुर से तहबंद से नीचे पहनने वाला भी जन्नत की ख़ुश्बू न पा सकेगा। बेशक! किब्रियाई तो सिर्फ़ अल्लाह ही को लाइक़ है। *(मदारिकुत्तन्ज़ील)*

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! इत्र, फूल, मुश्क वग़ैरह की ख़ुश्बू इंसान को राहत सुकून अता करती है। यह दुनिया की ख़ुश्बू का हाल है। अल्लाह तआला ने जन्नत को इतना हसीन बनाया है कि उसकी ख़ुश्बू दुनिया की ख़ुश्बू की तरह नहीं कि चंद मिनट और चंद क़दम तक आती हो बल्कि ताजदारे कायनात ने इरशाद फ़रमाया, हज़ार बरस की दूरी से जन्नत की ख़ुश्बू आती है। मगर कितना कम नसीब है वह शख़्स जो वालदैन की ना फ़रमानी का मुर्तकिब होकर जन्नत की ख़ुश्बू से भी महरूम रहेगा और जब ख़ुश्बू नहीं मिलेगी तो जन्नत कहां से मिलेगी? अल्लाह तआला रहमते आलम के सदक़ा व तुफ़ैल जन्नत की ख़ुश्बू और जन्नत का हक़दार बनाये और जुमला गुनाहों से बचाये। आमीन।

★ वालिदैन को रुलाना मना है ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर कहते हैं कि वालदैन को परेशान

रखना और रुलाना गुनाहे कबीरा है।

वालदैन को रुलाना वालदैन की नाफ़रमानी है और कबीरा गुनाहों में से है।

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ख़बरदार ! अपने वालदैन को कभी मत रुलाना और न कभी परेशान करना वरना अल्लाह तआला नाराज़ हो जायेगा और दामन पर गुनाहे कबीरा का दाग़ लग जायेगा। अल्लाह तआला रहमते आलम के सदक़ा व तुफ़ैल अपने वालदैन के सताने के जुर्म से हमें बचाये।

★ वालिदैन को मारने वाले की सज़ा ★

मश्हूर सहाबीए रसूल हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, सात आदमी ऐसे हैं जिनकी तरफ़ अल्लाह तआला नज़रे रहमत न फ़रमायेगा, न उनका तज़किया फ़रमायेगा और उनको लोगों के साथ जमा फ़रमायेगा मगर यह कि वह लोग तौबा कर लें, जो तौबा करता है अल्लाह उसकी तौबा क़बूल फ़रमाता है :—

मुश्तज़नी करने वाला, लवातत करने वाला, कराने वाला, शराबी, वालदैन को मारने वाला हत्ता कि उन्हें फ़रयादरसी करना पड़े, पड़ौसियों को इतनी ईज़ा पहुंचाने वाला कि वह उसे लानत मलामत करने लगें और पड़ौसी की बीवी से ज़िना करने वाला। *(रवाहुल बयहकी फी शोअबुल इमान)*

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! जिन सात गुनाहगारों पर अल्लाह तबारक व तआला नज़रे रहमत नहीं फ़रमायेगा उनके गुनाह आपने सुन लिये। उनमें का हर गुनाह ऐसा है जिस पर तफ़सीलन किताब लिखी जा सकती है मगर चूं कि मौज़ू वालदैन के मुताल्लिक़ है इस लिये इसी के हवाले से अर्ज़ करता हूं कि मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! वालदैन जो अपनी औलाद को निहायत ही मेहनत व मशक़्क़त से परवरिश करते हैं अगर कोई बच्चा उन्हें मारता है यहां तक कि वह मदद तलब करने पर मजबूर हो जायें, ऐसे ज़ालिम शख़्स पर अल्लाह तआला अपनी नज़रे रहमत भी नहीं फ़रमायेगा। मुझे बताओ ! अगर रब की नज़रे रहमत ही रूठ जाये तो कौन है जो हम को महशर की परेशानियों और होलनाकियों से बचा सके? लिहाज़ा अल्लाह की रहमत वाली नज़र का हक़दार बनना चाहते हो तो ज़रूरी है

कि अगर मज़कूरा गुनाहों में से किसी गुनाह का इर्तेकाब हो गया हो तो आइंदा न करने के इरादे से सच्चे दिल से तौबा कर लो वह गफ़ूर रहीम है, ज़रूर अपने बंदे की ख़ता को माफ़ फ़रमा देगा। मौला तआला हम सबको अपने प्यारे महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल उन सातों गुनाहगारों से बचाये और अपनी बे करां रहमत का हक़दार बनाये।

★ रिज़्क़ में तंगी का सबब ★

हज़रत अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया :

यानी आदमी जब मां बाप के लिये दुआ छोड़ देता है तो उसका रिज़्क़ क़तअ हो जाता है। *(कन्जुल उम्माल)*

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! कौन नहीं चाहता कि वह दौलतमंद न हो? हर एक चाहता है मगर अमल किन नुस्ख़ों पर करता है? उन नुस्ख़ों पर अमल करता है जो दुनिया का आम आदमी बताता है। लेकिन रहमते आलम के बताए हुए नुस्ख़ों पर अमल नहीं करता। कितने ताज्जुब की बात है? अपनी तंगीए रिज़्क़ की वजह मुख़्तलिफ़ चीज़ों को समझता है, कभी उसकी नज़र अपने वालदैन के लिये दुआ न करने पर नहीं जाती ! लिहाज़ा दीवानो! अपने आक़ा के फ़रमान को सच्चे दिल में महफ़ूज़ कर लो और आज ही से हर नमाज़ के बाद अपने वालदैन के लिये दुआ करना शुरू करो और दर्ज ज़ैल दुआ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो :—

ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ायम करने वाला रख, और कुछ मेरी औलाद को, ऐ हमारे रब ! हमारी दुआ सुन ले। ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ायम होगा। *(पारा—13, आयत—39)*

इंशाअल्लाह रोज़ी में बर्कत भी होगी, कभी तंगी का साया भी न आयेगा।

रब्बे क़दीर अपने प्यारे हबीब के फ़रमान पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ रोज़े क़यामत सबसे सख़्त अज़ाब ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, क़यामत के रोज़ सबसे सख़्त अज़ाब उस शख़्स को दिया जायेगा जिस ने किसी नबी को क़त्ल किया हो या उसे किसी नबी ने क़त्ल किया हो या उसने अपने वालदैन में से किसी को क़त्ल किया हो और तसवीर बनाने वाले को और ऐसे आलिम को जो अपने इल्म से फ़ायदा न उठाये। *(रवाहुल बयहकी की शोअबुल इमान)*

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! कुछ क़ौमें ऐसी गुज़री हैं जिनके दामन पर अंबियाए علیہم السلام के क़त्ल का दाग़ लगा है जैसे यहूद, और कुछ ऐसे सरकश व बाग़ी ज़मीन में गुज़रे हैं जो अंबियाए किराम علیہم السلام से मुक़ाबला के दर पे रहे, ऐसे लोगों को जंग वग़ैरह में अंबियाए किराम علیہم السلام ने क़त्ल किया उनका ठिकाना तो जहन्नम है ही, लेकिन साथ ही साथ वालदैन के क़ातिल के हवाले से सख़्त तरीन अज़ाब की वईद ताजदारे कायनात ने सुनाकर यह वाज़ेह कर दिया है कि अंबियाए किराम علیہم السلام को क़त्ल करने वाला कितना जाबिर और सख़्त दिल होगा जब कि अंबिया किराम علیہم السلام तो उनको जन्नत का रास्ता और सुकून की दौलत देने के लिये तशरीफ़ लाये थे। इसी तरह वालदैन भी औलाद के सुकून के लिये न जाने कितनी तकालीफ़ और परेशानियां बर्दाश्त करते हैं, नीज़ उनका मक़सद और उनकी ख़ुशी बच्चे को खुश देखने में होती है लेकिन ज़ालिम बेटा अगर वालदैन जैसे मोहसेनीन का क़ातिल बन जाये तो रब्बे क़दीर भी ऐसे एहसान फ़रामोश को सख़्त तरीन अज़ाब में गिरफ़्तार फ़रमाकर उसके जुर्म का बदला अता फ़रमाता है। लिहाज़ा मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ख़बरदार ! कभी ऐसे क़बीह जुर्म का तसव्वुर भी न आने पाये। रब्बे क़दीर सबको इस क़बीह जुर्म के इर्तकाब से बचाये।

★ ख़ात्मा ख़राब होने का अंदेशा ★

मां बाप के नाफ़रमान को दुनिया में जो सबसे बड़ी सज़ा मिलेगी वह यह

है कि उसे मरते वक़्त कलिमा पढ़ना नसीब न होगा। जैसा कि दर्जे ज़ैल अहादीस से मालूम होता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा से रिवायत है कि हम लोग नबी करीम की बारगाह में हाज़िर थे, एक शख़्स आपकी बारगाह में आया और अर्ज़ की कि एक जवान मौत व हयात की कश्मकश और जांकनी के हाल में है, उसे तलक़ीन की गयी कि वह पढ़े मगर न पढ़ सका। सरकारे दो आलम ने पूछा, क्या वह नमाज़ पढ़ता था? तो अर्ज़ किया, हां। यह सुनकर रसूलुल्लाह खड़े हो गये, तो साथ में हम लोग भी खड़े हो गये। आप उस जवान के पास तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया कहो वह बोले यह कलिमा पढ़ने की ताक़त मेरी ज़बान में नहीं, मैं इससे आजिज़ हूं। सरकारे दो आलम ने उसकी वजह पूछी। तो उन्होंने ख़ूद ही बताया कि वह अपनी वालदा माजदा की नाफ़रमानी करते थे। तो सरकारे ने पूछा, कया उनकी वालदा ज़िन्दा हैं ? सहाबाए किराम رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین ने बताया, हां ! ज़िन्दा हैं। तो आपने फ़ौरन उनकी वालदा को तलब किया। वह हाज़िर हुईं तो आपने पूछा, क्या यह तेरा बेटा है? वह बोलीं, हां। :–

तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, अगर आग भड़का दी जाये तो तुझसे क्या कहा जाये कि तुम इसके लिये सिफ़ारिश करो तो हम उसे छोड़ देंगे वरना उसी आग में उसे जला डालेंगे तो क्या तुम अपने बेटे की सिफ़ारिश करोगी? (मां बहरहाल मां होती है उसका दिल अपनी औलाद के लिये रहम व करम का पैकर होता है वह बेटे की नाफ़रमानी व ईज़ा रसानी तो बर्दाश्त कर सकती है मगर उसे यह कभी गवारा न होगा कि उसका लाल उसके लिये आग के दहकते हुए अंगारों में जलाया जाये। रहमते आलम के सवाल के तेवर से उस ख़ातून ने अच्छी तरह महसूस कर लिया कि उसके बेटे के साथ क्या होने वाला है। वह समझ गयी कि मेरा बेटा दुनिया की आग में नहीं बल्कि उससे भी अज़ीयतनाक जहन्नम की आग में मेरी वजह से जला जायेगा)

वह फ़ौरन पुकार उठी : ऐ अल्लाह के रसूल !
अब तो मैं सिफ़ारिश करूंगी।

सैय्यदे आलम ने फ़रमाया, तुम उस पर अल्लाह और मुझे गवाह बनाओ कि तुम इस नौजवान से ख़ुश हो ! और वह बोलीं, ऐ परवर्दिगार! मैं तुझे और मेरे रसूल को गवाह बनाती हूं। फिर रसूलुल्लाह ने उस नौजवान से ख़िताब करके फ़रमाया पढ़ो :—

उन्होंने इस दफ़ा पूरा कलिमा पढ़ दिया। उस वक़्त रसूलुल्लाह ने ख़ुदाए जुल जलाल का शुक्र अदा किया।

अल्लाह तआला का शुक्र है कि उस उसने इस जवान को जहन्नम से बचा लिया।

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! पता चला वली हों या सहाबी, हर एक को मां की नाफ़रमानी की सज़ा और इताअत की जज़ा मिलती है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि मज़कूरा हदीस शरीफ़ से सबक़ हासिल करें। और हुस्ने ख़ात्मा के लिये वालदैन की फ़रमाबर्दारी करें। मां बहरहाल मां होती है बच्चा हज़ार बार मां को सताए लेकिन अगर बच्चे की तकलीफ़ का ख़्याल आ जाये तो मां अपने बच्चे की सारी लग्ज़िशों को माफ़ फ़रमा देती है। अल्लाह हम सबका ख़ात्मा बिलख़ैर फ़रमाये।

★ फ़र्ज़ व नफ़्ल ग़ैर मक़बूल ★

हज़रत अबू इमामा बाहली से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया :

तीन शख़्स हैं कि अल्लाह तआला न उनके नफ़्ल क़बूल करे और फ़र्ज़, मां बाप को ईज़ा देने वाला, और सदक़े वाला और तक़दीर का झुठलाने वाला। *(फतावा रज़विय्यह)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! आदमी खूब नफ़्ल कामों में मसरूफ़ रहता है और इस बात का ख़्याल नहीं करता कि मां बाप को उसकी ख़िदमत की ज़रूरत है या नहीं और वह नफ़्ल कामों में मसरूफ़ रहता है

जिससे उनका दिल दुखता है। इसी तरह अगर कोई फ़राइज़ का पाबंद है और अपने मां बाप को सताता भी रहता है उनको ज़बान से, अमल से ईज़ा देते रहता है और अपने आपको बहुत ही फ़राइज़ वग़ैरह का पाबंद जानता है उसे मज़कूरा हदीस से सबक़ हासिल करना चाहिये कि परवर्दिगार मां बाप को सताने वाले के फ़राइज़ वग़ैरह क़बूल नहीं फ़रमाता। अल्लाह हम सबको अपने वालदैन की ख़िदमत करने के साथ फ़राइज़ व नवाफ़िल की पाबंदी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ नाफ़रमान को फ़ोरी सज़ा दी जाती है ★

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ने इरशाद फ़रमाया, तमाम गुनाहों में अल्लाह जिसे चाहे बख़्श दे मगर मां की नाफ़रमानी व ईज़ा रसानी नहीं बख़्शता। वह उस नाफ़रमान को ज़िन्दगी में ही उसकी सज़ा दे देता है। *(मिश्कात शरीफ)*

बल्कि कुछ वाक़ियात से यह अंदाज़ा होता है कि बेटा बेकुसूर सही अगर उसकी अदना कोताही और ग़फ़लत की वजह से वालदैन नाराज़ हो जायें तो रब्बे क़दीर बेटे पर अेताब फ़रमाता है जैसा कि आने वाले वाक़ियात से आप अंदाज़ा लगायेंगे।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला अपने बंदों पर बे पनाह करम फ़रमाने वाला है, अगर कोई बंदा गुनाहों से नादिम होकर बारगाहे समदियत में आंसू बहाये तो उसकी रहमत को जोश आ जाता है और वह अपने बंदे को बग़ैर कोई सज़ा दिये माफ़ फ़रमा देता है। लेकिन मां बाप के नाफ़रमान के लिये और उनको सताने वाले के लिये वह अेताब व सज़ा का नुज़ूल फ़रमाता है और दुनिया ही में मां बाप की ईज़ा रसानी की सज़ा अता फ़रमा देता है। मुझे बताओ कि हम में का कौन है जो अल्लाह के अेताब को बर्दाश्त करने की ताक़त रखता हो ? अगर नहीं ! तो ख़ुदारा वालदैन को तकलीफ़ देने से परहेज़ करो। अल्लाह हम सबको अपने वालदैन को ख़ुश रखने वालों में बनाये। आमीन।

★ हज़रत जरीज की इबरतनाक कहानी ★

एक दफ़ा ग़ैबदां नबी ने अगली उम्मत के मश्हूर व मारूफ़ वली

हज़रत जरीज رحمۃ اللہ علیہ का वाक़िया बयान फ़रमाया कि वह इबादत गुज़ार थे अपने इबादत ख़ाने में ही अल्लाह की तस्बीह व तमहीद और उसके ज़िक्र में मशगूल रहते थे। एक दिन जब वह नमाज़ में मसरूफ़ थे। उनकी वालदा उन्हें बुलाने आयीं और जरीज कहकर आवाज़ दिया दिल में सोचने लगो। बारालहा! मेरी मां है और मेरी नमाज़ (मैं क्या करूं) मां का कहना मानूं या नमाज़ पढ़ूं ? कुछ देर इसी कश्मकश में परेशान रहे, आख़िर सोच समझकर एक फ़ैसला किया फिर नमाज़ में मशगूल हो गये और मां इंतज़ार करके चली गयी। वह दूसरे रोज़ फिर उन्हें बुलाने आयी और आवाज़ दिया, ऐ जरीज ! मगर आज भी वही कुछ सोचकर नमाज़ में लग गए। ये (और मां की बात न सुनी। मां को बेटे के इस बर्ताव से बड़ा रंज पहुंचा) उसने ख़ुदाए समीअ की बारगाह में यह दुआ कर दी :

इलाही ! जरीज जब तक किसी बदकार का मुंह न देख ले उसे वफ़ात न देना।

बनी इस्राईल में जरीज और उनकी इबादत का ख़ूब चर्चा हो चला था एक फ़ाहेशा औरत (जो हुस्न व जमाल में यकता होने की वजह से) जिसके हुस्न की कहावत कही जाती थी। जरीज के सामने अपने नापाक इरादे के साथ आयी मगर जरीज ने उसकी तरफ़ तवज्जोह न की तो वह एक चरवाहे के पास आयी। बे हया ने उसे अपने ऊपर क़ाबू दिया तो वह उसके साथ बदी में मुलव्विस हुआ । जिसके सबब यह हामिला हो गयी । जब बच्चा पैदा हुआ तो उसने कहा, यह बच्चा जरीज का है (अब लोगों ने आव देखा न ताव) आकर जरीज का इबादतख़ाना ढा दिया और उन्हें मारने लगे। जरीज ने पूछा, तुम लोग यह क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा, तुम ज़िनाकार हो, फ़ला फ़ाहेशा के शिकम से तेरी बदकारी के बाइस बच्चा पैदा हुआ है। जरीज ने पूछा, वह बच्चा कहां है? लोग उसे लेकर आये तो जरीज ने उनसे मोहलत लेकर नमाज़ पढ़ी फिर बच्चे के पास आया :

उसके पेट पर उंगली मारी और कहा, ऐ बच्चे ! तुम किसके नुतफ़े हो? उसने कहा फ़लां चरवाहे का? लोग जरीज की करामत व पाकबाज़ी देखकर बेहद नादिम व शर्मिन्दा हुए और जरीज को बोसा देने और उसकी बुज़ुर्गी से बरकत हासिल

करने लगे उन्होंने कहा, हम तेरा इबादतख़ाना सोने का बनायेंगे। जरीज ने कहा नहीं इसे पहले की तरह मिट्टी का बना दो। तो उन्होंने वैसा ही बना दिया। *(मुस्लिम शरीफ)*

हज़रत जरीज नफ़ल नमाज़ पढ़ रहे थे वह नमाज़ मुख़्तसर करके मां के हुक्म की बजा आवरी के लिये हाज़िर हो सकते थे मगर उन्होंने ऐसा न करके मां को तकलीफ़ पहुंचाई और उसके नतीजे में उन्हें ऐसे शर्मनाक हालात का सामना करना पड़ा कि उनके जैसे तारीकुद्दुन्या के लिये उससे ज़्यादा शर्मनाक वाक़िया नहीं हो सकता।

यहां पर सज़ा की ताय्युन कुदरत ने नहीं की है बल्कि मां ने ही उसकी ताय्युन कर दी थी फिर अमल व जज़ा में यक गोनां मनासिबत ज़रूर पाई जाती है उन्होंने थोड़ी देर नमाज़ मौकूफ़ करके मां का मुंह देखना पसंद न किया था तो उसके बदले में उन्हें मजबूर होकर एक बदज़ात फ़ाहेशा का मुंह भी देखना पड़ा। उन्होंने अपनी मां के साथ कुछ इस तरह का सलूक किया था जैसे वह उस ग़रीब के फ़रजंद नहीं हैं और उसी बात से उसके आबगीनाए दिल को ठेस पहुंची थी तो उसी जिन्स के अेताब से उनके भी आबगीनाए दिल को ठेस पहुंचाई गयी।

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हज़रत जरीज बिला शुबह अल्लाह के वली थे और ख़ुदाए तआला की इबादत व रज़ा जूई के लिये उन्होंने मामूली सी नाफ़रमानी की थी मगर कुदरत ने उन्हें भी माफ़ नहीं किया बल्कि दुनिया ही में उनके पर अेताब फ़रमाया तो मा व शुमा जैसे सियाहकार खता शिआर अपने मां व अहल व अयाल के लिये मां बाप को बड़ी सी बड़ी अज़ियत देकर क़हहार व जब्बार मौला के ग़ज़ब व अज़ाब से क्योंकर बच सकते हैं? लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि वालदैन की फ़रमाबर्दारी में कोताही न करें। अल्लाह हम सबको वालदैन का इताअत शिआर बनाये। आमीन।

★ सर गधे का ★

हज़रत अवाम बिन होशब رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि मैं एक मुहल्ले में गया उसके किनारे पर क़ब्रस्तान था। अस्र के वक़्त एक क़ब्र शक़ हुई और उसमें से आदमी निकला जिसका सर गधे का और बाक़ी बदन इंसान का था।

उसने तीन आवाज़ें गधे की तरह लगायी फिर क़ब्र बंद हो गयी, एक बुढ़िया बैठी सूत कात रही थी। एक दूसरी ख़ातून ने मुझसे कहा उस बुढ़ी बी को देखते हो ? मैंने कहा, हां ! इसका मामला क्या है? कहा, यह उस क़ब्र वाले की मां है, वह शराब पीता था, जब शाम को आता तो मां नसीहत करती, ऐ बेटे ! ख़ुदा से डर, कब तक इस नापाक चीज़ को चाहेगा, शराबी जवाब देता कि तू गधी की तरह चिल्लाती रहती है। यह शख़्स अस्र के बाद मरा, जब से हर रोज़ बाद अस्र उसकी क़ब्र फटती है और यूं ही तीन आवाज़ें गधे की तरह लगाता है और फिर क़ब्र बंद हो जाती है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ख़बरदार ! अपने वालिदैन के मुताल्लिक़ अपनी ज़बान को मोहतात रखो, वरना अंजाम आपने पढ़ लिया। अल्लाह अपने हबीब के सदक़ा व तुफ़ैल हमें अपनी ज़बान को वालदैन के हवाले से मोहतात रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ मां की बद दुआ का हैरतनाक असर ★

एक बुजुर्ग ने मक्का मोअज़्ज़मा जाने का इरादा किया। उनकी एक मां थी जो उनके मक्का जाने पर ख़ुश न थी, यह बुजुर्ग मन्नत व समाजत के बावजूद उन्हें राज़ी न कर सके और मक्का के लिये रवाना हो गये। उधर उनकी मांने बारगाहे इलाही में गिरया व ज़ारी के साथ बददुआ की, परवरर्दिगारे आलम ! मेरे बेटे ने मुझे जुदाई की आग में जलाया है, तू उस पर कोई अज़ाब नाज़िल फ़रमा दे।

यह बुजुर्ग रात के वक़्त शहर में पहुंचे तो इबादत के लिये मस्जिद तशरीफ़ ले गये, अजीब इत्तेफ़ाक़ के उसी रात एक चोर किसी के घर में दाख़िल हुआ। मालिके मकान को चोर के आने का इल्म हुआ तो जल्दी से मस्जिद की तरफ़ भागा। लोगों ने उसका पीछा किया वह चोर मस्जिद के दरवाज़े के पास आकर ग़ायब हो गया, लोग यह समझकर कि वह मस्जिद में गया है, वहां देखा कि यही बुजुर्ग खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे हैं, उन्हें पकड़कर हाकिमे शहर के पास ले गये, हाकिम ने उनके हाथ पैर काटने और आंखें निकालने का फ़रमान सादिर किया तो लोगों ने उनके हाथ और पैर काट दिये, आंखें निकाल लीं, और शहर में ऐलान कर दिया कि यह चोर की सज़ा है। उन

बुजुर्ग ने फ़रमाया :—

यह मत कहो कि यह चोर की सज़ा है बल्कि यह कहो कि यह मां की इजाज़त के बग़ैर तवाफ़े मक्का का इरादा करने वाले की सज़ा है।

जब लोगों को मालूम हुआ कि यह तो एक बुजुर्ग हैं और उनके हाल से वाकिफ़ हुए तो रोने लगे और उन्हें उन के इबादत खाने के पास लाकर छोड़ गये। उनका तो यह हाल है, उधर उनकी मां इसी इबादतख़ाने के अंदर यह दुआ कर रही थी ऐ परवर्दिगार तूने मेरे बेटे को किस मुसीबत में मुब्तला कर दिया तू उसे मेरे पास लोटा दे ताकि मैं उसे देख लूं।

मां तो अंदर यह दुआ मांग रही थी और बेटा दरवाज़े पर सदा दे रहा है कि मैं एक भूखा मुसाफ़िर हूं मुझे खाना खिला दीजिये। (न बेटा को मालूम है कि अपने ही दरवाज़े पर सदा दे रहा है और न मां को पता है कि यह भूखा मुसाफ़िर ही मेरा बेटा है) मां ने कहा दरवाज़े के पास आओ, मुसाफिर ने कहा, मेरे पास पैर नहीं हैं मैं कैसे आऊं? मां ने कहा हाथ बढ़ाओ मुसाफ़िर ने कहा मेरे पास हाथ भी नहीं हैं। मां अब तक पहचान न सकी थी उसने कहा अगर मैं सामने आकर तुझे खाना खिलाऊं तो मेरे और तेरे दर्मियान हुरमत क़ायम हो जायेगी। यह बोले, आप उसका भी अंदेशा न करें मैं निगाहों से महरूम हूं। तो मां एक रोटी और कूज़े में ठंडा पानी लेकर आयी और उसे खिलाया, पिलाया मगर पहचान न सकी। अलबत्त मुसाफ़िर ने पहचान लिया। उसने अपना चेहरा मां के क़दमों में रखकर अर्ज़ किया, ऐ मेहरबान मां ! मैं आपका नाफरमान बेटा हूं। अब मां भी पहचान गयी और बेटे की यह रूह फ़रसा अज़ियत देखकर सीने के अंदर उसका दिल टुकड़े टुकड़े हो गया, वह बिलक उठी और ज़बान की राह से उसके दिल की यह सदा बुलंद हुई।

ऐ परवर्दिगार ! जब हाल इतना बुरा हो गया तो मेरी और मेरे फ़रज़ंद की रूह क़ब्ज़ फ़रमा ले ता कि लोगों में रू स्याह और शर्मिन्दा न हो। अभी यह

दुआ पूरी न हुई थी कि मां बेटे दोनों फ़ौत हो गये। *(अज़मते वालिदैन बहवाला दुर्रतुन्नासिहीन फिल वअज़ वलइर्शाद)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मुझे बताओ ! बुज़ुर्ग किसी गुनाह के लिये तो नहीं गये थे बल्कि अल्लाह के घर के तवाफ़ के लिये गये थे लकिन उस नफ़ली तवाफ़ और दीदारे काबा के लिये मां की मर्ज़ी नहीं थी फिर भी वह तशरीफ़ ले गये और मां का दिल टूटा और उन्होंने बारगाहे इलाही में बच्चे की शिकायत की जिसका अंजाम आपने सुन लिया। याद रखो ! जिस तरह मां की बददुआ असर दिखाती है वैसे ही मां की दुआ का असर भी होता है लिहाज़ा हमें चाहिये कि मां की दुआ लेने में कोई कोताही न करें। अल्लाह हम सब पर नज़रे करम फ़रमाये।

★ ओहदे फ़ारूक़ी का दर्दनाक वाक़िया ★

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म के ज़माने में कोई सौदागर था। एक रोज़ उसकी मां ख़र्चा के लिये उसके पास कुछ मांगने आयी। उसकी बीवी ने कहा, आप की मां यूं ही रोज़ रोज़ मांगकर हमें मोहताज बना देना चाहती है। ग़रीब मां यह सुनकर रोते हुए चली गयी और बेटे ने उसे कुछ न दिया। एक दफ़ा यह लड़का तिजारत का माल लेकर कहीं सफ़र में जा रहा था, रास्ते में डाकुओं ने उसका सारा माल व असबाब लूट लिया, उसका हाथ काट कर उसकी गर्दन में लटका दिया। और उसे रास्ते में ख़ून में लतपत छोड़कर चले गये। कुछ लोग उसके पास से गुज़रे तो उसे उठाकर उसके घर पहुंचा दिया जब उसके रिश्तेदार उसे देखने आये तो उसने अपने जुर्म का एतेराफ़ कर लिया।

यह मुझे अपनी मां को तकलीफ़ देने की सज़ा है। अगर मैंने अपने हाथ से वालदा को एक रुपया भी दे दिया होता तो न मेरा हाथ काटा जाता और न ही मेरा माल छीना जाता। फिर सौदागर के पास उसकी मां आयी तो उसने कहा, ऐ प्यारे बेटे ! तेरे साथ दुश्मनों के इस सुलूक से मुझे अफ़सोस है। तो बेटे ने अर्ज़ की, अम्मीजान! मेरे साथ यह सब कुछ आप को तकलीफ़ देने की वजह से हुआ है, आप मुझसे ख़ुश हो जाइये।

हुकूके वालिदैन

मां ने कहा, ऐ प्यारे बेटे ! मैं तुझसे ख़ुश हूं जब रात आयी तो अल्लाह की कुदरत से दोबारा उसका हाथ पहले की तरह हो गया। *(दुर्रेतुन्नासिहीन)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ज़रा कुदरत का इंसाफ़ देखिये कि जैसा जुर्म है कुदरत उसी अंदाज़ में मुजरिम को सज़ा भी दे रही है। बेटे ने माल देने से बख़ीली की थी वह माल बर्बाद हो गया और हाथ को रोका था तो वह हाथ काट दिया गया। गर्दन से हाथ सटा लेना बख़ीली से किनाया होता है तो कटे हुए हाथ को गर्दन में लटका कर गोया यह ऐलान किया गया कि देख लो! मां बाप के साथ बखीली करने की यही सज़ा है। अब उसी के साथ मां की ख़ुशनूदी का करिश्मा भी देखिये कि उधर बेटे से राज़ी होती है और उधर क़ादिरे मुत्बक दोबारा बेटे को हाथ से नवाज़ देता है। अल्लाह हमें वालिदैन को ख़ुश रखने की तौफ़ीक़ अता फरमाये।

★ एक बुज़ुर्ग का हज मक़बूल न हुआ ★

हज़रत मालिक बिन दीनार رحمۃ اللہ علیہ एक साल हज के लिये तशरीफ ले गये। जब लोग अरफ़ात से वापस हुए तो रात में आप ने ख़्वाब में देखा कि आसमान से दो फ़रिश्ते उतरे एक ने दूसरे से पूछा, इस साल कितने लोगों का हज मक़बूल हुआ है? दूसरे फ़रिश्ते ने जवाब दिया सिवाए अहमद बिन मुहम्मद बलख़ी के सारे हाजियों का हज मक़बूल हो गया, उन्होंने रास्ते भर मशक़्क़त बर्दाश्त की और नतीजा महरूमी रहा।

बेचारा कसे कू शवद अज़ तू मेहरुम
पस नीस्त दर जा ए दीगर दर हमा बूम

हज़रत मालिक बिन दीनार رحمۃ اللہ علیہ बेदार हो गये मगर उसी फ़िक्र में रात भर उन्हें नींद न आयी। सुबह तड़के वह ख़रासान के क़ाफ़िले में गये और हजरत अहमद बलख़ी को ढूंढने लगे। वह उसी जुस्तजू में चक्कर लगाते हुए एक बड़े खेमे के पास पहुंचे वहां यह आलम कि ख़ेमा का पर्दा गिरा हुआ है एक ख़ूबसूरत जवान मोटा कपड़ा, पहने पैर में बेड़ी और गर्दन में महरूमी का तौक़ डाले खड़ा है उस नौजवान की निगाह हज़रत मालिक पर पड़ी तो उसने आपको सलाम किया।

और कहा, ऐ मालिक ! जिस जवान के मुताल्लिक़ आपने ख़्वाब में देखा है कि उसका हज मक़बूल नहीं हुआ वह मैं ही हूं और यह मोटा कपड़ा तौक़ और बेड़ी मेरी महरूमी की निशानी है।

हज़रत मालिक का बयान है कि मैं तो हैरत में पड़ गया ! मैंने उस जवान से कहा, आप ऐसे रौशन ज़मीर और साफ़ दिल हैं ओर आपको कुछ नहीं मालूम कि महरूमी आख़िर किस बिना पर है ? जवान ने कहा, हां ! मुझे मालूम है। उस महरूमी की वजह यह है कि मेरे वालिदैन मुझसे नाख़ुश हैं। मैनें पूछा, आपके वालिद कहां है? बताया इसी क़ाफ़िले में वह भी हैं। मैंने कहा किसी को मेरे साथ भेज दीजिये ताकि मैं आपके वालिद के पास जाकर सिफ़ारिश करूं, मुमकिन है कि वह आपसे राज़ी हो जायें। उन्होंने एक आदमी के साथ अपने वालिद के पास पहुंचा दिया। मैंने वहां देखा कि एक उम्दा साइबान है जिसमें शाहाना फ़र्श बिछे हुए हैं और एक खुश कलाम बूढ़ा शख़्स कुर्सी पर जाह व जलाल के साथ बैठा है जिसके सामने बहुत से लोग सफ़ बांधे खड़े हैं।

मैंनें जाकर सलाम किया और पूछा कि ऐ शैख ! क्या आप का कोई बड़ा लड़का भी है? कहा, हां ! एक नालायक़ लड़का है। मैं उससे ख़ुश नहीं हूं। मैंने उनसे गुज़ारिश की कि आज का दिन वह दिन नहीं है कि कोई शख़्स किसी की ईज़ा रसानी का दिल में बिछाये रखे, आज तो जुल्म के बख़्शने और दुश्मनों को माफ़ करने का दिन है। यह बात कोई भली नहीं लगती कि आप अपने फ़रज़ंद को अज़ाब में मुब्तला रखें मैं मालिक बन दीनार हूं रात मैंने इस तरह का ख़्वाब देखा है आप को ख़ुदा व रसूल का वास्ता आप अपने फ़रजंद की ग़लती को नज़र अंदाज़ करके उसे माफ़ कर दें।

वह बूढ़ा यह सुनकर खड़ा हो गया और कहने लगा, ऐ शैख़ ! मैंने तै कर लिया है कि कभी उससे ख़ुश न रहूंगा मगर आप एक बुजुर्ग हस्ती हैं और बड़े अज़ीम शफ़ीअ का वास्ता लाये हैं तो मैं उसे माफ़ करता हूं, मेरा दिल उससे खुश है।

ठानी थी दिल में अब न मिलेंगे किसी से हम।
पर क्या करें कि हो गये मजबूर जी से हम।।

हज़रत मालिक رحمۃ اللہ علیہ कहते हैं कि मैंने बूढ़े को दुआ दी और उसका शुक्रिया अदा किया, फिर मैं उस जवान के ख़ेमे के पास आया ता कि उसे बाप की ख़ुशनूदी की बशारत दूं, यहां आया तो हैरतज़दा रह गया कि जवान तौक़ और बेड़ी से आज़ाद है, मोटा कपड़ा बदन से अलग है और पाकीज़ा कपड़े ज़ैब तन किये हुए है। वह ख़ुश ख़ुश ख़ेमे से बाहर आया और कहने लगे, ऐ मालिक! अल्लाह आप को बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाये कि आपने मेरे और मेरे वालिद माजद के दर्मियान सुलह करा दी और उनकी ख़ुशनूदी की बरकत से मेरा हज भी मक़बूल हो गया।

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! जब अल्लाह के वली को वालिदैन की नाराज़गी की सज़ा मिल सकती है। लिहाज़ा हमें इस वाक़िया से दर्से इबरत हासिल करना चाहिये। अल्लाह हम सबको अपने वालदैन के फ़मांबर्दारों में बनाये।

★ फ़रमाबर्दार बनने का तरीक़ा ★

हज़रत अनस ने फ़रमाया, रसूले अकरम ने इरशाद फ़रमाया, एक शख़्स के वालदैन या उनमें से किसी का इन्तेक़ाल हो जाता है और वह उनका नाफ़रमान होता है फिर वह उनके लिये मुस्तक़िल इस्तिग़फ़ार और दुआ करता रहता है यहां तक कि अल्लाह उसे फमांबर्दार लिख देता है। *(बयहकी)*

हज़रत अबू हुरैरा ने फ़रमाया, या रसूलुल्लाह ! ने इरशाद फ़रमाया है जिसने अपने वालदैन के इंतक़ाल के बाद उनका क़र्ज़ अदा कर दिया और उनकी नज़र पूरी की और उनको बुरा भला कहलाने का सबब न बना तो वह ख़्वाह (ज़िन्दगी में) उनका नाफ़रमान क्यों न हो तब भी उनका फ़रमांबरदार लिख दिया जायेगा। *(रवाहु इब्ने असकिर)*

★ मसाइल व आदाब ★

साहिबे तफ़सीरे रुहुल बयान ने आयते करीमा :–

के तहत चंद मसाइल व आदाब का ज़िक्र फ़रमाया जिसका ज़िक्र ख़ाली अज़ फ़ायदा न होगा।

★ वालिदैन को नाम लेकर न बुलाये इसलिये कि यह भी मुरव्वत के ख़िलाफ़ है बल्कि खुली गुस्ताख़ी है। हां! अगर आम गुफ़्तगू में उनके असमा बताने की ज़रूरत पड़े तो नाम बता सकता है।

★ उनकी आवाज़ पर अपनी आवाज़ को ऊंचा न करे न ही उनके सामने ऊंचा बोले बल्कि निहायत नर्मी और मुस्कराना लहजे में बात करे, हां! अगर वह बहरे हों या इफ़हाम व तफ़हीम सिर्फ़ ऊंची आवाज़ में हो सकती है तो वह वजह जाइज़ है।

★ किसी के मां बाप को गाली न दें क्योंकि वह जवाबी हमला करके उसके मां बाप को गाली देगा।

★ मां बाप को ग़ैज़ व ग़ज़ब से न देखें, हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि वालदैन के साथ ऐसे ज़िन्दगी बसर करे जैसे एक ज़लील ख़ताकार गुलाम अपने तुर्शरव और सख़्तगीर आक़ा के साथ ज़िन्दगी बसर करता है। यानी जैसे गुलाम मज़कूर अपने आक़ा मज़कूर के सामने चापलूसी और ख़ुशामद करके वक़्त बसर करता है ऐसे ही औलाद को मां बाप के सामने ज़िन्दगी बसर करनी चाहिये।

★ मां बाप की तरफ मुहब्बत शफ़क़त और निहायत ही महरबानी से देखे।

★ अपने मां बाप की ख़िदमत ख़ूद करे किसी दूसरे के सुपुर्द न करे।

★ इंसान को अपने मां बाप की और उस्ताज और पीर व मुरशिद की ख़िदमत से आर न करनी चाहिये। इसी तरह बादशाह, हाकिमे वक़्त और मेहमान का हुक्म है।

★ बाप के लिये नमाज़ का इमाम भी न बने, अगरचे उससे वह फ़क़ीह तर है अगर वह हुक्मे दीन या उन मसाइल से चंदां वाकिफ़ नहीं तो जाइज़ है।

★ मां बाप के आगे भी न चले, हां! अगर रास्ते साफ़ करने की ज़रूरत दरपेश हो तो जाइज़ है।

★ किसी ऐसी जगह पर न बैठे जहां उसके मां बाप नीचे बैठे हों जबकि उसे मां बाप की अहानत होती है।

★ किसी मामले में मां बाप से सबक़त न करे, मसलन खाने पीने, बैठने और गुफ़्तगू वगैरा वग़ैरह में।

★ अगर बाप बद मज़हब है वह उसे अपनी इबादतगाह में ले जाना चाहता है तो न जाये, हां! अगर बाप उसी को मज़हबी चीज़ अपने यहां उठा लाने का हुक्म दे तो उसे बजा लाये।

★ इमाम अबू यूसुफ़ ने फ़रमाया, "अगर उसे मां बाप हुक्म फ़रमायें कि हांडी के नीचे आग जलाये, हालांकि हांडी में ख़िन्ज़ीर का गोश्त पकाया जा रहा है तो आग जलाने में हर्ज नहीं।"

★ मां बाप से आर करके अपने आपको किसी दूसरे मश्हूर व मारूफ़ शख़्सियत की तरफ मंसूब न करे इसलिये कि लानत का मुजीब है। हुजूर ने इरशाद फ़रमाया, अपने आपको दूसरी ज़ात में मंसूब करने वाले पर अल्लाह की और फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत हो, उसकी न कोई इबादत क़बूल होगी और न नेकी (इबादत से मुराद फ़राइज़ और नेकी से मुराद नवाफ़िल है)

★ अगर मां बाप हर दोनों या उनमें से एक काफिर हो तो उनके लिये इस्लाम क़बूल करने की दुआ करें।

फ़ायदा : काशिफ़ी ने लिखा है कि औलाद को अपने मां बाप के लिये दुआ मांगने के मुख़्तलिफ़ तरीक़े हैं, अगर वह मुसलमान हैं तो उनके लिये बहिश्त की, अगर काफ़िर हैं तो उनके लिये ईमान व इस्लाम की दुआ मांगे। *(तफसीरे रुहुल बयान)*

★ बाद इंतेक़ाल हुस्ने सलूक के तरीक़े ★

ख़ालिके कायनात और उसके प्यारे महबूब मुहम्मदे अरबी ने जिस तरह वालदैन की ज़िन्दगी में उनके साथ हुस्ने सुलूक और उनकी इताअत व फ़रमांबर्दारी का हुक्म दिया है बाद वफ़ात भी उनके साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म सादिर फ़रमाया है। वालदैन के इंतक़ाल के बाद उनसे हुस्ने सुलूक यह है कि उनकी तजहीज़ व तकफ़ीन नीज़ उनकी जायज़ सूरतों पर अमल करे। चुनांचे हदीस पाक में है :—

हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीआ सअदी से रिवायत है कि एक अंसारी ने हुज़ूर की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ किया :—

या रसूलुल्लाह ! मां बाप के इंतक़ाल के बाद कोई तरीक़ा उनके साथ नकूई का बाक़ी है जिसे मैं बजा लाऊं ? फ़रमाया, हां ! चार बातें हैं :—

★ उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना।

★ उनके लिये दुआए मग्फ़िरत, उनकी वसीयत नाफ़िज़ करना।

★ उनके दोस्तों की बुजुर्ग दाश्त (ख़ातिरदारी, मेहमान नवाज़ी) और जो रिश्ता सिर्फ़ उन्हीं की जानिब हो नेक बर्ताव के साथ क़ायम रखना, यह वह नकूई है कि उनकी मौत के बाद उनके साथ करनी बाक़ी है। *(फतावा रज़विय्यह ब हवाला जामिउल कबीर)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! वालदैन का हक़ उनके इंतक़ाल के बाद भी बाक़ी रहता है जिसका ख़्याल हमेशा रखना चाहिये। अल्लाह अपने प्यारे महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल में हमें इन बातों पर अमल करनी की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें।

★ मां बाप के लिये दुआए मग्फ़िरत ★

हज़रत अबू उसैद बिन जुराहा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक से यह बात है कि औलाद उनके बाद उनके लिये दुआए मगिफ़रत करे।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! वालदैन के मरने के बाद हुस्ने सुलूक का तरीक़ा रहमते आलम ने बताया है कि उनके लिये दुआए मग्फ़िरत करें। अल्लाह हम को हुस्ने सुलूक करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ मां बाप की तरफ़ से सदक़ा करो ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जब तुम से कोई शख़्स कुछ नफ़ल ख़ैरात करे तो चाहिये कि उसे अपने मां बाप की तरफ से करे कि उसका सवाब उन्हें मिलेगा और उसके सवाब में कुछ न घटेगा। *(जामिउल अहादीष)*

दूसरी जगह प्यारे आक़ा का फ़रमाने आलीशान है वालदैन के

मरने के बाद नेक सुलूक से यह है कि तू अपनी नमाज़ के साथ उनके लिये नमाज़ पढ़े और अपने रोज़ों के साथ उनके लिये रोज़े रखे। *(जामिउल अहादीष)*

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी फ़तावा शरीफ़ में रक़म तराज़ हैं, एक सहाबीए रसूल ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! मै अपने मां बाप के साथ ज़िन्दगी में नेक सुलूक करना चाहता था अब वह मर गये उनके साथ नेक सलूक करने की क्या राह है? उस पर हुज़ूर ने मुन्दर्जा बाला इरशाद फ़रमाया।

नीज़ इस हदीस का मतलब है कि जब अपने सवाब मिलने के कुछ नफ़ल नमाज़ पढ़े या रोज़े रखे तो कुछ नफ़ल उनकी तरफ़ से पढ़े और सवाब पहुंचाये। या नमाज़, रोज़ा, जो अमल नेक करे साथ ही उन्हें सवाब पहुंचने की नियत करे, कि उन्हें भी मिलेगा और तेरा भी कम न होगा।

★ वालिदैन की तरफ़ से हज ★

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, इंसान जब अपने वालदैन की तरफ़ से हज करता है वह हज उसकी और उन सब की तरफ़ से क़बूल किया जाता है और उनकी रूहें आसमान में उससे शाद होती हैं और यह शख़्स अल्लाह के नज़दीक मां बाप के साथ नेक सुलूक करने वाला लिखा जाता है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जो अपने मां बाप की तरफ़ से हज करे उनकी तरफ़ से हज अदा हो जायेगा और उसे दस हज का सवाब ज़्यादा है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अगर अल्लाह तआला दौलत से नवाज़े तो ज़रूर उनकी तरफ़ से हज करके उनको खुश करें। मौला तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ मां बाप का क़र्ज़ अदा करो ★

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स अपने मां बाप के बाद उनकी क़सम सच्ची करे और उनका क़र्ज़ अदा करे और किसी के मां बाप को बुरा भला न कह कर उन्हें बुरा न कहलाये, वह वालदैन के साथ नेकोकार लिखा जाता है। अगरचे उनकी ज़िन्दगी में नाफ़रमान था। और जो उनकी क़सम पूरी न करे और उनका क़र्ज़ न उतारे और औरों के वालदैन को बुरा कहकर उन्हें बुरा कहलाये वह आक़ (नाफ़रमान) लिखा जाता है अगर चे उनकी हयात में नेकोकार फ़रमांबर्दार था।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ख़ुदारा ! ख़ुदारा ! किसी के भी मां बाप को बुरा न कहो वरना जवाबन तुम्हारे मां बाप को बुरा भला कहेगा और वह बे क़सूर तुम्हारी वजह से गालियां सुनेंगे, ऐसा करने वाला अगर सोम व सलात का पाबंद भी है तब भी मां बाप का नाफ़रमान लिखा जायेगा। अल्लाह हम सबको किसी के वालदैन के ख़िलाफ़ ज़बान दराज़ी से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माये, ख़ास कर हर शौहर को अपनी बीवी के वालदैन को बुरा भला कहने से बचाये।

★ वालिदैन की क़ब्रों की ज़ियारत ★

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जो अपने मां बाप या उनमें से एक के क़ब्र की जुमा के रोज़ ज़ियारत करे अपने मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने वाला लिखा जाता है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स बरोज़ जुमा अपने वालदैन या एक की क़ब्र की ज़ियारत करे और उसके पास सूरए यासीन पढ़े बख़्श दिया जावे।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जो ब नियते सवाब अपने वालदैन दोनों या एक की ज़ियारते क़ब्र करे हज्जे मक़बूल के बराबर सवाब पाये और बकसरत उनकी क़ब्र की ज़ियारत करता हो तो फ़रिश्ते उसकी क़ब्र की ज़ियारत को आयें।

बुलबुले शीराज़ हज़रत शैख़ सअदी ने क्या ख़ूब फ़रमाया :–

सालहा बर तू बगुज़रद के गुज़र
न कुनी सू ए तुर्बते पिदरत
तू बजाए पिदर चे कर दी खैर
ता हमा चश्मदारी अज़ पिसरत

यानी बहुत साल गुज़रने पर भी तू कभी अपने मां बाप की क़ब्र पर फ़ातेहा ख़्वानी के लिये नहीं गया। बता जब तूने अपने मां बाप के साथ भलाई नहीं की तो फिर अपनी औलाद से किस मुंह से भलाई की उम्मीद रखता है?

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! क़ुरबान जाइये रहमते आलम की इनायतों पर कि बकसरत वालदैन की क़ब्र की ज़ियारत पर हज्जे मबरूर का सवाब और ज़ियारत करने वाले की क़ब्र की ज़ियारत को फ़रिश्ते आयें इससे बढ़कर सआदत और क्या होगी ? ख़ुदारा ! ख़ुदारा ! उनके इंतक़ाल के बाद उनको मत भूलो बल्कि उनकी क़ब्र की ज़्यारत को जाया आया करो और उनके ईसाले सवाब के लिये फ़ातेहा करते रहो, इंशाअल्लाह मरने के बाद तुम्हारी क़ब्र की ज़ियारत के लिये तुम्हारी भी औलाद आयेगी। अल्लाह हम सबको नेकी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

सिलाए रहमी की फ़ज़ीलत

मेरे प्यारे आक़ा ने क़राबतदारों के साथ हुस्ने सुलूक करने नीज़ उनका ख़्याल रखने के अमल को अपनी रज़ामंदी का ज़रिया बताया। और क़तअे रहमी को अपनी नाराज़गी नीज़ रुए ज़मीन पर नाकामी का सबब बताया। आइये कुरआन व हदीस के ज़रिये इस अहम उनवान को समझ कर दिल में उतारने और किरदार में सजाने की कोशिश करें। फ़रमान बारी तआला है :

तर्जुमा : और अल्लाह से डरो जिसके नाम मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो। *(पारा–4, रुकूअ–11, सूरए निसाअ)*

और दुस्री जगह इर्शाद फर्माया :–

(पारा–26, रुकूअ–7)

तर्जुमा : तो क्या तुम्हारे यह लच्छन नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिल तो ज़मीन में फ़साद फ़ैलाओ और अपने रिश्ते काट दो। यह हैं वह लोग जिन पर अल्लाह ने लानत की और उन्हें हक़ से बहरा कर दिया और उनकी आंखें फोड़ दीं। *(कन्ज़ुल इमान)*

एक तीसरी जगह इरशाद फ़रमाता है :–

तर्जुमा : वह जो अल्लाह के अहद को तोड़ देते हैं पक्का होने के बाद।

और काटते हैं उस चीज़ को जिसके जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं वही नुक़सान में हैं। *(कन्ज़ुल इमान)*

★ सिलाए रहमी और कुशादगीए रिज़्क़ ★

हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जो चाहे कि उसके रिज़्क़ में फ़र्राख़ी और उसकी उम्र में दराज़ी हो तो उसे चाहिये कि सिलाए रहमी करे। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ में मालदार बनने का अमल बताया गया है और साथ ही साथ उम्र में बरकत का सबब भी बताया गया। आज मुसलमानों का हाल यह है कि रिश्तेदारों से अच्छे सुलूक करने, उनको गाहे बगाहे तोहफ़ा व तहाइफ़ देने, उनकी माली मदद करने के बजाए, अपने दोस्त व एहबाब वग़ैरह का ख़्याल करते हैं। हुजूर ने वाज़ेह लफ़ज़ों में बता दिया है कि रिज़्क़ में फ़र्राख़ी और उम्र में बरकत रिश्तेदारों के साथ अच्छे सलूक से ही होगी ज़रा तर्जबा करके देखें इंशाअल्लाहु तआला मालामाल हो जायेंगे। अल्लाह तआला हम सबको ताजदारे कायनात के फ़रमान पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ कोई रिश्तेदारी तोड़े तो आप जोड़ो ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, बदला चुकाने वाला सिलाए रहमी करने वाला नहीं, सिलाए रहमी करने वाला वह है कि जब उससे रिश्तेदारी तोड़ी जाये तब भी वह सिलाए रहमी करे। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस से यह बात समझ में आयी कि किसी भी क़ीमत पर कोशिश करें कि रिश्तेदारों से हमारा रिश्ता टूटने न पाये। अगर कोई रिश्तेदार हम से अच्छा सुलूक करे और हम भी अच्छा सुलूक करें तो यह अच्छी बात है लेकिन सही माअना में सिलाए रहमी यह है कि अगर हमारा रिश्तेदार हम से अच्छा सुलूक न भी न करे तब भी हम उससे अच्छा सुलूक करें। इंशाअल्लाह उसकी बरकतें नज़र

आयेंगी। बल्कि वह ख़ूद से रिश्तेदारी तोड़ भी दे तब भी जोड़ने की कोशिश करें, ख़्वाह उसे जोड़ने पर वह हमें बुरा भला कहे हम को उस बात का नहीं हुजूर के फ़रमान का ख़्याल रखना है। अल्लाह हम सबको हिम्मत और हौसला अता फ़रमाये।

★ ग़ज़बे ख़ुदावंदी ★

हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि नबी रहमते आलम ने फ़रमाया, "रहम" रहमान से निकला है लिहाज़ा ख़ुदाए पाक ने उसको कह दिया है जो तुझे जोड़ेगा मैं उससे लगाव रखूंगा और जो तुझे तोड़ेगा मैं उसे छोड़ दूंगा।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीस शरीफ़ में अल्लाह ने रिश्ता तोड़ने वालों पर कितना जलाल फ़रमाया कि जो रिश्ता तोड़ेगा यानी एक दूसरे को छोड़ देगा मैं उसे छोड़ दूंगा और जो रिश्ता जोड़ेगा यानी रिश्तेदारों से बनाये रखेगा मौला तआला उसको अपनी रहमत के दामन में पनाह अता फ़रमायेगा, उस शख़्स को वह निभायेगा। मुझे बताओ? अगर अल्लाह ही किसी को छोड़ दे तो उसको कौन पनाह दे सकता है? और अल्लाह जिसे निभा ले उसे किसी के छोड़ने न छोड़ने से क्या फ़र्क़ पड़ता है? लिहाज़ा अगर हम यह जानते हों कि मौला तआला हम को निभा ले तो हम रिश्तेदारों से ताल्लुक़ को जोड़े रखें इंशाअल्लाह मौला ज़रूर हम को निभा लेगा। दुआ है कि मौला तआला अपने प्यारे हबीब के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको रिश्तेदारी का हक़ निभाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ सिलाए रहमी कसरते माल का ज़रिया ★

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि तुम लोग अपने नसबों को याद रखो जिससे अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करते रहो क्योंकि रिश्तादारों के साथ अच्छा सुलूक करना ख़ानदान में मुहब्बत माल में कसरत और उम्र में बरकत अता करता है। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीस पाक से यह बात समझ में आयी कि हमें अपने रिश्तेदारों के हवाले से मालूमात रखनी चाहिये। कौन रिश्तेदार आता है? कौन कहां रहता है? आबा व अजदाद कौन थे? यह सब जानना भी हुजूर के फ़रमान पर अमल करना है। आज अगर देखा जाये तो हम अपने बच्चों को भी नहीं बताते कि हमारे कितने रिश्तेदार हैं और कहां कहां हैं? और क्या क्या कर रहे हैं? रिश्तेदारों से मुलाक़ात और उनके हुस्ने सुलूक के सबब मुहब्बत पैदा होती है। और अल्लाह तआला हुस्ने सुलूक की वजह से माल में कसरत और उम्र में बरकत अता फ़रमायेगा। निहायत ही माज़रत के साथ तहरीर करता हूं कि अगर गुरबत की वजह से हमारे रिश्तेदार का रहन सहन अच्छा न हुआ और चेहरे का ख़द्दो व खाल नीज़ अमली मुक़ाम बुलंद न हो तो हम उनको अपना रिश्तेदार मानने के लिये भी तैयार नहीं होते और न ही उनका तार्रुफ़ कराते हैं और न उनको इज़्ज़त देते हैं।

याद रखें यह उनकी हक़ तलफ़ी से उनके दिल को ठेस पहुंचेगी। और उनकी नाराज़गी के सबब मौला नाराज़ होगा। लिहाज़ा ख़ुदारा! रिश्तेदार ख़्वाह कितना ही ग़रीब क्यों न हो कैसा ही कमज़ोर क्यों न हो, अगर सुन्नी सहीहुल अक़ीदा है तो ज़रूर उसके साथ हमें हुस्ने सलूक करना चाहिये अल्लाह हम सबको ताजदारे कायनात के फ़रमान पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र से मरवी है कि कुरैश से मुआहिदा के दिनों में मेरी वालदा मेरे पास आयीं। और वह ज़रूरत मंद हैं तो क्या मैं उनसे सिलाए रहमी करूं? सरकारे दो आलम ने फ़रमाया हां! उनसे सिलाए रहमी करो।

मेरे प्यारे आक़ा के दीवानो! मज़कूरा हदीसे पाक से मां की अज़्मत का पता चलता है और उनके हुकूक़ का भी अंदाज़ा होता है। हज़रत अस्मा की वालिदा बाद में मुसलमान हुई लेकिन वह जब काफ़िरा थीं तब हुजूर ने उनकी ज़रूरियात पूरी करने की इजाज़त दी और आज हाल यह है कि मां मुसलमान और परहेज़गार भी है जब भी उसकी ज़रूरियात का ख़्याल नहीं रखते। मैं यह नहीं कहता कि बीवी का ख़्याल न रखो, ज़रूर

रखो, लेकिन मां को कभी नज़र अंदाज़ न करो अगर सब के हुकूक़ सही तौर पर अदा किये जायें तो घर के अंदर और बाहर हर जगह इत्मिनान व सुकून ही नज़र आयेगा। और अल्लाह की तरफ़ से रहमतों का नुजूल भी होगा। मौला तआला हम सबको मुस्तहिक़ीन के हुकूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ बुरी मौत से हिफ़ाज़त ★

हज़रत अली बिन अबू तालिब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स यह चाहे कि उसकी उम्र में ज़्यादती और उसके रिज़्क़ में कुशादगी कर दी जाये और उसको बुरी मौत से महफ़ूज़ कर दिया जाये तो वह अल्लाह से डरे और सिलाए रहमी करे।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! इस हदीसे पाक में उम्रमें ज़्यादती और रिज़्क़में बरकत के साथ बुरी मौत से हिफ़ाज़त का अमल बताया जा रहा है। वह यह है कि रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक किया जाये तो अल्लाह बुरी मौत से महफ़ूज़ रखेगा। हम ने तो बुरी मौत मरने वालों का हाल देखा है कि कभी ब आसानी रूह नहीं निकलती, कभी चेहरा मस्ख़ हो जाता है। अल्लाह अपने हबीब के सदक़ा व तुफ़ैल हम सबको बुरी मौत से बचाये। मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! अगर अच्छी मौत मरने की तमन्ना है तो हमें रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करना होगा। अल्लाह हम सबको बुरी मौत से बचाये।

हज़रत अनस से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम को फ़रमाते सुना कि बेशक! सदक़ा और सिलाए रहमी के ज़रिये अल्लाह उम्र में ज़्यादती फ़रमाता है और बुरी मौत से महफ़ूज़ फ़रमाता है और दुख, मुसीबत को दूर फ़रमाता है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! सदक़ा और सिलाए रहमी के एवज़ में उम्रमें ज़्यादती होती है और बुरी मौत से हिफाज़त के साथ दुख और मुसीबत की दूरी का ईलाज भी है। पता चला कि अमल एक है लेकिन फ़ायदे बेशुमार। आज ही अहद कर लो कि रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक किया

करेंगे। रब्बे क़दीर हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ बेहतरीन इंसान ★

हज़रत दुर्रा बिन्ते अबू लहब से मरवी है कि आप कहती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह की ख़िदमते बा बरकत में अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! सबसे अच्छा इंसान कौन सा है? तो आक़ाए दो जहां ने फ़रमाया, जो सबसे ज़्यादा रब तआला से डरे और सबसे ज़्यादा सिलाए रहमी करे। और नेकियों का हुक्म दे और बुराईयों से रोके।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! आज माल व रिज़्क़ की फरावानी, इक़्तेदार के होते हुए शोहरत के बावजूद हम को बुरा समझा जाता है, वजह क्या है? उसके सबब से बड़ी वजह यह है कि ताजदारे कायनात ने जिन ख़ूबियों के मालिक को सब से अच्छा इंसान कहा है वह ख़ूबियां हमारे अंदर नहीं हैं। वह ख़ूबियां यह हैं :–

1. ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला।

2. रिश्तेदारों के साथ सबसे ज़्यादा हुस्ने सुलूक करने वाला।

3. नेकियों का हुक्म देने वाला।

4. बुराईयों से मना करने वाला।

क्या इन ख़ूबियों को अमीर व ग़रीब इख़्तेयार नहीं कर सकता? यक़ीनन! कर सकता है। बस अमली जामअ पहनाने की ज़रूरत है। फिर देखिये अल्लाह कितनी इज़्ज़त अता फ़रमाता है बल्कि ऐसा शख़्स बारगाहे रसूलुल्लाह से अच्छा इंसान होने की सनद हासिल कर लेता है। अल्लाह हम सबको मज़कूरा ख़ूबियों को इख़्तेयार करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ रहमान और सिलाए रहमी ★

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से मरवी है कि मैंने रसूलुल्लाह को फ़रमाते सुना कि अल्लाह ने फ़रमाया, मैं ही अल्लाह और मैं ही रहमान हूं, मैंने रहम को पैदा किया और उसका नाम अपने नाम से बनाया तो

जिसने इसको जोड़ा मैं उससे लगाव रखूंगा और जिसने उसको तोड़ा मैं उसको छोड़ दूंगा। *(अत्तरगीब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह के नामों में से एक नाम रहमान है जिसका माअना है निहायत मेहरबान, अल्लाह ने "अर्रहम" जिसका माअना है रिश्तेदारी, उसे अपने नाम रहमान से बनाया तो इस हदीसे पाक का मफ़हूम यह हुआ कि जिसने रहम यानी रिश्तेदारी को ख़त्म किया तो उसने अल्लाह की रहमत को अपनेसे दूर कर लिया। बताओ ! अगर किसी से अल्लाह की रहमत रूठ जाये तो है कोई जो अपने हिफ़्ज़ व अमान में ले? अल्लाह हम को क़तअे रहमी की मुसीबत से बचाये।

★ तीन आमाल पर जन्नत ★

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जिस किसी के अंदर तीन बातें होंगी अल्लाह उससे हिसाब में आसानी पैदा फ़रमायेगा और उसको अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा। लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! आप पर मेरे मां बाप कुरबान! वह क्या है? तो सरकारे दो आलम ने फ़रमाया, जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अता करो और जो तुम पर जुल्म करे उसे माफ़ करो। तो जब तुम ऐसा करोगे अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा। *(अत्तरगीब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ में जन्नत में ले जाने वाले तीन आमाल का ज़िक्र किया गया है बज़ाहिर यह तीनों आमाल बहुत आसान हैं। लेकिन उन पर अमल करना थोड़ा मुश्किल। लेकिन अगर जन्नत में जाने का शौक़ हो तो कोई मुश्किल नही। अगर हमें कोई महरूम रखता है तो उसे अता करने में हिचकिचाते हैं बल्कि हम उस इंतज़ार में रहते हैं कि कोई वक़्त आये और हम उसको मज़ा चखायें ! यूं ही कोई रिश्तेदार ख़ुशी के मौक़े पर भूल जाये या क़सदन दावत न दे तो हम भी उसके साथ वैसा ही सुलूक करते हैं। और अगर कोई जुल्म कर बैठे तो हम भी उसका इंतक़ाम लेना चाहते हैं। काश ! हमारे दिलों में यह बात नक़्श हो जाये

कि यह दुनिया चंद दिन की है, अफ़्व दर गुज़र से काम लेकर जन्नत में दाख़िला हासिल कर लें तो कितना अच्छा होता? मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हम तो गुलामाने रसूलुल्लाह हैं। हमारे आक़ा व मौला ने अपनी ज़ात के लिये कभी किसी से इंतक़ाम न लिया, आओ ! दुआ करें कि परवर्दिगार हम सबको अपने महबूब के उसवए हसना पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ नामुराद बंदा ★

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह को फ़रमाते सुना है कि बेशक ! बनी आदम के आमाल हर जुमेरात को मुझ पर पेश किये जाते हैं पस क़तअे रहमी करने वाले का अमल क़बूल नहीं किया जाता। *(अत्तरगीब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! सदक़ात व ख़ैरात अगर रिश्तेदारों की हक़ तलफ़ी के साथ किया जाये तो मौला ऐसे आमाल को क़बूल नहीं फ़रमाता, लिहाज़ा नेक आमाल करो और रिश्तेदारों के हुक़ूक़ भी अदा करो। मौला ज़रूर क़बूल फ़रमायेगा। अल्लाह हम सबको रिश्ता जोड़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ बदतरीन गुनाह ★

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया : जिब्रईल 15वीं शाबान की रात को मेरे पास आये और कहा, आज की रात अल्लाह बनू क़ल्ब की बकरियों के बाल के बराबर गुनाहगारों को बख़्श देता है मगर मुश्रिक, कीना परवर, रिश्ता तोड़ने वाला, तकब्बुर से अपने तहबंद को घसीटकर चलने वाला, वालिदैन के नाफ़रमान और शराबी को नहीं बख़्शा जाता।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! शाबान की 15वीं रात कितनी मुक़द्दस रात है? उस मुबारक रात में रहमते ख़ुदावंदी अपने बंदों पर किस हद तक साया फ़गन रहती है ख़ूद रब्बे क़दीर आसमाने दुन्या पर नुजूले जलाल

फ़रमाता है और निदा फ़रमाता है कि कोई बख़्शिश का तलबगार है उसे बख़्श दिया जायेगा। है कोई गुनाह से माफ़ी तलब करने वाला कि उसे माफ़ कर दिया जायेगा। चुनांचे उस रात न जाने कितने गुनाहगारों की बख़्शिश फ़रमा देता है, लेकिन कितने कम नसीब हैं वह जो मज़कूरा गुनाहों में मुब्तला हैं कि उनकी बख़्शिश उस रात भी नहीं होती। अल्लाह हम सबको अपने हिफ्ज़ व आमान में रखे। आमीन।

★ तीन महरूम इंसान ★

हज़रत अबू मूसा अशअरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया तीन आदमी जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे। 1. शराबी। 2. रिश्ता को तोड़ने वाला। 3. जादूगर। *(अत्तरगीब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीसे पाक में जिन तीन लोगों का ज़िक्र वह यह हैं शराब पीने वाले, रिश्ता तोड़ने वाले और जादूगर। यह तीनों आमाल मुआशरे को बर्बाद करने वाले हैं। शराबी नशा में न जाने कितने पाकबाज़ों की इज़्ज़त व आबरू से खेल जाता है और उसकी इस बुरी आदत के सबब घर का सुकून तबाह व बर्बाद हो जाता है। यही हाल रिश्ता तोड़ने वालों का है कि टूटे हुए रिश्ते की वजह से एक दूसरे के दिल में कदूरत और नफ़रत हो जाती है और नतीजतन दो ख़ानदानों का सुकून व इत्मिनान ग़ारत हो जाता है। और जादूगर की तबाही तो रौशन है कि वह किसी न किसी को तबाह व बर्बाद करता ही है। आज कितने लोग जादू की वजह से तबाह व बर्बाद हो रहे हैं। अल्लाह ने इन बुरे आमाल के मुरतकिब के बारे में बता दिया कि तुम जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते। अल्लाह हम सबको सारे बुरे आमाल में बता दिया कि तुम जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते। अल्लाह हम सबको सारे बुरे आमाल से बचाये।

★ क़तअे रहमी और ख़ुदा की अज़्मत ★

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया : जब अल्लाह मख़लूक़ की पैदाईश से फ़ारिग़ हो गया तो क़राबत ने खड़े होकर अर्ज़ किया, मैं तुझसे क़तअे रहमी की पनाह चाहती हूं। रब तआला

ने फ़रमाया, क्या तू इस बात पर राज़ी है कि जिसने तुझ से ताल्लुक़ जोड़ा मैं उससे ताल्लुक़ जोड़ूंगा और जो तुझ से ताल्लुक़ तोड़ेगा मैं इससे ताल्लुक़ तोड़ूंगा ! उसने कहा, मैं राज़ी हूं। फिर हुजूर ने आयते करीमा तिलावत फ़रमाई जिसका तर्जमा यूं है :–

"तो क्या तुम्हारे यह लच्छन नज़र नहीं हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फ़ैलाओ और अपने रिश्ते काट दो ! यह हैं वह लोग जिन पर अल्लाह तआला ने लानत की और उन्हें हक़ से बहरा कर दिया और उनकी आंखें फोड़ दीं।" *(कन्ज़ुल इमान, पारा–26, रुकूअ–7)*

★ जानवरों से हुस्ने सुलूक ★

हज़रत सहल बिन हन्ज़ला का बयान है कि रसूलुल्लाह एक ऊंट के पास से गुज़रे जिसकी पीठ उसके पेट से लगी हुई थी। सरकारे दो आलम ने फ़रमाया कि इन बेजान मवेशियों के बारे में अल्लाह से डरो ! अच्छी हालत में उन पर सवारी करो और अच्छी हालत में छोड़ो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र से रिवायत है कि नबीए रहमते आलम एक अंसारी के बाग़ में दाख़िल हुए जहां एक ऊंट बंधा हुआ था। जब ऊंट ने नबी पाक को देखा तो दर्दनाक आवाज़ निकाली और दोनों आंखों से आंसू बहने लगे। हुजूर उसके क़रीब गये और शफ़क़त से उसकी कोहान और दोनों कनपटियों पर हाथ फेरा तो उसको सुकून हो गया, फिर आपने पूछा कि इस ऊंट का मालिक कौन है? तो एक अंसारी नौजवान आया और उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! यह ऊंट मेरा है। आपने फ़रमाया, क्या तू अल्लाह से नहीं डरता ? इस बेजुबान जानवर के बारे में जिसको अल्लाह ने तेरे इख़्तेयार में दे दिया है। यह ऊंट अपने आंसुओं और आवाज़ के ज़रिये मुझसे शिकायत कर रहा है कि तू इसको भूखा रखता है और मुसलसल काम लेता है।

★ औरत अज़ाब की शिकार ★

हज़रत इब्ने उमर और हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہما रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया : एक औरत को एक बिल्ली के बंद रखने की

वजह से अज़ाब किया गया क्यों कि बंद रखने की वजह से वह भूख से मरी गयी थी और वह औरत न तो उसको गिज़ा देती थी और न उसको आज़ादी देती थी कि वह ख़ूद ज़मीनी जानवरों से अपनी ग़िज़ा हासिल कर लेती।

हज़रत जाबिर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, मुझ पर दौज़ख़ पेश की गयी तो मैंने उसमें बनी इस्राईल की एक औरत देखी जिस को उसकी बिल्ली के बाइस अज़ाब दिया जा रहा था, जिसको वह ज़िन्दा बांधे हुए थी न खाना खिलाती और न छोड़ती कि ज़मीन के जानवरों में खाती, यहां तक कि वह भूखी मर गयी, और मैंने अम्र बिन आमिर खज़ाइ को देखा कि वह जहन्नम में अपनी आंतों को घसीट रहा है। वह पहला शख़्स है जिसने सांड छोड़ा था।

हज़रत अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि मुसलमान कोई दरख़्त लगाता है या खेत बोता है और उससे कोई इंसान या परिन्दा या चरिन्दा फ़ायदा हासिल करता है तो वह उसके लिये सदक़ा बन जाता है। *(बुखारी शरीफ)*

हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि वह नबी करीम के साथ अरफात से वापस हुए। दौराने सफ़र सरकारे दो आलम ने पीछे से ऊंटों को मारने और उन्हें तेज़ हांकने की आवाज़ें सुनीं तो आपने कोड़े से इशारा करके फ़रमाया, ऐ लोगो! आराम से चलो ऊंटों को दौड़ाना अज्र का बाइस नहीं है। *(बुखारी शरीफ)*

★ एहसान का बदला एहसान ★

हज़रत शद्दाद बिन औस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, बेशक ! अल्लाह ने हर चीज़ पर एहसान करना ज़रुरी क़रार दिया है लिहाज़ा जब किसी चीज़ को जान से ख़त्म करना हो तो उसे अच्छी तरह ख़त्म कर दो, और जब ज़बह करो तो अच्छी तरह ज़बह करो और तुम अपनी छुरी अच्छी तरह तेज़ कर लिया करो और जबीह को आराम दिया करो। *(मुस्लिम शरीफ)*

हज़रत अबू इमामा से रिवायत है कि ने इरशाद फ़रमाया, जिस शख़्स ने रहम किया अगर ज़बह किये जाने वाले जानवर पर ही हो,

अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस पर रहम फ़रमायेगा। *(तिब्रानी)*

★ बदकार औरत की बख़्शिश ★

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, एक बदकार औरत सिर्फ़ इस वजह से बख़्शी गयी कि वह ऐसी जगह से गुज़री जहां एक कुत्ता प्यास की शिद्दत से जुबान निकाले खड़ा हांप रहा था। यह देखकर उस औरत ने अपना मोज़ा निकाल कर उसमें अपनी चादर बांधी और गड्ढे से पानी निकालकर उसको पिलाया। इस अमल की वजह से उसकी बख़्शिश हो गयी। इस मौक़े पर सहाबाए किराम ने दर्याफ़्त किया कि जानवरों के साथ भलाई करने में हम को सवाब मिलता है ? तो सरकारे दो आलम ने फ़रमाया, हर जानदार के साथ भलाई करने में सदक़ा का अज्र मिलता है। *(बुखारी शरीफ)*

हज़रत अब्दुल्लाह से रिवायत है कि नबी पाक एक मंज़िल पर उतरे। आपकी जमाअत में से एक आदमी ने चिड़िया का एक अंडा उठा लिया। चिड़िया आयी और रसूलुल्लाह के सर पर फड़ फड़ाने लगी ! आपने फ़रमाया, तुम में से किसी ने इसके अंडों के बारे में इसको दुख पहुंचाया ? एक आदमी ने अर्ज़ किया, मैंने या रसूलल्लाह ! उसके अंडे को उठाया है। तो नबी पाक ने फ़रमाया, उस पर रहम करते हुए उसके अंडे वापस कर दो। *(अदबुल मुफरद)*

★ बारगाहे रसूलुल्लाह में चिड़िया की फ़रियाद ★

हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہما अपने वालिद गिरामी से रिवायत करते हैं कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह के साथ थे। पस सरकारे दो आलम क़ज़ाए हाजत के लिये तशरीफ़ ले गये तो हमने एक चिड़िया देखी जिसके दो बच्चे थे, हम ने उसका एक बच्चा पकड़ लिया पस चिड़िया आयी और अपने पर बिछाने लगी। नबी रहमते आलम तशरीफ़ लाये तो फ़रमाया, इसको बच्चे की वजह से किस ने परेशान किया है ? इसका बच्चा इसे दे दो। फिर आपने चूटियों की एक जगह मुलाहज़ा फ़रमायी जिसको हमने जला दिया था। फ़रमाया, इसको किसने जलाया है ? हमने अर्ज़ किया, हमने। फ़रमाया कि आग से अज़ाब देना मुनासिब नहीं सिवाए

अल्लाह तआला के। *(अबू दाउद शरीफ)*

★ अच्छी वसीयत ★

हज़रत अबू ज़र से रिवायत है कि मुझे मेरे हबीब ने चंद अच्छी चीज़ों की वसीयत फ़रमायी और वह यह है कि मैं अपने से ऊपर वाले को नहीं बल्कि नीचे वाले को देखूं। 2.मैं यतीमों से मुहब्बत रखूं। 3. मैं सिलाए रहमी करूं अगरचे रिश्तेदार फिर जायें। 4. मैं अल्लाह तआला के मामले में किसी से न डरूं। 5. सच्ची बात अगरचे तल्ख़ हों मैं कहता रहूं। 6. कसरत से पढ़ता रहूं क्योंकि जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है। *(अत्तरग़ीब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हज़रत अबू ज़र को हुज़ूर ने जो वसीयत फ़रमाई सिर्फ़ उन्हीं वसीयत पर एक मुकम्मल किताब लिखी जा सकती है। वसीयत में हर बात इतनी जामेअ है कि उसके फ़ज़ाइल पर कुरआन व सुन्नत शाहिद हैं। मगर मज़कूरा वसीयत पर अगर उम्मते मुस्लेमा का अमल देखा जाये तो शायद ही कुछ लोग आमिल नज़र आयेंगे। 1. हमारी आदत यह है कि हम कभी अपने से ग़रीब को नहीं देखते, छोटों को, कमज़ारों को नहीं देखते बल्कि बड़ों को देखते हैं और अंदर पिघलते रहते हैं। जब आप हमेशा अपने से नीचे वाले को देखेंगे तो इंशाअल्लाह शुक्र का जज़्बा पेदा होगा। 2. यतीमों के साथ मुहब्बत बहुत पसंदीदा अमल है। उनका इस्तेहसाल नहीं बल्कि उनको ख़ुश करना, उनके क़रीब रहना ता कि उनको अपनी यतीमी का एहसास न हो। 3. रिश्तेदारों से अच्छा सलूक करना ख़्वाह वह नाराज़ रहें, सतायें, परेशान करें मगर हम को हुस्ने सुलूक ही करना है। 4. अल्लाह तआला ने जो फ़रमा दिया है वही हक़ है, दुनिया उसे कुछ भी कहे वक़्त आन पड़े अल्लाह की रज़ा का और बंदों की रज़ा का तो बे ख़ौफ़ होकर अल्लाह के फ़रमान का ख़्याल करें और किसी से अल्लाह के मामले में न डरें। 5. सच्ची बात तो हमेशा तल्ख़ लगती है लेकिन हम को सच्ची बात कहने में हिचकिचाना नहीं चाहिये चाहे किसी को बुरी लगे या अच्छी लगे। 6. और की कसरत करें कि यह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हम सबको मज़कूरा बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ बुराई के बदले भलाई ★

हज़रत हुजैफ़ा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया, उन लोगों में से न बनो जो कहते हैं कि अगर लोग हमारे साथ भलाई करेंगे तो हम भी उनके साथ भलाई करेंगे और अगर वह हम पर ज़्यादती करेंगे तो हम भी ज़्यादती करेंगे, बल्कि तुम बात के आदी बनो कि अगर लोग तुम्हारे साथ भलाई करें तो तुम भलाई करो और अगर वह तुम्हारे साथ ज़्यादती करें तो तुम ज़्यादती न करो।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस की कुछ वज़ाहत करने के बजाए बस हम यही दुआ करें कि अल्लाह अपने प्यारे महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल में हमें ऐसे लोगों में न बनाये जो भलाई करें तो ही भलाई करें बल्कि हम को उन लोगों में से बनायें जो बुराई का बदला भी भलाई से दें।

हज़रत उबादा बिन साबित से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, मैं तुम्हें वह बातें न बतलाऊं जिनके ज़रिये अल्लाह तआला दर्जात बुलंद फ़रमाता है ? सहाबाए किराम ने अर्ज़ किया, बताइये ऐ अल्लाह के रसूल तो सरकार ने फ़रमाया, जो तुमसे अेअराज़ करे तुम उसे दरगुज़र करो और जो तुम पर जुल्म करे तो तुम उसे माफ़ करो, और जो तुम को महरूम करे तुम उसे अता करो और जो तुम से ताल्लुक़ात ख़त्म करे तुम उससे ताल्लुक़ जोड़ो।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! कितना एहसान है मेरे आक़ा का! दर्जात की बुलंदी का ज़रिया भी बता दिया और वह भी इतना आसान कि हर कोई अगर चाहे तो अमल कर सकता है, बस थोड़ी सी कोशिश करनी है फिर देखिये इंशाअल्लाह करम ही करम होगा। अल्लाह रहमते आलम के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको मज़कूरा बातों पर अमल का हौसला और कुव्वत अता फ़रमाये।

★ ख़ुदा की रहमत का ज़रिया ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, एक क़ौम ऐसी है कि अल्लाह उसके शहरों को आबाद करता है और उसके माल को बढ़ाता है और जबसे उन्हें पैदा फ़रमाया कभी उनको नाराज़गी की निगाह से नहीं देखा। पूछा गया, वह क्यों ऐ अल्लाह के रसूल ! तो सरकारे दो आलम ने फ़रमाया, उस क़ौम की सिलाए रहमी की वजह से।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! किनता बड़ा इनाम है रिश्तेदारों से हुस्ने सलूक का ! ख़ालिक़े कायनात शहरों को भी आबाद फ़रमाये और माल भी बढ़ाये और करम बालाए करम नाराज़गी की नज़र कभी न डाले ! बताओ ! उससे बढ़कर भी कोई फ़ायदा है क्या? अब भी हम अपने आपको रिश्तेदारों से अच्छे सुलूक के लिये आमदा न करेंगे। आज ही रिश्तेदारों को मनाने में और हुस्ने सुलूक करने में लग जाओ, इंशाअल्लाह मौला हम पर भी करम फ़रमायेगा। आइये दुआ करें कि ऐ अल्लाह ! जिन लोगों पर सिर्फ़ करम की नज़र डालता है उनमें हमारा भी शुमार फ़रमा दे और उन आमाल को इख़्तेयार करने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमा जिससे तू राज़ी हो और तेरे प्यारे हबीब राज़ी हों।

★ पसंदीदा अमल ★

हज़रत अबू युअला ने बनू हाशिम के एक शख़्स से रिवायत किया कि उसने कहा कि मैं हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप उस वक़्त सहाबा की एक जमाअत के दर्मियान तशरीफ़ फ़रमा थे। मैंने पूछा कि आपने रसूले ख़ुदा होने का दावा किया है? सरकारे दो आलम ने फ़रमाया, हां। मैंने अर्ज़ किया, ऐ रसूलुल्लाह ! मुझे बताइये कौन सा अमल अल्लाह तआला को पसंद है ? सरकार ने फ़रमाया, अल्लाह पर ईमान लाना। मैंने अर्ज़ किया, फिर कौन सा? फ़रमाया, सिलाए रहमी करना। मैंने अर्ज़ किया, फिर कौन सा अमल अल्लाह को ज़्यादा पसंद है? फ़रमाया, नेकियों का हुक्म देना और बुराईयों से रोकना। फिर मैं अर्ज़ गुज़ार हुआ, ऐ

अल्लाह के रसूल ! कौन सा अमल अल्लाह को सबसे ज़्यादा नापसंद है? फ़रमाया, सरकार ने, अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक ठहराना। फिर मैंने पूछा, या रसूलुल्लाह और कौन सा? फ़रमाया, क़तअे रहमी करना। फिर मैंने अर्ज़ किया, उसके बाद कौन सा ? फ़रमाया, बुराइयों को तर्ग़ीब देना और नेकी से रोकना।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस में उन आमाल का ज़िक्र है जो अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा पसंदीदा हैं। हमारा हाल यह है कि हम अपने मुहिब्बीन व मुअतकेदीन, दोस्त व अहबाब, बीवी और बच्चों की पसंद का तो ख़्याल करते हैं मगर अल्लाह और उसके प्यारे महबूब की पसंद का ख़्याल नहीं करते ! आइये ! आज नियत करें कि मज़कूरा हदीस शरीफ़ में जो आमाल अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसंद हैं उन्हें इख़्तेयार करेंगे और वह आमाल जो अल्लाह को नापसंद हैं उनसे परहेज़ करेंगे, इंशाअल्लाह।

अल्लाह तआला अपने प्यारे महबूब की जुल्फ़ों के तसद्दुक़ हम सबको अमले ख़ैर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ जन्नत से क़रीब, जहन्नम से दूर ★

हज़रत अबू अय्यूब से मरवी है कि रसूले पाक ऊंटनी पर सवार होकर सहाबाए किराम के साथ सफ़र में तशरीफ़ ले जा रहे थे कि एक बदवी (देहाती) ने आकर आपकी ऊंटनी की महार पकड़ ली और कहा, हुज़ूर ! मुझे ऐसा अमल बतलाइये जो मुझे जन्नत से क़रीब और जहन्नम से दूर कर दे। आप ठहर गये और सहाबाए किराम की तरफ़ देखकर फ़रमाया, अल्लाह तआला को वहदहु ला शरीक जानकर उसकी इबादत कर, नमाज पढ़, ज़कात दे, और सिलाए रहमी कर, और मेरी ऊंटनी की महार छोड़ दे। जब देहाती चला गया तो आपने इरशाद फ़रमाया, अगर यह इन बातों पर अमल करता रहा तो जन्नत में जायेगा।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! सवाल देहातीने किया और फ़ायदा क़यामत तक के मुसलमानों को हो गया। उनके सवाल

पर कुरबान जाइये कि जन्नत से क़रीब करने वाले आमाल और जहन्नम से दूर करने वाले आमाल का सवाल करते हैं। सरकार रहमते आलम ﷺ के क़रीब होने के बावजूद यह सवाल कर रहे हैं इससे यह समझ में आता है कि आक़ाए कायनात ﷺ ने तसव्वुरे आख़रत कितना पिला दिया था? साइल के सवाल पर रहमते आलम ﷺ ने जवाब दिया वह मज़कूरा हदीस में मौजूद है। हमें चाहिये कि हम भी मज़कूरा बातों पर अमल करके जन्नत से क़रीब और जहन्नम से दूरी का सामान इख़्तेयार करें।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

الصلوٰۃ والسلام علیك یارسول الله ﷺ
وعلیٰ آلك واصحابك یا حبیب الله ﷺ

पड़ौसियों के हुक़ूक़

अल्लाह तबारक व तआला इरशाद फ़रमाता है :—

وَاعْبُدُوْا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَیْئًا وَّ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا وَّ بِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰی وَ الْجَارِ الْجُنُبِ

तर्जुमा : और अल्लाह की बंदगी करो और उसका शरीक किसी को न ठहराओ और मां बाप से भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों पास के हमसाए और दूर के हमसाए से। *(कन्ज़ुल इमान, पारा—5, रुकूअ—3.)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह ﷻ ने अपनी इबादत के साथ वालिदैन, रिश्तेदारों, यतीमों, मोहताजों और पड़ोसियों के साथ भलाई का हुक्म दिया है इससे अंदाज़ा होता है कि उनके साथ भलाई की कितनी अहमियत है? वालदैन, रिश्तेदार, यतीम और मोहताज यह तो समझ में आते हैं कि उनसे सुलूक होना चाहिये लेकिन पड़ोसी के साथ भलाई के हुक्म की वजह क्या है? मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हर एतबार से पड़ोसी हम से क़रीब होता है और हर वक़्त क़रीब होता है। हम से हमारे घर वालों से अगर आज हमने उसके साथ भलाई की तो अल्लाह न करे अगर कल कोई मामला होगा तो वह हमें भी काम आयेगा और हमारे घर के भी काम आयेगा। आयत शरीफ़ की मज़ीद वज़ाहत ताजदारे कायनात ﷺ के फ़रामीन से मालूम करें।

हुज़ूर रहमते आलम ﷺ ने फ़रमाया, मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ाए कुदरत में मेरी जान है हमसायगान के हुक़ूक़ सिर्फ़ वही अदा कर सकता है जिस पर अल्लाह ﷻ का रहम व करम हो और तुममें बहुत थोड़े

लोग हैं जो हमसायगान के हुकूक़ जानते हैं। (हमसायगान के हुकूक़ यह हैं) कि जिस चीज़ की उन्हें ज़रूरत हो उसे पूरा करो, अगर क़र्ज़ चाहते हैं तो क़र्ज़ दो, अगर उन्हें ख़ुशी हासिल हो तो उन्हें मुबारकबाद पेश करो। अगर कोई तकलीफ़ लाहिक़ हो तो इज़हारे अफ़सोस करो, अगर बीमार हों तो तबअ पुरसी करो, अगर मर जायें तो जनाज़ा भी पढ़ो और दफ़नाने तक साथ रहो। *(तफसीरे रुहुल बयान, जिल्द–5, सफा–530)*

अल्लाह अपने हबीब पाक के सदक़ा व तुफ़ैल हम सबको पड़ोसियों के हुकूक़ की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ पड़ोसी की तीन क़िस्में ★

आक़ाए कायनात ने इरशाद फ़रमाया, पड़ोसी तीन क़िस्म के होते हैं। हर एक के अलहेदा अलहेदा एहकाम हैं। बाज़ के तीन हक़ हैं बाज के दो हक़ हैं और बाज़ का एक हक़ है। जो पड़ोसी मुस्लिम हुआ और रिश्ते वाला हो उसके तीन हक़ हैं। हक़्के हमसायगी और हक़्के इस्लामी और हक़्के क़राबत व रिश्तेदारी। पड़ोसी मुस्लिम के दो हक़ हैं हक़्के जवार और हक़्के इस्लाम और पड़ोसी काफ़िर का सिर्फ़ एक है हक़्के जवार है। हमने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह! उनको अपनी कुर्बानियों में से दें? फ़रमाया, मुश्रेकीन को कुरबानियों में से कुछ न दो।

हुजूर रहमते आलम ने इरशाद फ़रमाया, जानते हो मुफ़लिस कौन है? सहाबाए किराम ने अर्ज़ किया, हमारे यहां तो मुफ़लिस वह है जिसके पास माल व ज़र न हो। फ़रमाया, मेरी उम्मत में मुफ़लिस वह है जो क़यामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात लेकर आये और यूं आये कि उसने इसे (पड़ोसी को) गाली दी हो, उसे ज़िना की तोहमत लगायी हो, उसका माल खाया, उसका ख़ून गिराया, उसे मारा, तो उसकी नेकियां उसे दे दी गयीं, फिर अगर नेकियां ख़त्म हो चुकीं और हक़ बाकी हैं तो उनके गुनाह लेकर उसके ऊपर डाले गये फिर जहन्नम में फेंक दिया गया।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! आम तौर पर गाली गलोच, तोहमत और ज़िना वग़ैरह जैसे कबाइर का इर्तेकाब पड़ोसी के साथ ज़्यादा

पेश आते हैं, आक़ाए कायनात ने इबादत व रियाज़त में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले शख़्स को भी तंबीह फ़रमाई कि यह न समझना कि तेरे नामाए आमाल में नेकियां हैं! तू जो चाहे कर गुज़र, और पड़ोसियों के साथ बुरा सुलूक कर, उनके माल उनकी जान वग़ैरह पर बुरी नज़र डाल, ख़बरदार! सारी नेकियां ज़मीन पर ही रह जायेंगी और क़यामत के दिन मज़कूरा गुनाहों की वजह से मुफ़लिस बन कर रब के हुजूर तेरी हाज़िरी होगी। अल्लाह वहां की मुफ़लिसी से बचाये।

हज़रत अबू शुरीह खूजाइ से रिवायत है कि नबी करीम ने इरशाद फ़रमाया यानी जो शख़्स अल्लाह और यौमे आख़रत पर ईमान रख्ता है चाहिये कि वह अपने पड़ासी के साथ नेक सुलूक करे।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीस शरीफ़ में अल्लाह की औरसे रोज़े जज़ा पर ईमान रखने वालों को गोया ताकीद की जा रही है कि अगर तुम मोमिन हो तो उसका इज़हार अपने आमाल से भी करो, सिर्फ़ ज़बानी दावा न हो बल्कि अपने पड़ोसियों के साथ नेक सुलूक करके बताओ कि हमारा दीन कितनी अच्छी तालीम देता है और पड़ोसियों के साथ प्यार व मुहब्बत से पेश आने की तालीम देता है। तारीख़ में ऐसे बेशुमार वाक़ियात मिलते हैं जिन में पड़ोसियों के साथ हुस्ने सलूक की वजह से उन्हें इस्लाम की दौलत हासिल हो गयी। मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! ख़ुदारा! ख़ुदारा! पड़ोसियों को अज़ीयत देने से गुरेज़ करो और उनके साथ हुस्ने सुलूक करके रब की रज़ा हासिल करो। अल्लाह सबको अपने प्यारे आक़ा की तालीमात पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ पड़ोसी वरासत का हक़दार?! ★

हजरत इब्ने उमर رضی اللہ عنہما और हज़रत आयशा सिद्दीक़ा से रिवायत है कि नबी करीम ने फ़रमाया, मुझे जिब्रईल पड़ोसी के बारे में ताकीद करते रहे यहां तक कि गुमान किया कि वह उसे वरासत में

शरीक कर देंगे। *(बुखारी व मुस्लिम)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ से पड़ोसी के हक़ की अहमियत का अंदाज़ा होता है। ताकीद करने वाले जिब्रईल अमीन और जिनको ताकीद की जा रही है वह रह्मतुल्लिल आलमीन और गुमान करने वाले जहां में सबसे ज़्यादा अक़लमंद और गुमान हो रहा है वरासत में शरीक करने का यानी जिस तरह माल व सलूक में अहलो अयाल और रिश्तेदारों का हक़ मौजूद है नीज़ अदमे अदायगी पर पुरसिश होगी, ऐसे ही ताकीद से सरकारे दो आलम ने गुमान फ़रमाया कि शायद पड़ोसी को वारिस न बना दिया जाये और उनकी परेशानी पर तवज्जोह न देने पर पुरसिश होगी ? मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! पड़ोसी के हक़ की अदायगी में कोताही नहीं करनी चाहिये। अल्लाह हम सबको सही तौर पर पड़ोसी से हुस्ने सलूक करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और हुज़ूर की रज़ा के हुसूल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

हज़रत मुजाहिद से रिवायत है कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما के पास था और उनका गुलाम बकरी की खाल उतार रहा था। उन्होंने अपने गुलाम से फ़रमाया, ऐ गुलाम! जब उस काम से फ़ारिग़ हो जाना है तो सबसे पहले उसका गोश्त हमारे यहूदी पड़ोसी को देना, कहा गया, क्या आप यहूदी को हदिया ला रहे हैं ? अल्लाह तआला आपकी इस्लाह फ़रमाये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि बिला शुब्ह मैंने नबी करीम को पड़ोसी के बारे में इतनी ताकीद फ़रमाते हुए सुना है कि हम डर गये कि उसको अनक़रीब वारिस ही बना दिया जायेगा। *(अदबुल मुफ़रद)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस मुबारका में यहूदी पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक का दर्स दिया गया है, और एक जलीलुल क़द्र सहाबी यहूदी के घर गोश्त भेजने की ताकीद फ़रमा रहे हैं, जिससे मौजूद यहूदी ख़ूद मुताज्जिब होता है कि क्या हम भी तुम्हारी पड़ोसी रहकर हुस्ने सुलूक के हक़दार हैं तो क़ुरबान जाइये सहाबीए रसूल की अज़्मत पर कि अपने आक़ा की तालीमात को आम करने में ज़रा भी हिचकिचाहट

महसूस नहीं करते बल्कि बरजस्ता इरशाद फ़रमाते हैं कि पड़ोसी के हवाले से रसूले आज़म ने इतनी ताकीद फ़रमाई कि हम डरने लगे कि अनक़रीब वारिस बना दिया जायेगा। हमारे हुस्ने सुलूक की वजह रसूले अकरम की ताकीद है।

किस क़द्र सच्चा इश्क़ था सहाबाए किराम को अपने आक़ा से कि न दोस्त देखते न दुश्मन, न नफ़ा, न नुक़सान बस उनकी तमन्ना तो यही थी कि अपने आक़ा के फ़रमान पर अमल करना और सरकारे दो आलम की रज़ा को हासिल करना, आज हम मुस्लिम पड़ौसी के साथ अच्छा सुलूक नहीं कर पाते हैं तो ग़ैरों के साथ क्या करेंगे? आओ ! दुआ करें कि अल्लाह हम सबको सहाबाए किराम का सदक़ा अता फ़रमाये।

★ भूखा पड़ोसी और मोमिन ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما का बयान है कि मैं अल्लाह के रसूल को फ़रमाते हुए सुना, मोमिन वह नहीं जो अपना पेट भरे और उसका पड़ोसी उसके बाजू में भूखा हो। *(बयहकी, मिश्कात शरीफ़)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! सारे आमाल का दारोमदार ईमान पर है और अगर ईमान कामिल है तो रब्बे क़दीर बंदे को कामयाबी अता फ़रमाता है। याद रखें कि ईमान को कमाल सिर्फ़ नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात ही से हासिल नहीं होता बल्कि कमाले ईमान के लिये ज़रूरी है कि अपने पड़ोसियों की परेशानियों को भी जानें और हत्तल इम्कान दूर करने की कोशिश करें। मज़कूरा हदीसे पाक की रौशनी में यह बात समझ में आइ है कि अगर अल्लाह ने शिकम सैर होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई है तो ज़रा पड़ोसी का भी ख़्याल फ़रमा लें कि कहीं ऐसा तो नहीं कि हम पड़ोसी के हक़ की अदायगी में ग़ाफ़िल हैं और हमारा पड़ोसी ग़ैरत व शर्मिन्दगी की वजह से ज़िक्र नहीं करता। लिहाज़ा हमें अपने पड़ोसी के हालात से हमेशा बाख़बर रहना चाहिये ता कि अगर तज़किरा से ग़ैरत मानेअ हो तो निहायत ही ख़ामोशी के साथ हमको उसकी भूख मिटा देनी चाहिये और उसकी ज़रुरत पूरी कर देनी चाहिये। अल्लाह हम सबको रहमते आलम के सदक़ा व तुफ़ैल

पड़ोसी के हक़ की अदायगीकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ शोरबे की ख़ुश्बू और पड़ोसी ★

हज़रत अबू ज़र से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि ऐ अबू ज़र्! जब शोरबा पकाओ तो पानी ज़्यादा डाला और अपने पड़ोसियों का ख़्याल रखो। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! ताजदारे कायनात ने शोरबे में पानी ज़्यादा डालने का हुक्म फ़रमाकर पड़ोसियों की दिलजूई करने की तालीम फ़रमाई है, इसलिये कि शोरबे की ख़ुश्बू जब पड़ोसी को पहुंचेगी तो उसका दिल उसके हुसूल की तमन्ना करेगा। रहमते आलम ने पड़ोसी की आरज़ू का ख़्याल करने की ताकीद फ़रमाई ता कि वह ख़ुश हो जाये। उसकी ख़ुशी से इंशाअल्लाह परवर्दिगार भी ख़ुश होगा। रब्बे क़दीर अपने प्यारे महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल हमें तालीमाते रसूले अकरम पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ पड़ोसी दामनगीर होंगे। ★

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया, हम पर एक ऐसा ज़माना गुज़रा है कि दीनार व दिरहम का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ मुसलमान भाई को समझा जाता था। फिर ऐसा ज़माना आ गया कि दीनार व दिरहम मुसलमान भाई से ज़्यादा महबूब हो गये हैं। मैंने नबी करीम से सुना है कि क़यामत के दिन कितने ही पड़ोसी होंगे जिन्होंने अपने अपने पड़ोसियों को पकड़ रखा होगा और बारगाहे ख़ुदावंदी में शिकायत करते हुए अर्ज़ करेंगे कि ऐ रब! उसने मुझे छोड़कर अपना दरवाज़ा बंद कर लिया था और मुझे अपने एहसान व सुलूक से महरूम रखा था। *(दुर्रे मन्सूर)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! एक ज़माना ऐसा भी गुज़रा है कि उस वक़्त सबसे ज़्यादा अहमियत मुसलमान की थी। मुसलमान के दिरहम व दीनार की कोई अहमियत न थी। लेकिन अब तो दीनार व

दिरहम के एवज़ में मुसलमान की जान लेने से भी गुरेज़ नहीं करते! अल्लाह अपने हिफ़्ज़ व अमान में रखे और सही समझ अता करे। और साथ ही साथ रसूले गिरामी वक़ार का लरज़ा देने वाला इरशादे गिरामी है कि क़यामत के होलनाक दिन पड़ोसीने अपने पड़ोसी को पकड़ रखा होगा और शिकायत बारगाहे समदियतमें होगी कि ऐ रब! इसने मुझे छोड़कर अपना दरवाज़ा बंद कर लिया था और मुझे अपने एहसान व सुलूक से महरूम रखा था। बताओ! उस वक़्त रब के हुज़ूर क्या जवाब दोगे? पड़ोसी के लिये दरवाज़ा बंद करने से मुराद यह है कि न उनकी ख़ुशी का ख़्याल और न उनकी मुश्किलात की फ़िक्र और न उनका पुरसाने हाल, बहुत सख़्त तरीन कैफ़ियत होगी। ख़बरदार! पड़ोसी से हुस्ने सुलूक और उनकी देखभाल करना हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है। अगर पड़ोसी का ख़्याल रखेंगे तो मौला के करम की बारिशें होंगी और हुसूले रज़ाए इलाही का ज़रिया भी होगा। क़यामत के होलनाक अज़ाब से बचना हो तो पड़ोसियों के साथ ज़रूर हुस्ने सुलूक करो। अल्लाह हम सबको पड़ोसी के हुकूक की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ ख़ुदा के नज़दीक बेहतरीन कौन ? ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضی اللہ عنہما फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, बेहतरीन दोस्त ख़ुदा के नज़दीक वह हैं जो अपने दोस्तों के हक़्क़े बेहतरीन हैं और बेहतरीन पड़ोसी ख़ुदाए तआला के नज़दीक वह हैं जो पड़ोसियों के हक़ में बेहतरीन हैं। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! ताजदारे कायनात जिसको बेहतरीन फ़रमायें वह यक़ीनन! बेहतरीन है। मज़कूरा हदीसे पाक की रौशनी में दोस्तों के साथ और पड़ोसियों के साथ ताल्लुक़ के बारे में बताया जा रहा है यानी एक शख़्स को दोस्त और पड़ोसी ही सबसे ज़्यादा जानता है अगर दोस्त और पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक है, उनके साथ मामलात अच्छे हैं और कुरबत की वजह से ख़ुशी ग़मी में शरीक रहता हो और इतना ख़्याल रखता हो कि दोस्त और पड़ोसी गवाही दें कि अल्लाह ने बड़ा करम किया कि इतना अच्छा दोस्त और पड़ोसी अता फ़रमाया, तो यक़ीनन! वह

बेहतरीन है, उसमें कोई शक की गुंजाईश नहीं है। तो इंशाअल्लाह उनकी गवाही पर ताजदारे कायनात की जानिब से बेहतरीन के लक़ब के हक़दार बन जाओगे अल्लाह हम सबको बेहतरीन दोस्त और पड़ोसी बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ घर से कितने दूर रहने वाले पड़ोसी हैं ? ★

हज़रत हसन से पूछा गया, पड़ोसी कौन है? तो उन्होंने फ़रमाया चालीस घर आगे, चालीस घर पीछे, चालीस दाहिने, चालीस बायें तरफ़।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा फ़रमान के मुताबिक कम से कम चारों तरफ़ के 40–40 घर वालों क साथ हुस्ने सुलूक करना ज़रूरी है और न करने पर मुवाख़ेज़ा होगा। लिहाज़ा जब आपने यह जान लिया कि पड़ोसी किसी को और कहां तक समझा जाये तो अब हमें पड़ोसियों का ख़्याल रख कर ताजदारे काइनात की ख़ूशनूदी हासिल करनी चाहिये। रब्बे क़दीर मुझे आपको सबको पड़ोसियों के हुकूक़ की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

हज़रत अबू राफ़ेअ बयान करते हैं कि रसूलल्लाह ने फ़रमाया, वो पड़ोसी ज़्यादा हक़दार है जो क़रीब है। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! पड़ोसियों में जिसका घर ज़्यादा क़रीब हो वह दूसरे पड़ोसियों के मुक़ाबले में ज़्यादा हक़दार है लिहाज़ा हुस्ने सुलूक सदक़ा व ख़ैरात के वक़्त पहले उसका ख़्याल रखना चाहिये। ऐसा न हो कि दूर दराज़ के लोग आपके सदक़े व ख़ैरात से मुस्तफ़ीज़ हो रहे हों और पड़ोसी के घर में चुल्हा भी न जले। अल्लाह हम सबको रहमते आलम के फ़रामीन पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ तोहफ़ा एक, पड़ोसी दो ★

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा फ़रमाती हैं कि मैंने

रसूले अकरम से पूछा, मेरे दो पड़ोसी हैं। किसे तोहफ़ा भेजूं ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया, जिसका दरवाज़ा ज़्यादा क़रीब हो। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीसे पाक की रौशनी में पड़ोसियों में तोहफ़ा का ज़्यादा हक़दार वह है जिसका दरवाज़ा ज़्यादा क़रीब है। लिहाज़ा हम को चाहिये कि तोहफ़ा भेजने में आक़ा के फ़रमान को मद्दे नज़र रखें। रब्बे क़दीर हम सबको अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ सबसे पहला मुक़द्दमा ★

हज़रत उक़बा बिन आमिर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कयामत में सबसे पहला झगड़ा पेश करने वाले दो पड़ोसी होंगे। *(रवाहु अहमद)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! क़यामत का माहोल दिल हिला देने वाला होगा, नफ़्सी नफ़्सी की कैफ़ियत होगी, कोई किसी का पुरसाने हाल न होगा, आमाले सालेहा की क़िल्लत दामनगीर होगी, मअबूदे बरहक़ के जलाल की वजह से हर कोई लरज़ रहा होगा, ऐसे में बताओ पहला झगड़ा दो पड़ोसी का पेश होगा। सोचो ! अगर हमने अपने किसी पड़ोसी को सताया होगा या किसी मामला में झगड़ा किया होगा तो उस वक़्त कितनी परेशानी होगी? लिहाज़ा आज ही उससे माफ़ी तलब कर लें और यह बात हमेशा के लिये अपने दिल में महफ़ूज़ कहर लें कि वह गुनाह जो बंदों के हुकूक़ से मुताल्लिक़ हैं उस वक़्त तक ख़ुदाए क़हहार व जब्बार माफ़ नहीं फ़रमायेगा जब तक कि बंदा न माफ़ कर दे। परवरदिगारे आलम हम को आपको सबको आपस में इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ से ज़िन्दगी बसर करनी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ भलाई और बुराई की कसोटी ★

हज़रत इब्ने मसूद से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ गुज़ार हुआ कि या रसूलुल्लाह ! मुझे कैसे इल्म हो कि मैंने भलाई की है या बुराई की है ? तो आक़ा ने फ़रमाया

जब तुम अपने पड़ोसी को कहते हुए सुनो कि तुमने भलाई की है तो वाक़ई तुमने भलाई की है और जब तुम अपने पड़ोसी को कहते सुनो कि तुमने बुरा सुलूक किया है तो वाक़ई तुमने बुरा सुलूक किया है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! जिसके अमल के बारे में रहमते आलम ने यह फ़रमा दिया है कि पड़ोसी की गवाही ही पर तुम्हारी नेकी और बुराई का दारोमदार है। तो हमें चाहिये कि अपने नेक होने की सनद ताजदारे कायनात के फ़रमान की रौशनी में अपने पड़ोसी से हासिल करें। यह उसी वक़्त मुमकिन है जब पड़ोसी के साथ हमारा सलूक अच्छा हो। लिहाज़ा हमको चाहिये कि अपने पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक करके भलाई की सनद हासिल कर लें। परवरदिगारे आलम अपने हबीब के सदक़ा व तुफ़ैल में हमें अपने पड़ोसियों के साथ हुस्ने सलूक की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन

★ वह शख़्स मोमिन नहीं ★

हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि नबी करीम ने फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम वह मोमिन नहीं! ख़ुदा की क़सम वह मोमिन नहीं! ख़ुदा की क़सम वह मोमिन नहीं! सहाबाए किराम ने अर्ज़ किया कि कौन या रसूलुल्लाह ? तो सरकारे दो आलम ने इरशाद फ़रमाया, जिसकी ईज़ा रसानी से उसका पड़ोसी महफ़ूज़ व मामून न हो। *(बुख़ारी शरीफ़)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! यक़ीनन वह मोमिने कामिल नही हो सकता जिसने पड़ोसियों को तकलीफ़ पहुंचाई। अब हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने पड़ोसी को राहत दें, सकून दें और उस चीज़ का ख़्याल रखें कि हमारे पड़ोसी को हमारी ज़ात से कोई अज़ीयत न पहुंचे, बल्कि वह हमारे पड़ोस में अपने आपको सबसे ज़्यादा मामून समझे। इंशाअल्लाह पड़ोसी को ख़ुश रख्ने का बदला ज़रूर ज़रूर हमें मिलेगा। रब्बे क़दीर मुझे आपको सब को पड़ोसी को अज़ीयत देने से गुरेज़ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ ख़ुदा से जंग ★

सरकारे दो आलम का फ़रमाने आलीशान है : जिसने अपने पड़ोसी

को ईज़ा पहुंचाई उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने ख़ुदा को तकलीफ़ दी और जिसने अपने पड़ोसी से लड़ाई की उसने मुझसे लड़ाई की और जिसने मुझसे लड़ाई की उसने ख़ुदा से लड़ाई की। *(अत्तरग़ीब वत्तरहीब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! हम में से कौन है? जो अल्लाह और उसके प्यारे महबूब को अज़ीयत पहुंचाने और उनसे लड़ाई करने की जुर्अत रखता हो ? हम ख़्वाब व ख़्याल में भी यह नहीं सोच सकते कि अल्लाह और उसके प्यारे महबूब से लड़ें या उन्हें अज़ीयत दें। अब आप बतायें कि अगर कोई पड़ोसी को अज़ीयत पहुंचाये तो हुज़ूरे अक़दस ने फ़रमाया, उसने मुझे अज़ीयत पहुंचाई और जो कोई पड़ोसी से लड़ाई करे गोया उसने हुज़ूर से लड़ाई की। हमें चाहिये कि अपने पड़ोसी को अज़ीयत देने और झगड़ा करने से परहेज़ करें। वरना हुज़ूरे अक़दस को अज़ीयत देने का बाइस होगा। रब्बे क़दीर मुझे आपको सबको पड़ोसियों से लड़ने से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि रसूलुल्लाह और यौमे आख़रत पर यक़ीन रखता हो वह अपने पड़ोसियों को न सताये। *(बुख़ारी व मुस्लिम)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला और यौमे आख़ेरत पर ईमान की बात फ़रमाकर यह वाज़ेह कर दिया गया कि क़यामत में रब्बे ज़ुल जलाल के हुज़ूर हाज़िरी होगी उस वक़्त पड़ोसियों के हवाले से सवाल पूछा जायेगा। अगर उनको अज़ीयत दी होगी या उनको सताया होगा तो निहायत ही सख़्त तरीन अज़ाब में गिरफ़्तार होगा। और अगर उनसे हुस्ने सुलूक से पेश आया होगा तो वह उसके बेहतर होने की गवाही देंगे। मौला तआला उनकी गवाही को क़बूल फ़रमाकर उसे जन्नत का हक़दार बना देगा। अब पड़ोसी को वही सतायेगा जिसको आख़ेरत में जवाबदेही का तसव्वुर न हो। या फिर अल्लाह की पकड और उस्की ज़ातसे बेखोफ हो । लेहाज़ा हम आखेरतमें जवाबदेही का तस्सव्वुर करके अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करें ता कि वह रोज़े महशर जहां अव्वलीन व आख़रीन जमा होंगे वहां की रसाई से बच जायें। अल्लाह हम सबके लिये आख़रत को आसान

बनाये और मशहर की रुसवाई से बचाये।

★ जन्नत में न जायेगा ★

हज़रत अनस से रिवायत है कि आक़ाए दो जहां ने इरशाद फ़रमाया, वह शख़्स जन्नत में दाख़िल नहीं होगा जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी महफ़ूज़ न हो। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! ताजदारे कायनात का फ़रमान हक़ है। जन्नत और उसमें दाख़िले के क़ानून तो मेरे आक़ा ने अता फ़रमाये और उसमें जाने से कौन रोका जायेगा उसकी वज़ाहत भी फ़रमा दी। अगर हुजूर आगाह न फ़रमाते तो हमें क्यों ख़बर होती। हुजूर के फ़रमान की रौशनी में पता चला कि पड़ोसियों को अज़ीयत देने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा। हम सब जन्नत के तलबगार हैं लेकिन अफ़सोस! पड़ोसियों के हवाले से हमारा क्या हाल है? हमें इसका जायज़ा भी लेना पड़ेगा। अगर पड़ोसी मामून व महफ़ूज़ हैं अल्लाह के फ़ज़्ल व करम और सरकार मालिके जन्नत के सदक़ा व तुफ़ैल जन्नत के हक़दार बन जायेंगे। अल्लाह हम सबको जन्नती बनाये और जहन्नम से बचाये।

★ इबादत गुज़ार ख़ातून मगर जहन्नमी ★

हज़रत अबू हुरैरा ही से मरवी है कि एक मर्तबा एक शख़्स बारगाहे नबवी में अर्ज़ गुज़ार हुआ, या रसूलल्लाह! फ़लानी औरत के बहुत नमाज़ पढ़ने, रोज़े रखने और ख़ैरात करने का चर्चा है मगर वह अपनी ज़बान से अपने पड़ोसी को तकलीफ़ देती है। तो सरकारे दो आलम ने फ़रमाया, वह जहन्नमी है। अर्ज़ गुज़ार हुआ कि या रसूलल्लाह! फ़लानी औरत कम रोज़े रखने, कम सदक़ा करने और कम नमाज़ पढ़ने में मशहूर है। वह पनीर के टुकड़े ही ख़ैरात करती है लेकिन अपनी ज़बान से पड़ोसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचाती। सरकारे दो आलम ने फ़रमाया वह जन्नती है। *(अहमद, बयहकी)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीसे मुबारका कई गोशों पर हमारी तवज्जोह मबज़ूल कराती है। पहली चीज़ तो यह है कि हम नमाज़, रोज़ा, हज व ज़कात वग़ैरह ही को नजात का ज़रिया समझते हैं। जब कि उन इबादात की अदायगी के साथ अगर पड़ोसी को सताना शामिल हो तो उन इबादतों का कोई सिला नहीं मिलेगा (मुराद यह है कि जब यह नफ़्ल हों) यह बात ज़ेहन में रखना चाहिये कि हम मुसलमानों की पहचान यही थी कि हमारी ज़ात से कभी पड़ोसी को तकलीफ़ न पहुंचती बल्कि हमारे पड़ोस में रहने वाला हमारे हुस्ने सुलूक से मुतास्सिर होकर कुफ़्र व शिर्क की वादी से निकलकर दामने इस्लाम में पनाह ले लेता था। लेकिन हम हुस्ने अख़लाक़ जैसी पाकीज़ा तालीम को भूल गये, इस्लाम की पाकीज़ा तालीमात से किनाराकशी का नतीजा हमारे सामने है कि आज दुनिया में कहीं भी हमारा कोई मुक़ाम नहीं और हो भी क्योंकर? जब इबादत व रियाज़त की कसरत के बावजूद पड़ोसी को सताने से हुजूर जहन्नम का हक़दार बता दें तो यहां हाल बहुत बुरा है। नामाए आमाल में नेकियों की क़िल्लत और पड़ोसियों को सताने का जुर्म साबित। ख़ुदारा! ख़ुदारा! पड़ोसियों को तकलीफ़ देने से गुरेज़ करें और जहन्नम के अज़ाब से पनाह मांगे। अल्लाह हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये।

★ क़यामत की निशानी ★

हज़रत अबू मूसा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक आदमी अपने पड़ोसियों को और भाईयों को और अपने बाप को क़त्ल न करे। *(अदबुल मुफरद)*

मेरे प्यारे आक़ा के दीवानो! अल्लाह इमान पर ज़िन्दा रखे और ईमान ही पर ख़ात्मा फ़रमाये और उस साअत से क़बल इमान पर मदीना में दो गज़ ज़मीन अता फ़रमाये जब लोग अपने भाई और पड़ोसियों को क़त्ल करें, आमीन।

हज़रत अबू आमिर हमसी से रिवायत है कि हज़रत षौबान फ़रमाते थे कि जो भी दो आदमी तीन दिन से ज़्यादा क़तअे ताल्लुक़

रखें फिर उनमें से एक मर जाये या दोनों उसी हालत (बाहम नाराज़गी की हालत) में मर जायें तो दोनों हलाक होंगे। फिर फ़रमाया, जो भी कोई पड़ोसी अपने पड़ोसी पर जुल्म और ज़्यादती करेगा यहां तक कि उसे अपने घर से निकल जाने पर मजबूर कर दे तो यह तकलीफ़ देने वाला हलाक हो जायेगा। (यानी अज़ाबे आख़ेरत में मुब्तला होगा) *(अदबुल मुफ़रद)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! आज आप देखते होंगे कि लोग कभी कभी अपने पड़ोसियों पर इतना जुल्म करते हैं कि पड़ोसी तंग आकर घर बदल देता है और नक़्ले मकानी पर मजबूर हो जाता है। ऐसा करने वाले शख़्स के बारे में ख़ुद हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह हलाक हो जायेगा। याद रखें, हुजूर का फ़ैसला अटल है लिहाज़ा हमें पड़ोसी के मामला में बहुत ही एहतियात रखना चाहिये और अज़ीयत देने से गुरेज़ करना चाहिये। अल्लाह सरकारे दो आलम के सदका व तुफ़ैल में हम पर नज़रे करम फ़रमाये।

★ हज़रत इमाम हसन और पड़ोसी ★

हज़रत इमाम हसन का पड़ोसी यहूदी था उसके घर की दीवार शक़ हो गयी जिसकी वजह से कूड़ा करकट आपके मुक़द्दस घर में जमा हो जाता। यहूदी की औरत ने यहूदी को इस बात की इत्तेला दी तो यहूदी हज़रत इमाम हसन की बारगाह में माफ़ी मांगने के लिये हाज़िर हुआ। तो अपने फ़रमाया कि मेरे नाना जान नबी रहमते आलम ने इरशाद फ़रमाया कि अपने पड़ोसी की इज्ज़त करो, पड़ोसी को किसी क़िसम की तकलीफ़ न पहुचाओ। यह कलिमात सुनते ही यहूदी मुसलमान हो गया। *(हुकूकुल एबाद अल्लामा फखी)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! एक होता है पड़ोसी की हक़ीक़त जानना और दूसरा होता है पड़ोसी के हुकूक़ को अदा करना। इमाम हसन की हक़ीक़त को जानते भी थे और उन्होंने अमल करके बताया भी। और आपने देखा कि अमल का असर क्या हुआ ? अल्लाह ने यहूदी को इस्लाम की दौलत से मालामाल कर दिया। काश ! हम गुलामे हस्नैन करीमैन होने के दावेदार, किरदारे हसनैन करीमेन को अपनाने की भी कोशिश

करते तो आज लोग मुसलमानों से नफ़रत न करते। बल्कि मुहब्बत की निगाहों से देखते। परवर्दिगारे आलम हम सबको उनका सदक़ा अता फ़रमाये।

★ सुलतान बायज़ीद और पड़ोसी ★

एक रात हज़रत बायज़ीद बुस्तामी एक लम्हा भी आंख न लगा सके। सोते भी तो कैसे रात भर साथ वाले मकान से एक बच्चे के रोने की मुसलसल आवाज़ आ रही थी। एक तो रोना और वह भी बच्चे का रोना, रक़ीकुल क़ल्ब लोगों के लिये तो सौहाने रूह होता है। ख़ुदारा ! ख़ुदारा ! करके सपीदए सहर नमूदार हुई तो सुलतान बायज़ीद बुस्तामी पड़ोसी यहूदी के दरवाज़े पर खड़े दरवाज़ा खटखटा रहे थे, अदंर से आवाज़ आयी कि घर में कोई मर्द मौजूद नहीं। सुल्तान ने अपना तआरुफ़ कराया और ख़ैरीयत दर्याफ़्त की। यहूदी की बीवी ने बताया कि मेरा शोहर कई माह के सफ़र पर गया हुआ है इस अर्सा में मेरे यहां विलादत हुई है। रात भर वही बच्चा रोता रहा। सुलतान ने बच्चे की रोने की वजह दर्याफ़्त की तो औरत ने बताया कि घर में अंधेरा रहता है। मैं हूं पर्दा नशीन औरत, मज़ीद बर आं मुफ़लिसी मुसल्लत है। कोई तेल लाने वाला नहीं है और न तेल लाने के पैसे। थोड़ा बहुत पैसा जो मेरे शौहर ने जाते वक़्त रख दिया था बस उसी पर गुज़ारा कर रही हूं।

फ़ज्र की अज़ान हो चुकी थी औरत का जवाब सुनकर हज़रत सुलातन मस्जिद चले गये। उस दिन से ऐसा लगा जैसे कि औरत के घर में बहार आ गयी हो ! ज़रूरत की हर चीज़ सुलतान के घर से पहुंचने लगी, शाम होती तो अल्लाह का वली जिसे दुनिया आज तक सुलतानुल आरेफ़ीन के नाम से जानती और मानती है, हाथ में तेल की कुप्पी लिये यहूदी के दरवाज़े पर खड़ा रहता कि कहीं उसका मकान तारीक न हो जाये और उसका बच्चा अंधेरे में कहीं रोने न लगे। कई महीने तक यह सिलसिला चलता रहा हत्ता कि यहूदी पड़ोसी सफ़र से वापस आ गया। वह सोचता आया था कि घर में बहुत तकलीफ़ हुई होगी, लेकिन जब उसकी बीवी ने बताया कि तकलीफ़ उठाने की नोबत न आयी और सुलतान और उनके घर वाले मुसलसल उसकी और

उसके बच्चे की देखभाल करते रहे। तो यहूदी बहुत ख़ुश हुआ, शुक्रिया अदा करने सुलतान की बारगाह में हाज़िर हुआ। तो आपने फ़रमाया, मेरे अज़ीज़! शुक्रिया की ज़रूरत नहीं, मैंने तो अपना फर्ज़ अदा किया है अगर मैं यह न करता तो सख़्त गुनाहगार होता कि क्योंकि हमारे दीन में पड़ोसी के बड़े हुकूक़ हैं। यहूदी ने सुलतान का हाथ थामकर अर्ज़ किया हुज़ूर! मुझे भी उसी दीन की चादर में छिपा लो और उसी का कलिमा पढ़ा दो जिसकी गुलामी के सबब आज तुम इस बुलंद मर्तबा पर फ़ाइज़ हो।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! फ़रोग़े इस्लाम में मज़कूरा किरदार का बे पनाह हाथ है। सुलतानुल आरिफीन ने तो यहूदी पड़ोसी के साथ यह सुलूक किये लेकिन हम मुसलमान पड़ोसी बल्कि रिश्तेदार पड़ोसी के साथ भी ऐसा नहीं करते। ऐसे में बताओ! लोग कहां से इस्लाम की अज़मत को तसलीम करेंगे। आज बुज़ुर्गों के किरदार को अपनाने की ज़रूरत है, उनके नक़्शे क़दम पर चलने की ज़रूरत है और पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक की ज़रूरत है सच कहा है किसी शायरने :–

न किताबों से न कालेज के दर से पैदा।
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा।

अल्लाह हम सबको पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक करेन की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

ग़ीबत की मुज़म्मत

ख़ालिक़ अर्दो व समा ने कुरआने करीम में ग़ीबत की सख़्त मुज़म्मत की है और उसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने से तश्बीह दी है।

चुनांचे इरशादे बारी तआला है :–

ऐ ईमान वालो! बहुत गुमान से बचो, बेशक! कोई गुमान गुनाह हो जाता है और ऐब न ढूंढो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो। क्या तुम में कोई पसंद रखेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये, तो यह तुम्हें गवारा न होगा और अल्लाह से डरो! बेशक! अल्लाह बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। *(कन्ज़ुल इमान, पारा–26, रु–13, आ–11)*

मुफ़स्सिरे शहीर सदरुल अफ़ाज़िल अल्लामा नईमुद्दीन साहब क़िब्ला मुरादाबादी इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

कोई अपने मरे हुए भाई का गोश्त पसंद नहीं करता तो मुसलमान भाई की ग़ीबत भी गवारा न होनी चाहिये। क्योंकि उसको पीठ पीछे बुरा कहने से उसके मरने के बाद उसका गोश्त खाने के मिस्ल है। क्योंकि जिस तरह किसी का गोश्त काटने से उसको ईज़ा होती है उसी तरह उसकी बदगोई से क़ल्बी तकलीफ़ होती है और दर हक़ीक़त आबरु गोश्त से ज़्यादा प्यारी होती है। *(खज़ाइनुल इर्फान)*

और इस आयते करीमा का शाने नुज़ूल बयान करते हुए रक़म तराज़ हैं कि सैय्यदे आलम जब जिहाद के लिये रवाना होते और सफ़र फ़रमाते तो दो मालदारों के साथ एक गरीब मुसलमान को कर देते कि वह ग़रीब उनकी ख़िदमत करे, वह उसे खिलायें, पिलायें, हर एक काम चले। उसी तरह हज़रत सलमान दो आदमियों के साथ किये गये थे। एक रोज़ वह सो गये और खाना तैयार न कर सके तो उन दोनों ने इन्हें खाना तलब करने के लिये रसूल अकरम की ख़िदमत में भेजा। हुज़ूर के ख़ादिम हज़रत उसामा थे। उनके पास कुछ न रहा, उन्होंने फ़रमाया, मेरे पास कुछ नहीं। हज़रत सलमान ने आकर यही कह दिया तो उन दोनों रफ़ीक़ों ने कहा कि उसामा ने बुख़्ल किया। जब वह हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए, फ़रमाया, मैं तुम्हारे मुंह में गोश्त की रंगत देख रहा हूं। उन्होंने अर्ज़ किया कि हमने गोश्त खाया ही नहीं ! मदनी आक़ा ने इरशाद फ़रमाया, तुमने ग़ीबत की और जो मुसलमान की ग़ीबत करे उसने मुसलमान का गोश्त खाया। *(खज़ाइनुल इर्फ़ान)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! आज शायद ही कोई ऐसा मिले जो ग़ीबत के गुनाह में मुब्तला न हो। हर दो की मुलाक़ात पर किसी तीसरे की ग़ीबत हो ही जाती है। गोया ग़ीबत कोई गुनाह ही न हो। आज आपस में नाराज़गी, दिल आज़ारी, ख़ून ख़राबा, दुश्मनी, यह सब इसी वजह से हैं। हम उन बुराईयों को कोई अहमियत नहीं देते और उसमें गिरफ़्तार हुए चले जाते हैं। दुनिया व आख़रत में उसकी तकलीफ़ यह सब कुछ मेरे आक़ा ने बता दिया है, लिहाज़ा हम ग़ीबत से बचने की कोशिश करें और अल्लाह से मदद मांगे कि परवर्दिगार हम को ग़ीबत से बचाये और अपने महबूब के फ़रमान पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ ग़ीबत क्या है ? ★

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, तुम्हें मालूम है ग़ीबत क्या है ? लोगों ने अर्ज़ किया, अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ख़ूब जानते हैं। इरशाद फ़रमाया, ग़ीबत यह कि तू

अपने भाई का उस चीज़ के साथ ज़िक्र करे जो उसे बुरी लगे। किसी ने अर्ज़ की अगर मेरे भाई में वह मौजूद हो तो मैं कहता हूं ? (जब तो ग़ीबत न होगी ?) फ़रमाया, जो कुछ तुम कहते हो अगर उसमें मौजूद है जब ही तो ग़ीबत है! और जब तुम ऐसी बात कहो जो उसमें न हो तो यह बोहतान है। *(सहीह मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ग़ीबत की तारीफ़ जान लेने के बाद अब हमेशा हम को ख़्याल रखना चाहिये कि ज़बान से किसी के मुताल्लिक़ कोई ऐसी बात न निकले जो ग़ीबत की तारीफ़ में शामिल हो वरना ग़ीबत के जुर्म की सज़ा बहुत ही भयानक है जो हदीसे मुबारक में मज़कूर है, जिसे हम में का कोई बर्दाश्त करने की ताक़त नहीं रखता। लिहाज़ा ज़बान की हिफ़ाज़त करें और ग़ीबत से परहेज़ करें। अल्लाह हम सबको ज़बान की हिफ़ाज़त की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन

★ ग़ीबत ज़िना से भी बदतर है ★

हज़रत अबू सईद व जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया ग़ीबत ज़िना से भी ज़्यादा सख़्त चीज़ है। लोगों ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! ग़ीबत ज़िना से सख़्त क्यों कर है? आक़ा ने इरशाद फ़रमाया, मर्द ज़िना करता है तो फिर तौबा कर लेता है तो अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेता है और ग़ीबत करने वाले की मग़्फ़िरत न होगी जब तक वह न माफ़ कर दे जिसकी ग़ीबत की है। *(रवाहुल बयहकी शोअबुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ज़िना जैसे फ़ेअले बद से होने वाली बर्बादी से कौन बेख़बर है? सब जानते हैं। कि ज़िना की वजह से रिज़्क़ में तंगी और चेहरे का नूर ज़ाइल हो जाता है, दो ख़ानदान बर्बाद हो जाते हैं। ज़ानी की इज़्ज़त मुआशरा में कुछ नहीं होती। लेकिन आक़ा ने ग़ीबत को ज़िना से भी बदतरीन फ़रमाया। आप अंदाज़ा लगायें कि ग़ीबत के नुक़सानात कितने ज़्यादा होंगे और उसकी सज़ा भी ? लिहाज़ा चंद लम्हों की ज़बानी लज्ज़त के लिये ग़ीबत करके अपनी आख़ेरत बर्बाद नहीं करना चाहिये। अल्लाह हम सबको ग़ीबत से बचाये।

★ हदीसे मेअराज ★

हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, मैं शबे मेअराज में ऐसी क़ौम पर गुज़रा जो अपने चेहरे और सीने छीलते थे। मैंने कहा, यह कौन हैं ? बुलबुले सिदरा ने कहा, यह वह लोग हैं जो लोगों के गोश्त खाते थे और उनकी इज्ज़त व आबरू पर हमला करते थे। *(रुहुल बयान)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! ग़ीबत की सज़ा कितनी सख़्त तरीन है कि क़यामत के दिन अपने ही हाथों से अपने ही चेहरे और सीने छीलते होंगे, क्यूं इस लिये कि जब वह किसी की ग़ीबत किये होंगे तो उस शख़्स को रुसवा और उसके दिल को ज़ख़्मी किया होगा। इस लिये क़यामत के दिन ग़ीबत करने वाले के चेहरे और सीने को छीलने की सज़ा दी जायेगी ता कि उसे उसकी तकलीफ़ का एहसास हो। अल्लाह हम सबको अपने हबीब के सदक़े व तुफ़ैल में ग़ीबत से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ ग़ीबत की बदबू ★

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि हम हुज़ूरे अक़दस की ख़िदमत बाबरकत में हाज़िर थे। अचानक एक बदबू उठी रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, जानते हो यह बदबू क्या है? फिर ख़ूद ही इरशाद फ़रमाया, यह उनकी बदबू है जो मुसलमानों की ग़ीबत करते हैं। *(फतावा रज़विय्यह)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ताजदारे कायनात ने ग़ीबत करने वालों की ज़बान से निकलने वाले अलफ़ाज़ को बदबू फ़रमाया। इसलिये कि जब दो लोग ग़ीबत करते हैं गोया एक दूसरे से मिलकर उसकी नफ़रत व कदूरत दिल में पैदा करते हैं जिसकी वजह से उस शख़्स का वक़ार मज़रूह होता है, वह नफ़रतों का शिकार हो जाता है और मुआशरे में नफ़रतों का फैलाव होता है जिसे हुज़ूर अक़दस ने बदबू से ताबीर फ़रमाया। लिहाज़ा हमें चाहिये कि इस बुराई से बचें भी और बचाने की कोशिश भी करें। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमायें, आमीन।

★ ग़ीबत की बदबू अब क्यों महसूस नहीं होती ? ★

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि चूं कि हुज़ूर के अहद मुबारक में ग़ीबत कम की जाती थी इसलिये उसकी बदबू आती थी, मगर अब ग़ीबत इतनी आम हो गयी है कि मशाम उसकी बदबू के आदी हो गये हैं कि वह उसे महसूस ही नहीं कर सकते। उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स चमड़े रंगने वालों के घर में दाख़िल हो तो उसकी बदबू से एक लम्हा भी नहीं ठहर सकेगा। मगर वह लोग वहीं खाते पीते और सोते हैं और उन्हें बू महसूस ही नहीं होती। क्योंकि उनके मशामे इस क़िस्म की बदबू के आदी हो चुके हैं और यही हाल अब इस ग़ीबत की बदबू का है। *(मकाशिफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! आज शयद ही कोई तक़रीब ग़ीबत से खाली हो और कसरते ग़ीबत की वजह से बदबू का एहसास भी नहीं होता। आज हम लोग अपने प्यारे आक़ा की तालीमात से कितने दूर हो चुके हैं कि बुराई को बुराई मान कर और उसकी सज़ा के बारे में जानकर भी बचने की कोशिश नहीं करते। काश ! हमारे दिल में ज़रा सा भी ख़ौफे ख़ुदा पैदा हो जाये तो यक़ीनन ! इन बुराईयों से नफरत पैदा हो जायेगी। अल्लाह अपने अच्छों के सदक़े अच्छा बनाये और बुरों से और बुराईयों से बचाये।

★ पीप, ख़ून और बदबूदार मवाद की क़ै ★

हज़रत अनस से मरवी है कि हुज़ूर ने लोगों को एक दिन के रोज़े का हुक्म दिया और फ़रमाया कि मेरी इजाज़त के बग़ैर कोई भी रोज़ा इफतार न करे। यहां तक कि जब शाम हो गयी तो लोग आना शुरू हो गये और हर शख़्स हाज़िर होकर अर्ज़ करता, या रसूलुल्लाह ! मैंने दिन में रोज़ा रखा मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं इफ़तार करूं। आप उसे इजाज़त मरहमत फ़रमा देते, इसी तरह लोग आते गये और इजाज़त लेते गये। यहां तक कि एक आदमी ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! मेरे घर की दो जवान औरतों ने रोज़ा रखा है वह आप की ख़िदमत में आते शरमाती हैं, इजाज़त दीजिये ता कि वह रोज़ा इफ़तार कर लें। हुज़ूरे अक़दस ने

रूख़े अनवर फेर लिया। उसने फिर अर्ज़ की तो आपने फ़रमाया, वह शख़्स कैसे रोज़ेदार हो सकता है जिसका दिन लोगों का गोश्त खाते गुज़र जाये तुम जाओ और उनसे कहो कि अगर तुम रोज़ादार हो तो किसी तरह क़ै करो। चुनांचे उन्होंने क़ै की और हर एक ने ख़ून के लोथड़े की क़ै की, वह शख़्स हुज़ूर अकरम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सारी रूदाद सुनाई। आपने उसकी बात को सुनकर फ़रमाया, अगर यह चीज़ उनके पेट में मौजूद रहती तो उन्हें आग जलाती। एक रिवायत के अलफ़ाज़ कुछ इस तरह हैं :–

जब हुज़ूर ने उससे मुंह फेर लिया तो वह कुछ देर बाद दोबारा हाज़िर हुआ और अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! वह दोनों मर चुकी हैं या मरने के क़रीब हैं, हुज़ूर ने फ़रमाया, उन्हें मेरे पास लाओ। जब वह आ गयीं तो आपने प्याला मंगवाकर उनमें से हर एक से फ़रमाया, इसमें क़ै करो। चुनांचे एक ने पीप, ख़ून, और बदबूदार मवाद से प्याला भर दिया। फिर आपने दूसरी से भी क़ै करने को कहा तो उसने भी वैसे ही क़ै की। आपने फ़रमाया, उन दोनों ने अल्लाह के हलाल कर्दा रिज़्क़ से रोज़ा रखा और अल्लाह की हराम कर्दा अशिया से इफ़्तार किया। उनमें से एक दूसरे के पास जा बैठी और यह दोनों मिलकर लोगों का गोश्त खाती रहीं। (यानी ग़ीबत करती रहीं) *(मकाशिफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! बताओ ! इससे बेहतर भी कोई तरीक़ा है जिससे ग़ीबत की असलियत और उसकी हक़ीक़त को समझाया जाये। ग़ौर करें मुंह से भी नहीं खाया गया और पेट से गोश्त और पीप वग़ैरह क़ै में निकल रहा है। गोया ग़ीबत करने वाले बज़ाहिर लफ़्ज़ों से ग़ीबत करते हैं लेकिन हक़ीक़तन अपने भाईयों का गोश्त खाते हैं। जिसको ताजदारे कायनात ने क़ै में निकलवा कर बताया। उसके बाद भी अगर आज का मुसलमान न समझे और मुरदार भाई का गोश्त खाना चाहे तो कोई क्या करे ? बहर कैफ़ हम हुज़ूर के उम्मती हैं तो अपने आक़ा के फ़रमान पर अमल करने का जज़्बा हमारे अंदर होना चाहिये। आइये हम दुआ करें कि रब्बे करीम अपने महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल हमें ग़ीबत से बचाये। आमीन।

★ मुरदार गधे का गोश्त ★

हज़रत अबू हुरैरा रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत माइज़ अस्लमी को जब संगसार किया गया तो दो शख़्स आपस में गुफ़्तगू करने लगे। एक ने दूसरे से कहा, उसे देखो ! अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने उसकी पर्दा पोशी की थी (कि कोई गवाह नहीं था) मगर उसके नफ़्स ने न छोड़ा, कुत्ते की तरह रज़्म किया गया, हुज़ूर ने उन दोनों शख़्सों की बातों को सुनकर सुकूत फ़रमाया। कुछ देर तक चलते रहे। रास्ते में मरा हुआ गधा मिला जो पावं फैलाये हुए था। हुज़ूर ने उन दोनों से फ़रमाया, जाओ ! उस गधे का गोश्त खाओ। उन्होंने अर्ज़ किया, या नबी ! उसे कौन खायेगा? इरशाद फ़रमाया, जो तुमने अपने भाई की आबरू रेज़ीकी की वो इस मुर्दा गधेका गाश्त खानेसे भी ज़्यादा सख्त है। कसम है उसकी जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! वह (हज़रत माइज़ अस्लमी) इस वक्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहे हैं। *(अबू दाउद शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह ने हज़रत आमिर माइज़ को तौफ़ीक़ अता फ़रमाइ और उन्होंने दुनिया की सज़ा को पसंद फ़रमाया और आख़ेरत की तकलीफ़ से बच गये। उन सच्चे ताइब और फ़िक्रे आख़ेरत में सरशार ख़ुदा के बंदे की जब ग़ीबत की गयी तो हुज़ूर ने मुरदार गधे के गोश्त खाने का हुक्म दिया और हज़रत माइज़ के बारे में भी बता दिया कि उस सच्चे ताइब और फ़िक्रे आख़िरत में सरशार का मक़ाम कया है? पता चला कि अगर अल्लाह किसी को तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये तो उस तौबा करने वाले को कभी बुरा न कहा जाये। इसलिये कि सच्चे दिल से तौबा करने वाले पर मौला करम की नज़र फ़रमा देता है। हमें चाहिये कि हम अपनी ज़बान की हिफाज़त करें और किसी को हक़ीर और ख़ूद को बहुत ज़्यादा पारसा न समझें कि उसमें अल्लाह और उसके रसूल की नाराज़गी है। अल्लाह हम सबको और ख़ूद को हक़ीर समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और ग़ीबत से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आमीन।

★ ग़ीबत की क़दरे तफ़सील ★

आक़ाए नामदार मदनी ताजदारे के नज़दीक हर वह बात ग़ीबत में

दाख़िल है कि अगर सुनने वाला सुन लेता तो उसको बुरी लगती। चुनांचे हज़रत आइशा से रिवायत है कि वह कहती है कि मैंने नबी करीम से कहा, सफ़िय्यह के लिये यह काफ़ी है कि वह ऐसी हैं (यानी पस्ता क़द) उस पर हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया, तुमने ऐसा कलिमा कहा है कि अगर समन्दर में मिलाया जाये तो उस पर भी ग़ालिग आ जाये। *(इमाम अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाउद)*

यानी यह भी ग़ीबत में शुमार है और उसकी नहूसत का आलम यह है कि अगर समन्दर में डाल दिया जाये तो उसको मुतास्सिर कर दे। इससे साबित हुआ कि किसी पस्ता क़द को नाटा और बोना, कहना भी ग़ीबत में दाख़िल है जब कि बिला ज़रूरत हो। और ज़रूरत यह हो कि एक ही नाम के कई अफ़राद हों तो शनाख़्त के तौर पर कह सकते हैं मगर आम हालात में ऐसा कहना जाइज़ नहीं। यूं ही किसी की आंख में ख़राबी होती है तो उसको काना, और पांव अपंग हो तो लंगड़ा कहते हैं यह भी ग़ीबत है। और बज़ाहिर करने की ज़रूरत हो तो यूं कहना मुनासिब है कि फ़लां शख़्स जिसकी आंख में कुछ ख़राबी है या जिसका पावं कुछ ख़राब है ग़र्ज कि हत्तल इमकान मोमिन भाई की ईज़ा रसानी से परहेज़ करे। *(आम्म कुतुबे फिक़ह)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ग़ीबत की मुज़म्मत और उसके नुक़्सानात को ताजदारे कायनात ने किस किस तरह से बताये और ग़ीबत क्या है? उसकी वज़ाहत भी कर दी गयी। इस वज़ाहत के बाद शायद ही कोई मिले जो उस बुराई का मरतकिब न हो। अगर हम ग़ौर करें तो आज मुआशरे में उसको कोई बुराई समझता ही नहीं बल्कि अब हर मुलाक़ात में, ग़ीबत गुफ़्तगू में ग़ीबत मामूल बन चुका है। अगर आज भी हम इस बुराई से न बचे तो पता नहीं दुनिया व आख़रत में कितने नुक़्सानात उठाने पड़ेंगे। अल्लाह हम सबको अक़्ले सलीम अता फ़रमाकर ग़ीबत को बुराई समझकर बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ बदन की ग़ीबत ★

यह है कि मसलन कहा जाये कि यह कितना लंबा तड़ंगा है, काला धुंआ है, बिल्ली की आंखों वाला है वग़ैरह यह बदन की ग़ीबत है।

★ अख़्लाक़ की ग़ीबत ★

मसलन कोई अपने मुसलमान भाई के बारे में यूं कहे बदख़ू है, मुतकब्बिर,ज़ुबान दराज़ है और बुज़दिल है, निकम्मा है।

★ लिबास की ग़ीबत ★

खुले चोले, फ़क़ीरों वालों रखता है, बड़े भड़कीले लिबास पहनता है। अर्ज़ यह कि हर वह बात ग़ीबत में दाख़िल है कि अगर सुनने वाला सुन लेता तो उसको बुरी लगती।

★ किन लोगों की ग़ीबत जाइज़ है ? ★

तिबरानी ने मुआविया इब्ने हैदह से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया यानी फ़ासिक़ व फ़ाजिर के ऐब बयान करना ग़ीबत नहीं। *(कन्ज़ुल उम्माल)*

इसी तरह मज़लूम का हाकिम के सामने किसी ज़ालिमके ओयूब बयान करना ता कि उसकी दाद रसी हो सके, मुफ़्ती के सामने फ़तवा तलब करने के लिये किसी के ओयूब पेश करना। मगर उस सूरत में बेहतर यह है कि नाम न ले बल्कि यूं कहे कि एक शख़्स ने एक शख़्स के साथ यह किया। बल्कि ज़ैद व अमर से ताबीर कर ले जैसा कि इस ज़माने में इस्तिफता की यही सूरत है। फिर भी अगर नाम ले लिया जब भी जाइज़ है, इस में क़बाहत नहीं जैसा कि हदीसे पाक में मज़कूर है। हिंदा ने अबू सुफ़ियान के मुताल्लिक़ हुज़ूर की ख़िदमत में शिकायत पेश की कि वह बख़ील हैं उतना नुफ़क़ा नहीं देते जो मुझे और मेरे बच्चों के लिये काफ़ी हो, मगर जब कि मैंने उनकी ला इलमी में कुछ ले लूं। इरशाद फ़रमाया, तुम इतना ले सकती हो जो मारूफ़ के साथ तुम्हारे और बच्चों के लिये काफ़ी हो।

इसी तरह मुसलमानों को फ़ित्ना व फ़साद से बचाने के लिये किसी का ऐब ज़ाहिर करना। और जो शख़्स अलल ऐलान फ़िस्क़ व फ़िजूर और तरह तरह के गुनाहों का मुरतकिब हो मसलन चोर, डाकू, ख़्यानत करने वाला, ज़िनाकार, ऐसे लोगों के ओयूब बयान कर देना इस नियत से ता कि लोग नुक़सान से महफ़ूज़ रहें। यह और इस जैसी बातें जिनसे मक़सूद इस्लाहे

मुआशरा हो तो ग़ीबत नहीं।

★ ग़ीबत का कफ़्फ़ारा ★

बैहक़ी ने दावाते कबीर में हज़रत अनस से रिवायत है कि हुजूर ने फ़रमाया, ग़ीबत का कफ़्फ़ारा यह है कि जिसकी ग़ीबत की है उसके लिये इस्तिग़फ़ार करे और यूं कहे, इलाही ! हमें और उसे बख़्श दे। मेरे प्यारे आक़ा के दीवानो ! अमदन या सहवन जिस किसी की ग़ीबत हमसे हो गयी हो अल्लाह अपने हबीबे करीम के सदक़ा व तुफ़ैल माफ़ फ़रमाये और जिसकी ग़ीबत हुई हो उसकी और हमारी मग्फ़िरत फ़रमाये।

★ हिकायते शैख़ सअदी

बुलबुले शीराज़ हज़रत शैख़ सअदी अपनी मश्हूरे ज़माना तसनीफ़ गुलिस्तां में अपना एक वाक़िया बयान करते हुए तहरीर फ़रमाते हैं कि मैं अभी बच्चा था सन्ने शऊर को न पहुंचा था लेकिन हाल यह था कि मैं इबादत बहुत करता था, शब खैज़ी और ज़हद व इबादत पर हरीस था और परहेज़गार भी ग़ज़ब था। एक शब जब कि वालिदे मरहूम की ख़िदमत में था। सारी रात इबादत में गुज़ार दी और तिलावते कुरआन करता रहा। चंद लोग हमारे क़रीब मज़े से सो रहे थे। मैंने बाप से कहा कि इनमें से कोई भी ऐसा नहीं जो उठ कर दो गाना पढ़ ले। ख़्वाब ग़फ़लत में ऐसे ग़र्क़ हैं गोया मुर्दा हैं। वालिदे गिरामी ने फ़रमाया, बेटे ! अगर तुम सारी रात सोते तो इस इबादत से बेहतर था कि ग़ीबत में गिरफ़्तार न होते।

यानीः मुद्दइ सिर्फ़ ख़ुद को देखता है इस गुमान से जो उसके अंदर है अगर दिल का दरवाज़ा खोल लो तो अपने से किसी को आजिज़ न देखोगे।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! यह अल्लाह वाले थे जो रज़ाए इलाही के लिये इबादत करते थे लेकिन अगर ऐसा लफ़्ज़ जिससे ख़ूद सताई और दूसरे को हक़ीर मानने वाली बात हो तो फ़ौरन ताइब हो जाते है और लोगों को तौबा की जानिब राग़िब कर देते। और अगर ग़लती से किसी को हक़ीर जान भी लिया तो ग़लती का एहसास होते ही रुजूअ भी कर लिया

करते। लेकिन हमारा हाल तो यह है कि किसी से अपने को कम नहीं समझते और इबादत व रियाज़त न करके भी आबिद व ज़ाहिद कहलवाना पसंद करते हैं और अपनी तारीफ़ अपने मुंह करने की आदत बना चुके हैं। अल्लाह हमें नेक बनाये और नफसे लव्वामा की शरारतों से महफूज़ फ़रमाये।

★ ग़ीबत से बचने का एक आसान तरीक़ा ★

मुहक़्क़िक़े अलल इत्लाक़ सैय्यदना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी رحمۃ اللہ علیہ तहरीर फ़रमाते हैं कि मदीने के ताजदार का फ़रमान आलीशान है :–

जब किसी मजलिस में बैठो और कहो :–

तो अल्लाह तुम पर फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा और जब मजलिस से उठो तो पढ़ लिया करो। तो अल्लाह तबारक व तआला लोगों की तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज रखेगा। *(जज़्बुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा अमल ख़ूद भी करें और उसे याद कर लें और अपने घर वालों नीज़ दोस्त व अहबाब को इस अमल का आदी बना दें। अल्लाह दोनों जहां में इसका सिला अता फ़रमायेगा अल्लाह हम सबको अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

तकब्बुर की मुज़म्मत

तकब्बुर और ख़ूद बीनी फ़ज़ाइल से दूर कर देते हैं और ज़ाइल के हुसूल का सबब बनते हैं। और इंसान की ज़िल्लत व रुसवाई और रज़ालत के लिये इतना ही काफ़ी है कि तकब्बुर उसे नसीहत सुनने नहीं देता और वह अच्छी आदतों के क़बूल करने से पसो पेश करता है।

तकब्बुर का माअना है दूसरों को हक़ीर समझते हुए अपने आपको सबसे बड़ा और आला तसव्वुर करना।

अल्लाह ने कुरआन मजीद की मुताद्दिद आयात में तकब्बुर की मुज़म्मत की है और मुतकब्बिर को बुरा गर्दाना है। चुनांचे इरशाद है :–

अल्बत्ता मैं ज़रूर उन लोगों को अपनी आयात से फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते हैं। *(पारा–9, रु–8, आ–46)*

दुसरी जगह इर्शाद फमाता है : "वह तकब्बुर करने वालों को पसंद नहीं फ़रमाता।"

एक और मक़ाम पर कुरआन इलाही है :–

वह जो मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं बहुत जल्द जहन्नम में ज़लील होकर दाख़िल होंगे। *(पारा–24, रु–11, आ–60)*

★ ★ ★

प्यारे आक़ा के फ़रमूदात

★ जन्नत से महरूम ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद से मरवी है कि हुज़ूर रहमते आलम ने इरशाद फ़रमाया, जिस शख़्स के दिल में राई के दाना के बराबर किब्र व तकब्बुर होगा वह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा और जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर ईमान होगा वह जहन्नम में नहीं जायेगा। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! आज जो कुछ टूटी फूटी इबादत या अच्छाई करने की सआदत अल्लाह अता फ़रमाता है वह सब बंदा जन्नत के हुसूल की ग़र्ज़ से ही करता है। काश! उसके किसी नेक अमल को अल्लाह कुबूल फ़रमाये और जन्नत का मुज़दाए जांफिज़ा उसे अता कर दे! लेकिन अगर आबिद को अपनी इबादत और तक़्वा और ज़हद पर गुरूर और तकब्बुर पैदा हो जाये और वह अकड़ने लगे। लोगोंमें अपनी बड़ाई का तलबगार रहे, नीज़ बुलंद मक़ाम का ख़्वाहिशमंद है और लोगों से गुलामाना सुलूक करे तो अल्लाह न उसकी इबादत व रियाज़त देखता है बल्कि उस शख़्स को जो तकब्बुर करे ख़्वाह माल की वजह से या इक़्तेदार की वजह से या शोहरत की वजह से अल्लाह उसे जन्नत में नहीं जाने देगा। लिहाज़ा हर उस अमल से बचना चाहिये जो जन्नत में जाने से रोकता हो। तकब्बुर यक़ीनन जन्नत में जाने से रोकता है, लिहाज़ा हम अल्लाह की बारगाह में दुआ करें कि परवरदिगारे आलम हम सबका ख़ात्मा ईमान पर फ़रमाये और तकब्बुर से बचाये।

★ मुतकब्बिर पर नज़रे रहमत न होगी ★

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, तीन लोग ऐसे हैं कि रोज़े क़यामत न अल्लाह उनसे कलाम फ़रमाये और न उन्हें पाक करेगा, न उनकी तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमायेगा, बूढ़ा ज़ानी,

झूठा बादशाह, और तकब्बुर करने वाला फ़क़ीर। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह अगर क़यामत के दिन नज़रे रहमत न फ़रमाये तो बंदे की नजात कैसे होगी? हर कोई चाहेगा कि क़यामत के होलनाक दिन रब की रहमत उसकी तरफ़ मायल हो और अल्लाह बंदे से कलाम फ़रमाये, लेकिन तीन कम नसीबों से अल्लाह कलाम न फ़रमायेगा और न नज़रे रहमत फ़रमायेगा और न उन्हें पाक करेगा। 1. बूढ़ा ज़ानी। बुढ़ापे में इंसान को अल्लाह से ज्यादा डरना चाहिये इसलिये की वह उम्र की उस मंज़िल पर क़दम रख चुका है जहां लोग उसे एहतेराम की निगाह से देखते हैं और उस पर एतेमाद करते हैं। अगर उनका एतेमाद तोड़ कर अपनी उम्र का लिहाज़ रखे बग़ैर वह ज़िना का मुर्तकिब होता है तो अल्लाह उस पर रहमत की नज़र कैसे फ़रमायेगा? 2. और ऐसे ही झूठा बादशाह उस पर भी लोग एतेमाद करते हैं कि यह बादशाह होकर भी झूठ कैसे बोलेगा। लेकिन बादशाह झूठ बोलकर धोखा देता है तो मौला क़यामत के दिन उस पर नज़रे रहमत नहीं फ़रमायेगा। 3. तकब्बुर करेन वाला फ़क़ीर : ग़ुरबत और इफ़्लास से परेशान होने के बावजूद जो अकड़ता हुआ और तवाज़ोअ की बजाए घमंड व तकब्बुर करता हो जैसा कि आज हम अक्सर ऐसे लोगों को देखते हैं। तो ऐसे लोगों पर क़यामत के दिन अल्लाह नज़रे रहमत नहीं फ़रमायेगा और न कलाम करेगा। अल्लाह की नज़रे रहमत और कलाम से बंदे को राहत मिलेगी, लेकिन मज़कूरा तीन शख़्स कलाम और नज़रे रहमत से महरूम रहेंगे। अल्लाह अपने हबीब के सदक़ा व तुफ़ैल में हम को मज़कूरा तीन लोगों में न बनाये और हम पर रहमत भरी नज़र फ़रमाकर हम सबको क़यामत की रुसवाई से बचाये।

★ मुतकब्बिर कुत्ते और खिंज़ीर से भी ज़्यादा ज़लील ★

हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म ने मिम्बर पर खड़े होकर फ़रमाया ऐ लोगो! तवाज़ोअ इख़्तेयार करो, मैंने हुजूर को फ़रमाते सुना है कि जो ख़ुदा की रज़ा हासिल करने के लिये तवाज़ोअ इख़्तेयार करता है ख़ुदाए रफ़ीअ उसे बुलदं फ़रमा देता है यहां तक कि वह अपने आपको छोटा समझता

है मगर लोगों की नज़र में बड़ा समझा जाता है। और जो घमंड करता है अल्लाह उसे पस्त कर देता है यहां तक कि वह लोगों की नज़रों में ज़लील व ख़्वार होता है और अपने तइन खूद को बड़ा समझता है हालांकि अंजाम कार एक दिन वह लोगों की निगाह में कुत्ते और सुअर से भी बदतर हो जाता है। *(रवाहुत तिर्मिज़ी)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! बुलंद वह नहीं होता जो ख़ूद अपने आपको बुलंद समझे। बल्कि बुलंद वह होता है जिसे अल्लाह रब्बुल इज्ज़त बुलंद अता फ़रमाता है। ख़ूद को बुलंद समझने वाले को अल्लाह कुत्ते और सुअर से भी बदतर बना देता है। जिस तरह इंसान कुत्ते और सुअर को ज़लील समझकर कभी पत्थर मारते हैं कभी अपनी आबादी से निकालने के लिये तरकीबें सोचते हैं वैसा ही अंजाम मुतकब्बिर शख़्स का होता है। ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि ख़ूद को बड़ा समझकर कया हासिल होगा? इससे बेहतर है कि तवाज़ोअ और आजिज़ी करें, इंकेसारी का दामन थामे रहें और कभी यह ख़्याल हमारे दिल में न आये कि मैं भी कुछ हूं। ख़बरदार! अल्लाह न करे कि ऐसा ख़्याल हमारे दिल में आये। याद रखो ! जिस दिन ऐसा ख़्याल हमारे दिल में आयेगा उसी दिन हम अपनी तबाही और बर्बादी को दावत दे चुके होंगे। अल्लाह हम सबको मुतवाज़ेअ बनाये, आमीन।

★ मुतकब्बिर जहन्नमी है ★

हज़रत हारिषा बिन वहब से मरवी है। फ़रमाया, मैनें हुजूर को फ़रमाते सुना क्या मैं तुम्हें दोज़ख़ियों के मुताल्लिक़ न बताऊं ? फिर आपने ख़ूद बताया, हर दुरुशत खू और मुतकब्बिर शख़्स। *(मुस्लिम शरीफ, अबू दाउद , इब्ने माजह)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला ने जन्नत और दौज़ख़ दोनों पैदा फ़रमाई और दोनों में इंसान जायेंगे। दोज़ख़ में जो डाले जायेंगे उनके हवाले से ताजदारे कायनात ने फ़रमा दिया कि दुरुशत खू यानी बुरी आदत, बुरे अख़लाक़, तुर्श लब व लहजे में कलाम करने वाला और मुतकब्बिर शख़्स यानी ख़ूद को बड़ा समझने वाला। जैसा कि

आजकल बहुत सारे लोग दौलत की फ़रावानी की वजह से ग़रीबों को हक़ीर समझते हैं और किसी लायक़ नहीं समझते, नीज़ हमेशा उनकी ख़्वाहिश यही रहती है कि ग़रीब उनके सामने सज्दा रेज़ हों, अल्लाह के रसूल ने ऐसे लोगों को दोज़ख़ी क़रार दिया हैं लिहाज़ा हम में से जिस किसी के अंदर यह बुराई हो उससे बाज़ आकर सच्चे दिल से तौबा करना चाहिये ता कि ताजदारे कायनात की ख़ुशी हासिल हो सके। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये कि हम सब हमेशा मुतवाज़ेअ बनकर रहें।

★ तकब्बुर सिर्फ़ अल्लाह को ज़ेबा है ★

हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि हदीसे क़ुदसी में है, किब्रियाई और बड़ाई मेरी चादर है और अज़मत मेरा ईज़ार है, जो शख़्स इन दोनों में से किसी पर मेरे साथ झगड़ा करेगा मैं उसे जहन्नम में डाल दूंगा और ज़रा भी परवाह न करूंगा।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! अल्लाह ने किब्रियाई को अपनी चादर फ़रमाया और अज़मत को ईज़ार फ़रमाया। आप अच्छी तरह जानते हैं कि अगर कोई किसी की चादर पर अपना क़ब्ज़ा जमाने की कोशिश करे तो उसके जलाल का आलम क्या होता है? याद रखें ! पूरे कुरआन मुक़द्दस का मुताला करें तो यह बात वाज़ेह हो जाती है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ात ही अकबर नहीं बल्कि उसका ज़िक्र भी अकबर है। इंसान कितना नादान है कि थोड़ी सी दौलत मिलने पर मामूली इक़्तेदा मिलने पर, शोहरत मिलने पर अपने आपको बड़ा समझने लगता है और तकब्बुर करने लगता है। इंसान को याद रखना चाहिये कि तकब्बुर सिर्फ़ अल्लाह की शायाने शान है जो तमाम अुयूब से पाक है ! ख़बरदार ! अपने आपको किब्र व गुरूर जैसी मज़मूम सिफ़ात से बचाओ, वरना जहन्नम के दहकते हुए शोले हमारा ठिकाना न होंगे। रब्बे क़दीर हम सबको किब्र व गुरूर से बचाये और मुतावाज़ेअ और मुनकसिरुल मिज़ाज़ बनाये।

रिवायत है कि हुज़ूर ने एक मर्तबा अपनी मुबारक हथेली पर लुआबे

दहन लगाकर फ़रमाया, अल्लाह फ़रमाता है, ऐ इंसान ! तू गुरूर कर रहा है हालांकि मैंने तुझे इस जैसे पानी से पैदा किया है, यहां तक कि जब मैंने तुझे मुकम्मल कर दिया तो रंग बिरंगे कपड़े पहनकर ज़मीन पर दनदनाता फिर रहा है, हालांकि तुझे उसी ज़मीन में जाना है। तूने माल जमा करके उसे रोक लिया मगर जब मौत मेरे सामने आ जाती हे तो सदक़ा करने की इजाज़त तलब करता है अब सदक़ा करने का वक़्त कहां ? *(मकाशिफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! जिन चीज़ों की वजह से इंसान मग़रूर होता है। दुनिया से कूच के वक़्त उन्हीं चीज़ों से नफ़रत पैदा हो जाती है। इंसान माल की वजह से मग़रूर हुआ अब माल दे कर इत्मिनान हासिल करना चाहता है और आरज़ू करता है कि काश! माल को मौत से पहले सदक़ा व ख़ैरात करता रहता और गुरूर न करता तो मौत के वक़्त बेचैनी न होती। ज़रा सोचो तो सही कि वह इंसान आख़िर गुरूर किस बात पर करे जिस की हक़ीक़त यह है कि वह एक नापाक क़तरे से पैदा किया गया। मौला हम सबको दोनों जहान में इज्ज़त व सुर्ख़रूई नसीब फ़रमाये और हर बुराई से बचाये।

★ तीन शख़्सों पर जहन्नम का मख़्सूस अज़ाब ★

नबी करीम फ़रमाते हैं कि जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी जिसके दो कान, दो आंखें और कुव्वते गोयाई रखने वाली ज़बान होगी। वह कहेगी मुझे तीन शख़्सों पर मुक़र्रर किया गया है, हर सरकश मुतकब्बिर के लिये, अल्लाह के साथ शरीक ठहराने वाले के लिये और तस्वीरें बनाने वाले के लिये।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! जहन्नम के अज़ाब के तसव्वुर ही से दिल दहल जाता है और मज़ीद बरां मख़सूस क़िस्म का अज़ाब मख़सूस लोगों पर ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ में जिन आमाल का ज़िक्र किया गया है उनमें से किब्र और तस्वीर कशी का अमल क़ौमे मुस्लिम में बहुत ज़्यादा पाया जाता है। अल्लाह रहम व करम फ़रमाये। आज कल हर एक अपने आपको बहुत बड़ा समझता है, चाहे वह कुछ भी न हो। कुरूने ऊला के मुसलमान जो सही माअना में मुसलमान थे वह अपने आपको कुछ नहीं समझते थे। मेरे प्यारे

आक़ा के प्यारे दीवानो ! अगर आख़ेरत के अज़ाब से बचना चाहते हो तो बाज़ आ जाओ ऐसे आमाल से और आज ही अपने माबूदे बरहक़ की बारगाह में तौबा कर लो। वह ग़फ़ूरुर रहीम है ज़रूर रहमत की नज़र फ़रमायेगा। अल्लाह हम सबको इन आमाले बद से महफ़ूज़ फ़रमाये।

★ मुतकब्बिर च्यूटियों के मानिंद होंगे ★

मैदाने महशर में तकब्बुर करने वालों को इस तरह लाया जायेगा कि उनकी सूरतें तो इसांनों की होंगी मगर उनके क़द च्यूटियों के बराबर होंगे और यह लोग घसीटते हुए जहन्नम की तरफ़ लाये जायेंगे जिसका नाम "बोलिस"ना उम्मीदी है और वह ऐसी आग में जलाये जायेंगे जिसका नाम "नारुल अन्वार" है और उन्हें दोज़ख़ियों का पीप पिलाया जायेगा।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ताजदारे कायनात ने मुतकब्बिर का अंजाम बता दिया। कितना एहसान है हम पर सरकारे दो आलम का कि जिन गुनाहों के सबब आख़ेरत में ज़िल्लत व रुसवाई होगी उनकी निशानदेही ही दुनिया में फ़रमा दी। दुनिया में गर्दन ऊंची करके चलने वाला इंसान, अपने आपको बड़ा समझने वाला इंसान, अकड़ कर चलने वाला इंसान कल बरोज़े क़यामत उसका क़द च्यूंटी जैसा होगा और उसे ज़िल्लत व रुसवाई के अज़ाब में गिरफ़्तार किया जायेगा। अल्लाह को तकब्बुर बेहद नापसंद है। आप मज़कूरा हदीस शरीफ़ की रौशनी में समझें कि वह लोग जो मुतकब्बिर थे उनका अंजाम कितना भयानक होगा। अल्लाह क़यामत के रोज़ उनकी हैसियत को बता देगा जो अपने आपको बड़ा समझते थे। क़यामत के रोज़ मुतकब्बिर को पता चल जायेगा कि बड़ा कौन है ?

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अगर आज से पहले तकब्बुर में मुब्तला थे तो आज ही तौबा कर लो इंशाअल्लाह अब कभी तकब्बुर न करेंगे। अल्लाह करीम है वह अपने बंदों की तौबा को पसंद भी फ़रमाता है और क़बूल फ़रमाकर उन पर करम की नज़र फ़रमाता है। रब्बे क़दीर अपने प्यारे महबूब के सदक़े व तुफ़ैल में सबके सग़ीरा व कबीरा गुनाहों को माफ़ फ़रमाये।

झूठ की लानत

झूठ बहुत बड़ा ऐब, और बदतरीन गुनाहे कबीरा है। हमारे मुआशरा में अनगिनत बुराईयां महज़ झूठ की वजह से परवान चढ़ती हैं। झूठ बज़ाहिर एक गुनाह है लेकिन इससे हज़ारों गुनाह जन्म लेते हैं। झूठे आदमी पर कोई एतेमाद और भरोसा नहीं करता, और न उसकी किसी बात का कोई एतेबार होता है। जो आदमी झूठा होता है उसकी सच बात भी मशकूक व मुश्तबा हो जाती है। ग़र्ज झूठा आदमी दुनिया में बे एतेमाद व ज़लील होता है और आखेरत में भी अज़ाबे नार का मुस्तहिक़ होता है।

झूठ की बुराई और झूठ की मुज़म्मत के लिये यही काफ़ी है कि कुरआने हकीममें मुतअद्दिद जगहों पर झूठों पर अल्लाह की लानत का ज़िक्र किया गया है। चुनांचे इरशादे रब्बानी है : तो झूठों पर अल्लाह की लानत डालें। *(सूरअे आले इमरान)*

लानत का क्या मतलब है ? उसका मतलब यह है कि बंदा झूठ बोल कर अल्लाह की रहमत से दूर हो जाता है।

कसीर हदीसे करीमा झूठ की मुज़म्मत और झूठे के मलऊन व मरदूद होने के बारे में मौजूद हैं।

चन्द अहादीस ज़िक्र की जाती है :–

★ मोमिन झूठा नहीं हो सकता ★

हज़रत सफवान बिन सुलैम से रिवायत है कि हुज़ूर सैयदे आलम से दर्याफ़्त किया गया कि मोमिन बुज़दिल होता है ? हुज़ूर ने

फ़रमाया, हां ! (हो सकता है) अर्ज़ किया गया, मोमिन बख़ील हो सकता है ? फ़रमाया, हां ! हो सकता है। फिर पूछा गया, क्या मोमिन झूठा हो सकता है ? मदनी ताजदार ने फ़रमाया, नहीं ! मोमिन झूठा नहीं हो सकता। *(इमाम मालिक, मिश्कात)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! जो मोमिन होगा वह यक़ीनन झूठ से अपने आपको बचायेगा क्योंकि मोमिन अल्लाह से डरता है, उसकी रहमत का तलबगार होता है। मोमिन पर लोगों का एतेबार होता है, अगर एक कलिमा पढ़ने वाला झूठ बोले तो लोग इस्लाम की तालीम पर कीचड़ उछालेंगे और झूठ बोलने वाले की इज़्ज़त व वक़ार भी मजरूह होगा और वाक़ई झूठ इतना बुरा फ़ेअल है कि मुआशरे में झूठे की कोई इज्ज़त नहीं होती। ताजदारे कायनात ने फ़रमान के मुताबिक़ ईमान और झूठ दोनों किसी बंदे में जमा हों ऐसा नहीं हो सकता। इसलिये कि हुजूर रहमते आलम ने फ़रमाया, मोमिन का बुज़दिल होना मुमकिन है, मोमिन का बख़ील होना मुमकिन है लेकिन मोमिन झूठा नहीं हो सकता। अल्लाह न करे सद बार न करे कि हमारी ज़बान से झूठ निकल जाता हो तो डरना चाहिये कि हमारा ईमान ख़तरे में पड़ जाता है। लिहाज़ा झूठ से बचना गोया ईमान को बचाना है। अल्लाह हुजूर के सदके व तुफ़ैल झूठ से बचने की हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ फ़रिश्ता एक मील दूर चला जाता है ★

हज़रत इब्ने उमर से रिवायत है कि हुजूर ने फ़रमाया, जब बंदा झूठ बोलता है तो उसकी बदबू से फ़रिश्ता एक मील दूर चला जाता है। *(तिर्मिज़ी)*

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! फ़रिश्ते इंसान की हिफ़ाज़त करते हैं, हर इंसान के साथ फ़रिश्ते बे हिसाब होते हैं, उसके अलावा ज़िक्रे इलाही और ज़िक्रे रसूल की महफ़िल में भी फ़रिश्ते होते हैं बाज़ार में भी फ़रिश्ते होते हैं। लेकिन बंदा जब झूठ बोलता है तो उसके मुंह से इतनी बदबू निकलती है कि फ़रिश्ते एक मील दूर हट जाते हैं। ग़ौर करें कि जब झूठ बोलने वाले के

साथ फ़रिश्ते नहीं रहना चाहते तो अल्लाह की रहमत उसके साथ कहां से रहेगी? और जब रहमत नहीं रहेगी तो बरकत कहां से रहेगी? ख़ुदारा ! अपने आपको हलाकत से बचाओ और अल्लाह की रहमत व बरकत के हुसूल के लिये अपने दामन को झूठ के दाग़ से बचाओ। अल्लाह अपने सच्चे नबी करीम के तुफ़ैल हम सबको सच्चा बनाए।

★ झूठ अलामते निफ़ाक़ है ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अलआस से मरवी है कि हुजूर ने फ़रमाया, चार ख़सलतें जिसके अंदर पाई जायें वह पक्का मुनाफ़िक़ है। और जिसके अंदर उनमें से एक पायी जाये उसके अंदर निफ़ाक़ की एक ख़सलत मौजूद है ताकि तर्क कर दे। (वह ख़सलतें यह हैं) जब उसको अमानत दी जाये तो उसमें ख्यानत करे, जब बात करे तो झूठ बोले, जब अहद करे तो अहद शिकनी करे और जब झगड़ा करे तो बेहूदा करे। *(बुखारी , मुस्लिम)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मुनाफ़िक़ों की ख़सलत का ज़िक्र हदीस शरीफ़ में किया गया है। सबसे पहले मुनाफ़िक़ का ठिकाना क़यामत में क्या है उसे जान लें ता कि निफ़ाक़ से बचने की कोशिश करें।

कुरआने मुक़द्दस में रब्बे क़दीर ने इरशाद फ़रमाया :—

बेशक ! मुनाफ़िक़ीन जहन्नम के सबसे निचले दर्जे में हैं। मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! निफ़ाक़ की चार अलामतें हदीस शरीफ़ में बयान फ़रमाई गयी हैं, वह आज तक़रीबन उम्मते मुस्लेमा के अक्सर अफ़राद में नज़र आती हैं। पहला ख़्यानत। अल्लाह तआला रहम व करम फ़रमाये यह बला भी आम है। लोग अमानतों में ख़्यानत को खास गुनाह तसव्वुर नहीं करते। इसी तरह वादा ख़िलाफ़ी। तिजारत के मैदान से लेकर हर महाज़ पर यह बुराई आम है। और झूठ यह तो आज के दौर में फ़न का दर्जा पा चुका है ! और झगड़े में बेहूदा गोई, तो यह भी क़ौम मुस्लिम में मामूली बात है। इसको भी लोग कोई ख़ास बुराई नहीं समझते। हालांकि सब मोमिन होने का दावा करते हैं लेकिन अगर यह बुराईयां हम में हैं

तो हम से बड़ा कमबख़्त कोई नहीं कि निफ़ाक़ की निशानियां हम में सरायत कर चुकी हैं। इसलिये हम को चाहिये कि मज़कूरा चारों ख़सलतों से तौबा करें और आइंदा भी अल्लाह हम सबको निफ़ाक़ की जुमला क़िस्मों से बचाये और रहमते आलम के दामन में जगह अता फ़रमाये।

★ सबसे बड़ा झूठ ★

हज़रत इब्ने उमर से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम ने फ़रमाया, सबसे बड़ा झूठ यह है कि कोई शख़्स अपनी आंखों को वह चीज़ दिखाये जो उन्होंने नहीं देखीं। *(बुखारी शरीफ)*

★ झूठ अकबर कबाइर है ★

हज़रत अबू बक्र से मरवी है कि रसूले सादिक़ ने फ़रमाया, क्या मैं गुनाहे कबीरा में से ज़्यादा बड़े बड़े गुनाहों को न बता दुं? तो मैंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया, बड़े गुनाहों में से ज़्यादा बड़े बड़े गुनाह यह हैं:

★ ख़ुदा के साथ किसी को शरीक ठहराना।

★ मां बाप की नाफ़रमानी और ईज़ा रसानी करना।

यह फ़रमाते वक़्त हुज़ूर ताजदारे अरबो अलम मसनद लगाकर लेटे हुए थे। एक दम बैठ गये और फ़रमाया ख़बरदार ! और झूठ बात। फिर उसी लफ़्ज़ को इतनी देर तक दोहराते रहे कि हम लोगों ने अपने दिल में कहा, काश ! हुज़ूर इस बात के फ़रमाने से ख़ामोश हो जाते और इससे आगे कोई दूसरी बात फ़रमाते। *(बुखारी शरीफ, जिल्द अव्वल)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! ताजदारे कायनात ने गुनाहे कबीरा का ज़िक्र करते हुए जब झूठ का ज़िक्र फ़रमाया तो किस तरह अचानक बैठ गये और आगाह करते हुए ख़बरदार ! करते हुए झूठ को गुनाहे कबीरा में बताया ता कि उम्मत के दिल में झूठ बोलने से नफ़रत पैदा हो और इस गुनाहे कबीरा से अपने आपको बचाये। मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! झूठ से परहेज़ करके तो देखो कितना करम ख़ुदावंदी होता है।

उम्मीदे कामिल है कि इंशाअल्लाह आज से हम ज़रूर झूठ से अपने आपको बचाने की कोशिश करेंगे। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन

★ हज़रत लुक़मान की नसीहत ★

आपने अपने बेटों से बतौर नसीहत इरशाद फ़रमाया कि झूठ मत बोलना। अगरचे झूठ चिड़िया के गोश्त की तरह लज़ीज़ होता है लेकिन ज़रा से झूठ बोलने वाले को हलाक व बर्बाद कर देती है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हज़रत लुक़मान अपने बेटों को झूठ से बचने की नसीहत फ़रमाते हैं जब कि हम अपने बच्चों को ख़ूद झूठ बोलना सिखाते हैं। आप रोज़ मर्रा के मामूलात में देखते होंगे के बाज़ार से लेकर घर के दरवाज़े तक बच्चों ही का इस्तेमाल झूठ बोलने के लिये करते हैं। हज़रत लुक़मान ने मिसाल भी कितनी अच्छी दी कि झूठ चिड़िया के गोश्त की तरह लज़ीज़ होता है लेकिन मामूली झूठ झूठ बोलने वाले को हलाक व बर्बाद करके रख देता है। जिस तरह गोश्त की लज़्ज़त थोड़ी देर के लिये है यूं ही झूठ की लज्ज़त भी थोड़ी देर के लिये है। काश ! हम समझने की कोशिश करते और झूठ न बोल कर ख़ूद को हलाक होने से बचाते। मौला हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये और झूठ से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ सबसे बड़ी खयानत ★

हज़रत सुफ़ियान बिन असद हज़रमी से रिवायत है कि रसूले अकरम को फ़रमाते हुए सुना कि बड़ी ख़यानत यह है कि तू अपने भाई से कोई बात कहे और वह तुझे सच्चा जान रहा हो और तू उससे झूठ बोल रहा है। *(बुखारी शरीफ, अबू दाउद)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीस पाक की रौशनी में देखा जाये तो बहुत कम लोग इससे महफ़ूज़ आयेंगे। हम कोशिश करें कि इस क़िस्म की ख़्यानत न करें बल्कि हर क़िस्म की ख़्यानत से अपने आपको बचायें। इसमें हमारा फ़ायदा है और वह यह है कि दोनों जहां की रुसवाईयों

से मौला बचा लेगा। और ख़ूब ख़ूब इज्ज़त और बरकतों से नवाज़ेगा। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ झूठ न बोलने की बरकत ★

सैयदुल औलिया पीरे पीरां हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी जब वालिदा माजिदा से रुख़सत होकर बग़दाद जाने वाले एक क़ाफ़िले में शामिल हो गये, आप का क़ाफ़िला हमदान के मशहूर शहर तक तो बख़ैर पहुंच गया लेकिन जब हमदान से आगे को हसतानी इलाक़े में पहुंचा तो साठ क़ज़ाक़ों (डाकूओं) के एक जत्थे ने क़ाफ़िले पर हमला कर दिया। इस जत्थे का सरदार एक ताक़तवर क़ज़ाक़ अहमद बदवी था। क़ाफ़िले के लोगों में उन ख़ून ख़्वार डाकूओं के मुक़ाबले की सकत न थी। डाकूओं ने क़ाफ़िले का तमाम माल व असबाब लूट लिया ओर उसे तक़सीम करने के लिये एक जगह ढेर कर दिया।

हज़रत ग़ौसुल आज़म एक जगह इत्मिनान से खड़े रहे लड़का समझ कर किसी ने आपसे तअर्रुज़ न किया, इत्तेफ़ाक़न एक डाकू की नज़र उन पर पड़ी और आपसे पूछा, क्यों लड़के ! तेरे पास भी कुछ है? हुजूर ग़ौसे आज़म ने बिला ख़ौफ़ व हिरास के इत्मिनान से जवाब दिया, हां ! मेरे पास चालीस दीनार हैं। डाकू को आपकी बात पर यक़ीन न आया और वह आप पर एक निगाहे इस्तेहज़ा डालता हुवा चला गया, फिर एक दूसरे डाकू ने पूछा, लड़के ! तेरे पास कुछ है? आपने उसे भी वही जवाब दिया कि, हां ! मेरे पास भी चालीस दीनार हैं। इस रहज़न ने भी आपकी बात को हंसी में उड़ा दी और अपने सरदार के पास चला गया। पहला डाकू वहां पहले ही मौजूद था और लूट के माल की तक़सीम हो रही थी। उन दोनों डाकुओं ने सर सरी तौर पर उस लड़के का वाक़िया अपने सरदार को सुनाया। सरदार ने कहा, उस लड़के को ज़रा मेरे सामने लाओ। दोनों डाकू भागते गये और ग़ौसे आज़म को पकड़कर अपने सरदार के पास ले गये।

डाकूओं के सरदार ने उस फ़क़ीर मुनिश नौजवान लड़के को देखकर पूछा, सच बता तेरे पास क्या है ? आपने जवाब दिया कि पहले भी तेरे दो

साथियों को बता चुका हूं कि मेरे पास चालीस दीनार हैं ! सरदार ने कहा, कहां है? आपने फ़रमाया, मेरी बग़ल के नीचे गठरी में सिले हुए हैं।

सरदार ने गठरी को उधेड़कर देखा तो उसमें वाक़ई चालीस दीनार निकले। डाकुओं का सरदार और उसके साथ यह माजरा देखकर सकते में आ गये, डाकूओं के क़ायद अहमद बदवी ने इस ताज्जुब के आलम में कहा, लड़के ! तुम्हें मालूम है कि हम डाकू हैं फिर भी तुम हम से मुतलक़ न डरे और इन दीनारों का भेद हम पर ज़ाहिर कर दिया, इसकी वजह क्या है ? सैयदना ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि मेरी पाकबाज़ और ज़ईफ़ुल उम्र वालिदा ने घर से चलते वक़्त मुझे नसीहत की थी कि हमेशा सच बोलना और झूठ कभी ज़बान पर न लाना। भला ! वालदा की नसीहत में चालीस दीनारों की ख़ातिर क्यों कर फ़रामोश कर सकता हूं?

यह अलफ़ाज़ नहीं हक़ व सदाक़त के तरकश से निकला हुआ एक तीर था जो अहमद बदवी के सीने में पेवस्त हो गया। उस पर रिक्क़त तारी हो गयी, अश्कहाए नदामत ने दिल की शक़ावत और स्याही धो डाली। रोते हुए बोला, आह बच्चे ! तुमने अपनी मां के अहद का इतना पास व लिहाज़ रखा ! हेफ़ है मुझ पर कि इतने सालों से अपने ख़ालिक़ का अहद तोड़ रहा हूं। यह कहकर इतना रोया कि घिघी बंध गयी। फिर बे इख़्तेयार सेयदना ग़ौसे आज़म के क़दमों में गिर पड़ा और डाकू के पेशे से तौबा की। उसके साथियों ने यह माजरा देखा तो उनके दिल भी पिघल गये और सबने एक ज़बान होकर कहा, ऐ सरदार! तू हर काम में हमारा क़ायद था और अब तौबा में भी हमारा पेशरू है। *(सीरते गौष आज़म)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा वाक़िया से हमें ख़ूब ख़ूब नसीहत हासिल करनी चाहिये, सिर्फ़ "ग़ौस का दामन नहीं छोड़ेंगे" के नारे से ही नहीं बल्कि ग़ौसे आज़म के किरदार से उनकी मुहब्बत का सबूत देने की कोशिश करनी चाहिये। अल्लाह तआला हम सबको सैयदना ग़ौसुल आज़म के किरदार व आमाल का सदक़ा अता फ़रमाये।

★ हसद की मुज़म्मत ★

कुरआने करीम में ख़ुदाए वहदहु लाशरीक का फ़रमान आलीशान है :—

और उसकी आरज़ू न करो जिससे अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी। मर्दों के लिये उनकी कमाई का हिस्सा है और औरतों के लिये उनकी कमाई से हिस्सा, और अल्लाह से उसका फ़ज़्ल मांगो, बेशक! अल्लाह सब कुछ जानता है। *(पारा : 5, रु : 2)*

और दूसरी जगह इरशाद फ़रमाता है :—

और तुम कहो, मैं पनाह मांगता हूं हसद वाले के शर से जब वह मुझसे जले।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! अल्लाह अपने प्यारे महबूब को पनाह मांगने का हुक्म दे रहा है, किसकी पनाह और किससे पनाह? तो फ़रमाया, मेरी पनाह मांगो हसद वाले शर से जब वह जले। मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! हसद करने वाला हसद करने की वजह से जितना नुक़सान भी मुमकिन हो पहुंचाना चाहता है और उसके लिये कोई कमी बाक़ी नहीं रखता, अपनी सारी ताक़त सर्फ़ कर देता है। इस लिये अल्लाह की पनाह मांगने का हुक्म दिया गया ताकि पनाह मांगने का हुकम दिया ता कि उसकी पनाह में आने के बाद कोई शर क़रीब न आ सके। अब आइये हसद किसे कहते हैं? उसे समझते चलें ता कि गुनाहे अज़ीम से बचने की दुआ कर सकें।

गुस्से से कीना पैदा होता है और कीना से हसद, हसद सिर्फ़ नेअमत और अताए ख़ुदावंदी पर होता है। अल्लाह अपने किसी बंदे पर जब कोई इनाम फ़रमाता है तो उसके भाई की दो हालतें होती हैं। एक यह कि वह उस नेअमत को नापसंद करता है और उसके ज़वाल की ख़्वाहिश करता है, यह हालते हसद है।

गोया हसद कहते हैं नेअमत को नापसंद करना और उसके ज़वाल की ख़्वाहिश करना। दूसरी हालत यह है कि न उसकी नेअमत के ज़वाल की

ख़्वाहिश करता है और न उसके वजूद के बाक़ी रहने को बुरा जानता है लेकिन यह ज़रूर चाहता है कि उसे भी ऐसी नेअमत मिल जाये, उसका नाम ग़िब्तह और रुश्क है। और रश्क करना जाइज़ है जब कि हसद करना सख़्त हराम। अल्लाह अपने प्यारे महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल हसद से बचाये और अपने फ़ैसले पर राज़ी रहकर सबका भला चाहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि नबी करीम ने इरशाद फ़रमाया, हसद से अपने आपको बचाओ इसलिये कि हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है। *(अबू दाउद)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! नेकी करना आज के इस पुर फ़ितन दौर में कितना दुश्वार है, आप बख़ूबी जानते हैं। इस भयानक माहोल में लोगों के पास नेकी करने का वक़्त ही नहीं बल्कि बुराईयों के इस सेलाब में आदमी नेकी करना भी चाहे तो वह भी बहुत मुश्किल है। अगर बड़ी मुश्किल से नेकी कर भी लिये तो उसका बचाना बहुत मुश्किल काम है। मोहसिने इंसानियत ने नेकियों को तबाह करने वाले आमाल की निशान देही फ़रमाकर हम पर एहसान फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया, "हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है।"

मज़कूरा मिसाल से आप समझ सकते हैं कि जिस तरह आग लकड़ी को जलाने में कोई कसर बाक़ी नहीं रखती इसी तरह हसद भी नेकियों को जलाने में कोई कमी नहीं रखता। इसलिये अगर नेकियों की हिफ़ाज़त मक़सूद हो तो हसद जैसे बुरे अमल से अपने आपको बचाना होगा। परवरदिगारे आलम अपने प्यारे महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल हर बुरे अमल से हम सबको बचाये। आमीन

हज़रत अनस से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़रमाया, एक दूसरे के साथ बुग़्ज़ न रखो और न हसद न एक दूसरे के साथ दुश्मनी करो और न क़तअे ताल्लुक़ी। और ऐ ख़ुदा के बंदो! आपस में एक दूसरे के भाई भाई बन जाओ। और किसी मुसलमान के लिये हलाल नहीं कि वह दूसरे मुसलमान से तीन दिन से ज़्यादा ताल्लुक़ात मुनक़तअ करे। *(बुखारी व मुस्लिम)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! जिन चीज़ों से ताजदारे कायनात ने बचने का हुक्म दिया, हम उन्हीं चीज़ों के मुरतकिब हो रहे हैं। बुग़्ज़ से मना फ़रमाया, हसद से मना फ़रमाया, दुश्मनी और क़तअे ताल्लुक़ से मना फ़रमाया मगर आज आपस में बुग़्ज़ व हसद, दुश्मनी और क़तअे ताल्लुक़ मुआशरे का जुज़ बन चुका है। आज का मुसलमान अपनी ज़ाती मुनफ़अत के लिये इतना हरीस हो चुका है कि हराम कर्दा चीज़ों का ख़्याल तक नहीं करता। काश ! हम हुज़ूर के फ़रमान के आमिल बन जाते। वही प्यारे आक़ा हम पर करम की नज़र फ़रमा देते। रहमते आलम ने मुसलमानों को भाई भाई बनने का हुक्म दिया और तीन रोज़ से ज़्यादा क़तअे ताल्लुक़ को हलाल न फ़रमाकर आगाह फ़रमा दिया कि अगर मेरे हो तो तीन रोज़ के अंदर अंदर आपस की सारी रंजिशों को मिटा दें। अल्लाह हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये। और रहमते आलम के फ़रामीन पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि ताजदारे मदीना ने इरशाद फ़रमाया कि बंदों के आमाल हर हफ़्ता दो मर्तबा पेश किये जाते हैं, पीर और जुमेरात को। पस हर बंदे की मग्फ़िरत हो जाती है सिवाए उस बंदे के जो अपने किसी मुसलमान भाई से बुग़्ज़ व कीना रखता हो। इसके मुताल्लिक़ हुक्म दिया जाता है कि उन दोनों को छोड़े रहे (यानी फ़रिश्ते उनके गुनाहों को न मिटायें) यहां तक कि वह बाज़ आ जायें।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! पीर और जुमेरात को बंदों के आमाल पेश किये जाते हैं। करीम की शाने करीमी तो देखिये वह सबको बख़्श देता है सिवाए उन दो शख़्सों के जो आपस में बुग़्ज़ व कीना रखते हैं, उनकी बख़्शिश नहीं फ़रमाता। इससे बढ़कर उनकी कम नसीबी क्या होगी कि करीम तो बख़्शना चाहता है लेकिन बुग़्ज़ व कीना बख़्शिश के लिये मानेअ है।

पता चला कि बुग़्ज़ व कीना यह इतना बुरा फ़ेअल है कि अल्लाह उसे सख़्त नापसंद फ़रमाता है और इस मर्ज़ में मुब्तला रहने वालों पर इतना नाराज़ होता है कि फ़रिश्तों को उनके हाल पर छोड़ने को हुक्म दे देता है जब तक वह बाज़ न आ जायें।

अल्लाह अपने प्यारे महबूब के सदक़े व तुफ़ैल मुझे आप को सबको इस मर्ज़ से महफ़ूज़ फ़रमाये।

★ हसद और बुग़्ज़ साबिक़ा उम्मतों की बीमारी है ★

हज़रत ज़ुबैर ने कहा कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि अगली उम्मतों की बीमारी तुम्हारी तरफ़ भी आ गयी है वह बीमारी हसद व बुग़्ज़ है जो मुंड़ने वाले है। मेरा मतलब यह नहीं कि वह बाल मुंड़ती है बल्कि वह दीन को मुंड़ती है। *(तिर्मिज़ी, इमाम अहमद)*

मेरे आक़ा के प्यारे दीवानो ! पिछली उम्मत ने दीन का पूरा नक़्शा बदल कर रखा दिया है। आप देखें कि उन्होंने हज़रत ईसा को अल्लाह का बेटा कहा दिया और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ आसमानी किताबों में रद्दो बदल कर दिया। बल्कि बुग़्ज़ व हसद की इंतेहा का यह आलम कि हुज़ूर ताजदारे मदीना के मुताल्लिक़ जो बशारतें उनकी किताबों में मौजूद थीं उसका भी इंकार कर दिया। अज़मते रिसालत का इंकार यहूद व नसारा ने महज़ बुग़्ज़ व हसद की वजह से किया था और इस तरह उन्होंने दीन को मुंड़ने का काम अंजाम दिया। ताजदारे कायनात का एहसान है अपनी उम्मत में दीन के बर्बाद होने के असबाब को बयान फ़रमा दिया और दीन की हिफ़ाज़त के लिये उसूल भी अता फ़रमा दिये। अल्लाह अपने प्यारे महबूब के सदक़ा व तुफ़ैल हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये। और ईमान की हिफ़ाज़त की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ हासिदीन अल्लाह की नेअमतों के दुश्मन हैं ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया, बेशक ! अल्लाह की नेअमतों के दुश्मन हैं। अर्ज़ किया गया कि वह कौन लोग हैं? फ़रमाया, वह लोग जो लोगों से उनकी नेअमतों की वजह से जलते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल व करम से अता की हैं। *(तिब्रानी, अवसत)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! आज जलने की बीमारी आम है, अगर किसी को तरक्क़ी या इज़्ज़त हासिल हो जाये तो कभी रिश्तेदारों को जलन, दोस्तों को जलन होने लगती है और इस नेअमत के ज़वाल की दुआ और इंतेज़ार करते हैं। काश ! कि थोड़ी सी अक़्ल इस्तेमाल करते तो कभी नेअमतों के मिलने पर हसद न करते। इसलिये कि यह नेअमतें देने वाला तो वह अल्लाह है जिसकी शान यह है कि जिसे चाहता है इज़्ज़त देता है, जिसे चाहता है माल देता है, जिसे चाहता है ख़ुशी देता है और बंदा जलन की वजह से चाहता है कि यह उसे न मिलें। इस नादान को यह नहीं मालूम कि उसके चाहे से कुछ नहीं होता बल्कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है। लिहाज़ा अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रह कर उससे फ़ज़्ल का सवाल करे और अपने दिल की सफ़ाई की दुआ करे। वह करीम है साइल को महरूम नहीं बल्कि हुज़ूर का सदक़ा ज़रूर अता फ़रमायेगा और उसे भी नेअमतें मिल जायेंगी। अल्लाह सारे मोमिनों पर अपनी नेअमतों की बारिश फ़रमाये और हुज़ूर के सदक़े हम पर भी। आमीन।

★ मुसलमान की मुसीबत पर ख़ुश होने वाला ★

हज़रत वाषिला बिन असक़अ से मरवी है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया, अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुश मत हो, अल्लाह उसे नजात दे देगा और तुझे मुब्तला कर देगा। *(तिर्मिज़ी)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! एक मुसलमान को यह ज़ेबा नहीं देता कि वह अपने मुसलमान भाई को तकलीफ़ में देखकर ख़ुश हो। अगरचे वह हमें हज़ार हा तकलीफ़ पहुंचाता हो। क्योंकि उस मुसीबत से जो तकलीफ़ पहुंचती है उसको सिर्फ़ वही महसूस करता है बल्कि कामिल मोमिन वही है कि जो अपने लिये पसंद करे वह अपने मोमिन भाई के लिये पसंद करे। याद रखें अगर किसी मुसलमान को तकलीफ़ में देखकर उसके लिये अगर नजात की दुआ की गयी तो वह करीम है तुम्हारी दुआसे उसको मुसीबत से नजात देकर तुम पर आने वाली मुसीबत को भी टाल देगा। ठीक कहा कि है किसी ने कि भला हो भला। अल्लाह न करे अगर किसी को मुसीबत में मुब्तला देखकर ख़ुश हुए तो डरो कि कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह

उससे मुसीबत दूर फ़रमाकर उस मुसीबत में ख़ुश होने वाले को मुब्तला फ़रमा दे। लिहाज़ा ख़ूद को मुसीबत से बचाना है तो दूसरों की मुसीबत से ख़ुश नहीं होना चाहिये। परवरदिगारे आलम जुमला मुसलमानों को ख़ुशियां अता करे उनके सदक़े हम सबको भी अता करे।

★ हुज़ूर को अपनी उम्मत में हसद का ख़ौफ़ था ★

हज़रत अबू आमिर अशअरानी से मरवी है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया, मुझे अपनी उम्मत पर सबसे ज़्यादा ख़ौफ़ इस बात का है कि उनमें माल ज़्यादा हो जाये और आपस में हसद करके कुश्त व ख़ून करें। *(अहयाउल उलूम)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! हसद का सबब हुज़ूर ने माल की कसरत बयान फ़रमाया और हसद के सबब आपस में ख़ून ख़राबा होगा। आज यही हो रहा है। रहमते आलम को जिस चीज़ का ख़ौफ़ था क्या वह आज इस उम्मत में नज़र नहीं आ रहा है ? यक़ीनन ! आज चंद रुपयों के लिये या किसी को तरक़्क़ी करते देखकर या किसी के पास माल की फ़रावानी देखकर उसे तबाह व बर्बाद करने की पूरी कोशिश की जाती है और रोज़ बरोज़ यह उम्मत ख़ून ख़राबा का शिकार होती जा रही है। काश ! हसद जैसी बदतरीन बीमारी से आज का मुसलमान बच जाये तो मैं समझता हूं कि बहुत सारे मसाइल हल हो जायें और आपस में ही उलफ़त व मुहब्बत नीज़ इत्मिनान की दौलत हासिल हो जाये। आओ ! हम दुआ करें कि अल्लाह हम सबको हसद से बचाये और सबको ख़ुश देखकर ख़ुश होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ दुनिया में जन्नत की बशारत ★

हज़रत अनस से रिवायत है कि एक रोज़ हम सरकारे दो आलम की ख़िदमत में हाज़िर थे ! आपने फ़रमाया, अभी इस रास्ते से तुम्हारे सामने एक जन्नती आयेगा। इतने में एक अंसारी सहाबी नमूदार हुए। उनके बायें हाथ में जूते थे और दाढ़ी के बालों में वुज़ू का पानी टपक रहा

था। उन्होंने हम लोगों को सलाम किया। दूसरे रोज़ भी रसूलुल्लाह ने इसी तरह फ़रमाया और यही सहाबी सामने आये और तीसरे दिन भी यही वाक़िया हुआ। जब सरकारे दो आलम तशरीफ़ ले गये तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र व बिन आस ने उन अंसारी सहाबा का पीछा किया और उनसे कहा, मेरे और मेरे वालिद के दर्मियान कुछ इख़्तेलाफ़ हो गया और मैं ने क़सम खाली है कि मैं तीन दिन तक उनके पास नहीं जाऊंगा। आप इजाज़त दें तो मैं यह तीन रातें आपके पास गुज़ार लूं। रावी कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ने तीन रातें उनके घर गुज़ारीं। उन्होंने देखा कि वह रात को थोड़ी देर के लिये नमाज़ के लिये उठते थे। अलबत्ता जब करवट बदलते अल्लाह का नाम लेते। और सुबह की नमाज़ तक बिस्तर पर ही लेटे रहते थे। ताहम उस अर्सा में उनकी ज़बान से ख़ैर के अलावा कुछ नहीं सुना। जब तीन रोज़ गुज़र गये और मुझे उनके आमाल के मामूली होने का यक़ीन हो गया तो मैंने उनसे कहा, ऐ बंदए ख़ुदा! मेरे और वालिद के दर्मियान न नाराज़गी थी और न छूट छटाव था। मैंने रसूल अकरम से आपके बारे में यह कहते सुना था कि इस लिये यह ख़्वाहिश पैदा हुई कि तुम्हारे आमाल तो देखुं जिनकी बिना पर दुनिया ही में जन्नती होने की बशारत व खुशख़बरी दी गयी है। इन तीन दिनों में मैंने तो आपको कुछ ज़्यादा अमल करते हुए नहीं देखा फिर तुम उस दर्जे तक क्योंकर पहुंचे? उन्होंने जवाब दिया, मेरे आमाल तो बस यही हैं जो तुमने देखे हैं, जब मैं जाने लगा तो उन्होंने आवाज़ देकर बुलाया और कहने लगे कि मैं अपने दिल में किसी मुसलमान के लिये कदूरत नहीं रखता हूं और न किसी से इसलिये हसद करता हूं कि अल्लाह ने उसे नेअमत अता की है। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैंने उनसे कहा, तुम्हारी इन्हीं ख़ूबियों ने तुम्हें इस दर्जे तक पहुंचाया है और यह बातें हमारे दाइरए ताक़त से बाहर हैं। *(रवाहू अहमद)*

मेरे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु के प्यारे दीवाने! जन्नत, इज़्ज़त और बुलंदी कौन नहीं चाहता? हर कोई चाहता है, बस! उसे सिर्फ़ इतना करना है कि अपने दिल को हर मुसलमान के लिये कदूरत से पाक कर ले और मोमिन भाई को ख़ुश नीज़ तरक़्क़ी करता देखकर उसके लिये मज़ीद तरक़्क़ी की

दुआ करे। तो मौला मोमिन भाई की भलाई चाहने के एवज़ ज़रूर उस पर भी करम की नज़र फ़रमायेगा और जन्नत का हक़दार फ़रमायेगा, नीज़ दोनों जहां की इज्ज़त अता फ़रमायेगा।

अल्लाह सबके दिल को कदूरत, हसद बुग्ज़, कीना वग़ैरह से बचाये और हमेशा सबका भला चाहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ अर्श के साये में ★

रिवायत है कि हज़रत मूसा जब बारी तआला से बातें करने के लिये कोहे तूर पर गये तो एक आदमी को अर्श के साया में देखा। आपको उस शख़्स के रुत्बे पर रश्क आया और जनाबे बारी तआला में अर्ज़ किया कि मुझे इसका नाम मालूम हो जाये। इरशाद हुआ क्या, नाम बतलायें, हम तुम्हें इसके आमाल बतलाते हैं। वह किसी से हसद नहीं करता था, अपने वालदैन की नाफ़रमानी नहीं करता था और चुग़लख़ोरी नहीं करता था। *(अहयाउल उलूम, जिल्द : 3)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! हज़रत कलीमुल्लाह नबी होकर उस बंदे के मर्तबे पर रश्क कर रहे हैं! उस बंदे की क़िस्मत पर कुरबान! अर्श के साये में जगह पाने वाले उस खुश नसीब की आदत का सदक़ा हमें भी अल्लाह फ़रमाये और हसद से बचने के साथ वालिदैन की फ़रमाबर्दारी नीज़ चुग़लख़ोरी से बचाये।

★ हसद का वबाल ★

इमाम ग़ज़ाली अपनी मश्हूरे ज़माना तस्नीफ़ अहयाउल उलूम में तहरीर फ़रमाते हैं कि बकर बिन अब्दुल्लाह رحمۃ اللہ علیہ कहते हैं कि एक शख़्स बादशाह के पास जाता और उसके सामने जाकर यह जुमला कहा करता कि मोहसिन के साथ उसके एहसान के जवाब में अच्छा सुलूक करो। बदी करने वाले के लिये तो उसकी बदी ही काफ़ी है। एक शख़्स को उसकी जुर्रत और बादशाह के यहां उसके मर्तबे पर हसद हुआ। और उसने बादशाह से चुग़ली की कि फ़लां शख़्स जो खड़ा होकर आपके

सामने यह जुमला कहा करता था आपसे नफ़रत करता है और यूं कहता कि बादशाह गंदा देहन (बदबूदार मुंह) है। बादशाह ने उससे पूछा, उसकी तस्दीक़ की सूरत क्या है? चुग़लख़ोरने कहा, जब वह दरबार में खड़े होकर यह जुमला कहता है तो अपनी नाक पर हाथ रख लेता है ता कि आपके मुंह की बदबू परेशान न करे। बादशाह ने कहा, हम उसका इम्तेहान लेंगे। अगर वह ऐसा ही है जैसा तूने कहा तो उसे दर्दनाक सज़ा देंगे। एक तरफ़ चुग़लख़ोर ने बादशाह को भड़काया तो दूसरी तरफ़ उस हक़ गो को ऐसा खाना खिलाया जिस में लहसन ज़्यादा था, हसबे मामूल दरबार में पहुंचा, बादशाह ने उसे क़रीब बुलाया, उसने इस ख़्याल से की कहीं बादशाह सलामत मेरे मुंह की बदबू सूंघ न ले, अपने मुंह पर हाथ रख लिया। उसकी हरकत से बादशाह को चुग़लख़ोर की बात पर यक़ीन आ गया। उसी वक़्त अपने आमिल को ख़त लिखा कि जब यह शख़्स तेरे पास मेरा ख़त लेकर पहुंचे तो इसे क़त्ल कर दे और उसकी खाल में भुंस भरकर हमारे पास भेज दे। उसने ख़त लिया और चल पड़ा। रास्ते में उसे वही हासिद, चुग़लख़ोर मिला। उसने दर्याफ़्त किया कि यह तुम क्या लिये जा रहे हो? उसने जवाब दिया, बादशाह सलामत का ख़त है फ़लां आमिल के नाम इसमें मेरे लिये इनाम की सिफ़ारिश की गयी है। चुग़लख़ोर को लालच आ गयी और उसने कहा, यह ख़त मुझे दे दो तुम्हारे बजाए मैं इनाम हासिल करूंगा। उसने बादशाह का ख़त उसके हवाले कर दिया। चुग़लख़ोर आमिल के पास पहुंचा, उसने ख़त पढ़ कर बतलाया कि इसमें तुझे क़त्ल करने और तेरी खाल में भुंस भरकर भेजने का हुक्म है। अब उसकी आंखें खुलीं उसने कहा यह ख़त मेरे लिये नहीं है, तुम बादशाह से रुजूअ कर सकते हो। आमिल ने उसकी एक न सुनी और बादशाह के हुक्म की तामील करते हुए उसकी गर्दन काट दी।

उधर वह शख़्स अपनी आदत के मुताबिक़ दरबार में पहुंचा बादशाह को बड़ी हैरत हुई ! ख़त के मुताल्लिक़ इस्तिफ़सार किया। उसने कहा, फलां दरबारी ने मुझसे दरख़्वास्त की थी कि मैं बादशाह का ख़त उसे हेबा कर दूं, मैंने उसे दे दिया। बादशाह ने उसे ख़त का मज़मून बताया और कहा कि उस शख़्स ने कहा था कि तू मुझसे नफ़रत करता है नीज़ यह कि मैं गंदा देहन हूं। चुनांचे मैंने तुझे क़रीब बुलाया था और तूने अपनी नाक पर हाथ रख लिया

था। उसने इस इल्ज़ाम की तरदीद की और लहसन आमेज़ खाने का वाक़िया सुनाया और बतलाया कि मैंने अपने मुंह पर हाथ इसलिये रख लिया था कि कहीं मेरे मुंह की बदबू आपको परेशान न करे ! बादशाह ने कहा, तुम अपनी जगह बैठो उसने अपने किये हुए की सज़ा पा ली। कि तुम सच कहा, करते कि बदी करने वाले के लिये उसकी बदी काफ़ी है। *(अहयाउल उलूम, जिल्द : 3)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! देखा आपने ! बे कुसूर शख़्स को परेशान करने का अंजाम? हमेशा इस बात का ख़्याल रखें कि दुनिया में कोई भी इंसान किसी का बुरा सोच कर या बुरा करके इत्मिनान की ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता। तारीख़ में एक नहीं बेशुमार ऐसे वाक़ियात आप को मिलेंगे। और कभी नहीं देखेंगे कि किसी का भला चाहने वाला इंसान पुर सकून न हो। अल्लाह अपने बंदों का भला चाहने वाले को सुकून व इत्मिनान की दौलत अता करता है और बुरा चाहने वाले की ऐसी पकड़ करता है कि दुनिया पुकार उठती है कि यह इसी लायक़ था। हमें चाहिये कि मज़कूरा वाक़िया से इबरत हासिल करें और हमेशा लोगें का भला चाहने की कोशिश करें। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये आमीन।

★ बुजुर्गों का हसद ★

एक मर्तबा शैतान ने हज़रत नूह से कहा कि मैं आपके एक एहसान का बदला चुकाना चाहता हूं। हज़रत नूह ने फ़रमाया, मलऊन! मैंने तो तुझे अपने पास भटकने तक न दिया फिर तुझ पर मेरा कोई एहसान कैसा? शैतान बोला! आपने अपनी सरकश क़ौम को डुबोकर आये दिन मुसीबत से मुझे बचा लिया। हर रोज़ की कशमकश और अग़वा की तरकीबों से मुझे नजात मिल गयी है। उसके एवज़ में यह नसीहत करता हूं कि बुजुर्गों की हदस से बचना चाहिये। मैं आदम के हसद ही से मारा गया हूं और अबदी जहन्नमी बन गया हूं। उनकी बड़ाई व अज़्मत मुझे न भाई और उनके आगे न झुका और हमेशा के लिये मलऊन बन गया। *(सच्ची हिकायत, बहवाला नुज़हतुल कारी)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! कभी कभी दुश्मन भी सच बात

कह देता है। देखा अपने ! शैतान मरदूद ने हज़रत आदम से हसद किया तो परवरदिगार ने न उसकी इबादत देखी न उसकी तसबीह व तहमीद की परवाह की, न उसका फ़रिश्तों को पढ़ाना देखा बल्कि अल्लाह की जानिब से हज़रत आदम को मिलने वाली इज्ज़त से हसद करने के एवज़ शैतान को हमेशा के लिये मरदूद मलऊन क़रार दिया। इस से यह बात समझ में आयी कि हसद इतना बड़ा गुनाह है कि इसकी वजह से बंदे के सारे आमाल ज़ाया हो जाते हैं और बंदा मौला के अज़ाब का हक़दार बन जाता है ।अल्लाह हम सबको हसद से बचाये।

★ एक साल पहले जहन्नम में ★

रिवायत है कि छे आदमी हिसाब व किताब से एक साल पहले दौज़ख़ में जायेंगे। दर्याफ़्त किया गया कि या रसूलुल्लाह ! वह कौन लोग हैं? इरशाद फ़रमाया, जुल्म की वजह से, अरब अस्बियत की वजह से, दहक़ान (रईस) तकब्बुर की वजह से और ताजिर ख़्यानत के बाइस, और रुसताई (गंवार) जहालत के ज़रिये और उलेमा हसद की वजह से।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह हम सबको मज़कूरा छः अशख़ास में न बनाये और उनकी बुराईयों से बचाये, आमीन।

★ सिर्फ़ दो चीज़ों में हसद जाइज़ है ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنھما से मरवी है कि अल्लाह के रसूल ने इरशाद फ़रमाया, हसद सिर्फ़ दो शख़्सों में है : एक वह शख़्स जिसे अल्लाह ने माल दिया है और फिर उसे राहे हक़ में ख़र्च करने पर मुसल्लत कर दिया है।और दूसरा वह शख़्स है जिसे अल्लाह ने इल्म अता किया है वह उस पर अमल करता है और लोगों को तालीम देता है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा दोनों चीज़ों में हसद से ख़ूद का फ़ायदा है लेकिन आज उन चीज़ों में हसद कहां कोई करता है बल्कि ऐसे लोगों को बेवकूफ़ समझा जाता है जो राहे हक़ में माल ख़र्च करते हैं और अमल करने वाले को आज लोग बे अक़्ल कहते हैं। दुनिया से उकताया हुआ

और पसमांदा तसव्वुर करते हैं ।लेकिन याद रखें ! अगर किसी मालदार को राहे हक़ में खर्च करते और किसी साहबे इल्म को अमल करते देखें तो अल्लाह की बारगाह में दुआ करें कि मौला उसके नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हमें भी दौलत अता फ़रमा ता कि तेरी राह में ख़र्च करें और ऐसा इल्म अता फ़रमा जिस पर अमल करके तुझे राज़ी करें। अल्लाह नेक लोगों में बनाये।

★ हसद से बचने का तरीक़ा ★

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि हुजूर ने इरशाद फ़रमाया, तीन बातें ऐसी हैं जिन से कोई ख़ाली नहीं है :—

1. ज़न। **2.** बदफ़ाली। **3.** हसद। जब कोई गुमान दिल में आये तो उसे सही न समझो और जब बदफ़ाली हो तो अपने काम में लगे रहो। और जब हसद पैदा हो तो ख़्वाहिश न करो।

और हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली फ़रमाते हैं कि हसद क़ल्बकी बीमारियों में से एक बहुत बड़ी बीमारी है और उसका इलाज यह है कि हसद करने वाला ठंडे दिल से यह सोच ले कि मेरे हसद करने से हरगिज़ किसी की नेअमत व दौलत बर्बाद नहीं हो सकती और मैं जिस पर हसद कर रहा हूं मैं हसद से उसका कुछ बिगड़ नहीं सकता बल्कि मेरे हसद का नुक़सान दीन व दुनिया में मुझको ही पहुंच रहा है कि मैं ख़्वाम व ख़्वाह दिल की जलन में मुब्तला हूं और हर वक़्त हसद की आग में जलता रहता हूं और मेरी नेकियां बर्बाद हो रही हैं। और मैं जिस पर हसद कर रहा हूं मेरी नेकियां क़यामत में उसको मिल जायेंगी। फिर यह भी सोचे कि जिस पर हसद कर रहा हूं उसको ख़ुदावंदे करीम ने यह नेअमतें दी हैं और मैं उस पर नाराज़ होकर हसद में जल रहा हूं तो मैं ख़ुदावंदे करीम के फ़ेअल पर एतेराज़ करके अपना दीन व ईमान बर्बाद कर रहा हूं ।यह सोचकर भी अपने दिल में उस ख़्याल को जमाए कि अल्लाह अलीम व हकीम है। जो शख़्स जिस का अहल होता है अल्लाह उसको वही अता फ़रमाता है। मैं जिस पर हसद कर रहा हूं के नज़दीक चूं कि वह उन नेअमतों का अहल था इसलिये ने उसको यह नअमतें अता फ़रमायीं। इस तरह हसद का मर्ज़ दिल से

निकल जायेगा और हासिल को हसद की जलन से नजात मिल जायेगी।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आओ ! दुआ करें कि अल्लाह ﷻ हम सबको ईमाम ग़ज़ाली رحمة الله عليه के इरशादात पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

★ कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ न मिली ★

हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ رضی الله عنه के एक शागिर्द पर नज़अ तारी थी, आप उसके पास तशरीफ़ ले गये और उसके सिरहाने बैठकर यासीन शरीफ़ पढ़ना शुरू कर दी। शागिर्द ने नज़अ की हालत में अर्ज़ की, उस्ताज़ गिरामी! इसे मत पढ़िये (क्योंकि कोई फ़ायदा न होगा) थोड़ी देर ख़ामोश रह कर फिर **لااله الا الله** की तलक़ीन की। शागिर्द ने कहा, मैं अभी नहीं पढ़ सकता इसलिये कि मैं इससे बरीउज़ ज़िम्मा हूं। यह कहकर वह मर गया।

हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ घर लोटे । शागिर्द की इस ग़लती पर चालीस रोज़ तक रोते रहे और उस ग़म में घर से बाहर न निकले। चालीसवें रोज़ ख़्वाब में देखा कि उनके शागिर्द को जहन्नम की तरफ़ ले जा रहे हैं। हज़रत फुज़ैल बिन अय्याज़ عَلَيۡهِ الرَّحۡمَةُ وَ الرِّضۡوَانُ ने फ़रमाया, कमबख़्त ! तू कौन सी नहूसत के सबब जहन्नम का मुस्तहिक़ हो गया हालांकि तू मेरा शागिर्द था ! तुझ से ऐसी उम्मीद न थी । अर्ज़ की, मुझसे तीन गुनाह सरज़द हुए हैं :

1. चुग़लख़ोरी, कि मैं अपने दोस्तों को कुछ कहता और आपको कुछ।
2. हसद, कि मैं हमेशा हमजोलियों से हसद करता रहा।
3. मुझे एक बीमारी थी कि मैंने किसी डाक्टर से ईलाज पूछा तो उसने कहा साल में एक मर्तबा शराब पी लिया करो। वरना बीमारी तुझे हरगिज़ न छोड़ेगी। चुनांचे उस तबीब के कहने पर मैं साल में एक बार शराब पी लिया करता था।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ अल्लाह के वली थे। उनकी तलक़ीन के बावजूद उस शख़्स की ज़बान पर कलिमा जारी न हुआ और वह जहन्नमी हो गया। अंदाज़ा लगायें कि तीन बुराईयां उस शख़्स के अंदर थीं उनका अंजाम भयानक हुआ। दिल में जलन,

चुग़लख़ोरी और शराब। यह अल्लाह ﷻ को किस हद तक नापसंद है कि उन तीन जुर्मो की वजह से मुजरिम को वली की तलक़ीन के बावजूद कलिमा ज़बान पर जारी न हुआ। इस लिये हम को चाहिये कि अल्लाह ﷻ की बारगाह में हमेशा अपने गुनाहों से बचने की दुआ करें और अपना हिसाब करते रहें। याद रखें कि सही मअना में कामयाबी ईमान पर ख़ात्मा है। अल्लाह ﷻ ईमान पर ज़िन्दा रखे और ईमान ही पर ख़ात्मा फ़रमाये और अल्लाह ﷻ हम सबको मज़कूरा तीन गुनाहों से हमेशा बचाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوة والتسلیم

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम
हम यहां से पुकारें वहां वो सुनें मुस्तफ़ा की समाअत पे लाखों सलाम
हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम
दूरो नज़दीक के सुनने वाले वो कान काने लअले करामत पे लाखों सलाम
पतली पतली गुले कुद्स की पत्तियां उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम
हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया मौजे बहरे सख़ावत पे लाखों सलाम
कितने बिखरे हुए हैं मदीने के फूल करबला तेरी क़िसमत पे लाखों सलाम
जिसने तेगों के साए नमाज़ें पढ़ीं उस हुसैनी इबादत पे लाखों सलाम
जिसका मिम्बर बनी गर्दने औलिया उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम
गौ़से आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा जल्वए शाने कुदरत पे लाखों सलाम
हिन्द के बादशाह दीन के वो मोईन ख़्वाजए दीनो मिल्लत पे लाखों सलाम
ख़्वाजए ख़्वाजगां शाहे हिन्दोस्तां मेरे ख़्वाजा की अज़मत पे लाखों सलाम
डाल दी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफ़ा सय्यदी आला हज़रत पे लाखों सलाम
जिसने बदमज़हबों के क़िले ढा दिये हिम्मते आला हज़रत पे लाखों सलाम
जिनकी हर हर अदा सुन्नते मुस्तफ़ा ऐसे पीर तरीक़त पे लाखों सलाम
एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम
मुझसे ख़िदमत के कुदसी कहे हां **रज़ा** मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम